ठक्कर वसनजी माधवजी व्याख्यानमाळा.

पद्यरचनानी ऐतिहासिक आलोचना.

व्याख्यानकार
दीवानबहादुर केशवलाल हर्षदराय ध्रुव, बी. ए.,

इ. स. १९३१



प्रकाशक मुंबई युनिवर्सिटी, मुंबई.

मुद्रायंत्र: वसंतमुद्रणालय मुद्रक: धीमनलाल ईश्वरलाल म्हेता,
घीकांटा रोड, अमदावाद.

प्रस्तावना

बे वरस उपर मुंबइ युनिवर्सिटी तरफथी **वसनजी माधवजी ठक्कर व्याख्यानमाळा** (Thakkar Vasanji Madhavji Lectures) ने अंगे व्याख्यान आपवानूं आमंत्रण मने मळ्यूं हतूं; ते स्वीकारी गई सालना जुलाइ मासमां में पांच व्याख्यान त्यां आप्यां हतां. मुंबइना श्रोतामंडळे सत्कारेलां ए व्याख्यान विस्तीर्ण वाचकवर्गने मळी शके एवा उद्देशथी ते मुद्रांकित करवानो ठराव थयाथी युनिवर्सिटी तरफथी ते एकत्रित पुस्तकरूपे छपावी बहार पाडवामां आव्यां छे.

पद्यरचनानी ऐतिहासिक आलोचना, ए प्रस्तुत व्याख्याननो प्रधान विषय छे. साहित्यना वाहन तरीके पद्य अति प्राचीन काळथी सर्वत्र जाणीतूं छे. एना अनेक मार्ग खेडाया छे. तेमांना बेएक मार्गना पद्यबंधोना करणग्रंथ (Manuals) पण रचाया छे. एमां व्यावहारिक दृष्टिए अनेक प्रयुक्तअप्रयुक्त पद्यबंधोनां माप आपेलां मळे छे. पण एमां छंदना बंधारणना संबंधमां शास्त्रिय दृष्टिए विवेचन पण नथी अने उत्पत्तिना संबंधमां ऐतिहासिक दृष्टिए आलोचना पण नथी. ए ऊणप प्रत्ये मारूं ध्यान गयाथी पचीसेक वरस उपर **पद्यरचनाना प्रकार** ए नामे एक न्हानो निबंध **बीजी गूजराती साहित्य परिषद्** माटे में लख्यो हतो; ते ठीक आदर पाम्यो हतो. त्यारपछी लगभग पंदर वरसे **छठ्ठी गूजराती साहित्य परिषद्**मां अबद्ध पद्यरचना (blank verse) ना मारा एक नवा प्रयोगना विशे में **वनवेलीना** नामथी एक लेख वांच्यो हतो; ते पण ठीक चर्चाया हतो. त्यारबाद दशेक वरसे मुंबइ **युनिवर्सिटीनूं** पूर्वोक्त आमंत्रण मळतां पद्यरचनानी शाखाप्रशाखा उपर सर्वतोमुख प्रकाश पाडवा मारूं मन उत्तेजित थयूं; अने बार मासनां चिंतन तथा संशोधनना परिणामे प्रस्तुत व्याख्यान विद्यमान स्वरूपमां तैयार थयां. एनी योजना विशे व्याख्यानमां ज वहेवामां आव्यूं छे, एटले अहीं तेनो निर्देश करवानी जरूर रहेती नथी.

आ व्याख्यानोमां स्थळे स्थळे न्हानांमोटां विषयांतरोनो पण समावेश छे. ते घणुंखरूं प्रधान विषय साथे गौण के पारंपरिक संबंध धरावे छे. साहित्यनूं वाहन गद्य छे अने पद्य छे. परंतु गद्यमां छे नहि एवो एक विशेष पद्यमां छे. पद्यनी रचना मेळसर होवी घटे छे. तेमां यति वगेरेने पण स्थान मळे छे. ते कारणथी पहेला दृष्टिपातना प्रस्ताव २५–२६ अने परिशिष्ट पद्यनी घटनाना खास अभ्यास प्रत्ये लक्ष खेंचवा सारूं आपवां पड्यां छे. त्यार-बाद पद्यरचनाना इतिहासना क्रमेर पग मुकिये छिये, ते पळे पद्यनी उत्प-त्तिनो मुद्दो खडो थाय छे. तेना खुलासा माटे बीजा दृष्टिपातमां पुरुषसूक्त-ना विस्तृत विवेचनमां ऊतरवानो प्रसंग प्राप्त थाय छे. आर्चिक छंदना माप विशे घणुं लखायूं छे; पण वर्णात्मक पद्यरचनाना उदय अने विकासनो विषय कोइए छेड्यो ज नथी. ए अंधकारग्रस्त प्रकरण उपर प्रकाश पाड-नारां किरण पुरुषसूक्तमां फूटतां जणायाथी तेने में ऋक्कालउपरना व्याख्या-नना उत्तर भागमां स्थान आप्यूं छे. पूर्व भागना आर्चिक शुद्ध छंदो साथे आवेस्तिक पद्यबंधो बहु निकटनो अन्वयव्यतिरेकी संबंध धरावता जोवामां आव्या; ते कारणथी अवेस्तानी पद्यरचनानो लेख व्याख्यान बीजा साथे परिशिष्टरूपे जोडी दीधो छे. ऋग्वेद आदि साहित्य असल स्वरूपमां सुरक्षित छे, तो ज ऋक्कालनी लोकभाषा जेवी ने तेवी ऊतरी आवी छे. परंतु रामा-यण अने महाभारत आख्यानकालनी लोकभाषामां छे के अन्यथा, एनो सप्रमाण निर्णय अद्यापि थयो नथी. एना निराकरण सारूं त्रीजा दृष्टिपातमां, आख्यानकालनी भाषा जे पौराण संस्कृत, तेना अविकृत अने विकृत स्वरूपनी तपास चलावी छे. अविकृत स्वरूपने उद्देशीने वज्रपुरमां नटवेषधारी यादवोए भजवेला आख्यानदर्शननी विशिष्टता तरीके वखाणेला संस्कार गुणना संकेतनूं उद्घाटन कर्यूं छे. ते साथे विकृत स्वरूपनूं जीवतूं जागतूं उदाहरण जतुगृह पर्वमांथी ऊतार्यूं छे. प्रस्तुत अवतरण भगवान विदुरनी म्लेच्छवाणीमां एटले के विकृत पौराण संस्कृतमां छे. एमां वननी अंदर रातवासानां

जोखमनो तेम ज वारणावतमां ऊतारानां जोखमनो अर्थ रहेलो छे. ए द्विअर्थी उदाहरण समजवूं सरळ थाय एटला माटे परिशिष्टमां तेनी शब्दार्थसूचि पण योजी छे. विदुर भगवानना मुखना उद्धृत त्रण श्लोक आख्यानकालनी अशिष्ट बोलीनी अात विरल झांखी करावनारा होवाथी अवश्य विचारवा योग्य छे. सुत्तकालनी पद्यरचना सविशेष परिश्रम वगर लक्षमां आवे एवी नथी. **आयार सूयगड** अने **सुत्तनिपात**नी वाचना वधतीओछी भ्रष्ट होवाने लीधे ए दुर्गमता ऊभी थई छे. ते मटाडवाने वाचनानो समुद्धार करवानी आवश्यकता उपस्थित थाय छे. ए कार्यमां सहायभूत थवा भगवान महावीर अने बुद्धना समयनी लोकभाषाना आदर्श तरीके चोथा व्याख्यानमां शुंगवंशी राजा दर्शकनो लेख विचार्यो छे. ते पछी सौत्त पद्यवंशोनो विशेष परिचय करावत्रा **आयार** अने **सुत्तनिपात**मांथी त्रण सुत्त छंदःस्वरूप ठेकाणे आणी परिशिष्टमां आप्यां छे, जेथी करीने संवादभंगना कारणथी ऊपजती मूझवणी दूर थाय छे. पांचमा व्याख्यानमां अवांतर चर्चाना विषयो बहु वधी पडे छे. ऐतिहासिक काळमां आव्या छतां राष्ट्रनो अने साहित्यनो इतिहास हजु थाळे पड्यो नथी. भाषाना अने साहित्यना इतिहासनी तो रूपरेखा पण दोराई नथी. एवी परिस्थितिमां मात्र प्रासंगिक विषयोनी ज नहि पण केटलाक अप्रासंगिक विषयोनी पण चर्चा आ व्याख्यानमां पेसवा पामी छे. काव्यकालनी पद्यरचनानी आलोचना करतां पद्यनो स्थूल देह जे भाषा, तेनां मागधी शौरसेनी पैशाची महाराष्ट्री अने अपभ्रंश स्वरूप विशे में बे बोल कह्या छे, ते ए आनुषंगिक विषयनी विगत अजाणी होईने जरूरी जणायाथी कह्या छे. भास कालिदास अने अश्वघोषना पौर्वापर्यना प्रश्नमां अने **रघुवंश** तथा **मेघदूत**ना भिन्नकर्तृत्वनी चर्चामां हूं ऊतर्यो छूं, ते पद्यरचनानी उत्क्रांतिनी खरी रेखा दोरवामां तेनी आवश्यकता जोई तेथी ज. भारवि, विशाखदत्त माघ भट्टि अने अमरुनी परंपरा बांधी छे ते पण पद्यरचनानी सांकळना अंकोडानी मजबूताइ तपासवा माटे बांधी छे. **गाहासत्तसई** विशे बोलतां

पालित्त अने गुणढ्य के गुणाढ्य विशे जे कह्यूं छे ते, तेम ज प्रथम चंद्रगुप्त समुद्रगुप्त तथा द्वितीय चंद्रगुप्तना संबंधमां जे टिप्पण टिप्पणी आदि ऊमेरेल छे ते, त्यमवळी छेल्ली बे ऐतिहासिक व्यक्तिओनी गाथाओनो उद्धार कर्यो छे ते चोखां विषयांतर छे. परंतु ए जे नवो प्रकाश पाडे छे तेनी खातर, हूं आशा राखुं छूं के, ए नभावी लेवामां आवशे. मारा मर्यादित क्षेत्रनी बहार बीजां क्षेत्रोमां में पगदंडो चलाव्यों छे तेने माटे ते ते क्षेत्रना साहित्य विशेनी माहीतीनी अपूर्णता जवाबदार छे. जोईती प्रमाणसिद्ध विगत तैयार मळी होत, तो मारे प्रसंगे प्रसंगे चीलो कापी ते ते दिशामां भटकवूं पडयूं छे, तेना श्रममांथी हूं बची जात अने विषयांतर कर्यानी जवाबदारीथी पण मुक्त रहेत.

मारा काममां जेमनी जेमनी मने सहायता मळी छे, तेमनां नामनी नोंध लेतां मारा आभारी आत्माने आनंद थाय छे. ऋकालना व्याख्याननो उत्तर भाग मारा विद्वान बंधु दीवानबहादुर नर्मदाशंकर देवशंकर महेता जोई गया हता; अने पूर्व भाग वडावदीन कोलेजना संस्कृत अध्यापक Prof. N. B. Purohit वांची गया हता. मुद्रण माटेनी प्रतिकृति तैयार करवामां मने बे नवा ग्रेज्युएटोनी मदद मळी हती. पहेला त्रीजा चोथा अने पांचमा व्याख्याननी नकल भाइ मधुसूदन चिमनलाल मोदी एम.ए., एलएल.बी., एओए बहु काळजी पूर्वक करी आपी हती. एमनो परिचय मने प्रो. बळवंतराय कल्याणराय ठाकोरे कराव्यो हतो. श्रीयुत ठाकोरे तो, हूं बोलतो जाऊं अने पोते ऊतारता जाय, एटला माटे पंदर दिवस अमदावादमां आवीने रहेवानी तत्परता पण बतावी हती; परंतु व्यास भगवाननूं स्थान लेवूं मारी शक्ति बहार हतूं. ते कारणथी पेनसिलना मुसद्दानी सुवाच्य नकल करी आपे एवो स्थानिक सहायक मेळवी आपवा में तेमने वीनती करी. ते स्वीकारी तेमणे मने भाइ मोदीनो मेळाप करावी आप्यो. व्याख्यान बीजानी नकल बी.ए. अने एम.ए. ना मारा भूतपूर्व विद्यार्थी भाइ चतुरभाइ शंकरभाइ पटेले करी

हती. ए व्याख्याननूं परिशिष्ट तैयार करवामां डॉ. एरच जहांगीर तारापोरवालाए श्रम लेई जोईतां साधन पूरां पाट्यां हतां. विशेषमां मुंबइयुनिवर्सिटीना रेजिस्ट्रार श्रीयुत S. R. Dongerkery, एओए मारी मागणी स्वीकारी व्याख्यान आपवानी मुदत त्रण मास लंबावी आपी हती. आ अनेकविध सहायता माटे हूं सर्वनो आभारी छूं. विशेषमां काची छाप लांबा वखत सूधी फरी फरी तपासी तपासी आंख खराब करी छे अने पाछळथी शोधी काढेली पाकी छापनो मुख्य मुख्य भूलोनूं शुद्धिपत्रक में आप्यूं छे; तथापि दृष्टिनी निर्बळताने लीधे महत्त्वनी कोइ भूल नोंधावी रही गई होय, तो ते सूधारी लेई सुज्ञ वाचकवर्ग मने आभारी करशे.

आ व्याख्यान ज्यारे मुंबइयुनिवर्सिटीमां पूर्वे आपवामां आव्यां हतां, त्यारे मुंबइना अग्रेसर साप्ताहिक **गुजराती**ए मारो अवाज व्याख्यानशाळानी चार दीवाल बहार दूर दूर प्होंचाड्यो हतो. ते माटे ए पत्रना उत्साही संचालकनो आभार लगभग दोढ वरसे व्याख्यानना प्रकाशनना अवसरे हूं जाहेर करूं छूं.

अमदावाद, डीसेम्बर, १९३२.

केशवलाल हर्षदराय ध्रुव.

दृष्टिपात ३, आख्यानकाल, पृष्ठ ११६–१४९.

प्रस्तावसूचि

दृष्टिपात ४, सुत्तकाल, पृष्ठ १५०–१९६.

दृष्टिपात ५, काव्यकाल, पृष्ठ १९७–२९९

शुद्धिसूचि.

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	९	आर्धैयाना	अर्धियाना
९	२६	अर्वमां	अर्थमां
१०	१०	स्थालसिद्ध	स्थानसिद्ध
१२	२३	दष्टा	द्रष्टा
	२५	गंधीर	गंभीर
१६	६	Vevse	Verse
१८	४	माठा	मीठा
१९	२	अनुवादमे	अनुवादने
	१४	कवयित्री	कवयित्री
२१	१७	जाणवागां	जाणवामां
२९	१४	जने	अने
३६	१४	नाभ...मधी	नाम...नथी
३९	१८	रागदोसद्द	राअआइअद्द
	१९	निम्मयत्तु	निम्ममत्तु
४९	१२	मारे	मारो
५२	१०	हतो.	हतो:–
	१२	त्रण	वे
५४	६	लख्या	लख्या
५९	५	कुंडळिया	छंद
६१	२७	ते ईशने	प ईश ते
६३	१०	जीविका	सेवक
६७	१७	नारीकुंजर-चीरि	नारीकुंजर-चीरि
६८	३	स्त्री कुंजर	स्त्रीकुंजर
६९	८	हंस; अंश	हंस अंशः
७२	१३	उनातों छे	उनायों छे
७५	११	एमिर्नों	एभिर्नो
७६	११	गभथ	गर्भथ
७७	२१	अवेस्ताकनी	अवेस्तानी
७८	३	सुंजाततां	सुंज्ञाततां
८०	१८	जगतिनो	जगतीनो
८१	३	गीभि	गीर्भि
८१	५	वस्त्रा	वस्त्रो
८६	८	नथी.	नथी अपातो.
	२१	शक्करी	शकरी
८७	१६	शचावसू	शचीवसू
	१७	दिवा	दिव्रा
	२५	वाजेषु	वाजेषु
८८	१०	सामां	सोमां
९०	१२	सांहतामां	संहितामां
९३	३	त्रैष्टुभू	त्रैष्टुभ
	५	पुरोष्णिह्	परोष्णिह्
९५	१४	पश्चाद्	पश्चाद्
९६	९	मूर्यो	मूर्यो
	१३	स्यासन्	स्यांसन्
१०८	१०	थई...दे छे.	थाय छे.
१०९	२२	पूर्वे प्राकृत	प्राकृत ०
११२	८	भावनो	भागनो
११४	२५	इशावास्य	ईशावास्य

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११७	२६	अध्यय	अध्याय
१२०	३	ललगाल	ललगाल
		गागा	गालगा
१२१	१७	" "	" "
१२९	२७	विष्कंमक	विष्कंभक
१३७-४२	१	४	३
१३७	२	उच्चार शुद्धिने	उच्चारशुद्धिने
	२५	पुराणी	पुराणो
१४१	५	पीडयन्	पीडयन्
	१०	शाखना	शास्त्रना
	२७	Researche	Research
१४३	१	२	३
	१३	नलोरजम्	नलोहजम्
	१४	साय	शाम्र
	१६	पश्चायपीडन्	पश्चापीडयन्
	२५	त्वयाच	त्वया च
१४४	१	४	३
	४	विलोकसः	विलौकसः
	८	चरन्मार्ग	चरन्मार्गं
	९	पश्चया पीडयते	पश्चा पीड्यते
	२४	नाम निर्देश इष्ट	नामनिर्देश इष्ट
१४५	२५	रूटी	रूढि
१५७	२७	सामाद्दिय	सामाइय
१६०	१४	आनुप्टुभ	आनुष्टुभ
१६१	१४	मुत्ताचत्तं	मुत्तचित्तं
१६२	२६	मूयनड	सुयगड
		पद्यबंधोमां	पद्यबंधोमां
१६३	२२	पत्नी	पद्नी
	२३	छक्षण	लक्षण
१६७	१५	घटनामां	घटनामां
	२५	धडतरमां	घडतरमां
१६८	९	गाथाष्टुभी	गाथानुष्टुभी
१६९	११	वैतालीअ	वैआलीअ
१७२	६	अवक्कोस	अक्कोस
	१८	सुत्त	सुत्त
१८२	२८	चतुष्पाल	चतुष्कल
१८५	३१	उपपाव	उपधान
१९६	२१	अंगना आचार	आचार अंगना
१९९	१५	सुचरितानि	सुचरितानि
२०२	६	पैज्ञाची	पैशाची
२०८	३	उद्गता	उद्गता
२१०	५	विमोर्वशीय	विक्रमोर्वशीय
२१२	१३	नाटय	नाट्य
२१३	१०	नाटय	नाट्य
	१४	भरताटय	भरतनाट्य
२१३	२७	सुगुप्तनूं चन	गुप्तनूं सूचन
२१६	१२	व्यापक	छ व्यापक
२१७	२३	प्रस्यान	प्रस्थान

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२२३	९	शाहानशाहि	शाहानुशाहि
२२४	२१	टिप्पणी ५२	टिप्पणी ५५
२२८	११	परम	परम
	१६	सुभाषिता-वली	सुभाषिता-वलि
२२९	२	महेंद्रादित्य	महेंद्रादित्य
	६	संगीतना	संगीतना
२३४	१७	निवारन्	निवासन्
	१८	भोगपवानो	भोगववानो
	२५	रपायू	रचायू
	२६	यवति	अवति
२३६	४	न्हाणपणे	न्हानपणे
२३८	४	तानका	तनिका
२३९	९	सिंहवर्गा	सिंहवर्मा
	२२	ऽल्वा	ऽल्क
	२५	महिली	पहिली
२४२	११	अणधटतो	अणघटतो
२४४	२०	धसाई	घसाई
२४६	५	कडेला	कहेला
	२४	—उ—	—उत—
२४८	१०	उत्तम	उत्तर
२४९	२२	Tahlo	Table
२५२	६	धटे छे	घटे छे
२५३	२५	काव्य	लघुकाव्य
२५५	१८	प्रसन्ना-रुान	प्रसन्ना-ख्यान
२५६	१७	हरिणा	हरिणी
२५९	८	वनमाला	वनमाली
	९	संकत	संकेत
२६१	२४	सग्रहा	सग्रह
२६४	६	उद्गम	उद्‌गम
२७४	४	तिष्टन्ता	तिष्ठन्ती
	१०	यमक कवि	यमककवि
२७५	११	सहकार	सहकार
२७६	८	मात्राबंल	मात्राबंध
२७८	७	कप्पूरमञ्जरी	कर्पूरमञ्जरी
२८३	२०	नधा	नथा
	२२	तथाविवक्षिता	तथा विवक्षित
२८४	४	सुवसन्त	सुवसन्त
	६	पवाहो	पवाही
	११	ओकार	ओस्वर
२८६	७	(वसंतनो	(वसंतनो)
	२६	प्रवाही	पवाही
२८९	२०	वधारवाथी	वधाराथी
२९२	१०	निरानराळा	नरनिराळा
२९४	१४	उचोगथी	उद्योगथी
२९५	१०	ध्रुवदेवी	वदेवी
	११	ध्रुवस्वामिनी	वस्वामिनी

विशेषमां पृष्ट ८१, पंक्ति १२ मां 'एसां' तथा 'अष्टवर्ण' वच्चे 'पंचवर्ण पदनी' ए बे बोल तेम ज पृष्ठ २७६, पंक्ति २० मां 'खंड', तथा 'अंत्य' वच्चे 'अंत्य अनुप्रासथी अने बीजो तथा चोथो' ए छ बोल उमेरवाना छे. बीजी केटलीक सहेजे सूझे एवी अशुद्धिओ पण सूधारी लेवा वीनती छे.

पद्यरचनानी ऐतिहासिक आलोचना

दृष्टिपात १

पद्यनी घटना.

१ साहित्यनी वाणीनां बे स्वरूप, गद्य अने पद्य. काव्य गद्यमां पण होय अने पद्यमां पण होय. हर्षचरित, कादम्बरी, दशकुमारचरित वगेरे गद्यात्मक छे. प्राचीनतम उपनिषद्मां पण गद्यनूं दर्शन थाय छे. नाटक नाटिका वगेरेमां, तेम ज शुनःशेप नचिकेता वगेरनां आख्यानमां गद्य-पद्यनो सुघटित संयोग छे. रघुवंश, अने सेतुबन्ध, रामायण अने महाभारत, ऋचा अने साम, ए सौ पद्यमां छे. गद्य अने पद्य वच्चे भाषा-विभाषानो भेद नथी, पदप्रयोगनो भेद नथी, जोडणीनो भेद नथी, उच्चारनो भेद नथी, अर्थनो भेद नथी, व्याकरणनो ए भेद नथी. ते छतां गद्यना स्वरूपमां वंचातो फकरो पद्यना स्वरूपे वांचतां जुदो ज पडी जाय छे. पराक्रमनी प्रसादीना पहेला अने बीजा अंक वच्चेना विष्कंभकनी आरंभनी उक्ति नीचे प्रमाणे गद्यमां छे.

माणवक प्रवेश करीने–

> हूं तो थाक्यो. मारी व्हाली राजाजीनी छूपी वात 'फूटूं, फूटूं' करे छे; ने वंदानो स्वभाव भरभडियो छे. एटले हूं कोइने ए जोऊं छूं, के सळवळ सळवळ थती भूंडी जीभडी आ सखनी ज रे'ती नथी. चाल, राम. प्रिय मित्र परवारे त्यां लगी हूं, ओछी आवजाववाळो म्हेल जे महीविमान, तेमां घडीएक वेसूं.

आ उक्तिमां प्रच्छन्न पद्यनुं तत्त्व रहेलुं छे. ए [1]कवितनी ढबे नीचे

---

१ कवित एटले चार अक्षरना संधिवाळा चरणनो समचतुष्पद वर्णबंध उपरनो दृष्टांत चार अक्षरना संधिनो बनेलो होई कवितनी ढबे वंचाय छे, परंतु एमां संधिनी अने चरणनी संख्या मुकरर नथी; तेम ज प्रास बंधन पण नथी.

प्रमाणे मेळ पुरःसर वंचाय छे, अने वांचतानी साथे ज अकविने पण कोइ प्रकारना पद्यनो भास थाय छे.

माणवक प्रवेश करीने–

हुं तो थाक्यो.
मारी व्हाली राजाजीनी छूपी वात
'फूहुं, फूहुं' करे छे; ने
घंदानो स्वभाव भरभडियो छे.
एटले हुं कोइने ए जोऊं छुं, के
सळवळ सळवळ थती भूंडी जीभडी आ
सखनी ज रे'ती नथी.
चाल, राम.
प्रिय मित्र परवारे त्यां लगी हुं,
ओछी आवजावयाळो म्हेल जे महीविमान,
तेमां घडीएक बेसुं.

आमां शब्दो तो तेना ते ज छे. परंतु ते न्हानीमोटी पंक्तिमां मेळबद्ध वांचतां एने एक प्रकारनी सरखी गति मळे छे अने एनूं अप्रकट पद्यत्व प्रकट थाय छे. मेळ भूलाई विकृत बनेला कोइ फकराने खरा स्वरूपे ओळखवाने लांबा उतारानी जरूर रहेती नथी. वदलाया छतां असल पद्यनो अंत्य घटकावयव जडी आवतां ते उपरथी पण कचित् आखा ए पद्यनो चितार खडो थाय छे. अंगूठाना रावणनी लोककथा तो सारी रीते जाणीती छे. साहित्यमां पण रावणना अंगूठा सरखो पद्यबंधनो एकदेश जोई प्रतिभा आखो पद्यबंध ऊपजावी काढे छे. उर्वशीनी शोधमां भमतो पुरूरवा सुरभिकंदर पर्वतने पूछे छे के तें कोइ सुंदर स्त्री जोई ? ते क्षणे सामेथी शब्द संभळाय छे– 'जोई'. त्यारे राजा फरी पूछे छे के ते क्यां छे ? वळी सामेथी शब्द संभळाय छे–'क्यां छे ?' ए बीजी वारना ध्वनिथी राजाना समजवामां आवे छे के आ तो मारा बोल्या पडघा ज पडे छे. प्रस्तुत प्रसंगमां पडघाना रूपे

संभळातो बोल उक्तिनो छेल्लो शब्द होवो जोइये ए अनुभवसिद्ध सत्य पकडी लेई, सामेथी आवेलो 'जोई' बोल राजानी पर्वत प्रत्येनी पद्यात्मक उक्तिना छेडे ज होवो संभवे छे, एवो निर्णय बांधीने पहेली आवृत्तिनो

सर्व भूधरना नाथ! दीठी तें विखूटी पडी
अरण्ये रम्य रामा ए अंगे अंगे रूपे रूडी?

ए अनुष्टुभ् रदबातल गणीने में तेने ठेकाणे नाटकनी बीजी आवृत्तिमां

भू परना भूभृत्ना भूपति! भूली भमंत अत्र कोइ
सर्वे अंगे सुंदर स्त्री में खोयेल तें जोई?

ए आर्या गोठवी छे[२]. पद्यसृष्टिमां रावणना अंगूठानूं दर्शन क्वचित् कोइक व्यक्तिने ज थाय छे. परंतु पद्य मटी गद्य बनी गयेला फकराना असल रूपमां रही गयेला भाग उपर लक्ष खेंचातां आवो ए पद्यबंध उद्धारवाना प्रसंग तो प्राचीन साहित्यमां वारंवार मळी आवे छे. मुद्राराक्षस नाटकना पहेला अंकमां चाणक्य अने चंदनदासने नीचे प्रमाणे वातचीत थाय छे[३].

चाणक्यः। **ननु खलु चन्द्रगुप्तदोषा अतिक्रान्तपार्थिवगुणान् स्मारयन्ति प्रकृतीः।**

चन्दनदासः कर्णौ पिधाय। **सन्तं पावं। सारअणिसासमुग्गएण विअ पुण्णिमाचन्देण देवेण चन्दसिरिणा अहिअं णन्दन्ति पकिदीओ।**

आ बंने उक्तिओ गद्यात्मक जोवामां आवे छे. तेथी बेताळीस वरस उपर पहेली वारे छपावेला अनुवादमां में ए गद्यरूपे ज आपी हती. त्यारबाद

---

२ संस्कृत मूळमां **सर्वक्षितिभृतां, नाथ दृष्टा सर्वाङ्गसुन्दरी। रामा रम्ये वनोद्देशे मया विरहिता त्वया॥**, एवो श्लोक छे. ते बदल, **सर्वाङ्गसुन्दरी सा सर्वेषां क्षितिभृतां क्षितौ नाथ। रामा रम्येऽरण्ये मया विरहिता त्वया दृष्टा॥**, एवी आर्या गोठवीने में अनुवाद कर्यो छे. जुओ **पराक्रमनी प्रसादी** (आ. ६) उपोद्० पृ ३९

३ जुओ मारू संस्कृत **मुद्राराक्षस** (आ. ३), पृ १४-१५.

त्रीजी आवृत्ति तैयार करतां देवेण चन्दसिरिणा अहिअं णन्दन्ति पक्कि-दीओ ए भाग उपर मारूं लक्ष गयूं. में जोयूं के ए चोक्खुं आर्यानुं उत्तर दल छे. ते उपरथी पूर्व दलनो उद्धार करी सन्तं पावं। पछी आखी आर्या मे नीचे प्रमाणे गोठवी.

णं सरअपुण्णमासीसमुग्गएण विअ पुण्णचन्देण।
देवेण चन्दसिरिणा अहिअं णन्दन्ति पक्किदीओ॥

टूंकामां पद्यनूं स्वरूप ज एवूं कोइ अपूर्व छे, के ते दृष्टिए पडतां के जीभे चडतां पद्य तरीके ओळखाई ज आवे छे. त्यारे हवे विचारवानूं रहे छे, के गद्यमांथी पद्यरचना केवी रीते प्रगटी?

२ पद्यरचनाना प्रकार अनेक छे. अमुक भाषामां फलाणी ज पद्यरचना केम रूढ थई, ते ए भाषानूं बंधारण तपासी जोयाथी समजाय छे. इंग्रेजी भाषानो दृष्टांत लेइये. एनूं विशेष लक्षण Accent एटले शब्दभार छे. एमां एक वरडीना ए शब्द छे अने अनेक वरडीना ए छे. बीजा वर्गना शब्दनी अनेक वरडी पैकी एक वरडी उपर खास भार आवे छे, एटले के ते भार दईने बोलाय छे; अने भारयुक्त सिवायनी वरडी के वरडीओ भारमुक्त रहे छे. पहेला वर्गना शब्दमां केटलाक भारमुक्त अने बीजा भारयुक्त होय छे. शब्द एक वरडीनो हो के अनेक वरडीनो, तेनो उच्चार करतां भारयुक्त वरडी भार मूकीने अने भारमुक्त भार मूक्या वगर ज बोलाय छे. सिद्ध के साधित, हरेक बोलमां शब्दभारनी व्यवस्था सुस्थापित जोवामां आवे छे. Conduct' क्रियापद छे, तेमां बीजी वरडी उपर भार छे. ए क्रियापद उपरथी Con'duct नाम बने छे, तेमां पहेली वरडी उपर भार आवे छे. तेवी ज रीते Conductiv'ity बोलमां त्रीजी वरडी उपर अने Conductibil'ity बोलमां चोथी उपर भार मूकाय छे. आ Accent एटले शब्दभारना विशेष लक्षणना मजबूत पाया पर इंग्रेजी पद्यरचनानो हवाई महेल चणायो छे. भारयुक्त अने भारमुक्त वरडीनी विविध मेळवट्ट गोठवणथी, Iambic,

Trochee, Anapest वगेरे संधि नीपजे छे. Iambic अने Trochee संधिमां बे बे वरडी होय छे. पहेली भारमुक्त तथा बीजी भारयुक्त वरडीनो Iambic अने पहेली भारयुक्त तथा बीजी भारमुक्तनो Trochee संधि थाय छे. Anapest संधिनी पहेली बे वरडी भारमुक्त अने त्रीजी भारयुक्त होय छे. निरनिराळा संधिना आवर्तनथी निरनिराळा पद्यबंध रचाय छे.

३ इंग्रेजी पद्यरचना ए भाषामां प्रवर्तता शब्दभारना तत्त्वने अवलंबीने ऊभी थई छे, तेवी ज रीते आपणी भाषाना उच्चारनां विविक्त तत्त्वोने आधारे आपणी पद्यरचना पण प्रकटी छे. व्याकरणमां जेने मूळाक्षर कहे छे, तेना वडे शब्दो बने छे; अने शब्दो वडे वाक्यो रचाय छे, जेनाथी आपणो व्यवहार चाले छे. वाणी मूळाक्षरोनो विस्तार छे. उच्चारनां ए बीजोनो मोटो भाग व्यंजन छे. बे के वधारे व्यंजन एकठा मळी संयुक्त व्यंजन बने छे. मूळाक्षरोनो बीजो भाग जे स्वर, ते संख्यामां थोडा छे. मात्र तेमनो ज स्वतंत्र उच्चार थाय छे. व्यंजन संयुक्त हो के असंयुक्त हो, तेनो स्वरनी सहायता वगर पूरो उच्चार थतो नथी. शब्दना प्रत्येक पूर्ण उच्चारायला अवयवने वर्ण अक्षर के वरडी कहे छे. वरडीनो स्वर ह्रस्व के दीर्घ होय छे. ते अणथडकाता ह्रस्व स्वरना रूपमां छंदनी परिभाषा प्रमाणे लघु लेखाय छे अने दीर्घ स्वरना तेम ज थडकाता ह्रस्व स्वरना रूपमां ते गुरु गणाय छे. आ रीते वर्णनां बे रूप ठरे छे, लघु अने गुरु. स्वरनुं वजन ते मात्रा. अणथडकाता ह्रस्व स्वरनी एक मात्रा, अने दीर्घ स्वरनी तेम ज थडकाता ह्रस्व स्वरनी बे मात्रा गणाय छे. त्वरित अने विलंबित उच्चार कर्याथी वर्ण रूप अने मात्रानो विवेक लय(एटले कालमान)ना धोरणने अनुसरे छे. आ चतुर्विध तत्त्वना लेखानो एक दृष्टांत लेइये. सद्रूप ब्रह्मनो पक्ष स्वीकारनारा मुमुक्षुनो पराभव करवाने षड्रिपुनुं लश्कर चडी आवे छे. तेमनां ऊघाडां खांडां सामे धपवाना अने फतेह करवाना उत्साहमां मुमुक्षु जीव मनने पडकार करीने कहे छे के ' खबरदार मनसूबाजी ! खांडानी धारे चडवूं छे.

हिंमते हथियार बांधी, जी, सत लडाइए लडवूं छे.' आ उक्तिना वर्ण गणिये तो ओगणचाळीस छे. एमां लघु रूप अढार अने गुरु रूप एकवीस छे. एनी मात्रानो सरवाळो साठ आवे छे. ए उक्ति लयबद्ध वांचतां एना लयना एक मनो अर्थात् [४]लयनो आंकडो चुंवाळीस थाय छे. लयनूं लेखूं करवानी पद्धति सामान्य रीते बहु जाणीती नथी. संगीतनो परिचय धरावनारने ते सहेल छे. प्रस्तुत दृष्टान्तना लयनूं लेखूं मारी समजमां नीचे प्रमाणे छे.-

खबरदार मनसूबाजी ! खांडानी धारे चढवूं छे.
१ १ ०॥ १ ०॥ ०'।०॥२ २ २ -१ १ १ १ १ १ १ १ १ २

हिंमते हथियार बांधी,जी, सतलडाइए लडवूं छे[५].
१ १ ०॥ १ ०॥०॥०॥ २ २ २ १ ०॥०॥१ १ १ १ १ २ २

अहीं में लयनो अंक प्रत्येक वर्ण तळे आप्यो छे. प्रस्तुत दृष्टांतथी आपणी वाणीमां चार तत्त्व प्रवर्तता जडे छे, वर्ण, रूप, मात्रा अने लय. पहेलां त्रण तत्त्व वास्तविक जोडणीमां रह्यां छे. चोथूं तत्त्व उच्चारणमां समायूं छे. आ तत्त्वोनो मेळ गद्यमां होतो नथी अने अपेक्षित् पण नथी. गद्यनी रचना शीघ्रबोधपरायण छे. एनूं ध्येय अर्थबोध छे. मेळ ए ध्येयनी सिद्धिनूं ऐकांतिक साधन नथी. परंतु पद्यनी रचना तो मेळ वगर शक्य ज नथी. पद्यनो आत्मा मेळ छे. मेळरूपी जीव विना पद्यनो जन्म संभवतो नथी. पद्यनी रोचक रचनामां कोइ पण प्रकारना मेळनो आश्रय आवश्यक छे. उक्त तत्त्वो पैकी कोइनो ए मेळ गूजराती पद्यरचनानूं व्यावर्तक लक्षण छे. मेळ विनानी वर्ण रूप मात्रा अने लयनी घटनाथी कोइ पण पद्यरचना साध्य नथी.

४ मेळ अने संवाद ए बे एक ज अर्थना शब्द छे. वर्ण, रूप, मात्रा

---

४ लय बोल कालवाचक छे. एक मात्रानो वर्ण बोलतां जे समय रोकाय ते लय.

५ आ धोळ भगतना एक पदना टेकनो भाग छे. एनी पहेली पंक्तिमां चालु तानपूरक 'रे' बदल मानवाचक 'जी' होवाथी बीजी पंक्तिमा अने तपछीनी कडीओमां पण में 'जी' पाठ लीधो छे

अने लयनो मेळ ते शुं, ए वधारे स्पष्ट थवानी जरूर छे. पद्य गद्यथी जुदुं, ते मेळ अने अणमेळना मुद्दाथी ओळखाय छे. गद्यात्मक रचनामां अन्वयने अनुसरीने वाक्यना विविध भाग पडे छे. प्रत्येक भागमां आद्य अक्षर भार मूकीने बोलाय छे. ए भारने आपणे गद्यभार संज्ञा आपीशुं. एने लीधे वाक्यना भाग जुदा जुदा परखाय छे. आ गद्यभारवाळा भाग बहुधा वर्ण, रूप, मात्रा के लयनी चोकस व्यवस्था वगरना होय छे. पद्यात्मक रचनामां चोकस उच्चारणना जूथनो एक एक भाग बने छे. तेनी घटना वर्ण रूप मात्रा के लयनी चोकस व्यवस्था सर होय छे; अने घणूं करीने तेना आद्य अक्षर उपर भार पडे छे, जेने पद्यभार नामथी ओळखावीशूं. जे चोकस व्यवस्थाने लीधे पद्यमां पद्यत्व आवे छे ते मेळ के संवाद. गद्यनो अणमेळ अने पद्यनो मेळ उदाहरणथी समजाय एवो छे. '(१) भूतळना लोके (२) एकसमे (३) इन्द्रभुवनमां जैने (४) जुदी जुदी भेट (५) भावथी (६) धरावी हती.' ए गद्यना आकारमां अणमेळनो दृष्टांत छे. एना अन्वयानुसारी छ भाग वर्णसंख्यामां न्हानामोटा होई मेळ विनाना छे. ए ज फकरानां चार चार वर्णनां जूथ पाडीने आद्य अक्षर उपर भार मूकीने वांचतां ए कवित नामे वर्णमेळनूं चरण बनी रहे छे. पद्यभारवाळी रचना नीचे प्रमाणे.

(१) भूतळना (२) लोके एक (३) समे इन्द्र (४) भुवनमां (५) जैने जुदी (६) जुदी भेट (७) भावथी ध (८) रावी हती[१].

प्रस्तुत दृष्टांतमां प्रत्येक पद्यभागनी चतुर्वर्णात्मक व्यवस्थित घटना ए वर्णसंवादनुं तत्त्व छे. हवे रूपरचनाने अनुलक्षीने पद्यगद्यनो मेळअणमेळ तपासिये. '(१) जे (२) निराश न थई (३) मच्यो रहे, (४) ते ज (५) इष्ट सुखनी घडी (६) जुए' ए वाक्यना गद्यानुसारी छ भाग छे; ए भागोमां लघुगुर्वात्मक रूपरचनानी व्यवस्थित घटना नजरे पडती नथी.

---

१ फार्बसविलासमांना एक कवितनूं आ पहेलूं चरण छे. असलमां दरेक चरणना अंते 'छे' बोल राख्यो छे ते बदल में 'हती' बोल धापर्यो छे.

ए गद्यना आकारमां अणमेळनूं उदाहरण बने छे. एनो ए ज वाक्यने दुभागीने प्रत्येक भागना नीचे प्रमाणे नवेसर पेटाभाग पाडिये, तो अप्रकट मेळ प्रकट थाय छे.

(१) जे निराश (२) न थई (३) मच्यो रहे,
(४) ते ज इष्ट (५) सुखनी (६) घडी जुए[७].

एनो पहेली पंक्तिना त्रण भाग रूपरचनामां बीजी पंक्तिना त्रण भाग साथे अनुक्रमे मळता आवे छे. नवेसर गोठवणीमां गद्यभार जतो रही पद्यभार प्रगटी प्रस्तुत वाक्य रथोद्धता नामे रूपबंधना आधैयाना आकारे मेळनूं उदाहरण थाय छे. गद्यमां अर्थसाधक विराम आवे छे. पद्यमां कहींक कहींक मेळसाधक विराम लेवो पडे छे, जेने यति कहे छे. यतिवाळा रूपात्मक पद्यनो मेळ अने गद्यनो अणमेळ पण लक्षमां लेई जोइये. '(१) मोते चाख्यूं (२) केम (३) राख्यूं रखाय ?'—ए त्रिधा भक्त गद्य मेळरहित छे. तेना पद्यानुसारी पांच भाग पाडी बीजा भाग पछी यतिकृत विराम लीधाथी नीचे मुजब मेळवाळी पंक्ति नीपजे छे.

(१) मोते (२) चाख्यूं (३) केम (४) राख्यूंर (५) खाय ?[८]

शालिनी नामे सयतिक रूपबंधनूं आ एक चरण छे. मात्रात्मक पद्यनो मेळ अने गद्यनो अणमेळ पण पद्यभार अने गद्यभारनां स्थान बदलातां होवाने लीधे तरत ज देखाई आवे छे. पद्य तरीके जेना

(१) अवदशा अप (२) मान खमवा (३) ने ज छे[९]

एना सात सात मात्राना अंतरे त्रण भाग पडी मेळमां आवी रहे छे,

---

७ आ वाक्य **पराक्रमनो प्रसादी**(आ.६)ना चोथा अंकमांथी लीधूं छे.

८ आ वाक्य **रघपत्तनो सुंदरी**(आ.२)ना छठ्ठा अंकमांथी थोडोक फेरफार करी ऊतार्यु छे.

[illegible]

ते ज वचननो गद्य तरीके अणमेळ न्यूनाधिक भाषना ' (१) अवदशा (२) अपमान खमवाने ज (३) छे ' एवा भागमां तरी आवे छे. तेवी ज रीते लयात्मक पद्यरचनामां मेळापी पद्यभारथी मेळ सिद्ध थाय छे, अने गद्यमां अणमेळापी गद्यभारने लीधे अणमेळ दृढ थाय छे. लयात्मक पद्यरचनानी मूळप्रकृति वर्णात्मक रूपात्मक के मात्रात्मक होय छे. आथी करीने वर्णलय रूपलय अने मात्रालय ए त्रिधा विकृतिना दृष्टांतमां ऊतरवानी अगत्य जणाती नथी. आपणी वाणीमां वर्ण रूप मात्रा अने लयनां जे तत्त्व कह्यां, ते-मांथी वर्णमेळ, रूपमेळ, मात्रामेळ अने लयमेळ, ए चार मेळ प्रगटचा छे. ते गूजराती पद्यरचनाना चार अणखूट अणतूट सजीवन झरा छे. सुस्थापित सुव्यवस्थित रोचक रचना ते पद्यनो मेळ. इंग्रेजी कवितामां अमुक प्रकारनो मेळ छे, गूजरातीमां तेनाथी जुदा प्रकारना मेळ छे; एटले के उभयमां मेळ तो छे छे ने छे. 'मेळ वगरनूं पद्य' ए उभयमां वदतो व्याघात छे.

५ केटलाक विदेशीय तेम ज स्वदेशीय विद्वाननूं मानवूं छे के गूज-राती शब्दोच्चारमां शब्दभारनूं तत्त्व रहेलूं छे[१०]. ते तत्त्व इंग्रेजी Accent (शब्दभार)ना जेवूं छे. शब्दनी अमुक वरडी भार देईने अने इतर भार दीधा वगर बोलाय छे. अर्थात् एओना कहेवा मुजब गूजराती भाषाना बोल शब्दभारवाळी अने शब्दभार विनानी वरटीना बनेला छे. आ शब्द-भार स्थापित थाय, तो इंग्रेजी जेवी शब्दभारमूलक पद्यरचनानी शक्यता गूजरातीमां विचारवी रहे- अत्यारे तो ए संबंधमां कंइ पण निर्णयात्मक निरूपण कराय एम नथी. ऋग्वेदनी वाणीमां आरोहावरोहात्मक शब्द-भार विद्यमान छतां तन्मूलक पद्यरचना प्रगटी नहि; अने गूजरातीमां दबाण-ना स्वरूपनो शब्दभार होय ते छतां तन्मूलक पद्यरचना न पण प्रगटे; अथवा प्रगटीने पण सफळ न नीवडे. भारना संबंधमां अहीं एक बाबतनी नोंध लेवानी जरूर जणाय छे. इंग्रेजीमां भार अचळ छे. गद्यमां जे वरडी उपर

---

१० रा. रा. नरसिंहरावे Accentना अर्थमां स्वरभार बोल योजेल छे.

भार मूकाय छे, ते ज वरडी उपर ए भाषामां पद्यमां पण भार पडे छे; शब्दनी बीजी कोइ वरडी उपर ते आघोपाछो ठेली शकातो नथी. गूजरातीमां वाक्यना वधा ए शब्द उपर भार पडतो जणातो नथी; प्रत्येक अन्वयसिद्ध खंडनो आद्य शब्द खास भार मूकीने बोलाय छे. म्होवडना स्थानथी चलित थई बीजूं कोइ अन्वयसिद्ध स्थान ते पामे छे, त्यारे भार दीधा वगर उच्चाराय छे. कोइ पण खंडना भार मूकी बोलाता आद्य बोल सिवायना बीजा बोल भार देईने बोलाता जोवामां आवता नथी. एटले के गूजरातीमां भार इंग्रेजीनी पेठे शब्दसिद्ध नथी पण स्थानसिद्ध छे. गद्यरचनाना अन्वयवळे स्थानसिद्ध भारने में गद्यभार अने पद्यरचनाना संवादवळे स्थानसिद्ध भारने मे पद्यभार संज्ञा आपी छे. गद्यभार अने पद्यभार सर्वना जाणीता छे. इंग्रेजी शब्दभारमूलक पद्यरचना जेवी तो नहि, पण वर्ण, रूप, मात्रा अने लय तत्त्वथी कोइ भिन्न तत्वनी पद्यरचना गद्यभारनी रोचक व्यवस्थाथी ऊपजावी होय, तो कदाच ऊपजे खरी. प्रयोग करी जोवा जोग छे. ए दिशामां अजमायश दाखल नीचेनो फकरो हूं रजू करू छू. मेळना प्रदेशमां गद्यभारनी शक्यता विचारवा पूरती ज ए उदाहरणनी योग्यता लेखववानी छे. पचीसेक वरस उपर रचेलुं ए उदाहरण[११] नीचे प्रमाणे छे. ' (१) साहित्यनूं सर्वस्व (२) रस (३) छे. (४) काव्य (५) दृश्य होय (६) के श्रव्य, (७) लेख (८) गद्य होय (९) के पद्य, (१०) बंध (११) प्रौढ होय (१२) के प्रसन्न, (१३) शैली (१४) व्यस्त होय (१५) के संक्षिप्त, (१६) पात्रथी ने वस्तुथी (१७) पाठ्यथी ने गेयथी (१८) इष्ट छे (१९) एक ज, (२०) रसनी जमावट. (२१) आर्द्रता (२२) अवनी पर (२३) टळवाय (२४) के हिमालये (२५) हिमालय (२६) बंधाय, (२७) उष्णता (२८) दावानळ

---

११ जुओ बुद्धिप्रकाश पु ५५. पृ. ९९–१००. तेमा वापरेला अनुपंगी अचळपणाना अर्थना 'प्रयत्न' बोल बदल उपर में चपळपणाना भाववाळो 'भार' बोल वापर्यो छे.

(२९) सळगावे (३०) के फूलवाडी (३१) फूलावे, (३२) वायुनी लहरी (३३) रोमे रोम (३४) कंपावे (३५) के रोमे रोम (३६) नर्तावे. (३७) एक के बीजी रीते (३८) नवनवो रंग ज (३९) जामे छे'. आ उतारना ओगणचाळीस गद्यभारकृत खंड छे. ते पद्यनी रीतनी पंक्तिओमां नीचे मुजब गोठवाय छे.

(१) साहित्यनूं सर्वस्व (२) रस (३) छे.
(४) काव्य' (५) दृश्य होय (६) के श्रव्य,
(७) लेख' (८) गद्य होय (९) के पद्य,
(१०) बंध' (११) प्रौढ होय (१२) के प्रसन्न,
(१३) शैली' (१४) व्यस्त होय (१५) के संक्षिप्त,
(१६) पात्रथी ने वस्तुथी
(१७) पाठ्यथी ने गेयथी
(१८) इष्ट छे (१९) एक ज,
(२०) रसनी जमावट.
(२१) आर्द्रता (२२) अवनी पर (२३) ढळवाय
(२४) के हिमालये (२५) हिथालय (२६) बंधाय,
(२७) उष्णता (२८) दावानळ (२९) सळगावे'
(३०) के फूलवाडी (३१) फूलावे,
(३२) वायुनी लहरी
(३३) रोमे रोम (३४) कंपावे
(३५) के रोमे रोम (३६) नर्तावे.
(३७) एक के बीजी रीते
(३८) नवनवो रंग ज (३९) जामे छे.

पहेली नकलना गद्यभारकृत भाग ज बीजी नकलना पद्यभारकृत भाग छे. बीजी वारना उतारानी बीजी त्रीजी चोथी अने पांचमी पंक्तिमां पहेला

अने बीजा भाग वच्चे यति छे, ते वचगाळामां टूंकी ऊभी लीटी दोरीने बतावी छे. प्रस्तुत उदाहरणमां मेळ सधातो होय, तो ते साधनारूं तत्व वर्ण, रूप, मात्रा अने लयथी व्यतिरिक्त होवूं घटे छे. शाथी जे वर्णमेळ, रूपमेळ, मात्रामेळ अने लयमेळमां पद्यभार गद्यभारथी भिन्न होय छे, अने अहीं ते अभिन्न छे. ए मेळ ते वाक्यभारात्मक मेळ भासे छे. इंग्रेजीमां जेने Rhythmic Prose (मेळबद्ध गद्य) कहे छे, तेमां अने आमां भेद छे. पहेला प्रकारमां जे संधि जोवामां आवे छे, ते शब्दभार(Accent)-कृत छे; बीजा प्रकारमां ते गद्यभारकृत छे. शब्दभारकृत संधि आवृत्त होय छे; गद्यभारकृत संधि तो अनावृत्त छे. एकमां आवर्तनने लीधे मेळ आपोआप जळवातो होवाथी यतिने स्थान ज नथी; अन्यमां ए साहजिक अनुकूळता न होवाथी प्रसंगे इष्ट मेळ मळी रहेवा माटे मध्य यति आवश्यक बने छे. छेल्ली कहेली विशिष्टता बीजा प्रकारने गद्यमां गणवा ना पाडे छे. पद्यनी जरूरियातनो विराम जे यति, ते गद्यने नाकबूल छे, अज्ञात छे. ए यतिनो झोक पद्य तरफ छे; मक्कमपणे कहीशूं के गद्यना विरुद्ध छे. आगळ जणाववामां आवशे तेम पद्यनी यति गद्यना विरामथी तद्दन भिन्न छे. ए यतिने लीधे उदाहृत नवतर रचना एक तरफ जेम इंग्रेजी Rhythmic Prose(मेळबद्ध गद्य)थी जुदी पडे छे, तेम अनावृत्त संधिने लीधे बीजी तरफ आपणी लयात्मक पद्यरचना, जे हवे पछी वर्णववामां आवशे, तेनाथी पण ए जुदी पडे छे. आपेला उदाहरणमां पद्यसर्जनना चतुर्विध मेळ सिवायनो मेळ छे के नहि, तेनो निर्णय कवि अने विवेचक करशे. दिविक्षुने प्रस्तुत प्रश्न स्वयं विचारवो सरळ थाय एवा उद्देशथी बीजो एक दृष्टान्त हूं अहीं उमेरूं छूं. शिष्ट गद्यना आद्य दृष्टा कवि नर्मदना नर्मगद्यमांथी में ए दृष्टांत लीधो छे. कविए रचेला राज्यरंगनी ए उत्थानिका छे. ए प्रसन्नगंभीर गद्यसंदर्भना विविध खंडमां प्रवर्तेल एक प्रकारनूं समतोलपणूं वाचकनूं लक्ष खेंचे छे. ए समतोलपणामां साकार थती गद्यभार अने पद्यभारनी एकताने लीधे भारकृत संवादनी जमावट थाय छे; अने गद्यात्मक

स्थूळ शरीरमां रहेला पद्यात्मक सूक्ष्म शरीरनी झांखी थाय छे. एनी रूपरेखा नीचे आपेला उताराथी स्पष्ट थशे.

एक छे' अनेक छे.
निवर्ते छे, प्रवर्ते छे, आनंदे छे.
एकने' अनेक अर्थ छे.
एकने' अनेक काम राजे छे.
एकने' अनेक धर्म प्रतापे छे.
प्रेम पोषे छे, शौर्य प्रकाशे छे ने जय विलासे छे.
सर्व काळ श्रीरंग.   १

बीज, वृक्ष ने फळ!
लय, उत्पत्ति ने स्थिति!
स्वभाव, ज्ञान ने योग!
सदुदेशो ने सत्कर्म!
अकळ लीला, अकळ शक्ति ने अगाध ज्ञान!
प्रेमभक्त हुं वंदुं छुं.
विजय विजय, श्रीरंग!   २

पृथ्वी उपर जनसमूह शुं?
राज्य शुं?
राज्यना रंग शुं?
नर्मद शुं?
ए सघुं
रससिंधुना कांठा परनी कणिका पण नथी.
तो पण ते कांइ छे ने रंग छे.
ए रंग
हुं मारी तोतळी वाणीए वर्णववा इच्छुं छुं.

दे प्रसाद रंगाडं.
उदय उदय श्रीरंग! ३

सूर्यमाळानो एक ग्रह आ पृथ्वी
पाणी वायु तेज आकाशथी वेष्ठित छे;
उद्भिज्ज प्राणी इत्यादि समृद्धिथी भरपूर छे;
पोतानो ने पोतानी उपरनानो संसारव्यवहार
नियमपूर्वक सदैव वर्तमान विराजित
राखे छे.
ए महारंगमांना अंशमां एक जनरंग छे;
ने ए वंशमां एक कुळ राज्यरंग छे.
ए प्रतापी छे,
जनना सुखदुःखनुं महाकारण छे. ४

× × × × ×

सर्वकाळे अनेक राज्यो थपायां अने लय पाम्यां.
केवी रीते मंडायां,
केवां शोभ्यां,
ने केम क्षय पाम्यां,
पाछां नवां थयां, दीप्यां अने गयां?
ए रूपांतरोमां जे विधविध दर्शन,
ते राज्यरंग छे.
ए रंगनो कांइक भाग नित्य स्मरणमां रहे,
माटे आ एनो चित्रपट छे;
ने एने पण हुं राज्यरंग कहुं छुं. ५

सुरतना कविनी गद्यकृतिमांथी लीधेला प्रस्तुत अवतरणमां कवित्व, गहन कवित्व छे, ते तो सर्वकोइ स्वीकारशे. ए कविता छे तेनी साथे ए पद्य छे

एम पण ठरे, तो कविए अजाणतां गूजरातीमां पद्यरचनानो एक नवो मार्ग ऊघाडयो कहेवाय.

६ मेळना ज्ञराथी छूटतो पद्यरचनानो प्रवाह निबद्ध होय; अथवा तो अबद्ध होय. अमुक मापनी पंक्तिओना जूथमां के जूथोमां पसरतो प्रवाह ते निबद्ध. मापसर रचायली पंक्तिने चरण, पद के दल कहे छे; अने चरण के दलना जूथने छंद नाम आपे छे. चरणोनी संख्याना बंधन वगर छूटथी पसरती पद्यरचना ते अबद्ध. इंग्रजीमां स्पेन्सरकृत Faerie Queene तथा पोपकृत Iliad ए काव्यो निबद्ध पद्यरचनामां छे; अने मिल्टनकृत Paradise Lost तथा Tennysonकृत Princess अबद्ध रचनामां छे. पारसी कोमनूं अवेस्ता नामे जे प्राचीन धर्मपुस्तक छे, तेना पद्यात्मक भागमां पण अबद्ध रचनानो उपयोग छे. हिंदइरानी प्रजानां एकत्रवासी यज्ञयाजक अने आतसपरस्त जूथ छूटां पडयां ते पहेलां ए संयुक्त प्रजामां निबद्ध पद्यरचना प्रवर्तती हती. आतसपरस्त जूथे वर्णगत मेळने वळगी रही चरणोनी संख्याना बंधननो त्याग करी अबद्ध रचना खेडी. अवेस्ताना **गाथा** विभागमां ते उपलभ्य छे. इरानी अबद्ध रचना बहु व्हेली प्रगटी अने तेटली ज व्हेली लुप्त थई. आपणी भाषानूं जे पद्यात्मक साहित्य छे, ते बधूं ए निबद्ध रचनामां छे. अबद्ध पद्यरचना आपणामां छे; पण ते वर्तमानकाळनी प्रसूति छे. हजु तो ते अंकुरावस्थामां छे. एनो जेमने परिचय न होय तेवा जिज्ञासु समक्ष ए ऊठरता छोडनी एक डूंख हूं धरूं छूं:–

अहा ! दारूनो गराडी आव्यो खरो.
एणे शो गजब दारू ठांस्यो छे !
ल्हेरमां ने ल्हेरमां ए केवो डोलतो हींडे छे !
अने ए पीधेलनी बे आंखो तो,–
जाणे जासुनां ज फूल होय, तेवी

वेरी लालघूम छे[१२].

साधारण रीते छंदनां चार के बे चरण होय छे. ते जाणनारने तरत ज जणाई आवशे के आपेलो ऊतारो छंदोबद्ध नथी. एमां छ पंक्ति छे; अने ते छंदरचनाना रूढ धोरणना विरुद्ध छे. अबद्ध पद्यरचना घणे दरज्जे इंग्रेजी Blank Verseने मळती छे.

७ निबद्ध पद्यरचनाना चार प्रकार छे, वर्णात्मक, रूपात्मक, मात्रात्मक अने लयात्मक. वर्णात्मक निबद्ध पद्यने वर्णबंध कहिये छिये. प्रवर्तमान वर्णबंधमां बे के चार चरण होय छे. प्रत्येक चरण मेळमां गोठवाता वर्णनूं बने छे. वर्णबंधना बे वर्ग पडे छे, प्राचीन अने अर्वाचीन. गायत्री, त्रिष्टुभ्, ककुभ्, प्रगाथ आदि वर्णबंध छे, ते वेदमां वपराया होई वैदिक छंद कहेवाय छे. ए वर्णबंधना चरणमां ओछामां ओछा पांच अने वधारेमां वधारे बार वर्ण आवे छे. प्राचीन वर्णबंधनी विशिष्टता ए छे, के एना चरणना संधि पडता नथी, चरण टूंकां होवाने लीधे ककडा पड्या वगर बोलाय छे. बीजा दृष्टिपातमां ए प्राचीन वर्णबंध विशे विस्तारथी कहेवामां आवशे. वधारे आकर्षक रूपबंधनो उदय अने विकास थतां आ टूंकां चरणना वर्णबंध लोप पाम्या छे. ए रीते अंतर्धान पामेली वर्णबद्ध पद्यरचना चाळीसेक शतक वीत्या बाद फरी दर्शन दे छे; तेना घडतरमां परिस्थिति अनुसार फेर पडे छे. संधिवाळा रूपबंध अने मात्राबंधना सहचारमां नवा वर्णबंध पण संधिवाळूं बंधारण स्वीकारे छे. अर्वाचीन वर्णबंधना संधि त्रण छे, एक चार अक्षरनो, बीजो बेनो अने त्रीजो एकनो. पहेला संधिनां आठ आवर्तनथी गूजराती पिंगळनो घनाक्षरी छंद बने छे. एनो प्रचार हिंदी, मराठी अने बंगाळीमां पण छे. फार्बसविरहमांथी नीचे आपेलो ऊतारो घनाक्षरी छंदमां छे.

पाई पाई प्रेमपान प्रथम तें पुष्ट कर्यो;
पछी पीडा पमाडी विजोगपान पाई पाई.

---

१२ प्रधाननी प्रतिज्ञा(आ, २)मांथी आ ऊतारो लीधो छे, जुओ पृ. ११२-११३.

धाई धाइ भेटवाने आवतो हुं तारे धाम;
धीरे रही सामो ऊठी आवतो तुं धाई धाई.
गाई गाई गीत तने रीझवतो रूडी रीते;
गुजारुं छुं दिवस हुं हवे दुःख गाई गाई.
'भाइ, भाइ' कहीने बोलावतो तूं भाव धरी;
भलो मित्रतानो भाव भजव्यो तें, भाइ, भाइ!

घनाक्षरीना चारे चरणनो छेल्लो संधि एक अक्षरे अधुरो राख्याथी मनहर बनी आवे छे. उपर ऊतारेला घनाक्षरीमां ए रीतनो घटारो कर्याथी नीपजतो मनहर नीचे प्रमाणे.

पाई पाई प्रेमपान प्रथम तें पुष्ट कर्यो;
पछी पीडा पमाडी विजोगपान पाईने.
धाई धाई भेटवाने आवतो हुं तारे धाम;
धीरे रही सामो ऊठी आवतो तुं धाईने.
गाई गाई गीत तने रीझवतो रूडी रीते;
गुजारुं छुं दिवस हुं हवे दुःख गाईने.
'भाइ भाइ' कहीने बोलावतो तुं भाव धरी;
भलो मित्रतानो भाव भजव्यो ते, भाइ तें!

घनाक्षरी अने मनहर ए बे वर्णबंध कवित्त नामथी पण ओळखाय छे. वास्तविक रीते कवित ए वर्गवाचक संज्ञा छे. ए वर्गनूं विशेष लक्षण चतुरक्षर संधि छे. एक के अनेक पूरा चतुरक्षर संधिना चरणवाळो तेम ज चतुरक्षर संधिने अंते अधुरा संधिना चरणवाळो जे कोइ छंद बने, तेनो समावेश कवितवर्गमां थवो घटे छे. आ धोरणे नीचेनां बे उदाहरण पण कवित छे.

(१) बाग बगीचानी सेल जेने व्हाली लागे छे ते
जन वने भमशे ?

अन्तरनी लपटमां लटपट रे' छे तेने
वनफूल गमशे ?
माठा रागे मोहे छे ते कान पाठ्यपद भणी
एकतान नमशे ?
चमक ने झमके जे रीझे छे ते नेत्र नरी
सादाइमां रमशे ?

(२) गगनसमुद्र खेडनार शकुनीश रूपी
नावकेरा कर्णधार,
द्रोण मेघना समान भीने वान भगवान,
भीम ताप हरनार,
कार्तवीर्य अर्जुन सरीखा भीष्म युधिष्ठिर,
दुर्योधन, विष्टिकार.
रक्षो सर्वने, विराट, अभिमन्यु, आपनारा
उत्तर ऊठावनार !

बेमांनूं पहेलुं कवित अबद्ध पद्यरचनाना सादापणा विशे छे. एना प्रत्येक चरणमां त्रेवीस अक्षर छे. बीजूं पञ्चरात्र नामे संस्कृत नाटकना आदिमगलनो अनुवाद छे. तेना चरणमां चोवीस अक्षर छे. कवितवर्गमां आवनारा विविध छंदने जुदां जुदां नाम आपवानी जरूर नथी. मात्रात्मक पद्यरचनानी 'सवैयो' सज्ञा वर्गवाचक छे. तेमां बत्रीस तेम ज एकत्रीस मात्राना पद्यबंधनो समास थाय छे, अने अनुक्रमे "सवैयो बत्रीसो' तथा 'सवैयो एकत्रीसो' एवां नामथी व्यवहार थाय छे[१३]. एना ज धोरणे विविध कवितने प्रत्येकना चरणमां आवता अक्षरना अंकथी ओळखाविये, तो बस छे. फार्बसविरहमाना घनाक्षरीने कवित बत्रीसूं, तेना उपरथी ऊपजावेला मनहरने कवित एकत्रीसूं, अबद्ध पद्यरचनाना सादापणा विशेना पद्यने कवित त्रेवीसूं

१३ जुओ दलपतपिंगळ, प्रकरण २, समपद छंद २४.

अने पञ्चरात्रना आदिमंगळना अनुवादमें कवित चोवीसूं कहेवामां लाघव रहेलुं छे. कवितवर्गनो उक्त दिशामां विकास थवाथी ज्यां जेवूं योजवूं घटे तेवूं न्हानुंमोटुं कवित योजवानी सुगमता सधाशे अने चतुरक्षर संधिनो संपूर्ण लाभ लई शकाशे. बे अक्षरना अने एक अक्षरना संधि पचासेक वरस उपर मराठीमांथी लीधेला अभंग छंदमां मळी आवे छे ए छंदनूं उदाहरण नीचे प्रमाणे:-

[14]"पापवासनाओ" थाय ज्यारे क्षय"
पामशे उदय" पुण्य वृत्ति."

आ दृष्टांतमां पहेलां त्रण चरण द्व्यक्षर संधिनी त्रण त्रण आवृत्तनां बनेलां छे; अने चोथा चरणमां एकाक्षर संधिनां चार आवर्तन छे. चरणनी व्यवस्था टूंकी वेवडी ऊभी लीटीथी सूचवी छे. उक्त चतुरक्षरना त्रण आवर्तन पछी एक द्व्यक्षर संधिनी योजनाथी बे चरणनो बंगाळी पयार छंद नीपजे छे. कवयित्री रसमयीदासीए रसमयदास नामथी बंगाळीमां गीतगोविन्द रच्यूं छे, तेना चोथा सर्गना आरंभे नीचे मुजब पयार छंद छे:-

प्रेमभरे उद्भ्रान्त माधव देखि सखी
अति मन्द स्वरे कहे प्रेमभरे आँखि[15].

एकाक्षर अने द्व्यक्षर संधि अभंगमां अने पयारमां वपराया छे. एमनो वेलो वधवा पाम्यो नथी. उक्त वर्णबंध टूंका होवाथी मोटो अर्थपिंड एक छंदमां समावी शकातो नथी. चतुरक्षर संधिनो कवितवर्ग विकासशील छे. ए वर्गना विविध वर्णबंधमां न्हानामोटा अर्थनो सारी रीते समास थाय एम छे.

---

१४ स्व. भोळानाथ साराभाइना दिंडी अने अभंगना संग्रहमांथी आ ऊतारो लीधो छे.

१५ गीतगोविन्दना चोथा सर्गना पहेला श्लोकना प्राह प्रेमभरोद्भ्रान्तं माधवं राधिकासखी। ए उत्तरार्धनो आ विस्तारपूर्वक अनुवाद छे.

८ निबद्ध पद्यात्मक रूपरचना ते रूपबंध. वर्णनां बे रूप छे, लघु अने गुरु. मेळमां गोठवायलां ए रूपना रूपबंध छंद बने छे. एके एक रूपबंधमां चार ज चरण होय छे. अभिन्न मापनां चारे चरणवाळा छंदने समचतुष्पद, समपद के सम कहे छे. जेमां पहेला चरण साथे त्रीजुं अने बीजा साथे चोथुं अभिन्न मापनूं होय छे, ते अर्धसमचतुष्पद, अर्धसमपद के अर्धसम कहेवाय छे. भिन्न भिन्न मापनां चरणोनो छंद ते विषमचतुष्पद, विषमपद के विषम संज्ञाथी ओळखाय छे. प्रत्येक चरणनी समाप्ति यतिकृत विरामथी जणावाय छे. चरणनी अंदर यति आवीने तेना जे भाग पडे छे, तेने में खंड नाम आप्यूं छे. सखंड तेम ज अखंड चरणनो घटकावयव संधि छे. संधिमां एकथी वधारे अभिन्न के भिन्न रूप आवे छे. आ रीते आखो ए छंद मेळबद्ध रूपोनो बने छे ते कारणथी में तेनूं रूपबंध नाम कल्प्यूं छे. चरणनी घटनामां आवता संधिना त्रण प्रकार छे, एकल अभ्यस्त अने आवृत्त. जे संधि चरणमां लागलागट यतिकृत विरामवगर बेथी वधारे वार वपरायो होय, ते आवृत्त; लागट बे वारे वपरायो होय, ते अभ्यस्त; अने अणलागट वपरायो होय, ते एकल. छेल्ला बे संधिनो अनावृत्त संज्ञामां अंतर्भाव थाय छे. खंड यतिकृत विराम मागी ले छे, ज्यारे संधिने तेवा विरामनी जरूर नथी रहेती. उदाहरणथी उक्त परिभाषा स्पष्ट समजाशे.

ज्यां जोऊं त्यां, दिश विदिशमां, व्योममां, भोममां ते.
ज्यां होऊं त्यां, घर नगरमां, वाटमां, घाटमां ते,
मींचूं नेनो पलक भर, के आ रही भीतरे ते.
ते, ते, ते, ते ! कवण प्रगटयूं आज अद्वैत ए ते ?[११]

आ समचतुष्पद मंदाक्रान्ता छंदना प्रत्येक चरणना चार, छ अने सात अक्षरना जे ककडा पडे छे ते खंड. चार तथा छ अक्षरना खंड पछी यति

---

११ आ श्लोक जुज फेरफार साथे अमरुशतकना मारा समश्लोकी अनुवादमांथी लीधो छे. जुओ अमरुशतक (आ. ५), मुक्तक १०२.

छे ते मध्य यति; अने सात अक्षरना खंड पछी छे ते अंत्य यति. पहेला खंडमां बे बे रूपना, बीजामां त्रण त्रणना अने त्रीजामां बे त्रण तथा बे रूपना संधि छे; ते पैकी पहेला खंडना संधि अभ्यस्त अने बीजा त्रीजान, एकल छे. अर्थात् ए दृष्टांत अनावृत्त संधिनो छे. हवे आवृत्त संधिना छंदनूं उदाहरण.

तरुवृंद महीं करिणी न लही
झुरतो विरही गजराज तहीं
हसतूं सुमने निरखी वनने
पगले पगले लथडी डग ले[१७].

प्रस्तुत समपद तोटक छंदना चरणमां बे लघु अने एक गुरुथी बनेला चार संधि छे. अर्थात् ए रूपबंध आवृत्त संधिनो छे. उभय संधिनो प्रयोग अति घणो जूनो छे. पांचमा दृष्टिपातमां कहेवामां आवशे तेम अनावृत्त अने आवृत्त संधिना रूपबंध भगवान बुद्ध अने महावीरना जन्म पहेलांना छे. ए बेमांथी अनावृत्त संधिना छंद संस्कृत साहित्यकारोने अधिक प्रिय छे. आवृत्त संधिनो एक पण रूपबंध आखा सर्गमां वपरायलो, एटले के व्यापक बनेलो जाणवामां छे नहि. अगियार अक्षरना उपजातिथी मांडीने पंदर अक्षरना मालिनी पर्यंत विविध व्यापक रूपबंध काव्योमां अनावृत्त संधिना ज छे. रघु, कुमार, किरात अने माघ काव्य शोधी वळिये छिये, त्यारे चार अक्षरना तोटक अने स्रग्विणी जेवा बे त्रण आवृत्त संधिना रूपबंध एकदेशी तरीके रडचाखडया वपरायला जडे छे. ते ज काळे अनावृत्त संधिना एकदेशी एकवीस अक्षर पर्यंत पहोंची गयेला जोवामां आवे छे. घडी भर विचार करिये, तो अनावृत्त संधिना रूपबंध प्रत्ये पूर्वकाळना कविओनो पक्षपात सकारण जणाय छे. रूपरचनाना समपद छंदोमां चरण अभिन्न मापनां

१७ आ श्लोक जुज फेरफार साथे पराक्रमनी प्रसादीमांथी लीधो छे; जुओ आवृत्ति ५, पृष्ठ ६५.

छे, एटले के आवृत्त छे. तेने लीधे वैविध्य खातर संधि अनावृत्त होवानी अपेक्षा रहे छे. आवृत्त संधिमां अंतर्गत रूप ज्यां भिन्न होय छे, त्यां संधिनी आंतर घटनामां एक प्रकारनी विविधता रहे छे खरी. पण ते उक्त संधिना आगळ पडता आवर्तनथी दबाई जाय छे. ज्यां आवृत्त संधिमांनां रूप पण अभिन्न होय छे, त्यां तो वैविध्यनो भास सरखो ए रहेतो नथी. आ कारणथी संस्कृत साहित्यमां सर्वलघु अने सर्वगुरु रूपबंधनो प्रयोग बहु ज विरल छे. अनावृत्त संधिना रूपबंध कुशळ कवि रची शके छे. एनूं असाधारण पद्यत्व संस्कारी कान प्रीछी शके छे. एने मुकाबले आवृत्त संधिना रूपबंध सुसाध्य छे, अने एनूं सुग्राह्य पद्यत्व सर्व कोइ प्रीछे छे. पाछळथी धीरे धीरे रुचि आवृत्त संधिना छंद तरफ वळती जाय छे. तेमनी संख्यामां उमेरो थाय छे अने वपराट वधे छे.

९ अनावृत्त संधिनी रूपात्मक पद्यरचनामां संस्कृत साहित्यकारोए जे विजय मेळव्यो छे, ते आश्चर्य पमाडे अने मान ऊपजावे एवो छे. तेमां एके एक रूपबंध बीजा बधाथी जुदा ओळखाई आवे छे. कोइ छंदमां मात्र संधिनी गूंथणीथी सुश्लेष (Harmony) सधाय छे. कोइमां मध्य यतिना प्रयोगथी तेवी ज सिद्धि मेळवाय छे. टूंका चरणनी घटनामां मध्य यतिनी बहुधा जरूर पडती नथी. अगियारथी चौद अक्षरना रूपबंध मोटे भागे मध्य यति रहित होय छे[१८]. सत्तर अक्षरपूर चरण छतां पण जेमां मध्य यति अपेक्षित नथी एवो एक अपवादभूत रूपबंध छे, पृथ्वी. यतिनो सिद्धांत मूळ स्वरूपमां न समजायाथी एमां आठमा अक्षर पछी छांदसोए मध्य यति कल्पी छे, पण ते सिद्धांतथी अने दृष्टांतथी अनावश्यक ठरे छे. मध्य यतिना प्रयोगथी चरणना बहुधा बे अने क्वचित् त्रण खंड पडे छे. तेमां जे स्थळे मध्य यति आवश्यक होय छे, त्यां विराम लीधा वगर चरण बोली

१८ बार एणना द्रुतविलम्बित छंदमां चोथा सातमा अने दसमा अक्षर पछी यतिनो प्रचार पडी गयो छे, ते भूलभरेलो छे. ए रूपबंधमां मध्य यति छे ज नहि.

शकातूं ज नथी; अने गमे तेम बोलिये छिये, तो सुश्लेषना अभावने लीधे श्रोताना कानने त्रास ऊपजे छे. पृथ्वी छंदनूं चरण वच्चे विराम लीधा वगर भली रीते बोली शकाय छे. एथी एमां मध्य यतिनो संकेत छे नहि. मध्य यति सुश्लेषसाधक छे, त्यारे अंत्य यति चरणांतसूचक छे. पृथ्वी सिवायना लांबा चरणना अनावृत्त संधिना रूपबंधमां मध्य यति आवश्यक छे; जो के टूंका चरणमां मध्य यतिनो प्रयोग नथी थतो एम कंइ छे नहि. ऐतिहासिक दृष्टिए मध्य यतिनो प्रचार बहु जूनो छे, एटले टूंका चरणमां पण ते मळी आवे छे. अगियार अक्षरनो शालिनी छंद जूनामां जूनो मध्ययतिक रूपबंध संभवे छे. एना चरणना आरंभे एक गुरु रूपना वधाराथी वैश्वदेवी नामे छंद नीपज्यो छे. शालिनीमां चोथा अक्षर पछी अने वैश्वदेवीमां उक्त वधाराना कारणथी पांचमा पछी मध्य यति आवे छे. प्रस्तुत बे रूपबंधना चरणना बे बे खंड पडे छे. मंदाक्रान्ता अने स्रग्धरानां चरण त्रण त्रण खंडनां छे. संस्कृत साहित्यमां वपरायला आवा अनावृत्त संधिना न्हानामोटा रूपबंध साठेक छे. तेमनी उत्पत्ति इसवी सनना आरंभनी आसपासनां आठसें आठसें वरसना गाळामां थई छे. गयां बारसें वरसना गाळामां एक पण अनावृत्त संधिनो रूपबंध नवो सरजायो नथी. आ वर्गना जे जे छंद आजपर्यंत गूजरातीमां वपराया छे, ते बधा ए संस्कृतमांथी लेवामां आव्या छे. एक ज एनो अपवाद मारा जाणवामां छे. ते हूं नीचे आपूं छूं.

नवनीत नवलकिशोरे चोयूँ चोयूँ चपाचप, हो रे.
नवनीत नवल निचोरे. कायँ कायँ हृदे रूप कोरे.
नवनीत नवल चिकोरे अंगो अंगे [१९]कचेष्टित मोरे.
नवनीत नवल चकोरे धारी धारी युवा-मणि चोरे.

जणाववानी जरूर नथी के आ अवतरण रोपदर्शिका सत्यभामा आख्यान नामे नाटकनी प्रस्तावनामांथी लीधूं छे. घणाए ते वांच्यूं हशे; पण

१९ मुद्रित पाठ 'कुचेष्टित' छे. श्लेषनी खातर नवो पाठ 'कचेष्टित' कल्पवो पड्यो छे. संस्कृतमां एकाक्षरी क शब्द कामदेव शब्दनो पर्याय छे.

क्षण भर विचार्यूं नहि होय के ए कयो छंद हशे अने एनुं बंधारण ध्यानमां लेतां एनो उद्भव कया काळमां थयो हशे? एनो अर्थ पण पूरो बेठो न होय, तो तेमां कंइ नवाई पामवा जेवूं नथी. कर्ताए बीजा चरणमां सं. 'निचोल'(वस्त्र)ना अंत्य लकारनो रकार करी नांख्यो छे, 'पण 'ना अर्थनो 'ए' अव्यय तेमां भेळवी दीधो छे, तथा पूर्व चरणमांथी 'चोर्यां' क्रियापद-नो अन्वादेश करी लेवानो राख्यो छे; त्रीजा चरणमां सं. 'चिकुर'(वाळ)-ने ठेकाणे 'चिकोर' वापरी तेमां दर्शक सर्वनाम 'ए' मेळव्यूं छे; अने चोथा चरणमां 'चकोर' शब्दमां दर्शक 'ए' फरीने भेळवी लीधो छे. मरीना आ गायनमां गोकुळवासिनीना मुखे गोकुळनी कृष्णलीलानूं, अने मथुरा-वासीने मुखे स्यमंतक मणिनी चोरीना कथानकनूं निरूपण छे. गोकुळवासिनी कहे छे के 'किशोर अवस्थामां अरे नवलकिशोरे गोपीओनूं मांखण चपाचप चोरी खाधूं हतूं, हो. वळी एमणे कात्यायनीव्रतनी नवतर प्रक्रियाथी गोपी-ओनां सुंदर वस्त्र पण छानांमानां हर्यां हतां. ते ते चरित्रे एमनूं रूप गोपी-ओनां हृदयमां एओ कोरे छे. मोरपिच्छथी अपूर्व शोभता वाळवाळा कृष्णना प्रत्येक अंगमां भय के संकोच वगर प्रेम(क=काम)नी चेष्टा पांगरे छे. ते चडे ए नवनवी युक्ति(नीत)वाळा असाधारण चकोर कृष्ण रत्नरूप युवति-ओने नजरमां राखी हरे छे.' सत्राजित्‌ना पक्षनो मथुरावासी कहे छे के 'किशोरावस्थामां अरे ए कारमा छोकराए गोपीओनूं मांखण चपचप चोरी खाधूं हतूं, हो. वळी एणे कात्यायनीव्रतनी नवतर प्रक्रियाथी गोपीओनां सुंदर वस्त्र पण चोर्यां हतां. तेना प्रत्येक चरित्रथी ते पोतानूं खरूं रूप मनुष्यना हृदयमां कोरे छे. कोइनो पण भय न राखनारा ए मोरपिच्छथी शणगारेला केशवाळो कृष्ण, अंगोपांगे कुकृत्य ज कहेवाय एवा कामनो करनारो छे. तेटला माटे, स्यमंतक मणिने नजरमां घालीने चोरे, तो ए नीतिभ्रष्ट मारे चकोर जवान ज चोरे.' आ छंदनूं नाम संस्कृत हिंदी अने गूजराती पिंग-ळमां में शोध्यूं पण जडचूं नहि. तेथी जूनी प्रथाने अनुसरी में तेनूं नवनीत नाम कल्प्यूं छे. एनूं रूपचित्र (graph) नीचे प्रमाणे छे:—

લલ ગાલ લલલલ ગાગા" ગાગા ગાગા" લ ગાલલ ગાગા".

નવનીત વૃત્તના પહેલા અને ત્રીજા ખંડના આરંભે અનુક્રમે બે અને એક રૂપ ભારમુક્ત છે. નિર્દિષ્ટ આરંભક ભારમુક્ત રૂપ ઉભય પ્રસંગમાં જો એકધારાં બે બે રાખ્યાં હોત, તો રાખી શકાત. પરંતુ ત્રીજા ખંડમાં કવિએ આરંભક ભારમુક્ત રૂપ એક જ રાખ્યૂં છે તે બુદ્ધિપૂર્વક ભિન્નતા આણવાના ઉદેશથી રાખ્યૂં જણાય છે. મધ્ય યતિ બે સ્થાને ગોઠવી છે, તેના પણ ભિન્ન ભિન્ન ઉદેશ છે. ગાગા સંધિ ચરણમાં લાગલાગટ ત્રણ વાર આવી જઈ આવૃત્ત બનત, તે પ્રસંગ દૂર કરવા તેણે દસમા અક્ષર પછી મધ્ય યતિ મૂકી છે. એનાથી અનાવર્તનનૂં ધોરણ સચવાય છે. બીજી વારની મધ્ય યતિ જુદા કારણ સર છે. ત્રીજા ખંડનૂં આરંભક એકલ લઘુ રૂપ સુશ્લેષનૂં વિરોધી છે. પ્રસ્તુત રૂપથી ઉપસ્થિત થતો વિશ્લેષ ટાળ્યાને કવિએ બીજી મધ્ય યતિનો પ્રયોગ કર્યો છે. આ અને અન્ય ગૌણ બાબતમાં તેણે જે ઝીણવટ વાપરી છે, તેથી છંદોવિદ્યામાં એની અસાધારણ કુશાળ્તા પ્રતીત થાય છે. સંસ્કૃત સાહિત્યના અનાવૃત્ત સંધિના રૂપબંધનો કવિને ગાઢો પરિચય હોવો જોઈએ; અને તેની સાથે પોતે ઊંચી સર્ગશક્તિ તથા કલામયતા ધરાવતો હોવો જોઈએ. પ્રસ્તુત આખ્યાનનાટકનો કર્તા કૃષ્ણસૂનુ પ્રેમાનંદ ભટ કહેવાય છે. દેશીબદ્ધ અનેક આખ્યાનોનો કર્તા કૃષ્ણસુત પ્રેમાનંદ ભટ તે જ આ આખ્યાનનાટકનો કર્તા કે અન્ય કોઈ, એ પ્રશ્ન બહુ વખતથી ઘોળાય છે. શામળશાહના વિવાહને છેડે આખ્યાનકાર પ્રેમાનંદ શામળશાહને મ્હોડે કહેવરાવે છે[૨૦] કે 'મારા પિતાશ્રી જો કે દેશીમાં લખે છે, તથાપિ છંદ રચવા સમર્થ છે; તમે કહો તે છંદમાં એ કાવ્ય રચે.' શૂં આ શબ્દોમાં નરસિંહ મહેતાને ઓઠે રહી આખ્યાનકાર પ્રેમાનંદ છંદની દિશામાં પોતાની પ્રવૃત્તિનો નિર્દેશ કરવા માગે છે? લયાત્મક દેશીબદ્ધ પદ્યરચનામાં પરમ સિદ્ધિ પામનાર કવિ સંસ્કૃત સાહિત્યના પરિચયથી અને ઈશ્વરદત્ત સર્ગશક્તિ તથા કળાકુશાળતાના યોગથી નિબદ્ધ પદ્યરચનાના બીજા

૨૦ જુઓ પ્રેમાનંદકૃત શામળશાનો વિવાહ, કડવૂં ૪૫, કડી ૩૦, પૂર્વાર્ધ, 'ઇચ્છા હોય તમારી, તો કહો તે વૃત્તમાં કવિતા એ કહે રે.'

मार्गमां पण पगदंडो चलाने अने नवनीत जेवो अनावृत्त संधिनो लयात्मक रूपबंध सरजे, ए न मनाय एवुं लागतुं नथी. जयदेवे छंद अने प्रबंध बंने पद्यप्रकार खेड्या छे[२१] तेम प्रेमानंद पण देशी अने छंद बंने खेडे, ए असंभवित नथी, बल्के संभवित छे. आख्याननाटको अने आख्यानकाव्योनो कर्ता ते देशीबद्ध आख्यानो रचनार भट प्रेमानंद के बीजो कोइ, जे होय ते हो; ए कृतिओनुं मूल्य पण जे अंकाय ते अंकाओ; प्रकृत व्याख्यानने तो सीधो संबंध उक्त अनावृत्त संधिना रूपबंधनी घटना साथे छे. पद्यरचनाना विकासना इतिहासमां नवनीतनुं महत्त्व अपूर्व छे अने ते गूजरातने गौरव आपनारुं छे.

१० अनावृत्त संधिनी रूपरचना रंजकता(Melody)नी पलटाती विविध छायाथी मर्मज्ञनां मन हरे छे, त्यारे आवृत्त संधिनी रूपरचना रंजकतानी संतत एकताने लीधे लोकप्रिय बने छे. आ प्रकारना पद्यबंधनो उदय पण बहु जूनो छे; परंतु अनावृत्त संधिनी रूपरचनाथी कंइक मोडो छे. तेनो विकास तेना जूनापणाने मुकाबले धीमो छे; अने गणतरीमां गणवा जेवा छंदोनी संख्या तो बहु ज कमी छे. मारी जाण प्रमाणे जूनामां जूनो आवृत्त संधिनो पद्यबंध तोटक छे. महाकवि कालिदासे ते एक ज वार रघुवंशमां वापर्यो छे[२२]. एमां ललगा संधिनां चार आवर्तन आवे छे. ते पछी बृहत्संहिताना अध्याय १०३ नो वितान छंद छे. तेना चरणमां ललगा संधिनां त्रण आवर्तन अने एक गुरु अपेक्षित छे. ए बीजो छंद तोटकथी गतार्थ होवाना कारणथी लुप्त थाय छे. त्रीजो नवीन आवृत्त संधिनो रूपबंध मणिगुणनिकर छे. तेना चरणमां लललल संधिनां त्रण आवर्तन पछी ललगा आवे छे. ए पण प्रचार न पामी लुप्त थाय छे. प्रस्तुत अध्यायमां गूंथेला स्थिर(प्रमाणिका), दोधक अने भुजंगप्रयात(भुजंगी), ए त्रण रूपबंध दीर्घजीवी नीवडया छे. पहेलामां लगा संधिनां,

२१ जयदेवनी पद्यरचना माटे जुओ आगमी दृष्टिपात ५, प्रस्ताव ३०, ३५, ३६.

२२ जुओ रघुवंश। ८।९१।

बीजामां गाललनां अने त्रीजामां लगागानां आवर्तन आवे छे. गाल संधिनो चामर(समानिका) आ अध्यायमां छे नहि; परंतु अध्याय ४ मां वराहमिहिरे ते वापर्यो छे. गागा संधिनो विद्युल्लेखा(विद्युन्माला) छंद पण संहिताकारे अध्याय ६८ मां योज्यो छे. परंतु ते सर्वगुरु रूपबंध लोकप्रिय न नीवडी लोप पामे छे. ए ज दशा नैपध काव्यमां श्रीहर्षे योजेला अचलधृतिना नामथी जाणीता सोळ अक्षरना सर्वलघु रूपबंधनी पण थई छे[२३]. आपणी वाणीमां ऊतरी आवे छे मात्र चामर(समानिका), स्थिर(प्रमाणिका), दोधक, भुजंगप्रयात(भुजंगी) तथा तोटक, ए पांच, अने **भरतनाट्यशास्त्रमां** नोंधेलो गालगा संधिनो पद्मिनी(स्रग्विणी) छंद ए छट्ठो. आ प्राचीन आवृत्त संधिना छ रूपबंधमां अर्वाचीन बे छंद ऊमेराय छे, मौक्तिकदाम(मोतीदाम) अने सर्वगामी. एकमां लगाल संधिनां आवर्तन छे. ललगा संधिनां त्रण आवर्तन पछी गागा संधिथी बनतो दलपतपिंगळनो जे पडघमी छंद,ते अन्यत्र संगृहीत के प्रयुक्त छे नहि. ललगालगा संधि २+२+१+२ मात्राना संधिनो रूपात्मक अनुवाद होवाथी गीतक किंवा मुनिशेखर अने झूलणा छंद नवीन रूपबंधनी कोटिमां आवता नथी. वळी नाराच किंवा पञ्चचामर, ब्रर्णवागीश्वरी, केकिनीशारदा, मत्तगजेंद्र किंवा इन्द्रविजय, दुमिला, सुरेश्वर, आदि रूपबंध लगा, लगागा, गालगा, गालल, ललगा, लगाल आदि संधिनां आवर्तन वधवाथी नीपजे छे. एटले ते पण नवा वधारा तरीके लेखी शकाता नथी. ए रीते गणतरी करतां आपणी वाणीमां छ जूना अने बे नवा आवृत्त संधिना रूपबंध प्रचारमां आवेला छे.

११ छव्वीसथी वधारे अक्षरना समचतुष्पद रूपबंधना वर्गनूं नाम दण्डक छे. एना चरणमां जूना संकेत प्रमाणे बे न गण पछी छ थी वधारे र गण आवे छे. न्हानामां न्हानो सत्तावीस अक्षरनो चण्डवृष्टिप्रपात नामे दण्डक भास कविना अविमारक नामे नाटकमां प्रयुक्त छे. प्रस्तुत वर्ग साथे

२३ जुओ नैषध । २२ । १४८।

मेघमाला अने महामालिनी ए बे रूपबंध संबंध धरावे छे. ते भासना **प्रतिमादशरथ** नाटकमां अने कालिदासना **रघुवंशमां** अनुक्रमे वपरायला छे. मेघमालामां बे न गण पछी छ अने महामालिनीमां चार र गण अपेक्षित छे. आ रूपबंधमां अने दण्डकमां मध्य यति छे नहि. मेघमालाना थडमांथी चण्डवृष्टिप्रपात फूटे छे, ते दण्डक स्वरूपमां आगळ ने आगळ वधे छे. ए ज थडथी महामालिनीनी कूंपळी फूटे छे; ते आगळ वधती नथी. दण्डक अने एना संबंधी मेघमाला तथा महामालिनी ए रूपबंधोनी रोचकता आवृत्त अने अनावृत्त संधिना योगमां रहेली छे. ए छंदो नथी कलानूं दर्शन करावता के नथी सर्गशक्तिनी झांखी आपता; एमनी उपयोगिता मात्र ऐतिहासिक छे. आवृत्त अने अनावृत्त संधिना रूपबंधने जोडनारो अंकोडो ए पूरो पाडे छे. ए सउ अनावृत्त अने आवृत्त संधिओना जोडाणथी बनेला मिश्र रूपबंध छे.

१२ आपणी भाषामां अर्धसमचतुष्पद रूपबंध आंगळीए गणाय एटला पण नथी. दलपतपिंगळमां बे ज नाम जणाव्यां छे, वैतालीय अने पुष्पिताग्रा. संस्कृत पिंगळमां वैतालीय संज्ञा वर्गवाचक छे. तेमां वियोगिनी, अपरवक्त्र, माल्यभारिणी अने पुष्पिताग्रानो समावेश थाय छे. तेमांना वियोगिनी छंदनो सद्गत कविए वैतालीय नामथी व्यवहार कर्यो छे. उक्त चार अर्धसम रूपबंधनां विषम चरणमां १०, ११, १२ ने १३ तथा सममां ११, १२, १३ ने १४ रूप अनुक्रमे आवे छे. अक्षरनी संख्यामां अने संधिनी आंतर घटनामां पहेलुं चरण त्रीजा साथे अने बीजूं चोथा साथे मळतूं आवे छे, तेथी उक्त छंद अर्धसम कहेवाय छे. वैतालीय वर्ग अनावृत्त संधिनो बनेलो छे. चरण टूंकां होईने एमां मध्य यति छे नहि. ए छंदोनी लोकप्रियता घटनाना सुश्लेषपने लीधे छे. वैतालीय वर्गनी उत्पत्ति अने विकासनी हकीकत चोथा अने पांचमा दृष्टिपातमां आवशे.

१३ छंदोविधाना संस्कृत ग्रंथोमां विषम चतुष्पद रूपबंध जे गणाव्या छे ते पैकी मात्र बे ज प्रयोगसिद्ध छे, वर्धमान अने उद्गता. ए पहेलवहेला अश्वघोषना **बुद्धचरित** अने **सौन्दरनन्दमां** दृष्टिए पडे छे.

चारे चरण मापमां भिन्न छतां तेमनी घटना एवी खूबीदार छे के रंजकता ओर खीली नीकळे छे. विषमपद छंदमां मध्य यति छे नहि. गूजरातीमां उक्त बे विषमपद रूपबंधमांथी एके ऊतरी आव्यो नथी. संस्कृत पद्यात्मक साहित्यने अंगे तेमनूं निरूपण पांचमा दृष्टिपातमां आवशे.

१४ निबद्ध पद्यरचनानो त्रीजो प्रकार मात्रात्मक रचना छे. वर्णबंधमां नछूटो वर्ण ज, छूटो अने बे के चारना जूथमां गोठवायलो छतो, वर्णात्मक पद्यरचनानो घटकावयव बने छे. रूपबंधनी रचना वर्णना लघुगुर्वात्मक रूपनां जूथने लेईने रचाय छे. मात्राबंध मात्रानां जूथथी नीपजे छे. अणथडकाता ह्रस्व स्वरनी एक अने दीर्घ स्वरनी तेम ज थडकाता ह्रस्व स्वरनी बे मात्रा गणाय छे. एकमात्र अने द्विमात्र वर्णनां सांकेतिक बीज अनुक्रमे ह अने बा राख्यां छे. ह बीजमां एक लघुरूपनो अने बा मां एक गुरुरूपनो तथा बे लघुरूपनो अंतर्भाव थाय छे; एटले के ह = ल, अने बा = गा के लल. गूजरातीमां वर्णबंध अने रूपबंध करतां मात्राबंधनो प्रचार वधारे छे. ए मोटे भागे आवृत्त संधिना बनेला छे; अने थोडाक अनावृत्त संधिना छे. प्राचीनमां प्राचीन मात्राबंध **सुत्तनिपात**मां मळे छे. ते आवृत्त संधिनो छे. एनूं में कोकालिय नाम राख्यूं छे. त्यारपछी **दसवेयालिय**मां आर्या अस्तित्वमां आवे छे[२४]. तेनो वेलो आगळ वधतां केटलेक काळे गीति आर्यागीति आदि छंद प्रगटे छे. वर्गस्थापक आर्या पछी अनावृत्त संधिना अंत्यप्रास रहित समचतुष्पद मात्राबंधनो वर्ग प्रचारमां आवे छे. **विक्रमोर्वशीय**मां पुरूरवा उपरनी उर्वशीनी प्रेमपत्रिका उक्त प्रकारनो मात्राबंध छे. ए छंदोमां अंत्यप्रास दाखल थई उद्भवेलो गलितक वर्ग **सेतुबन्ध** नामे प्राकृत काव्यमां मळी आवे छे[२५]. आ जूना छंदोनो वपराट घटी अपभ्रंशमां नवा मात्राबंध रचाय छे, तेनूं निरूपण पांचमा दृष्टिपातना छेवटना भागमां आवशे.

१५ जे चतुष्पद मात्राबंध गूजरातीमां मळी आवे छे, ते मोटे भागे

२४ जुओ आगामी दृष्टिपात ४.
२५ जुओ आगामी दृष्टिपात ५.

आवृत्त संधिवाळा छे. एमना चरणना घटतरमां (१) चाह, (२) चावा, (३) चाहवा, (४) चाचाह, (५) चाहवावा, (६) वावाहवा, (७) वावावाह अने (८) वावाहवाह, ए आठ मात्रासंधि वपराय छे. संधि १, २, ३, तथा ५ मां आवर्तने आवर्तने पहेला बीज उपर, संधि ४,६ तथा ८ मां बीजा उपर अने संधि ७ मां त्रीजा उपर भार आवे छे. त्रण मात्रानो वाह संधि वाम, महीदीप अने हीर, ए त्रण छंदमां उपयुक्त छे. चार मात्राना वावानो विस्तार बहु वधारे छे. आभीर, तुरग, चोपाई, चरणाकुळ, चोपाया, मरहट्टा, रुचिरा, सवैया, दुमिला, लीलावती, पद्मावती, त्रिभंगी, मदनप्रहा, आदि छंदोमां तेनो प्रचार छे. पांच मात्रानो वाहवा संधि जळतरण तथा झूलणामां अने वावाह दीपकमां मळी आवे छे. सात मात्राना वाहवावा, वावाहवा तथा वावावाह संधिनो प्रयोग अनुक्रमे गीतिका[२६], हरिगीत तथा उधोरमां अने आठ मात्राना वावाहवाहनो पद्धरी (प्रा. पज्झडिआ, हिं. पद्धडी)मां थाय छे. वाह अने वावा बदल क्वचित् एकाद वार चरणमां अनुक्रमे हवा अने हवाह मूकाय छे. ए वर्गमां वाम, जळतरण, दीपक, आभीर, तुरग, उधोर, पद्धरी, चोपाई, चरणाकुळ, आदि छंद आवे छे. बीजा छंदो पैकी केटलाकमां एक, केटलाकमां बे अने कोई कोईमां त्रण मध्य यति राखी छे. वळी अमुक अमुक छंदमां यतिथी पडता खंडोने आंतर प्रासथी सांकळी लेवानूं पण ठराव्यूं छे. पूर्वना पिंगळकारे मध्य यतिनां अने आंतर प्रासनां आ जे बंधन बांध्यां छे ते छंदोविज्ञाननी दृष्टिए जरूरनां छे के केम, ते विचारवा जेवूं छे. प्रथम मध्य यतिनो प्रश्न लेइये. महीदीप, चोपाया, गीतिका, हरिगीत, रुचिरा, सवैया, दुमिला, आदि मात्राबंधमां मध्य यति एक वार, मरहट्टा, लीलावती, पद्मावती तथा मदनमहामां बे वार अने त्रिभंगी तथा झूलणामां त्रण वार आणवानी फरज छे. एमांना महीदीपनूं अने तेने पडछे अर्करोपा

२६. आ मात्राबंध बाबत जुओ रणपिंगळ, मात्रामेळ छंद १०५.

तथा चामर[२७] ए बे रूपबंधनूं अकेकूं उदाहरण नीचे आपूं छूं.

(१) श्याम चरण स्मरण मित्र! सरस रीत साची.
ते विना त्रिलोक मध्य क्रोड वात काची.
हस्त चरण करण नाक सउ कृपाथि कीधूं.
नेत्र वदन दंत आपि ज्ञान दान दीधूं. (द.पिं.)

(२) रोज रोज राखिने रमो ज राग रंगे
चामरो चलावि चित्त मोहि मोरचंगे
बागमां बिराजि साजि अंगराग अंगे,
केदि जेम कोटडी विशे वस्यो कुढंगे[२८].

(३) रोज रोज राखिने रमो ज राग रंगमां
चामरो चलावि चित्त मोहि मोरचंगमां
बागमां बिराजि साजि अंगराग अंगमां;
केदि जेम कोटडी विशे वस्यो कुढंगमां. (द.पिं.)

पहेला छंदमां मात्रासंधि चाह्नां आवर्तन छे. बीजा बेमां रूपसंधि गाल आवृत्त थाय छे. ए रूपसंधि उक्त मात्रासंधिमां अंतर्भाव पामे छे. तेने लीधे बीजा पद्यबंधनो पहेलामां अंतर्भाव थाय छे. महीदीप अने अर्कशेषाना चरणना संधिनी मात्रात्मक रचना अभिन्न छे; अर्थात् रूपबद्ध अर्कशेषा मात्रादृष्टिए महीदीपथी अभिन्न छे. चामर छंद अर्कशेषानो नजीकनो सगो छे. आवी रीते आ त्रण पद्यबंध मांहोमांही संबंध धरावे छे, ते जोतां एम ठरे छे के मध्य यति होय तो ए त्रणेमां होवी जोईए. परंतु बे रूपबंधमां यति छे नहि. तेथी अहीं मात्राबंधमां पण मध्य यति

२७. अर्कशेषा अने चामर ए बे रूपबंध बाबत जुओ **रणपिंगळ**, वर्णमेळ छंद ५३२ अने १०२४.

२८ अर्कशेषानूं आ उदाहरण **दलपतपिंगळ**मांना चामरमां जरूरजोग फेरफार करी बनावी लीधूं छे.

अनपेक्षित छे. अनावृत्त संधिना उपच्छन्दगम[२९] जेवा मात्राबंधमां पासे पासे आवेला बे जुदी जुदी रचनाना संधिने छूटा राखवाना हेतुथी वच्चे मध्य यति मूकवानो प्रसंग उपस्थित थाय छे खरो; पण चालु प्रस्तावमां तो संधि आवृत्त एटले के अभिन्न रचनावाळा छे, एटले तेमां मध्य यतिनो संभव ज नथी. आवी रीते सवैयानो अने शंभु, हंस, तथा मत्तगजेन्द्र (इन्द्रविजय)नो मुकाबलो करतां उक्त मात्राबंधनी मध्य यति ऊडी जाय छे, केमके गणावेला त्रण रूपबंधमां दृष्टिगोचर थता ललगा, ललल अने गालल तेम ज गागा संधिओनो चाचा संधिमां अंतर्भाव थाय छे. चाचा संधिना सात आवर्तनथी नीपजता चोपायामां मध्य यतिने स्थान नथी; केमके ए आवृत्त संधिनो बनेलो छे. त्यम वळी रूपमाला तथा सीता[३०] ए बे रूपबंध साथे गीतिकाने अने गीतक किंवा मुनिशेखर साथे हरिगीतने मेळवी जोईशुं, तो जणाई आवशे के तेमां पण मध्य यतिनी जरूर नथी; केमके चाहचाचा अने चाचाहचा मात्रासंधिमां गालगागा अने गागालगा ए बे रूपसंधि अंतर्भाव पामे छे. जेवी रीते महीदीप अने अर्कशेषा मात्रादृष्टिए अभिन्न छे, तेवी रीते मात्राबद्ध दुमिला अने रूपबद्ध दुमिला पण अभिन्न छे. सबब तेमां पण मध्य यति अनावश्यक छे. बंनेनो एक ज नामथी व्यवहार थाय छे, ते आ अभेद निःशब्द स्वीकारे छे. मरहट्टा छंदमां चरणने छेडे दुमिलाना करतां त्रण मात्रा ओछी छे. बाकी ए पण चाचा संधिना आवर्तनथी नीपजे छे, अने ढाळ पण दुमिलानो ज छे. ए कारणथी एमां पण मध्य यतिनो अवकाश नथी. पद्मावती, लीलावती अने त्रिभंगी तो दुमिलानां ज नवां स्वरूप छे. चारे छंदनां चरण बत्रीस बत्रीस मात्रानां छे; अने एनो ए ज चाचा संधि चारेमां आवर्तन पामी रह्यो छे. एटले करीने एमां पण मध्य यतिने स्थान नथी.

२९ आ नाम बाबत चालु दृष्टिपातनो प्रस्ताव १७ जुओ.

३० रूपमाला अने सीता ए बे रूपबंध बाबत जुओ **रणपिंगळ**, वर्णमेळ छंद ९३२ अने १०२०. दलपतपिंगळमां रूपमाळी नाम आप्युं छे.

मदनग्रहा छंदमां पण परिस्थिति एनी ए छे. तेथी तेमां ए मध्य यतिनी जरूर रहेती नथी. मात्राबद्ध झूलणा छंदमां जो के दसमी वीसमी अने त्रीसमी मात्रा पछी मध्य यति ठरावी छे, तथापि नीचेनां त्रण उदाहरण तपासवाथी स्पष्ट थशे के ए मात्राबंधमां पण मध्य यति छे नहि.

(१) शहर मुंबइ ज मोटाथि मोटूं,
जहां छापरूं एक नहि छेक छोटूं;
शेठिया सर्व ज्यां मोटमोटा वसे;
कोटि नाणा तणूं थाय कोटूं;
देह मोटा ने दिल मोटुं, दलपत कहे;
खाणुं पण मोटुं, नव खाय खोटूं;
कपण मोटां अने धृपण मोटां,
वळी होय मोटा तणूं सर्व मोटूं. (फा. वि.)

(२) शे'र मुंबाइ मोटाथि मोटूं,
जहां छापरूं एक ना छेक छोटूं;
शेठिया सर्व ज्यां मोटमोटा वसे,
कोटि नाणा तणूं थाय कोटूं;
देह मोटा अने सो'य मोटां मने;
खाणुं पण मोटुं, ना खाय खोटूं.
नाम मोटां अने काम मोटां वळी.
होय मोटा तणूं सर्व मोटूं[३१].

(३) रे ररा! रे ररा! राग ले केकिनो
शुद्ध सारी रिते सांभळी साद.

---

३१ फार्बसविलासमांथी लीधेला झूलणामां जरूरजोगो फेरफार करी वंकळणवाणनूं आ कामचलाउ उदाहरण घड्यूं छे.

केकिनी शारदा सौथि शोभे भली.
अंतरे ए ज तूं राखजे याद.
मिष्ट वाणी थकी मानवीओ रिझे;
क्रूर वाणीथि खीजे सऊ कोय.
मिष्ट वाणीथि पाळे गणी मित्र;
ने हेत ते साथ सौने घणूं होय. (द. पिं.)

आ छंदोमां पहेलो पद्यबंध मात्रात्मक झूलणा छे, अने बीजो तथा त्रीजो अनुक्रमे रूपात्मक कंकणकाण[३२] तथा केकिनीशारदा छे. पहेला छंदमां पिंगळकारोए बाहवा संधिनां बे बे आवर्तने मध्य यति ठराव्यो छे, ते प्रस्तुत उदाहरणनां शरूनां बे आवर्तनने अंते पळाई नथी. परंतु मारी समज प्रमाणे झूलणामां मध्य यति अपेक्षित नथी. तेनूं समर्थन, बाहवामां आवी जता गालगा रूपसंधिना आवर्तनवाळा कंकणकाण अने केकिनीशारदा ए बे छंदनां उदाहरण आप्यां छे, तेनाथी थाय छे[३३].

१६ उपर कह्या प्रमाणे मारा मतमां आवृत्त संधिना मात्राबंधमां मध्य यति अनावश्यक ठरे छे. उक्त यतिना प्रश्न जेवो आंतर प्रासनो प्रश्न गूंचवारा भरेलो नथी. एनो उकेल तो प्रमाणमां बहु सरळ छे. एमां आंतर प्रासने पद्यरचना साथे अंगत संबंध छे के नहि ते ज मुद्दो तपासवानो छे. मध्य यतिनो संबंध पद्यरचना साथे निर्विवाद छे. ते मेळ किंवा संवादनूं उपयोगी अंग छे. अनावृत्त संधिना पद्यबंधनूं चरण ज्यां बे त्रण के चार खटनूं बनेलुं होय छे, त्यां ए छूटा खंडोने एकसूत्र करनारूं तत्त्व ते मध्य यति छे. ते तत्त्वने आधारे मालिनी, मन्दाक्रान्ता,

---

३२ कंकणक्वाण बाबत जुओ रणपिंगळ, वर्णमेळ छंद १२.८१

३३ उक्त निर्णयनूं परोक्ष समर्थन आ दृष्टिपातना प्रस्ताव २१ मां करेला रामचन्द्रनी घटना विचारवाथी पण थाय छे.

शार्दूलविक्रीडित, उपप्लवंगम, आदि पद्यबंध सरजाया छे, अने टकी रह्या छे. परंतु प्रासनूं तेम नथी. ए शब्द व्युत्पत्तिमां सं. अनुप्रास साथे अने अर्थमां सं. यमक साथे संबंध धरावे छे. वर्ण के वरडीनी आवृत्ति ते अनुप्रास, अने वर्णना समूहनी आवृत्ति ते यमक. वन्ने शब्दालंकार छे. प्राचीन यमकमां आधुनिक प्रासनो अंतर्भाव थाय छे. प्रासना बे प्रकार छे. एक चरणना अंत्य भागने ते पछीना चरणना अंत्य भाग साथे जोटनारो यमक ते अंत्य-प्रास. एने साधारण बोलीमां प्रास कहे छे. चरणना खंडोने परस्पर जोड-नारो जे यमक, ते आंतर प्रास. पहेला प्रकारनो प्रास गूजराती हिंदी वगेरे भाषाना पद्यात्मक साहित्यमां पदांतनो पर्याय बन्यो छे. चरणोने यमक द्वारा अंत्य भागमां सांकळी लेवानी रीति ए भाषाओमां रूढ छे. ज्यां सूधी आपणा दोहरा चोपाईमांथी अंत्यप्रास नीकळी जशे नहि, त्यां सूधी आपणी पद्य-रचनाना एक लाक्षणिक अभिमत अंग तरीके ए टकी रहेवा निर्मित छे. परंतु आंतर प्रासनो हकीकत जुदी छे. ए पद्मावती तथा त्रिभंगीमां देखा दे छे, अने लीलावतीमां देखातो ज नथी. जो आंतर प्रासनो एक कुटुंबना छंदोना लक्षणमां समावेश थतो होय, तो आम बने नहि. ए पद्मावती, त्रिभंगी, लीलावती, आदि छंदना कुटुंबनी पद्यरचनानूं विशेष लक्षण नथी. पद्यबंधोमां योजाता बीजा अलंकारोनी पेठे ए एक शब्दालंकार छे. जो एना जेवा अलंकारना प्रयोगथी छंद जुदा गणाता होय, तो नीचेना बे अवतरणमां वापरेला छंदोने नवां नाम आपवां जोईशे.

(१)

वाह रे वाह ! रसालि मही ज. जही मळि सार हवा रे हवा.
वास वसे चित चाहित पीक. कपी तहि चाहि जसे बसवा.
वाद करे हजि ताग नहीं ज, जहीं नग ताजि हरेक दवा.
वाजवि तासिर यार ! कहीस. सही कर यार ! सिताबि जवा.

(फा. वि.)

(२)

नरमां गुण जो नहि होय बिजा, पण एक उपाय धरे करमां;
करमांथि तजे नहि कागळने उगता दिनथी दिन आखरमां.
खरमां न खपे कदि तेह खरेखर, तेम गणाय न गाडरमां.
डरमां न रहे, दलपत्त कहे; दररोज चडे चित हुंनरमां.
(फा. वि.)

आमांनो पहेलो छंद मात्राबद्ध त्रीसो सवैयो छे. रूपरचना प्रमाणे ते मदिरा पण कहेवाय. एनूं प्रत्येक चरण सवळूं अने अवळूं वांचतां वर्णक्रम एनो ए ज रहे छे, एटले के एमां गतागत बन्ध नामे शब्दालंकार छे. बीजो छंद मात्राबद्ध बत्रीसो सवैयो छे. रूपरचना प्रमाणे ते रूपबद्ध दुमिला पण कहेवाय. एमां सिंहावलोकन(सं. शृंखलायमक) नामे शब्दालंकार छे. आ कारणथी बेमांथी एकेने आपणे नवतर छंद लेखी नवूं नाम आपता नथी. उद्धृत उदाहरणोमां योजायलो अलंकार मात्र अलंकार ज रहे छे, छंदनूं अंग बनतो नथी. तेवी रीते पद्मावती त्रिभंगी आदि छंदमांनो आंतर प्रास यमक ज लेखावो घटे छे; नहि के पद्यरचनानूं आवश्यक अंग. अलंकार अने छंद ए बे निरनिराळा प्रदेश छे अने ते निरनिराळा रहेवा उचित छे.

१७ आवृत्त संधिना समचतुष्पद मात्रबंध साथे सरखावतां अनावृत्त संधिना छंदनी संख्या छेक कमी छे. मात्र बे ज मात्राबंध अनावृत्त संधिना मळी आवे छे. एकने आपणे पिंगळमां प्लवगम अने बीजाने काव्य कहियेछिये. ए नाम अपभ्रंश भाषामांथी गूजरातीमां उतरी आव्यां छे[३४]. अपभ्रंश साहित्यना प्लवंगम अने काव्य आवृत्त संधिना समचतुष्पद मात्राबंध छे. पहेला छंदना चरणमां चावा संधिनां चार आवर्तन पछी चाहया आवे छे.

३४ आवृत्त संधिना प्लवगम अने काव्य बाबत जुओ आगामी दृष्टान्त ५, प्रस्ताव ५१.

बीजानुं चरण उक्त संधिनां छ आवर्तनथी नीपजे छे; तेमां छेल्ला आवर्तनमां वावा संधिनो गागा भेद वपराय छे. चरण आवृत्त संधिनां होवाथी ए बे छंदमां मध्य यति छे नहि. गूजरातीमां प्लवंगम अने काव्यनां जूनां नामथी जे बे मात्राबंध ओळखाय छे, तेमां अनावृत्त संधि आवे छे; अने चरणना बे खंड पडे छे, अर्थात् एमां मध्य यतिनी जरूर छे. आ अंगगत तफावतने लीधे एमने नवां नामथी ओळखाववानी अगत्य जोई एकने हूं उपप्लवंगम अने बीजाने उपकाव्य कहूं छूं. तेमनी ऊठवणी नीचे प्रमाणे छे.

उपप्लवंगम—वावा वावा वाह' । हवावा वाहगा'. ।

उपकाव्य— „ „ „' „ वावा वागा' ।

पहेला छंदमां पांच अने बीजामां छ मात्रासंधि छे. ते पैकी चोथो जे हवावा संधि, तेमां बीजी मात्रा उपर भार पडे छे, अने बीजा बधामां पहेली मात्रा भारयुक्त छे. एमां पूर्वापर वाह अने हवावानूं स्वतंत्र व्यक्तित्व टकावी राखवाने माटे मध्य यति ऐकान्तिक उपपत्ति धरावे छे, अर्थात् ते आवश्यक छे. मध्य यति दूर थतां संधिनूं अनावृत्तत्व नाश पामी गूजराती भाषाना उपप्लवंगम तथा उपकाव्य अपभ्रंशना अनुक्रमे प्लवंगम अने काव्य बनी जाय छे.

१८ समचतुष्पद मात्राबंध पछी असमचतुष्पद मात्रबंधनूं प्रकरण आवे छे. एमां (१) आर्या, (२) गीति, (३) उपगीति, (४) उद्गीति, (५) आर्यागीति[३५], (६) सोरठो अने (७) दुहो, ए छंदोनो समावेश थाय छे. पहेला पांच एक कुटुंबनी व्यक्तिओ छे. ए कुटुंबना उदय अने विकासनी हकीकत पांचमा दृष्टिपातमां आवशे. एना घडतरमां वावा संधिनां आवर्तन आवे छे. उक्त पांच छंदनां चरणनी ऊठवणी नीचे प्रमाणेः—

विषम चरण .. ...वावा + वावा के हवाह + वावा (१–५).

मोटां सम चरण....वावा के हवाह + वावा + हवाह+ वावा +
गा (१,२,४) के वागा (५).

३५ जुओ आगामी दृष्टिपात ५.

न्हानां सम चरण....वावा के हवाह + वावा + ह + वागा (१,३,४).

एमां न्हानां समचरणनो ह संधि छे ते भाररहित छे. ए संधि सिवायना बीजा बधा आर्या कुटुंबना संधिमां आद्य अक्षर उपर भार पडे छे. उक्त कुटुंब पछीनो असम चतुष्पद मात्राबंध दुहो छे. तेनां चरणना घडतरमां पण वावा संधि अगत्यनो भाग ले छे. एना विषम चरणमां वावा वावा वाहवा अने समनां वावा वावा गाह गोठवाय छे. एमां सम चरणो ज अंत्यप्रासथी संकळायलां होय छे. दुहानां विषम अने सम चरणनो क्रम ऊलटाववाथी सोरठो नीपजे छे. एनां नवा क्रमनां विषम चरणोने छेडे अंत्यप्रास जणाय छे. आ बे छंदमां वावा बदल हवाह, अने वावा वावा बदल वाह वाहवा के हवा वाहवा क्वचित् काममां लेवाय छे.

१९ अमिश्र मात्राबंध उपरांत गूजरातीमां अनेक मिश्र मात्राबंध पण योजाया छे. मिश्र छंदनी योजना लगभग पद्यरचनानी उत्पत्ति जेटली ज जूनी छे. ऋग्वेदमां प्रगाथ, ककुभ् वगेरे वर्णबंध वपरायला छे, ते मिश्र छंद छे. प्रगाथ बे भारवा अमिश्र छंदनो बने छे. ककुभ् छंदमां बे अमिश्र छंदनां चरणनूं मिश्रण होय छे[३६]. गूजरातीमां छप्पय के छप्पो छे, ते प्रगाथनी कोटिनो मिश्र छंद छे. ए वस्तु तथा कर्पूर नामे चतुष्पद तथा द्विपद अमिश्र मात्राबंधनो बनेलो छे, अने ते अपभ्रंश साहित्यमांथी ऊतरी आवेलो छे. हेमाचार्यकृत कुमारपालचरितना आठमा सर्गनो पंचोतेरमो श्लोक षट्पद के छप्पय छे[३७]. बीजो मिश्र मात्राबंध कुंडळियो छे. ते छप्पयथी अर्वाचीन छे. एना पूर्वभागमां दुहो अने उत्तर भागमां उपकाव्य आवे छे. उक्त भागोने कुंडळीना प्रयोगथी सांकळी लीधा छे. कुंडळी एटले संयोजक शब्दात्मक

३६ जुओ आगामी दृष्टिपात २, प्रस्ताव २०–२१.

३७ मुद्रित पाठ छंदोभंगथी दूषित होवाना कारणथी संशोधन करी उक्त षट्पद नीचे आपूं छुं.–

के चरणात्मक अंकोडा. पूर्वभागनो आरंभ उत्तर भागना अंत साथे जे शब्द रूपी अंकोडाथी जोडाय, ते शब्दात्मक कुंडळी; अने पूर्व भागनो अंत उत्तर भागना आरंभ साथे जे चरण रूपी अंकोडाथी संधाय, ते चरणात्मक कुंडळी. आ रीते बेवडी कुंडळीना प्रयोगथी बे अमिश्र छंद एक जेवा बने छे; अने ते मिश्र छंद कुंडळियाना नामे ओळखाय छे. त्रीजो मिश्र मात्रावंध चन्द्रावली[३८] छे. तेमां पहेलूं तथा त्रीजूं चरण षोडशी चोपाईनूं अने वीजूं तथा चोथूं आभीरनूं होय छे; त्यारबाद षोडशी चोपाईनां चार चरण आवे छे. कुंडळियानी पेठे आनां पण पहेला तथा छेल्ला चरणने जोडवा शब्दकुंडळी योजवी जोईए छे. बीजा त्रण मिश्र मात्रावंध जूनी गूजरातीमां दृष्टिए पडे छे. ते इसवी सनना पंदरमा शतकना पहेला चरणमां जैन कवि जयशेखरे **प्रबोधचिन्तामणि**[३९] नामे काव्यमां वापर्या छे. ए चालु गूजरातीमां ऊतरी आव्या नथी अने **रणपिंगळ**मां छे नहि. ते कारणथी तेमनूं एक एक उदाहरण नीचे आपूं छूं.

भल्लत्तणु जइ महसि लहसि भल्लप्पणु पसमॅण
जइ करिप्पव्वउ पसमु विजउ तु करेव्वउ करणहँ
जइ अ करेया करणविजउ मणु निचलु धरहु
निचलु मणु पुणु धरहु करिउ जउ रागदोमहं.
तह विजउ करहि रागाइअहं अविचलु सामाइउ करिवि
अविचलु सामाइउ पुणु करहि निम्मयत्तु निम्मलु करवि ॥

उद्धृत षट्पदमां अत्यप्रास नथी

३८ चंद्रावली नाम **रणपिंगळ**माथी लीधू छे **दलपतपिंगळ**मा चंद्रावळा संज्ञा छे कदाच मूळ नाम चन्द्रकला होय चन्द्रनी कळा सोळ कहेवाय छे, अने प्रस्तुत मिश्र मात्रावंधमा चद्रनी कळा जेटली अर्थात् सोळ कळा एटले मात्राना चरणनूं प्राधान्य छे ते उपरथी ए नाम राखवामां आव्यूं होय

३९ जुओ **पदरमा शतकनां प्राचीन गुर्जर काव्य, पृ. ९६–१४४.**

(१)

प्रवचनपुर जाइवा न तातइ आइसिऊँ
अवनि जिणऊँ सहूँ. ह्यि निज थानकि जाइँसिऊं.
बिरुद बुलावत बहु परि पाछु कुमरु वलिउ.
चउपट चालत चोरह चरडह भउ टलिउ.
भउ टलिउ चउपट चोर चरडह. सेन समुद्रि चल्लइ.
दल अकल दिकूखिय, जे अदेखा, तेह तन मन सल्लइ.
आविउ अविघानयरि निरुपम. किद्ध उच्छव डम्बरइ.
घरि घरि हि उब्भिय नयरि गूडी. खेह ऊडी अम्बरइ.

(२)

इम संभाली निज परिवार सवि वीर समुहरि आरुहइ ए.
परदल लगि फिरी चलि असवार. पाखरि घूघरी रुणझुणइ ए.
रुणझुणइ घूघरी घोर घण परि. घुमघुमन्ति नीसाणया.
झलकन्त सव्वल सेल्ल पेकूखिय पडइ कायर प्राणया.
रोमञ्चि राउत. जोड जडकइ. जरदबन्धन तुट्टइ.
हणहणइ हूंफइ हरखि हयवर, पूर ,जिम्व पहट्टइ.

(३)

विप्रपुरी ऊरी गई ए, देखइ कौजता जाग.
'वलवन्त बहुइ वापडा ए बुरकइ वीधल छाग!
बुरकइ वीधल छाग! लाग न इहां अम्हारउ.
मोह तणी धूंय मारि, तेह तणु पगपइस्मारउ.'
ऊनावली चली ते चाली. भमती देसि विदेसि
रह्ण रेसि जोयइ जोगेसरदरसिण नवनवेस.

आ त्रण मिश्र मात्राबंधनां अनुक्रमे तलहारु, सरस्वतीधउलु अने धउलु, एवां नाम हाथप्रतमां आप्यां छे. पहेलामां प्लवंगम अने हरिगीतनी संसृष्टि छे. ए बेने कविए चरणात्मक मध्य कुंडळीथी सांकळी लीधा छे. शब्दात्मक आद्यंत कुंडळी एमां छे नहि. बीजा मिश्र मात्राबंधमां पहेलं तथा त्रीजूं चरण पंचदशी चोपाईनूं छे; तेमां अंत्यप्रासनी योजना छे. दुहानूं पहेलूं अने त्रीजुं चरण, ते प्रस्तुत मिश्र छंदनूं बीजूं अने चोथूं चरण बने छे. ए बे तेर तेर मात्रानां चरण पण प्रासबद्ध छे, अने तेमने छेडे तान पूरनारो 'ए' अव्यय मूक्यो छे. **गीतगोविंद**ना बीजा प्रबंधमां उक्त अव्यय एवा ज संकेतथी वपरायलो मळी आवे छे. सरस्वतीधउलना उत्तरार्धमां हरिगीत छंदनो प्रयोग छे. पूर्वोत्तर भाग चरणात्मक मध्य कुंडळीथी सांकळी दीधा छे. आ छंदमां पण शब्दात्मक आद्यंत कुंडळी छे नहि. त्रीजो मिश्र मात्राबंध त्रण जुदाजुदा मात्राबंध चरणोनो बनेलो छे. दुहानां चार चरण ते आ छंदनां पण क्रमबद्ध चार चरण छे. विशेषमां पहेला अने बीजा चरणने अंते तानपूरक 'ए' अव्यय उमेरेलो छे. ते पछीनां बे चरण उपकाव्यना चरणना मापनां छे, एटले के अगियारमी मात्रा पछी यतिवाळा चोवीस चोवीस मात्रानां छे. त्यारपछी **रणपिंगळ**मां जेने हरिपद[४०] नाम आपेलुं छे, ते सत्तावीस मात्राना दलवाळी द्विपदी छे. तलहारु अने सरस्वतीधउलनी पेठ प्रस्तुत मिश्र मात्राबंधनू चोथूं चरण पांचमा साथे चरणात्मक मध्य कुंडळीथी संधायलूं छे[४१]. डिंगळमां कुंडळीनो प्रयोग घणा छंदामां करेलो जोवामां आवे छे.

---

४० जुओ **रणपिंगळ**, प्रथम भाग, पृ ७९

४१ मात्राबंधनो प्रसंग चालतो होवाथी उपर मिश्र मात्राबंधनी ज नोंध लीधी छे. बाकी विजातीय पद्यरचनाना पद्यबंधोना मिश्र छंद पण बने छे खरा. तोटक रूपबंध छे अने दुहो मात्राबंध छे. ए बेनो मिश्र पद्यबंध **प्रवीणसागर**मां अने **दलपतकाव्य**मां पण छे एनूं प्रचलित नाम तोटककुंडळियो छे. एनूं उदाहरण सद्गत कवि दलपतरामनी **वचनविवेकवाचनी**माथी नीचे प्रमाणे

२० पूर्वोक्त त्रण प्रकारनी निबद्ध पद्यरचना साथे गाढ संबंध धरावतो छतां तेमनाथी जुदो पडतो एक प्रकार छे, जेने हूं लयात्मक पद्यरचना कहूं छूं. वास्तविक जोडणीनी उपेक्षा करी प्रसंगवशात् द्रुत अने विलंबित के अधुरा उच्चारना प्रयोगथी जे संवाद सधाय, ते लयसंवाद; अने ए संवाद-वाळी पद्यरचना ते लयात्मक पद्यरचना. एनी बे शाखा छे; मार्गीय अने देशीय. पहेली शाखानी बे प्रशाखा छे, रूपलयात्मक अने मात्रालयात्मक. ते बेनूं घडतर छंदोबद्ध छे, अर्थात् पहेली शाखाना लयात्मक पद्यबंध छंदो-विधाना धोरी मार्गने पडखे नवो चीलो पाडी आगळ वधे छे. जूना मार्गना अनुसंधानने अनुलक्षीने आ नवा प्रकारनूं में 'मार्गीय लयात्मक पद्यरचना' एवूं नाम राखेलूं छे. लय साचववा जेमां गुरुनो लघु अने लघुनो गुरु उच्चार करवो पडे, ते रूपलयात्मक पद्यबंध; अने जेमां बृहत्‌नो ह्रस्व तथा ह्रस्वनो बृहत् उच्चार करवो पडे, ते मात्रालयात्मक पद्यबंध. गूजरातीमां आजपर्यंत छंद रचाया छे, ते बधा ए लयात्मक छे. सामान्य बोलीमां कहिये, तो एमां स्वरने स्वे-च्छाए लंबाववा—टूंकाववानी प्रणालिका रूढ छे. एटले करीने गूजराती साहि-त्यमां रूपबद्ध छंदनी अने मात्राबद्ध छंदनी संज्ञाथी ओळखाता पद्यबंध वास्त-विक रीते रूपबद्ध अने मात्राबद्ध मटी लयबद्धनी कोटिमां भळे छे. संस्कृत काव्यनाटकना विद्यमान गूजराती अनुवादमां भाषानो ज नहि, पण पद्य-रचनानो ए फेरफार थयेलो बहुधा जोवामां आवे छे. शाकुन्तल अने मेघदूत-ना अनुवाद उपर दृष्टि फेरवशो, तो कहेवाता समश्लोकी अनुवादमां पण मात्राबंध अने रूपबंधनो लयबंधमां पलटो थयेलो जोशो. एवो पलटो नथी मात्र पूर्वे आपेला अमरुशतकमांना अने पराक्रमनी प्रसादीमांना उतारामां.

कसिने कीमत हेमनी पारख करे प्रमाण;
वचनयकी आ विश्वमां जननी कीमत जाण.

जननी कर कीमत केणयकी, घटि नेहनि कीमत नेणथकी,
घसिने कर कीमत हेमतणी; कसिने कर कीमत हेमतणी

मन्दाक्रान्ता रूपबंध छे, ते एमां शुद्ध रूपबंध ज रहे छे; अने आर्या मात्राबंध छे, ते शुद्ध मात्राबंध ज रहे छे: एके बदलाईने लयबंध नथी बनेल. रूपरचना अने मात्रारचनानूं शुद्ध स्वरूप जाळववा पहेलवहेलो प्रयत्न भास कविना **प्रतिज्ञायौगन्धरायण** अने **प्रतिमादशरथ** नाटकना अनुवादमां में कर्यो छे, अने ते एवा उद्देशथी के अनुवादमां जूनी पद्यरचनानो साचो ख्याल आवे. बाकी मूळकृतिमां के अनुवादमां कर्ता गमे ते रचना अने गमे ते छंद वापरवा स्वतंत्र छे. उक्त शाखानूं ' मार्गीय लयबद्ध पद्यरचना ' ए नाम तद्दन अजाण्यूं छे; परंतु ए रचनानो प्रयोग तो बहु लांबा वखतथी चालु छे, अने जाणीतो छे. एटले उदाहरण आपी तेनी ओळखाण कराववानी जरूर नथी. लयात्मक पद्यरचनानी बीजी शाखा जे देशीय, ते साधारण रीते देशीना नामथी ओळखाय छे. देशीओनो मोटो भाग मात्रालयात्मक छे. पद, गीत, गरबो, गरबी, मास, तिथि, वार, आरती प्रभातियां वगेरे उक्त मात्रालयनो आश्रय ले छे. न्हानां मोटां आख्यानो ए मात्रालयमां रचायां छे. **रामायण, महाभारत, भागवत** जेवा अति दीर्घ पद्यबंध पण एज पद्यरचनामां छे. एटले मात्रालयात्मक देशीनो पण दृष्टांत अपेक्षित्त नथी. परंतु केटलिक देशीओ एवी छे के जे मात्रालयनी लेखी शकाय नहि. प्रचार थोडो होवाना कारणथी ते पूरी प्रकाशमां पण आववा पामेली नथी. रूपलयनी देशी बहु थोडाना ज सांभळवामां हशे; शाथी जे ए देशीनो प्रयोग एक ज संस्कृत काव्यमां थयेलो मळी आवे छे. **गीतगोविन्दना** पांचमा सर्गनो पहेलो प्रबंध उक्त देशीमां छे. ए अपूर्व अने विरल देशीनूं स्वरूप मूळ संस्कृतमां विचारी लेवा न बने, तेवानी जिज्ञासा तृप्त करवाने प्रस्तुत प्रबंधनो एना ए ज रूपलयमां करेलो अनुवाद नीचे आपूं छूं.

विरहिहृदय वींधीने कुल कळी मलकाय;
अगन त्रिगुण पवने त्रिगुणित तनखवी न्हाय.
तव विहूणा उर छुरे विधुरा हरि. ध्रुव० १

भ्रमररव सुणी सीड़े उरथी करथी कान.
कुसुमशरथी फफडे वळी वळी छळी छळी प्राण. तव० २
रयणिभय धरी कंपे शिथिलविथिल तन.
अकळविकळ कलपे खर शशिकर स्मरी मन. तव० ३
विजन वन वसी हावे परहरी निज धाम.
प्रीतम मिलन चितवे जीभ जपी जपी तुज नाम. तव० ४
प्रणयमय जयदेवे रचित विरह गान
रसिकहृदय मचवे अति हरिरतिरस तान. तव० ५

उपरना अवतरणनी प्रबंध संज्ञा अने एनुं ध्रुवपद कही आपे छे, के ए छंद नथी पण देशी छे. एनी कडीमां चरणोनी व्यवस्था अंत्य अनुप्रासथी अने अंत्य यमकथी दर्शावी छे. प्रत्येक कडी चार चरणनी बनेली छे. एमां विषम चरणो वच्चे अंत्य अनुप्रासनी अने समचरणो वच्चे अंत्य यमकनी योजना छे. चारे चरणनी रूपरचना एकबीजाथी भिन्न छे; एटले के कडी विषम पदनी नीपजेली छे. चरण तेम ज ध्रुवपदनी आंतर घटना अनावृत्त संधिनी छे. चरण नवदश रूपनां ज होवाथी एमां मध्य यति छे नहि. ध्रुवपद जरा लांबु छे; एमां चौद अक्षर छे. तेथी एमां पांचमा अक्षर पछी मध्य यति इष्ट होय एम जणाय छे. कडी अने ध्रुवपदनी ऊठवणी नीचे प्रमाणे.

कडी.... (१) ललल लललल गागा (२) ललल ललल गाल
(३) ललल ललल ललगा (४) लललल लललल गाल.

ध्रुवपद ....लललल गा ललगा गालल गालल.

गीतगोविन्दनां अनेक अनुकरण संस्कृतमां थयेलां छे. परंतु एकेमां प्रस्तुत रूपलयात्मक प्रबंध शुद्ध स्वरूपमां ऊतारेलो मळतो नथी. आवृत्त संधिनी पद्यरचना तरफ लोकरुचि ढळवाथी जयदेवना समय पछी अनावृत्त संधिना रूपलयनी रचना रचवानो संप्रदाय उच्छिन्न थाय छे एटलुं ज नहि,

पण अनावृत्त संधिना रूपलयात्मक पदरचनाना स्वरूपनी समज पण लोप पामे छे. लुप्त रूपलय बदल एक नवो लय केटलेक काळे प्रगटे छे. एनुं वैजिक तत्त्व वर्ण होवाथी हुं एने वर्णलय कहुं छुं. नवी वर्णलयात्मक देशी बहु रोचक नीवडे छे. एनूं उदाहरण नीचे प्रमाणे.

कान्हुडो कामणगाळो रे, साहेली, आ तो! ध्रुव०
कान्हुडो कामणगाळो, रसभर्यो ने रूपाळो!
आ शो आंखडलीनो चाळो रे! साहेली० १
रंगरातो, मदमातो, वांसलडीमां गीत गातो
नेणां शूं करे छे वातो रे. साहेली० २
तें कह्यूं ते में न मान्यूं. आजे मारी जाते नाण्यूं
आघडूं में नो'तूं जाण्यूं रे. साहेली० ३
[४२]बे'नी! तारे पाये लागूं, व्हाला विना वेळूं लाग्यूं,
दयानो प्रीतम मागूं रे........साहेली० ४

लोकप्रिय दयाराम कविनुं आ एक लोकप्रिय पद छे. एना आंतराना बे भाग पडे छे. पूर्व भागमां चार चार अक्षरनां बे आवर्तन छे. तेना पछी तानपूरक रे आवे छे. ते विलंबित लयथी बोलातो होवाथी उत्तर भागमां त्रण अक्षरपूर जगा खाली मूकवी पडे छे; जेथी करीने चतुरक्षर संधिनो छेल्लो अक्षर उत्तर भागनो आद्य अक्षर बने छे. ते पछी पाछो एक चतुरक्षर संधि आवे छे. पूर्वोत्तर भाग ऊथलावी आंतरो नवा क्रमे कडीओने अंते

---

४२ बीजी अने त्रीजी कडी वच्चे नीचेनी कडी वधारामा मळी आवे छे; ते असगत होवाथी में तजी दीधी छे.

भरवा हुं गई पाणी, प्रेमपीडा भरी आणी.
घेली थई हूं आवी शाणी रे......साहेली०

पहेली कडीमा 'आ शो आखडलीनो चाळो!' एवी उक्ति छे, ते उपरथी समजाय छे के प्रथम दर्शननी तारामैत्रीनूं ते ज समये नायिकाए सखी प्रत्ये करेलूं निरूपण छे, नहि के रत काळना कोइ पनघटना समागमनुं.

बोलाय छे. प्रत्येक कडीमां चतुरक्षर संधिनां बेबे आवर्तनवाळां त्रण चरण आवे छे. तेमांना छेल्ला चरणना अंते तानपूरक रे ऊमेराय छे. आ प्रमाणे प्रस्तुत वर्णलयबद्ध देशीनूं स्थायी स्वरूप छे. पहेली कडीना त्रीजा चरणना पहेला संधिमां अने बीजी कडीना बीजा चरणना पहेला संधिमां पांच पांच अक्षर छे तेमांनो पांचमो अक्षर वर्णलयनी पद्धतिए अधुरो उच्चार्याथी स्थायी चारनो मेळ सधाय छे. , , .

२१ निबद्ध पद्यरचनाना चारे प्रकारनूं रेखादर्शन अहीं पूरूं थाय छे. विचारवी रहे छे मात्र अबद्ध पद्यरचना. ए छेक अर्वाचीन छे; एटले करीने, कहेवूं जोईए के, ते प्रयोगावस्थामां छे. एनो आदर्श इंग्रेजी पद्यात्मक साहित्यमांथी लीधो छे. संस्कृतमां अबद्ध पद्यरचना छे नहि. आपणे आगळ जोइशूं, के संस्कृत प्राकृत अने अपभ्रंश भाषानूं पद्यात्मक साहित्य पण निबद्ध रचनामा छे. इंग्रेजी Blank Verse ना जेवी कोइ अबद्ध पद्यरचना योजी काढवाना प्रयत्न भारत भरमां चाली रह्या छे. एना संबंधमा, अबद्ध पद्यरचनानूं व्यावर्तक लक्षण शृं, ते तपासवूं घटे छे. अबद्ध पद्यरचना एटले निबद्ध पद्यरचनानां विविध बंधनथी मुक्त पद्यरचना. उक्त बंधनना त्यागने लीधे एमा भावप्रदर्शननो मार्ग मोकळो रहे छे. श्लोक के कडीना चोकठामां बराबर माई रहे एवूं न होय त्यां वधघट करीने ते वक्तव्य सदर चोकठामां बेसतूं बनाववूं पडे छे, एवो प्रसंग अबद्ध पद्यरचनामां उपस्थित थतो नथी. एमां निरर्थक के पादपूरक शब्दनो पण उपयोग पडतो नथी. प्रस्तुत रचनानी खूबी ए छे के एमां गद्यनी स्वाभाविकता ऊतरी आवे छे. एनी अंदर बहुधा अन्वयसिद्ध क्रम ज अनुसराय छे; तेने लीधे प्रसाद सहेजे जळवाय छे. यतिकृत कृत्रिम विरामथी रचकाती मटी ए रचना अस्खलित आगळने आगळ वधे छे; अने आखूं ए काव्य एक महापद्य बनी रहे छे. एने प्रास के झडझमकनो शणगार पण जोईतो नथी. विविध बंधन अने शणगारना परित्यागनी वात थाय छे, त्यारे प्रश्न ऊठे छे

के अवद्ध पद्यरचना एना नाम प्रमाणे शुं समस्त बंधनथी मुक्त छे? एना उत्तरमां जणाववूं जोईए के अवद्ध पद बंधन मात्रना निषेधना अर्थमां लेवानुं नथी. उक्त पद्यरचनामां एक आवर्तनूं बंधन छे ज; अने एके बंधन छे, तो ज तेनी पद्यकोटिमां गणना संभवे छे. एमां आवृत्त संधिनी योजना विहित छे. एकाद आवृत्त संधिनां आवर्तनथी एनूं चरण बने छे; पछी ते आवर्तन संख्यामां गमे तेटलां होय. प्रस्तुत संधि चरणने अंते पूरो थवो ज जोईए एवी पण मर्यादा छे नहि; ते अधुरो पण भली रीते राखी शकाय छे. विचारिये तो अबद्ध पद्यरचनानो घटकावयव थवाने आवृत्त संधि ज योग्य छे. चरणांत यतिनो परिहार एना प्रयोग द्वारा अनायासे शक्य छे. अनावृत्त संधिनो प्रयोग चरणांत यति मागे छे, एटले करीने त्यां अटकवूं पड्याथी धारावाहितानो भंग थाय छे. अत्यारसूधीमां अवद्ध पद्यरचनाना जे जे प्रयोगो थया छे, ते बधामां आवृत्त संधि वपरायेल छे. आ दिशामां पहेलूं पगलूं कवि-संमेलन मेळवनार श्रीयुत मनहरराम हरिहरराम महेताए भर्यूं छे. वाल्मीकीय रामायणना बालकाण्डनो एमणे पंदर वरस उपर छपावेलो अनुवाद मात्रा-लयनी अबद्ध पद्यरचनामां छे. एनो बैजिक संधि बाहवा छे. ए पद्यबंध मात्रात्मक झूलणा छंदनी ढबे बोलाय छे. एनूं उदाहरण नीचे प्रमाणे:—

ताटका क्रोधथी मूर्छंती घोर बहु गर्जता
बाहु ऊंचा करी राम उपर धसी.
यक्षीए सहज-संभ्रांत क्षण भर कर्या
उभय ए भ्रातने बहु रजोमेघथी
घोर रज उराडी, लागी वर्षाववा
यक्षी विस्तारी माया पछी
राघव उपर शिला महत वरसाद सम.

महत पापाण वरसादनुं
सहज वारण करी बाणवरसादथी,
रोष हृदये धरी धावती आवती
'यक्षीना राघवे छेदी नाख्या करो[४३]

(सर्ग २५, ताटकावध.)

रामायणना अनुवादमां योजना करेली होवाना कारणथी कर्ताए मात्रा-लयना प्रस्तुत अबद्ध पद्यबंधनूं नाम रामछंद[४४] राखेलूं होय एम लागे छे. निबद्ध मात्रात्मक पद्यरचनाना जे बीजा आवृत्त संधि पूर्वे कह्या छे, ते सर्वे आ प्रकारनी रचनाने अनुकूळ नीवडे एवा छे; जोके तेमनो आवो प्रयोग लांबा काव्यमां थयेलो मारा जाणवामां आव्यो नथी. सर्वे मात्रासंधिनी अबद्ध पद्यरचनाने हूं मात्रालताना सामान्य नामथी ओळखावूं छुं.

२२ रामछंदना प्रयोग पछी अबद्ध पद्यरचनानी दिशामां बीजो प्रयोग आजथी दस वरस उपर छट्ठी साहित्य परिषदना अधिवेशनमा थयो हतो. एनो उद्देश कंइक भिन्न हतो. निबद्ध पद्यरचनामां गेयता घर करी बेठी हती. मात्रालयना बाहबा संधिनी अबद्ध पद्यरचनामां पण नादलहरीनो पगरव कानना पडदा उपर अंकित थतो हतो. नवा प्रयोगनूं लक्ष्य अगेय किंवा पाठ्य अबद्ध पद्यरचना योजवा तरफ हतुं. प्रस्तुत अगेय तत्त्व इग्रेजी पद्यरचनानी घटनामांथी हाथ लाग्यूं हतुं. ए पद्यरचना गद्यभारना वधारणने लीधे गद्यना जेवा पाठ्य छे. नाटक मोटे भागे पाठ्य होय छे. तेमां पाठ्य अबद्ध पद्यरचनाना प्रयोगनूं वहोळूं क्षेत्र हतुं. ते क्षेत्रने अनुकूळ वनवेली नामे

---

४३ साधारण रीते चरणबद्ध रचनाने माटे छंद शब्द वपराय छे रामछन्द संज्ञामां छंद सामान्य पद्यरचनाना अर्थमा प्रयुक्त छे

४४ बाह्वा संधिना आ पद्यबंधनो दृष्टान्त पण् करीने **सरस्वती** नामे हिंदी सामयिक पत्रमा अथवा तो कदाच **माधुरी**मा आव्यो हतो

अबद्ध पद्यरचना ते वखते अजमायश दाखल परिषदमां रजू करवामां आवी हती. ए संबंधना लेखमांथी हूं तेनूं उदाहरण नीचे आपूं छूं[४५].

ब्रूटस—अहो रोमना सपूत शो'री बांधवो ने मित्रो!
आ जे मेदनी मळी छे
तेमां कोइ सीझरनो दिलोजान दोस्त होय,
तो हूं तेने कहूं छूं के
एनूं व्हाल स्वर्गवासी सीझर उपर हशे
तेनाथी लगारे कमी ब्रूटसनूं व्हाल न्होतूं.
त्यारे केम ब्रूटसे ए सीझर उपर हाथ
ऊठाव्यो ते जो ए दोस्त पूछशे, तो
तेने मारे एटलो ज उत्तर छेः—
नहि के हूं सीझरने कांइ ओछो व्हालो हतो,
पण आ भूमि मैयाने अदकेरो व्हालो हतो.
तमारे ते सीझर जीवे ने तमे दास थाओ
ए जोईए ?
सीझर ज के न जीवे ने तमे स्वतंत्र रहो
ए जोईए ?
सीझरनूं मारा पर बहु हेत हतूं, माटे
हूं रडूं छूं.
भाग्यदेवीना ए भारे प्रीतिपात्र हता, माटे
राचूं ए छूं.
पराक्रमी हता, माटे
पूजूं ए छूं
ते छतां ए एमने में में ज हण्या;
केमके ए लोभमां लेवाया हता.
एमना ए व्हालने हूं रोऊं छूं.
एमना ए महत्त्वे हूं मोहूं छूं.

---

४५ परिषदमां वंचेलो बनेली सर्वधी लेख वधारा साथे 'सत्यवाद अने पक्षवाद' एवा नामथी छूटो छपायो हतो. तेमांथी उपरनूं उदाहरण लीधूं छे.

एमना ए शोर्यने हूं चंदूं छूं.
एमना ए लोभने हूं दंडूं छूं.
कोण ए कंगाल छे, जे रोमन न-थवा इच्छे?
होय कोइ, तो ते बोले.
हा, हूं एना गुन्हामां छूं
कोण एवो नीच छे, जे दासपणूं व्होरी राचे?
होय कोइ, तो ते बोले.
हा, हूं एना गुन्हामां छूं.
कोण एवो नष्ट छे, जे स्वभूमिनो द्रोही बने
होय कोइ, तो ते बोले.
हा, हूं एना गुन्हामां छूं[४६].

---

४६ चतुरक्षर संधिना अयद्ध-पद्यनो हिंदी दृष्टांत अमदावादना साप्ताहिक पत्र प्रजाबंधुमां थोडा वरस उपर साहित्यप्रिये आप्यो हतो. विद्यमान हिंदी कवि शंभुदयालना **दीपनिर्वाण** नामे खंडकाव्यमांथी नीचेना बे उतारा तेमां टांक्या हता. प्रस्तुत काव्यना पद्यबंधनूं कर्ताए सुरूप्रवाह नाम राख्यूं छे; अने हिंदी Blank Verse तरीके तेने ओळखावेल छे.

(१)
जीवन-मरुस्थल में, ८
हिम-कण-बिन्दु सा ७
हाय! यह अचानक अयाचित हो-आ गया था, १७
स्वर्ग-सुख ले कर, ७
वसन्त-पुष्प सा मृदुल, ९
कोमल ललाम अभिराम शिशु भाग्यवान. १६

(२)
सरस हुआ या रसहीन जग. ११
क्षण-क्षण विश्व की कठोरता ११
हो, कर्मरत जीवन भी, ९
जीविका के द्वन्द्व सम ८

उपर आपेला उतारामां कोइ कोइ स्थळे जूज फेरफार करी लीधो छे; शाथीजे वनवेलीनो लेख मारा ज हाथनो छे. एमां चतुरक्षर संधिनो प्रयोग छे. उद्यानलताना ठाठमाठ बदल पद्यबंध तरीके एमां वननी वेलीनूं नैसर्गिक सौन्दर्य दृष्टिगोचर थतुं होवाथी एनूं में वनवेली नाम राख्यूं छे. ए वर्णसंवादनो पद्यबंध छे, एटले गुरुने लघु अने लघुने गुरु लेखववानो अथवा एकनी अनेक अने अनेकनी एक मात्रा गणवानो प्रसंग एमां प्राप्त थतो नथी. आथी वर्णयोजनानी शुद्धता अनायासे जळवाय छे. इतर वर्णसंधिना प्रयोगथी नवतर अबद्ध पद्यरचनाओ हवेपछी रचाय तेनूं अने वनवेलीनूं सामान्य नाम वर्णलता योजवूं घटे छे. तेवी ज रीते रूपात्मक अबद्ध पद्यरचनाओनूं नाम रूपलता राखी शकाय.

२३ रूढ अने नवी घडाती पद्यरचनानो आत्मा संवाद किंवा मेळ छे, एम पूर्वे कहेवामां आव्यूं हतुं. गद्यथी पद्य जुदूं पडे छे ते संवादने लीधे. गद्यमां संवाद इष्ट नथी, पद्यमां ते आवश्यक छे. आठ वर्णना प्रस्तारनी एके एक वर्णशृंखला अनुष्टुभ्नी रचनामां वपराती नथी. एमांनी गणीगांठी संवादी शृंखला ज ऋग्वेदनी पद्यरचनामां देखा दे छे. विसंवादी वर्णशृंखला वपराई न वपराई आपोआप तजाय छे. लघु तथा गुरुनी अने ह्रस्व तथा बृहत्नी यादृच्छिक एके एक योजना रूपसंवादने अने मात्रासंवादने अनुकूळ होती नथी. एमांनी जे योजनाओ संवादी होय छे, ते पद्यरचनामां वपराय छे; बाकीनी छंदोगणितना कोठारमां पूराई रहे छे. जेमां स्वतः के मध्य यतिना आश्रयथी संवाद शक्य होय छे, एटले के पद्यपंक्तिना संधि परस्पर मेळ खाई रचना सुश्लिष्ट अने रंजक बने छे, ते शृंखला पद्यरचनामां ग्राह्य छे, बीजी बधी नकामी होई त्याज्य छे. सैंकडो वरस पहेलां घडायलो छंदो-

---

सहनीय हो गये थे। ८
रात्रि के निबिड सम ८
शून्य गृह बीच दीप्तिमान हुआ देखा पर १६
उज्ज्वल आलोकपुञ्ज दीप अनुपम एक. १६

गणितनो खरडो साहित्यना प्रजातंत्र शासनमां कायदो थवा नथी पाम्यो ते ए कारणथी, के सदर खरडो तैयार करतां संवादनी बाबत लक्ष बहार रही गई हती. ए खरडानी कलमोनी रूए एके एक गद्यघटना वर्ण रूप के मात्राना प्रस्तारनी परंपरामां आवी जई पद्यरचना कहेवाय, जे संवादना अभावे ते छे ज नहि. छंदोगणित बहु चमत्कार ऊपजावे छे. परंतु संवादनी दृष्टिए एनी उपयोगिता अत्यंत मर्यादित छे.

२४ संवादना विषयमां एक गूंचनो ऊकेल करवानी जरूर छे. पूर्वे नीचेनी पंक्तिओने श्लोकार्ध ठेरवी तेमां रूपसंवादनो निर्देश करवामां आव्यो हतो. जे निराश न थइ मच्यो रहे, ते ज इष्ट सुखनी घडी जुए. उदाहृत जोडकामां वर्णसंवादनो पण भास थाय छे. दृष्टि रूप उपरथी खसेडी वर्ण उपर ठेरविये, तो जोइये छिये के प्रत्येक चरणमां पहेला त्रण संधि छे ते पूरा चार चार वर्णना छे, अने ते पछीनो चतुरक्षर संधि एक वर्णे अधुरो छे. ए गणतरी अनुसार प्रस्तुत श्लोकार्ध अगियार अक्षरना कवितना वर्गमां गोठवाय छे. त्यारे एनी गणना ते रूपबंधमां करवी के वर्णबंधमा ? के पछी संदेहसंकर अलंकार जेवो ए पद्यबंधनो प्रकार छे एम कहेवूं ? आ शंकानूं समाधान पद्यभारनी व्यवस्था तपासतां आपोआप थई जाय छे. उद्धृत उदाहरणमां रूपबंध तरीके पद्यभार पहेला पांचमा तथा आठमा अक्षर उपर अने वर्णबंध तरीके पहेला, पांचमा तथा नवमा उपर पडे छे. ए रीते पद्यभारनी व्हेंचणी भिन्न होवाथी, स्थूळ दृष्टिए एक जेवा जणाता पद्यबंध सूक्ष्म दृष्टिए भिन्न ठरे छे. एथी उलटूं गीतक किंवा मुनिशेखरनो अने हरिगीतनो पद्यभार अभिन्न छे, एटले पहेलो पद्यबंध हरिगीत कुटुंबनो लेखाय छे.

२५ पद्यरचनानी चर्चाने अहीं जे महत्त्व आप्यूं छे तेनूं कारण ए छे, के आपणूं जूनूं साहित्य लगभग बधूं ए पद्यमां छे. एनो साक्षात्कार करवामां पद्यरचना उपर परकम्मावासीए अविचळ दृष्टि राखवानी जरूर छे. गद्यना संशोधननूं कार्य सरळ छे. अनेक उपलब्ध पाठमांथी कयो सारो छे, एटलूं तेमां जोवानूं होय छे. पद्यना संशोधनमां स्वीकृत पाठ पद्यबंधमां बेसतो आवे छे के नहि, ते पण विचारवानूं रहे छे. प्रेमानंदना नळाख्यानमां 'मक्षिका प्रथमे ग्रासे' जेवूं बन्यूं छे. ए आख्यानना पहेला कडवानी चोथी कडीमां 'पशुपताकास्त्र पशुपतिए आप्यूं' एवो मुद्रित पाठ छे. तेमां बे प्रकारनी अशुद्धि जोवामां आवे छे. एक तो ए के पशुपताकास्त्र ए नामनूं कोइ अस्त्र छे नहि. बीजी ए के मुद्रित पाठथी पद्यनूं माप सचवातूं नथी. पद्यात्मक कृतिमां रचना मापसर होवी आवश्यक छे. उपयुक्त देशी अहीं छ मात्रा जेटला मापना शब्दनो प्रयोग मागी ले छे. एनी गरज पाशुपत बोल पूरेपूरी रीते सारे छे. पशुपतिना अस्त्रनूं नाम पाशुपत छे. अर्थात् ए बोल वापरवो अहीं उचित छे. महाभारतनां पानां ऊथलावूं छूं, तो कैरातपर्वमां पाशुपत अस्त्रनो ज उल्लेख करेलो जोऊं छूं. तेथी कहूं छूं के उपलब्ध पाठ गमे ते होय, पण ग्राह्य पाठ तो निःसंशय 'पाशुपत' ज छे. प्रेमानंद जेवो संस्कृतज्ञ देशीकुशळ आख्यानकार 'पशुपताकास्त्र' पद अहीं वापरे ए बने नहि. उक्त उदाहरणमां एक ज शब्द भ्रष्ट छे. कोइ कोइ वखत तो भ्रष्टता पद्यबंधनी रगे रगमां व्यापी गयेली जोवामां आवे छे. **बृहत्‌काव्यदोहन** ४, पृष्ट २५ मां अने **नरसिंह महेता कृत काव्य-संग्रह**, पृष्ट ४८४ मां एक पद आप्यूं छे, ते आवा प्रकारनूं छे. ए बे मुद्रित वाचना अने पद्यगत संगति विचारीने योजेला कल्पित पाठवाळी कोइ प्रसंगे में ऊपजावेली वाचना अनुक्रम वार नीचे आपूं छूं.

(१) नाम पाम्यो पण, राम तें नव लह्या,
विना विवेक ऋपी जोग जाळे;

पुत्र विना जेम, घर मधे पारणुं,
वर विना ते जेम जान महाले. नाम० १
पिंडमां प्रभु पण, प्रगट देखे नहीं,
फोगट भमे ते दूर भारे;
अगणीत भरमने, ना गणी लख्या कर्या,
देही भाव करी चोरी मारे. नाम० २
मने एम जाण्युं जे, हुं हरीजन थयो,
वैष्णव पद गायने भक्ति भावे;
करणी तो कागनी, होड करे हंसनी,
पेटनी धारता कळो न जावे. नाम० ३
नामे अरथ सर्या, कंइ जीव ओधर्या,
वस्तु विना नहीं भूख भागे;
मेहनी दाझना, भेख धरे ए समे,
वरसाद विना जेम मेघ गाजे. नाम० ४
निराकारे एकाकारे, मेरुगरभितनु ए,
ज्ञान विना अज्ञाने जाचे;
जाणे नरसिंह तेने चरणे नमूं,
जेने ज्ञान अज्ञानने जोत जागे. नाम० ५
(बृ. का. स. ४, २५)

(२) अल्या नाम पाम्यो, पण रामने नव लह्या,
वैष्णवपद केरुं बिरद ज्ञाले;
पुत्र विना जेम, घर मध्ये पारणुं,
वर विना ते जेम जान महाले. १
व्याधिनी वेदना, विश्वनी ना टळे,
टालो गगनमां मेघ गाजे;

हरिने जाण्या विना, हरि केरो जन थयो,
वात पकवानथी भूख न भागे. २
तूं एम जाणे जे हरिजन हुं थयो,
विष्णुपद गाई थयो भक्त भवमां;
करणी तो कागनी, होड करे हंसनी,
हंसने तो हसी कहाडे लवमां. ३
पिंडमां प्रभु पण, प्रगट पेखे नहीं,
फोकट भमे ते दूर भाळे.
अगणित ब्रह्मनुं, गणित लेखुं करे,
दुष्ट भावे करी माळ झाले. ४
जो निराकारमां जेहनुं मन गळे,
भिन्न संसारनी भ्रांति भागे;
दास नरसैयो कहे, तेने चरणे नमुं;
ज्ञान विज्ञाननी जोत जागे. ५
(न. म. का सं. ४८४)

(३) नाम पामी अल्या ! राम तिं नवि लह्या;
वैष्णव पद तणूं बिरद झालि.
पुत्र विण जिम रचइ पारणूं घर विचइं,
घर विना जिम वली जान, माहालि ! १
इम जि जाणइ, हुऊं, हूं हरिनु जन थियु
विष्णु गाई भयु भक्त भव मांहां;
करणी तु कागनी, होडि करि हंसनी,
हूंशि काढइ हसी हंस लव मांहां. २
पिड मांहां प्रभु सही प्रगट पेखइ नहीं,
फोक परलोक मांहां दूर भालि;
कोटि ब्रह्मांडनूं गणिति लेखूं करइ,

देहभावइं ठरी माल झालि. ३
निदाघनी वेदना विश्वनी टलइ ना,
अनि वृथा गगन मांहां मेघ गाजि;
हरिनि जाण्या विना हरितणड जन थियु,
वात पकवान नवि भूख भाजि. ४
जि निराकार महिं एकरस थई रमइ,
हइइ विज्ञाननी ज्योत जागि,
दास नरसंइ भणइ चरणि नमूं तेहनइ;
एहनी संसारनी भ्रांति भागि. ५

परंपराए पाठ केटले दरज्जे भ्रष्ट थाय छे, तेनो वाचकने बहुधा ख्याल नथी होतो. मने लागे छे के तेनो सचोट ख्याल आपवाने सद्गत इच्छारामभाइए प्रस्तुत पदनी वाचना, जे समये जेवी मळी आवी, तेवी ते समये वाचक समक्ष रजू करवानो संकल्प राख्यो हशे. एमणे पूरां पाडेलां साधननो लाभ लेई नरसंइ महेताना वक्तव्यने प्होचवानो उद्देश में प्रस्तुत संशोधनमां राख्यो छे. मुद्रित ऊतारामां पद्यबंधने तेम ज अर्थने भारे हानि प्होची छे. आवा सर्वनाशनो प्रसंग धंधाधारी लहिया लेखकने हाथे नथी नीपजतो. छतां ए अजाणतां कोइ वखत पद्यबंध स्हेजे दूषित थई जाय छे. एवी सुस्पष्ट हानिना प्रसंगमां संस्कर्ताए छंदोगियाना ज्ञाननो दगरसंकोचे उपयोग करवो घटे छे. भट्टिकाव्यना दसमा सर्गनो चौदमो श्लोक नीचे प्रमाणे मुद्रित छे.

अथ लुलितपतत्रिमालं लगासनवाणकेशरतमालम् ।
स वनं विविक्तमालं सीतां द्रष्टुं जगामालम् ॥

एना पूर्वार्धना बीजा चतुष्कळमां एक मात्रा वधी पडे छे, तेथी छंदोभंग थाय छे. ए दोष दूर करवाने अथ लुलितपतत्रिमालं बदल अथ. लुलितपत्रिमालं वांचवानी जरूर छे. पतत्रिन् अने पत्रिन् पर्याय शब्द छे. समा-

समां एकने बदले बीजो सरतचूकथी लखायो लागे छे. आवी ज रीते कारण्ड अने कारण्डव पर्याय होवाथी भट्टिकाव्यना तेरमा सर्गना अढारमा श्लोकमां पहेलाने बदले बीजो वापर्यो छे, जेथी एक मात्रा वधी पडे छे. अहीं कारण्ड पाठांतर आपेल छे, तेना स्वीकारथी उक्त दोष तरत दूर थाय छे. एनो दाखलो लेई भट्टि०।१०।१४। मां पतत्रि बदल पत्रि कल्पवूं जोईए छे. बहु हाथप्रतोनो पाठ छतां ए अने विद्वान टीकाकारे ते स्वीकारेलो छतां ए, ऊघाडी आंखे ठोकर खावानूं कोण पसंद करशे? आवी लहियाए करेली भूलो कायम रहे, तो पछी संशोधनमां छंदोविद्याना ज्ञाननो उपयोग क्यां करवानो रह्यो? भट्टिकाव्यनां बन्ने उदाहरण उपर नजर फेरवतां ज आंखमां रज खूंचे छे; ते दूर कर्ये ज खटक मटे छे. आवा प्रसंगमां कोइक वखत पद्यबंधनो अमुक भाग वचमां गद्य आव्याथी छूटो पडी गयो होय छे, त्यारे ते विद्वान संस्कर्ताने पण गोथूं खवरावी दे छे. आवूं समराइच्चकहामां एक वार बन्यूं छे. ए प्राकृत कथा प्रो. जेकोबीए बहु काळजीथी संशोधन करी छपावी छे. एनो मोटो भाग गद्यमां छे. वखते वखते वचमां छंदोबद्ध भाग पण आवे छे. ते पैकी एक पद्यबंधे संस्कर्ताने मूझव्या छे. प्रो. जेकोबी आपणी छंदोविद्यानूं असाधारण ज्ञान धरावे छे. ते छतां पण एओ मूझवणनो भोग थया छे, तेनूं सबळ कारण छे. पद्यबंधना भाग छूटा पडी गया छे; अने वचमां गद्य आव्यूं छे. ए गद्यने लीधे उत्तर भाग गद्य भेगो गद्य लेखायाथी पूर्व भागमां पद्यनी समाप्ति थाय छे एवी भ्रांतिमां एओ पडचा छे. एनो परिणाम ए आवे छे, के पूर्व भाग उत्तर भाग साथे जोडावो जोईए ते जोडातो नथी अने छंद ओळखातो नथी. एटले करीने एमने छंद मृग्य कहेवो पडे छे. प्रो. जेकोबीने समस्यारूप नीवडेलो पद्यबंध समराइच्चकहाना छट्ठें बारमे पाने छे. ए पृष्टनी पंक्ति १–२ मां प्रस्तुत छंदनो पूर्व भाग छे; ते पहेलां त्रण चरणनो बनेलो छे. तेमां अनेक समस्याओ पूछी छे. उत्तर भाग पूर्व भागथी

छूटो पडी गयो छे; ते पंक्ति ५–६ मां छे. पूछेली समस्याना खुलासा आ उत्तर भागमां छे. अधुरा पद्यबंधनूं ए चोथूं चरण छे. पद्यबंधना पूर्वोत्तर भाग वच्चे गद्य आव्यूं छे तेना भेगो पद्यात्मक उत्तर भागे गद्य गणाई गयो छे, अने पूर्वापर गद्यना अनुसंधानमां गद्यरूपे छपायो छे. ए गद्यमां दटाई गयेला चोथा चरणनूं अंत्य पद त्रीजा चरणने छेडे मूळथी मूकायूं छे, जेथी मूझवणमां याकी हतूं ते उमेरायूं छे; अने, पृ. ६१२ नी पंक्ति १–३ मां ज पद्यबंध त्रिपदात्मक स्वरूपे पूरो थाय छे, एवो मिथ्या ग्रह बंधायो छे. रचना समग्रपणे ध्यानमां लेतां जणाय छे के समस्याना प्रश्न अने उत्तर मळीने एक समचतुष्पद मात्राबंध थाय छे. तेनूं प्रत्येक चरण अठावीस मात्रानूं छे. छंदमां कोइ पण स्थळे मध्य यति छे नहि. चर्चास्पद पद्यबंधनी मुद्रित अशुद्ध वाचना अने ते उपरथी में योजेली शुद्ध वाचना नीचे आपी छे.

(अशुद्ध)

पंक्ति १ के कठिणा ? नरिन्द ! का कसणा ? तेओ कासु सासओ ?
२ उच्छू केरिसव्व ? के य अरहिया ? का उयहिगामिणी ?
३ के धणुपरसुनहरमायाविस..प्पहाणया ? जाणसु
५–६ पत्थरामसीहासुरसप्पवराहलावया

(शुद्ध)

चरण १ के कठिणा ? नरिन्द ! का कसणा ? तेओ कासु सासओ ?
२ उच्छू केरिसव्व ? का वयंसिया ? का उयहिगामिणी ? ।
३ के धणुपरसुनहरमायाविसविसणचञ्चुपहाणया ?
४ पत्थरामसीहासुरसप्पवराहलावया जाणसु ॥

आ मूझवण प्राचीन जैन अने बौद्ध सुत्तनी पद्यरचनानी मूझवणने पडछे कांइ लेखामां नथी.

२६ आपणी पद्यरचना साथे कंइ पण संबंध धरावतो होय, तो अंत्यप्रास घरावे छे. मध्य प्रास तो केवळ शोभारूप छे. परंतु काव्यना समुद्धारकार्यमां कोइ वखत ते अजब साहाय्य आपे छे. आनो दृष्टांत अखाभगतनूं **अनुभवबिन्दु** पूरो पाडे छे. एमां आरंभक कुंडळिया पछीना प्रत्येक छप्पयनां पहेलां चार चरणमां मध्य प्रास शृंखलायमक रूपे योजेलो संभवे छे. परंतु मुद्रित प्रतोमां त्रीजा भागनां चरणोमां मध्य प्रास जोवामां आवतो नथी. रूडी गयेला प्रास, जरा प्रयास करिये, तो सूझी आवे एवा छे. **अनुभवबिन्दुनी** हाथप्रत नथी फार्बससभाना संग्रहमां के नथी गूजरात वर्नाक्यूलर सोसाइटीना संग्रहमां. एनी त्रुटी दूर करवाना ये रस्ता छे. पाठ के प्रास भ्रष्ट के नष्ट होय, त्यां अर्थनी संगति अने वर्णनी मैत्री विचारवी. ए मार्ग लेई उक्त काव्यनी संशोधित वाचना चालु व्याख्याननें छेडे परिशिष्टमां आपी छे[४७]. तेनो एवो उद्देश छे के यमकसांकळीथी जोडायली कडीवाळां काव्योना संशोधनमां ए प्रयत्न दोरनार नहि, तो कदाच आंगळी देखाडनारे नीपजे.

२७ उपोद्घात आवी आवी बाबतना निरूपणनूं स्थान नथी; एटले हूं अटकूं छूं. मूळ योजनामां में दश व्याख्यान आपवा धार्यूं हतूं. पहेला व्याख्यानमां फक्त पद्यनी घटना विशे, ते पछीनां चारमां ऋक्काल, आख्यानकाल, सूत्रकाल अने काव्यकालनी पद्यरचना विशे, छठ्ठामां अपभ्रंश साहित्यनी अज्ञात पद्यरचना विशे, सातमा आठमामां हिंदी मराठी तथा बंगाळी पद्यरचना विशे अने नवमा दसमामां गूजराती विविध निबद्ध अने अबद्ध पद्यरचना विशे हूं मारा विचार प्रदर्शित करवा इच्छतो हतो. परंतु अपभ्रंश पद्यात्मक साहित्य सारा प्रमाणमां छपायूं न होवानी मुश्केलीना कारणथी

४७ व्याख्यानो अपाई गया पछी प्रसिद्ध **गुजराती** सासाहिकना फेब्रुवारीना अंकमां दीवानबहादुर नर्मदाशंकर देवशंकर महेताना हाथे संस्कार पामी गूजरात वर्नाक्युलर सोसाइटी तरफथी प्रकाशित थयेला अखाकृत काव्यो, भाग १ उपर आवेला विवेचनमा उक्त सासाहिकना संग्रहमां **अनुभवबिंदुनी** बे हाथप्रत होवानो निर्देश जोई ए हाथप्रतो मेळवी परिशिष्टनी वाचना शोधी लीधी छे.

अने हिंदी मराठी तथा बंगाळी साहित्यनो पूरतो अभ्यास करवानो अवकाश न होवाना कारणथी ए योजना अमलमां मूकाय एम नथी एवूं मने लागायूं. ए संजोगमां मारा थोडाक विचार पद्यरचनानी घटना साथे जेम तेम जोडी दीधा छे. आ आरंभना व्याख्यानमां निबद्ध अने अबद्ध पद्यरचनानी जे शाखा-प्रशाखानी रेखा दोरी छे, ते सर्वे शाखाप्रशाखाना विकासनी ऐतिहासिक आलोचना करवानो जूनी योजनामां संकल्प हतो. ते तजी दई बारमा शतकनी समाप्तिए अटकवूं पडवाथी ते अवधि पर्यंत ज आलोचना हवे पछीनां व्याख्यानोमां आवशे.

परिशिष्ट

अनुभवबिन्दु

[कुंडळियो]

परमधाम परमात्म हरि प्रथम करूं परणाम
परमज्योती परब्रह्म, जांहां नहीं रूप ने नाम:
अणछतो थई परणमूं. वर्णवूं वाग्यविलास
मन वाणी पोंहोचे नहीं; शुं कही स्तवे दास ?
निर्गुणमां गुण अणछता आरोपी अखे ओचर्यूं.
'सत्य सत्य परमात्मा, हूं नहि' एवी स्तुति करूं.

[छप्पय]

निर्गुण, गुणपति नाम, धाम धर [1]गुणने आले.
[2]अच्युत, अंबरातीत, द्वैतनिर्लिंगी निराले.
आरोप्या [3]गुणे ईश, शीश ढले जेने चमर;
निकट रहे अष्ट सिद्धि निधि नव ने बहु अंमर.

सूचना—हवे पछीनी पाठांतरनी टिप्पणीओमां क अक्षर साहित्यप्रेमी इच्छाराममाइए छपावेला बृहत्काव्यदोहन, ग्रंथ २ माना पाठ आपे छे, अने ख तथा ग, एमना साहित्यरसिक पुत्र नटवरलालभाइए पोताना संग्रहमांथी सं १८६६–६८ नो चोपडो तथा तेनाथी अर्वाचीन जणाती साल वगरनी चोपडी उपयोगमां लेवा आपेल, ते बेना पाठ अनुक्रमे नोंधे छे उक्त क ख अने गथी जुदा पडता पाठ कल्पित छे. १ गुणनु (खग). २ स्तुति (क) ३ गुण (खग).

सुर, वीणाधर ते थके, विच्छकि महा सुरस्वती.
समलो जाणी अखो स्तवे सर्वातीत सर्वनो पति. २
अनुक्रमे कहूं पद जेह छे प्रपंच पारि;
तत्त्वमसि पद जेह, तेह कहूं वाणी ऊचारी;
कैवल्य, ईश्वर, जीव भेव कहूं विविध विचारे,
अंबरवत मन थाय, जाय गुण तत्त्व न धारे.
ज्ञानभक्तिवैराग्यधर बोले अखो वाणी अमल.
भाषा ब्रह्मविचार विधि समझे तो नर जलकमल. ३
जाणी ले जगदीश शीश सद्गुरुने नामी.
अवसर छे आ वार; सार श्रीपति भज स्वामी.
[4]तें [5]जाथुं नथी दूर; उर अंतर अवलोकि.
टाल असत अहंकार, चार स्थल रह्यो [6]द रोकी.
चरणकमल गुरुदेवनां सेवतां अखा! हरि मले;
अर्कतणा उद्योतथी अंधकार सब न टले. ४
[7]महापद तेह महंत संत ज सयाणा जाणे.
लघुबुद्धिनो न लाग; वाग विचित्र वखाणे.
मनसा वाचा काय पाय-वण पंथ विचरवो.
सगुरो जाणे संच. पंचपर अनुभव धरवो.
लिंगचतुष्टय वण अखा! चिद्योनि, चिद्रूप, भर्यो,
निरालंब, नर-नाग-सुर-अलग-रह्यो, सत् आवर्यो. ५
नहीं तेज ने तोय दोय, नहि अवनी वा य,
[8]अंबर-आधूं जेह, तेह निगम नेति गाये.
[9]त्रिगुण थकी ते शून्य, पुण्य नहि, पाप न धारे.
रक्त पीत नहि श्वेत [10]चित्त नहि नील विचारे.
गति अयगति, ते तांहां नहीं. [11]वाचा कई पेरे वदे!
अंबरवत ते ईशने ओलख अखा! सद्गुरु स्वदे. ६
देशविदेश, [12]दिनरात, जात नहि वर्ण विचारे;
दश खट अष्ट ने पक्ष [13]छेक परपंचनी पारे.

---

४ ते (क), जो (खग). ५ जोवुं (खग). ६ जे (खग). ७ महामत छे (खग).
८ आकाशथी आघूं (क), आकाश आघेरुं (खग) ९ त्रिगुण नहीं (कखग). १०
श्याम (क) ११ विचार (क). १२ न भात (क). १३ नेक (ख), मेक (ग).

भानु भुवन मध्य वास ऊजास अंबरथी आपे,
एह जगत जंजाल काल माया शिर थापे.
आप [१४]इदु विध अयुथी अलग रह्यो [१५]झलके अचल.
सहज [१६]विलास श्रीहरितणो, समझ अखा ! वरते सकल. ७

महपदनो ए मरम, परम घण [१७]चिन्मय दीसे–
[१८]जेमां बहु मुख लोक [१९]विलोवे विना शरीसे.
दीपकनो एक देह तेहथी थाय अनंता,
वस्तुथी विश्व उत्पन्न, अन्य नहि आप नियंता.
चौद लोक [२०]चिद विस्तर्यूं, अमर-आयूं ए लघू,
अखा ! आपविस्तार [२१]विच जगत, भेद जाणो,रघू. ८

अवनीमां कहूं अर्थ. [२२]व्यर्थ रखे अवसर खोता;
[२३]सांभळो ते समझाय, काय मन स्थिर [२४]करु, श्रोता !
भूत, भुवन, वृक्ष, धातु सात [२५]रस आदिक रूपे,
स्थावर जंगम जातभात [२६]अति सूक्ष्म अणु पे,
सुर, नर, नाग, वैकुंठ लगी दृष्टे दीसे जे सहु,
भवनो एक, तेम ए अखा ! आतमा [२७]व्यापी रह्यो बहु. ९

वळी कहूं दृष्टांत, शांति मन सुणतां पामे.
पुरुषे करियुं सेन, गेहेन [२८]जमो जागृति वामे.
थयो स्वप्नसंसार, [२९]पार घण प्रौढो राजे.
हय, हस्ती, [३०]घरनार, चार [३१]प्रिय पुत्र विराजे.
लक्ष कोटि रूपे अखा ! जंत एक जेम विस्तर्यो,
सर्वातीत एक आतमा ए पेरे सभरो भर्यो १०

१४ अनु इदु विधे (कखग) १५ झळथी (क) १६ विनोद (ग) १७ चिदमा (क), चिदमे (खग) १८ अवलोके बहु लोक (क), ज्यम अवलोके बहु लोक (खग) १९ जेम मुख विना शरीसे (क), मुख विना माथ शरीरे (ख), मोक्ष वन मोहे शरीसे (ग) २० लगी (क) २१ विच (कखग) २२ वृथा (कखग) २३ सहेजे से (क) २४ करी (कखग) २५ वास्नादिक (क), वसनादिक (खग) २६ स्थूल सूक्ष्म अणु रूपे (ग) २७ व्यापियो (खग) २८ जेम (क), जम (ख), ज्यम (ग) २९ पारणे पोढयो (क), पार विना प्रोढो (ख) पार विना फुट (ग) ३० नहि पार (कखग) ३१ स्त्री (ख)

वारिधिफेरूं वारि [32]चार दिश मध्ये चाले;
पृथ्वी पर पयराय. [33]वनराय फूले फाले.
ऊगरतूं रहे अंबु, [34]शंभू ढली आवे ढाले;
ते नदी नाम धराय; न्हाय सहु. [35]बहु महिमा लेहे.
गर्वभरी गाजे अखा! शरू न [36]जुप सरिता सही.
जेम सागर, तेम श्रीहरि. वच्चे जीवनदी [37]वही. ११

जीव थते जंजाल काल माया वश पडियो,
पितृदेव गृहदेव सेवनो [38]दृढ जडे ब्रडियो.
धन दारा सुत मात तात जीविका वश वरते;
अधिकन्यूनता जोय, तोय छूटे नहि मरते.
अणसमजे अहमेववश मरम न [39]जाणे मंदधी
प्रपंच मांह पच्यो. अखा! [40]सर्पपिपे पणसे दधि. १२

अकस्मात ऊलाल कालजोगे देहकरणी,
तेम आत्मउद्घोत. ज्योत [41]देहमध्य आवरणी.
जाहारे ऊपजे भाव साव ज स्वतंतर थावा,
प्रगटे भक्ति विराग; माग जडे निज घर जावा.
चरणकमल गुरुदेवने शरण [42]जतां सुध ऊपजे.
[43]सेवंतां सायुज्य तांहां अखा! पामी ले वर विजे. १३

सान समी केहे संत, जंत हरि देखे जमलो;
[44]ऊंजंतां जेम [45]जाय कायवी वाचल कमलो.
[46]अहमेव वर्जित अंग. लिंग लय थाये; लेखे.
सगला शमे विकार. पार [47]नर पामे, पेखे,

३२ सकळ दिशामां (क), चार दिसो दिश (खग). ३३ वनराजी (क). ३४ सर्व (क), सग (ख), साग (ग). ३५ महिमा माले (कखग). ३६ लहे (क). ३७ थई हुं वही (क), थई वही (खग). ३८ वणजे (क). ३९ समजे (कखग). ४० सर्प परशे (क), सरपीसमे (ख), सरपरसे (ग). ४१ मध्ये (क), ४२ जतां चिद (क), जयूं (सव). (खग). ४३ सद्गुरु परम शुध शोधतां (क), सेवतां साओज्य ता (ख), सेवंतां सावोज तहां (ग). ४४ उज्ज्वलता (क). ४५ थाय, धाय जो (क). ४६ आम्पे वरते (ख), आमे वरतजे (ग). ४७ मन (कग).

आळोचे अंबर विषे, लीन थाय लक्षे करी,
अंत जाय निज आलये [48]जाल ए अखा ! परहरी. १४

जेम [49]जाय ऋतु जलद, शरद ऋतु रूडी दीसे;
[50]दामिनीदमक पळाय; थाय [51]हलवे मन हीसे;
[52]बहुदिश चमके चंद; धंद सहु मननूं भागे;
तेम भागे भवभ्रांति [53]कांति द्वितीयानी आगे.

विमल वपु होये वळी, चतुर लिंग देखे, लहे;
चिदाकार चिन्मय अखा ! ध्याताध्येयसमरस रहे. १५

जेम दीपक ते वह्नि, वह्नि दीपक नहि दोये;
सेवक स्वामी, जाण, वाण [54]कहेवाने होये;
जेम सूरज ने किरण; चरण शिर [55]मुख जेम [56]देहने;
तेम छे आ व्यवहार, पार लहे, जुए तेहने[57].

जीवन्मुक्त वेहेवाय अखा ! वचन न लागे ते ढवले.
गुरुगमे आलोचतां [58]सहजपणे सरवे फळे. १६

कांहांथी कांहां ए जाय?-कांय नहि'कह्यो'? व वेहेवा.
वचन [59]ज जांहां न समाय, जाय को केहेने लेहेवा?
कांहां छे ते वण ठाम धामथी दूर [60]के नेहडो?
कांहां छे [61]केहेवा आद्य, मध्य कांहां छे, कांहां छेडो?

कांइ अवकाश न ते विना, अधिक न्यून नहि. शूं करूं?-
शायी शूं काढूं? अखा ! शामां शूं लावी भरूं ! १७

कोहोने कहूं हूं भरत, तरत जो जोवत देखूं?
कोहोने कहूं हूं स्थूल; मूल जो सूक्षम पेखूं !

---

४८ अखा ! जाल सर्वे (क), जाल अखा टाल (खग) ४९ वर्षा ऋतु होय (कग), वर्षाकाल होय (ख), ५० दामिनी दोडी (कग), वीजु डोहोल (ख) ५१ मन हळवा (क), वायु मद हलुवा (खग) ५२ चासन (ग). ५३ कांति जेम द्वितीया (क), कांत दुतो जम (ख), कांत होय बीती (ग). ५४ कहेवानी (क) ५५ सन्मुख (क) ५६ देहे (क) ५७ तेहे (क) ५८ सजल पडे (ख), स्वजल पडे (ग) ५९ तहां न (क), ता न (ख), ज तहां (ग), ६० कहूं (खग) ६१ ऊंच के नीच वया छे मध्य के छेडो (कखग)

कोहोने कहूं महाभाग्य, [६२]जाग्य, नहि हीणो केहेवा?
कोहोने कहूं हूं नीच, ऊंच स्थल को नहि रेहेवा?
वेत्ता घण [६३]वेजा विना कोण अखा! कोहोने कहे?–
जांहां नहि शब्दोच्चारविधि, चिदाकाश [६४]चिद महा लहे. १८

नहि लेहेनारो कोय. दोय नहि [६५]दिलने धरवा.
एवूं अचरज तहीं जे[६६] नहीं पंथ विचारवा.
जांहां नहि शब्दोच्चार, सार छे तांहां ज [६७]सहरावा,
उपाउपांतर तहीं छे नहीं कांइक साहाबा.

आप मरंतां सांहां अखा! सेहेजे सेहेज [६८]सहराइये.
लेखे लिंग लागे थके [६९]अणबोल्यूं शूं गाइये? १९

रुदन करे वन मांह, तांह कोण [७०]तेहने वारे?
तेम जाणवां धर्मकर्म. शो अर्थ ते सारे?
तिमिर [७१]भरी नर पात्रमात्र जेम [७२]पद ऊलेचे,
[७३]जेम कुसुम-आकाश तास [७४]को घर घर वेचे,
तेम अध्यातम ज्ञान घण [७५]कृत्य सकल जाणे, अखा!
मदमति मानी रह्या करता दीसे पखपखा. २०

को [७६]कीर्तन ने गानतानने साधन माने,
[७७]वर्णाश्रम-अभिमान-ध्यान असमंजस कोने,
को साधे अष्टांग, सांग कायाकृत्य जाणे;
को करे [७८]पूजन देव, सेव [७९]अधिक ते प्रमाणे.

ए सहु [८०]कायाक्लेष छे, [८१]मनमलीनता ए सही.
अखा! तकना पानथी [८२]अग्रबुद्धि ऊपजे नहीं २१

---

६२ लाग (क) ६- विज्ञान ख) ६४ चिदमा (खग), चिदम (ख) ६५ दिलमा (क) ६६ छे (कग) ६७ सरखा (ख), मरवा (ग) ६८ सराइये (कख), साहिय (ग) ६९ घण वाल (क) ७० करता (खग) ७१ भराने पात्रपरी जन (कखग) ७२ रह्या (कख) ७३ जेमका (खग) ७४ लही (क) रह्यो (खग) ७५ कम (ख) ७६ करता दीसे गान (कखग) ७७ ख वर्णा.. अभिमानयान . भाने (खग) ७८ पूर्वन (क) ७९ अधिकता आग (कखग) ८० ए जजाळ (क) ८१ मनमान्यता (ख) मनमानीता (ग) ८२ अंग ताप (क), अल्ना (ख), अल्प बुध्य (ग)

को षड्दर्शन – ज्ञानी, वाणी जिह्वाने अग्रे,
ईश्वर थई पूजाय; गाय ,जस नग्रे नग्रे.
[८३]को कहावे चिरकाय, पाय पृथ्वीपति लागे.
को कहावे दानेश, ईशकर्णादिक – आगे.

[८४]तहां लगी जाणे अखा! शमी न सगली वासना.
लिंगनो भंग थया विना सर्वे मननी उपासना. २२

भूतभविष्यनी वात ज्ञात कोइ कही आले.
को [८५]केहे त्रिभुवननाथ हाथ मुख बीडी घाले.
[८६]को केहे सुर त्रेत्रीस ईश ने अज देखाडुं[८७].
को करे मोटी काय, [८८]जाय अंडकटाह फाडव.

तोये ते जाणे अखा! मायाए मर्कट कर्यां.
वासनादोरी कठमां. [८९]कालनट नाचमां फर्यां. २३

ते माटे जन जाण! वाणी ले [९०]विध शुं विचारी.
म्होय ए कवित गीत. [९१]द्वैत जो मूल संसारी.
जे कापे निज अंग, भंग करे चतुर देहनो,
ते छे चांडूं पद. छेद [९२]ले जोई तेहनो.

गुरुतणी दृष्टे अखा! गेहेन [९३]सहु ए वामिये,
जेम आरुयनुं पारखुं चांद शुं खातां पामिये. २४

सर्वे माया जाण, आण मन मूलगे ठामे.
आपथी बीजुं जेह, तेह छे विघ्न ज धामे.
राजपुत्रनो न्याय, उपाय तहां तेह करवो.
ज्येष्ठ [९४]कनिष्ठक भ्रात तात लगे वांछे मरवो.

ते माटे अभ्यास तुं अखा! करी ले ए विधे,
द्वैत तणो [९५]अध्यास छे ते टाळे,[९६]जेम कायू सुधे. २५

---

८३ कोय कवीश्वर पाय (क) ८४ तोहे ते (ग) ८५ कहावे (क) ८६ कोइक सुर (क) ८७ देखाडे (क) ८८ अंडकटाह ज पाडे (क). ८९ कालनाटच नाचे (क) ९० विविध (क) ९१ द्वैतनू (क) ९२ जे सुवे सु (क), ल्ये जोई (ख), के जद (ग) ९३ सर्वे (कग). ९४ कनिष्ठ होय (खग). ९५ अभ्यास (कग) ९६ सम (कख).

देखे त्रिभुवन-ईश, [९७]वसा चीस माने माया.
देखे तूं सिद्धिवंत, अंत नहि अमर काया.

जे तूं देखे स्वर्ग, वर्ग [९८]लेहे पद मायानु.
उत्तम [९९]संत महंत, [१००]सांत प कृत्य कायानूं.

पसर्यूं सहु संकेलजे. मने मान्यूं मिथ्या थशे.
अखा! [१०१]पम आलोचतां सुरत [१०२]सच सतमां हशे. २६

मोटा मंदिर [१०३]महीं तहीं छे काच ज ढाल्या.
नील पीत बहु [१०४]रंगरगना भेदो भाल्या.
ऊग्यो [१०५]ऊगमणो सूर दूरथी [१०६]अंतर झलके;
देखाडे बहु रूप धूप विविध पेर चलके.

अखा! उपर अवलोकतां तहां तेमनूं तेम छे.
पम त्रिलोकी जाणजे, वस्तु वडे [१०७]प पम छे. २७

नव [१०८]मूले हुं घाटि; माट सहु जाणे खोटूं.
पिंड तेवूं ब्रह्मांड; छांड [१०९]सही न्हानूंमोटूं.
सूक्षम तेवूं स्थूल; स्थूल सूक्षम नहि अंतर.
नारीकुंजर चीरि धीर थई जुए पटंतर.

पूतली जोतां बहुलता [११०]पटतलमां दृष्टे पडे.
[१११]विराट हस्ती ते, अखा! दीसे बहुलता प घटे. २८

[११२]पथी भाघो चाल. हाम घाल आप [११३]खोवा.
छांड पिंड ब्रह्मांड [११४]पंडिता! नयो को जोवा.

---

९७ तोय विश विश्वा (क). ९८ जाणे (क), सहु एह (ख), सर्व ए (ग). ९९ मध्यम वात (कखग). १०० शात ए (क), सांत तोहे (खग). १०१ ए ज (क), ए (खग). १०२ सहज तनमां (क), संग तनमे (ग). १०३ बहार चार दिश (क) १०४ रंगडंगना (क). १०५ शाशी वां (क), शशी के (खग) १०६ अतिशे (क). १०७ एक (क) १०८ मूलेन (कग). १०९ सहु (कग), सरव (ग). ११० पूतलिका (कग), पटतल वहां (ग). १११ हस्ती तेम वैराट (कग), हस्ती ते वैराट (ग) ११२ एकर्यां (क). ११३ खावा (क) ११४ थूल...जावा (क).

जीव ने ईश्वर होय कोय नथी पणे [११५]धामे.
स्त्रीकुंजर दृष्टांत जेम ईश्वरने [११६]ठामे.
[११७]कैवल्य तत्व. तेने अखा! बुद्धिबल पोहोचे नहीं.
प [११८]स्थूलनूं दृष्टांत कयूं को धीमंत शके ग्रही. २९
जेम पर्वतनो [११९]म्होट, मोट, तेनो ते [१२०]घाटे,
होय कोस दसवीस, [१२१]होसि तोय निकट नाटे;
[१२२]तेवडे तेवडो तेह: यह [१२३]छे मर्म ब्रह्मनो,
[१२४]सांहा न बोल्या लाग, पाग[१२५]ना छवे कर्मनो.
एम, जाणीने रेहे अखा! लिंगभंग सेहेजे हशे,
अन्य उपाय जंजाल छे ते टाल्ये मोढूं थशे. ३०
साधन[१२६]सार विचार[१२७]वार, बुद्धि जो शोधी.
हूं नहि तूं नहि, तेह[१२८]पह. [१२९]ग्रह मूक विरोधी.
गुरु था तारो तूं ज. [१३०]जूजवो को नथी भजवा.
[१३१]यहिबुद्धि तूं टाल, वाल अंतर[१३२] पेसा जवा.
जेम छे तेमनूं तेम [१३३]छे. थयूं गयूं कांइ नथी,
[१३४]अखा! आप आनंदघन प[१३५] स्वरूप जोयूं[१३६] मथी. ३१
प अनुभव परमाण [१३७]जाण जे राखे हृदये,

---

११५ ठामे (क). ११६ धामे (क). ११७ कैवल्यतामां को (कग), कैवल्यतामे को (ख). ११८ स्थूलसूक्ष्मदृष्टांतने (क). ११९ मोट दीसे (क), प्रोढम दीसे (खग). १२० माटे (कख), मोटो ग. १२१ तोय निकट एव नाटे (कखग). १२२ ते वडे दीसे (कखग). १२३ परम परिमलें (क). १२४ नहीं (क). १२५ छने नहीं कर्में (क). १२६ सार्वे (कखग). १२७ बुद्धिथी जोने (क). १२८ देह नहीं (क). १२९ घर (कखग). १३० नथी बीजो को (कग) १३१ बाण सूरत (क). १३२ अंतरमां सेवा (क), अंतर पेसवा (खग). १३३ अखा (कखग). १३४ आपे आप (कख), आपोआप (ग). १३५ स्वस्वरूप (कग). १३६ जोयूं 'मथी' (क), जोयुं कथी (खग). १३७ जाणी जे (क), जाण जो ख, जाणी जो (क).

[१३८]समझते समझाय, जाय गेहेन [१३९]अर्क उदये.
ए अनुभव [१४०]कह्यो ईश, चोथि [१४१]नमो पूछचे उमया.
ए [१४२]भाखियो वसिष्ठ; तुष्ट [१४३]तांहां रघुपति [१४४]बनिया.
ए अनुभव शुकदेव शूं जनक विदेहे भाखियो.
ए अनुभव नारदे अखा ! वेदव्यास प्रति दाखियां. ३२

[१४५]एह कह्यो [१४६]परब्रह्म; [१४७]ब्रह्मानी हूती पृच्छा;
ए अनुभव कह्यो हंस; [१४८]अंश सनकादिक [१४९]प्रोछचा.
ए अनुभव कह्यो वेद, भेद जे चोदमे कांडे.
एह कह्यो शुकदेव; भेव सुणियो ब्रह्मांडे.
ए अनुभव [१५०]परिपूर्ण छे, ठाम न ठालो हरि विना;
सुर असुर मानव अखा ! ए समझ्या घण निर्धना. ३३

ए अनुभव कह्यो कृष्ण, प्रश्न जो पूछचूं अर्जुन;
गीता अमृतपान, ज्ञानगंगा [१५१]मध्य मज्जन.
ए अनुभव कह्यो भीष्म धर्म प्रत्ये पर्व शांते.
एह कह्यो अवधूति शिव सुत प्रति एकांते.
अखा ! एह अनुभव खरो, जेणे महाजन नीपना.
लिंगभंग [१५२]नीपना विना साधन कालनी खेपना[१५३]. ३४

[१५४]होय अजानुं दोझ, भोज्य घृत नावे शतथी.
[१५५]फूलीकेरो आहार फार दीसे बहु वितथी.

१३८ समझता (कग) १३९ निश (क). १४० भाख्यो (कखग). १४१ नामी (ग). १४२ अनुभव कह्यो (कखग) १४३ थई (क), हवा (खग) १४४ विनया (खग). १४५ ए अनुभव (कखग). १४६ कपिल (क. १४७ दिल देवहूति इच्छा (क), जेम ब्रह्मा सत प्रीछ्या (खग) १४८ ब्रह्म (क), अज (खग) १४९ पूछ्या (खग). १५०भरपूर (खग). १५१ जळ (क), कोंध (खग). १५२ थया (कखग) १५३ सेवना (क), १५४ एक (क), जेम (खग). १५५ जेम फुलीनो (कखग).

[१५६]बदरीनो वेपार, सार शूं ऊगरे तेहने ?
[१५७]जे झाकळजळ गर्थ, अर्थ शूं आवे मेहने ?
अणलिंगी अनुभव विना साधन सघलां जे कह्यां,
[१५८]तेह अर्कफल [१५९]शां अखा ! तूल थई ऊडी गयां ! ३५

पारसनो धनवंत, अंत धनफेरो नावे.
वस्तु न को दुष्प्राप, [१६०]आप भावे ते खावे.
रविरथ बेसे जेह, तेह तांहां मर्धे देखे.
पंखी मले लख क्रोड, कोड नहि अनलज लेखे.
महा अनुभव आगल अखा ! कृत्य सकल लेखे नहीं.
परब्रह्मनो प्रौढता, ते रसना शू शके कही ? ३६

ए छप्पा छत्रीस ईश अमनूं छे जीवन.
पद सुधारस [१६१]पय देव-अंशीनूं पोषन.
पद तत्व उपदेश लेश लही जे जन धारे,
होय हरिनो अवतार; सार [१६२] करी तेहने तारे.
घट मध्ये आकाश वत वरते ते [१६३]ससार मधे.
[१६४]अध्यारोपे केहे अखो. जाण ते जाणे ए विधे. ३७

जण्यो नथी को जन, तन शूं काळूं गोरूं ?
[१६५]केहेनां कहिये माततात, जो न मले छोरु ?
छते अणछती [१६६]घात धात आवे तो आवे.
वांझतणो सुत जेह, तेह जीती रण कावे.
अखा ! अकथ छे ए कथा. समझु नर समझी जशे.
महा अनुभव आकाश वत, क्षेम [१६७]सारूं ते ऊगशे. ३८

जे सुणसे नर नार, मार वस्तु [१६८]हये थाशे.
ब्रह्म हिमाळो जेह, देह [१६९]तेहमां गळी जाशे.

---

१५६ जेम बदरीनो (कखग). १५७ जेम झाकळनी वृष्टि (कखग) १५८ अर्कनु फळ (क), जेम अर्कफल (खग) १५९ शोभे (कखग). १६० खाय पेरे ज्यम भावे (क), प्राप्त भोग जे जे भावे (ख), (प्राप्त) छे जे भावे (ग) १६१ पान (क) १६२ मही (कखग) १६३ सघारी (कखग). १६४ ए आरोपी (कखग). १६५ केना कहुं मात तात जनम जो (क). १६६ घाट घाट (क.) १६७ सरखो (क) १६८ ते साहाशे (क). १६९ जळ्मां (कखग).

पघने झाय वरास [१७०]अनायासे, जेम ऊडे;
तेम प ब्रह्मविचारसार पाभे [१७१]संत गूढे.
जे जाणो, ते जाणजो, बुद्धिमाने प ओचर्यूं.
निमित्त माघ अखो कहे, जे जाणे तेणे कर्यूं. ३९

आद्य अंत ने मध्य बुद्धिथी जुप विचारी,
ते ते कैवल्य ब्रह्म; [१७२]चर्म न्होय नर ने नारी.
छप्पा प छत्रीस [१७३]दीस छे [१७४]भ्रमनो निशानो.
[१७५]चार फलश्रुति. [१७६]लेश वेश ते ब्रह्मदशानो.
सर्वे मली चालीस अखा ! समझी जे उरमा धरे,
चिदानंद चिद्रूप ते; [१७७]श्रीमुखथी हरि ऊचरे. ४०

---

१७० आद्य कीधा वण (क), अयस कीधा विना (ख).
१७१ सन गुढे (क), सद्गुढे (ख), सतगुणे (ग). १७२ श्रम न ले (क).
१७३ दीसे छे (क), दिवस छे (खग). १७४ मर्मनी सानो (क), मह्यनी शानो (ग). १७५ चार कह्या फलश्रुति (कख), चार कह्या फलसून (ग).
१७६ वेश ते महाद्दशानो (क), लेश ते ब्रह्म दिशानो (ख), लेस से ब्रह्म दिशानो (ग). १७७ श्रीहरि मुखथी (क).

पद्यरचनानी ऐतिहासिक आलोचना.

इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे ।
विन्देम देवतां वाणीममृतात्मनः कलाम् ॥[१]

पार्थिये, पूर्व कविने नमी, अमर एमनी
कलारूपे उरे मूर्ति स्फुरो वागीश्वरी तणी !

दृष्टिपात २.

ऋक्काल.

१ संस्कृत भाषामां श्रुति जूनामां जूनूं साहित्य छे. मंत्रब्राह्मणात्मक श्रुतिमां ऋग्वेद अग्रस्थान धरावे छे. चारे मंत्रसंहितामां सौथी प्राचीन ऋग्वेदनी संहिता छे. पद्यरचनाना इतिहासनो अभ्यास करवा इच्छनारने ते ज संहिता परम महत्त्वनी छे; केमके आखी ए संहिता विविध छंदमां रचायली छे. यजुर्वेदनी संहितानां यजुस् अने निगद गद्यमां छे; एमांनो पद्यात्मक भाग ऋग्वेदमांथी उतारेलो छे. सामवेदनी संहिताना आर्चिक अने उत्तरार्चिक ए बे खंडमां जे ऋचाओ संगृहीत छे, ते पण लगभग बधी ए ऋग्वेदनी संहितामांथी लीधेली छे; एटले पद्यात्मक छतां पण ए संहिता पद्यरचनाना संबंधमां कंइ नवीन प्रकाश पाडती नथी. अथर्ववेदनी संहितानो त्रयी विद्यामां समावेश थतो नथी. शांतिकपौष्टिक मंत्रोनो ए संग्रह भाषामां अने पद्यरचनामां बीजी त्रणे संहिताथी अर्वाचीन छे. ऋग्वेदमां निबद्ध नहि, एवो नवीन छंद अथर्ववेदनी संहितामां जोवामां आवतो नथी. आ रीते श्रुतिसाहित्यना पद्यबंधनी आलोचना ऋग्वेदमां ज पर्याप्ति पामे छे. पद्यरचनानी उत्पत्ति शी रीते थई, तेणे केवूं स्वरूप धारण कर्यु, तेनो विकास

---

१ जुओ भवभूतिना उत्तररामचरित नाटकनुं आदिमंगल.

केवो अने केटलो थयो, ते विषयमां आपणे ऋग्वेदनी संहिता उपर ज दृष्टि ठेरववी पडे छे.

२ ए तो सुविदित सत्य छे के प्रथम साहित्य उत्पन्न थाय छे अने पछी तेना संग्रहनो वारो आवे छे. भगवान महावीर अने बुद्धनी धर्मघोषणानो काळ इसवी सन पूर्वे पांचमुं शतक छे. परंतु बौद्ध त्रिपिटकनी घटना ते पछी वर्षे वर्षे थवा पामे छे. कंठस्थ जैन आगम तो बहु मोडो, इसवी सनना पांचमा शतकमां ग्रंथस्थ बने छे. ऋग्वेदसंहिता अने तेमांनी ऋचानी उत्पत्तिनी बाबतमां पण तेम ज छे. ऋचाओनो रचनाकाळ संग्रहकाळथी बहु पुराणो छे. एनी प्राचीनता निश्चितपणे आंकवी अत्यारे अशक्य छे. परंतु तेना पूर्वोत्तर अवधि सूचवी शकाय छे. ऋग्वेदनी पद्यरचना अवेस्तामां ऊतरी आवी छे, ते वात ध्यानमां लेतां ऋग्वेदना देवपूजकथी अवेस्ताना आतशपरस्त विखूटा पड्या, ते समय एनो उत्तर अवधि ठरे छे. वळी, हिंदजर्मनीय कुटुंबनी भाषाओ बोलनाराना पूर्वजो अभिन्न वासमांथी छूटा पड्या अने केटलांक टोळां युरोपमां जई वस्यां, ते समय उक्त साहित्यनो पूर्व अवधि अंकाय छे; केमके हिंदइरानीय पद्यरचना तेमना अने तेमना वंशजोना साहित्यमां दृष्टिए पडती नथी. ए बाबतमां आगळ विवेचन आवशे. निर्दिष्ट ए बे अवधिना गाळाने हुं ऋक्काल नाम आपुं छुं अने ते गाळामां प्रगटेला साहित्यने ऋक्साहित्य संज्ञाथी ओळखाववा मागुं छुं.

३ ऋचा (सं. ऋच्) एटले अर्चननो–प्रार्थनानो मंत्र. ऋग्वेदनी ऋचाओ बधी ए छंदोबद्ध छे. छंद(सं. छन्दस्)मां एक करतां वधारे पद किंवा चरण आवे छे. पदना मापनुं धोरण एक ज छे, वर्णनी संख्या. वर्णनो मेळ ए जूनामां जूनो अने सरळमां सरळ मेळ होई ऋग्वेदनी पद्यरचनामां मापनुं धोरण थवा योग्य ज छे. पृथ्वी उपर कोई पण जूना के नवा साहित्यमां एनो जोटो नथी. ऋक्साहित्यनो वर्णात्मक पद्यबंध एक अनोखो ज पद्यप्रवाह छे.

४ वर्णमेळनूं मंडाण जे वर्ण, ते छंदोविद्यानी परिभाषामां मात्र स्वरने ज लक्षित करे छे. व्यंजननो स्वरनी मदद वगर पूरेपूरो उच्चार थतो नथी. संपूर्ण उच्चार स्वरनो ज शक्य छे. ते कारणथी व्यवहारमां वर्ण बोल स्वरनो निर्देश करे छे, जो के व्याकरणमां ते स्वर अने व्यंजन उभयनो वाचक छे. कोइ पण शब्दना केटला वर्ण के अक्षर छे ते जाणवूं होय, तो स्वरनूं लेखूं थाय छे, व्यंजननूं नथी थतूं. एटले करीने आ व्याख्यानमां वर्ण शब्दे करीने स्वरनूं ग्रहण अभिप्रेत छे. वर्णना हूं बे भेद पाडूं छूं, केवळ अने विवर्धित. अनुस्वारनो, विसर्गनो के अधुरा व्यंजननो वळगाड वळग्या वगर जे ह्रस्व स्वर मूळ स्वरूपे रहे, ते केवळ वर्ण. दीर्घ स्वरनी प्रकृति ह्रस्व स्वर होवाथी विलंबन विधानथी सिद्ध थयेला ए स्वरने तेम ज वळगाडना आकारमां थयेला वधारावाळा ह्रस्व स्वरने विवर्धित नाम में आप्यूं छे. वर्ण अक्षर अने वरडी बोल आ व्याख्यानमां पर्याय छे. वर्णात्मक पद्यनी पंक्ति स्थिर अने चर भागनी बने छे. पहेलामां केवळ के विवर्धित जे वर्ण जे स्थळे इष्ट होय, ते ज त्यां मूकाय छे. बीजामां केवळ अने विवर्धित पैकी गमे तेनो प्रयोग थई शके छे, ते कारणथी ए भाग चर कहेवाय छे. वर्णबंधनी घटनामां उपयोगी बीज त्रण छे. केवळनो क, विवर्धितनो वा अने चरनो च. कोइ पण वर्णबंधनी ऊकेलणी आ त्रण वर्णमातृकाना स्वरूपमां साध्य छे.

५ ऋग्वेदमां वर्णात्मक पद्यबंधना त्रण प्रकार छे; एक तो शुद्ध छंदनो, बीजो मिश्र छंदनो, अने त्रीजो प्रगाथनो. जेनां बधां ए चरण एक ज मापनां होय, तेने विद्वानो शुद्ध छंद तरीके ओळखावे छे. बीजभूत चरण हूं त्रण ज गणूं छूं, पांच वर्णनूं, आठ वर्णनूं अने अगियार वर्णनूं. श्रुतिसाहित्यनी पद्यरचनानी एक विशिष्टता नोंधवानी जरूर छे. मुकरर करेली वर्णसंख्या करतां एकाद वर्ण पदमां ओछो होय अथवा एक बे वधारे होय, तो नभावी लेवाय छे. ऋक्कालना ऋषिओ बीजी पण केटलीक छूट भोगवे छे;

जेवी के अर्धस्वर यकार वकारनूं संप्रसारण करी आवश्यक वर्णसंख्या पूरी करवानी, व्याकरणसिद्ध रूपना अंत्य आ बदल अआ उच्चारी पूरती वर्ण-संख्या आणी मेळववानी, पदांत विरामना संकेतथी अंत्य टूंका उच्चारना वर्णने लांबो उच्चारवानी, वगेरे. आर्ष पद्यरचना समजवा माटे आ आर्ष दृष्टि अपेक्षित छे. ए दृष्टिए उक्त बीजभूत पदोमांथी छंदोनी उत्पत्ति विचारिये.

६ उपर गणावेलां पांच आठ अने अगियार वर्णनां चरण किंवा पदने हुं अनुक्रमे वैराज, गायत्र अने त्रैष्टुभ, एवां नाम आपूं छूं. तेमांना पहेला पदथी बनेला छंदनूं उदाहरण संहिताना चोथा मंडळना दसमा सूक्तनी त्रीजी ऋचा पूरूं पाडे छे, जेने हुं केवळ विराज् कहूं छूं. ते नीचे प्रमाणे छे.

एभिर्नो अर्कै-
र्भवा नो अर्वाङ्
स्व१र्णज्योतिः
अग्ने विश्वेभिः
सुमना अनीकैः ॥

ऋचाना त्रीजा पदमां स्व बदल सुअ समजी लेई पांच वर्णनी संख्या पूरी करवानी छे; अने पांचमा पदमां एक वर्ण वधारे छे, ते नभावी लेवानो छे. ए ज सूक्तनी नीचे आपेली पहेली ऋचाना पूर्व भागमां त्रण वैराज अने उत्तर भागमां एक त्रैष्टुभ पद छे.

अग्ने तमद्या-
श्वं न स्तोमैः
क्रतुं न भद्रम्।
हृदिस्पृशं ऋध्या मा त ओहैः।

बीजभूत छे. वैराज मदना सळंग पाठथी बननारां वे पदनो द्विपदा विराज् नामे छंद बने छे. पहेला मंडळनूं छासठमूं सूक्त एनूं उदाहरण छे. संहितानी अक्षरनूं लेखूं करवानी पद्धतिने अनुसरी एनी ऋचा दस गणी सायणाचार्य मुखपाठनी लेखनपद्धति प्रमाणे पांच ऋचा लखे छे. तेवी ज बेवडी आंकणी नीचे आपेला संहिताना पहेला मंडळना सित्तेरमा सूक्तनी ऋचाओनी पण भाष्यमां पण नोंधवामां आवी छे.

वनेम पूर्वीरर्यो मनीषा अग्निः सुशोको विश्वान्यश्याः। (१)
आ दैव्यानि व्रता चिकित्वाना मानुषस्य जनस्य जन्म। (२)
॥१॥

गर्भो यो अपां गर्भो वनानां गर्भश्च स्थातां गर्भश्चरथाम्। (३)
अद्रौ चिदस्मा अन्तर्दुरोणे विशां न विश्वो अमृतः स्वाधीः। (४)
॥२॥

स हि क्षपावाँ अग्नी रयीणां दाशद् यो अस्मा अरं सूक्तैः। (५)
एता चिकित्वो भूमानि पाहि देवानां जन्म मर्ताँश्च विद्वान्। (६)
॥३॥

वर्धान् यं पूर्वीः क्षपो विरूपाः स्थातुश्च रथमृतप्रवीतम्। (७)
अराधि होता स्व१र्निषत्तः कृण्वन् विश्वान्यपांसि सत्या। (८)
॥४॥

गोषु प्रशस्तिं वनेषु धिषे भरन्त विश्वे बलिं स्वर्णः। (९)
वि त्वा नरः पुरुत्रा सपर्यन् पितुर्न जिव्रे वि वेदो भरन्त। (१०)
॥५॥

साधुर्न गृध्नुरस्तेव शूरो यातेव भीमस्त्वेषः समत्सु। (११)
॥६॥

उतारेला दृष्टांत विचारतां निष्कर्ष ए नीकळे छे के वैराज पद मूळे पांच वर्णनूं हशे; ते उपरथी द्विपदा विराज्नूं दस वर्णनूं पद ऋक्कालमां ज उद्भव्यूं हशे, ते मुलपाठमां पाछळथी वीस वर्णनूं अंकायूं हशे. आवेस्तिक वैराज पद पांच ज वर्णनूं छे, ते मारा तर्कनूं समर्थन करे छे[२].

७ अत्रे संहिताना दसमा मंडळना एकसो बोतेरमा सूक्तना छंद विशे थोडीक समजुती आपवानी मने जरूर जणाय छे. ए सूक्तमां चार ज ऋचा छे. ते विशे भाष्यकार लखे छे के चारे वीस वीस वर्णनी द्विपदा विराज् छे. ए कथन प्राचीन पद्धतिने अनुसरीने छे. वास्तविक रीते जेने में उपर वैराज पद कह्यूं छे ते चारे ऋचा पैकी एकेमां छे ज नहि. प्रत्येक ऋचा एक गायत्र पद अने एक जागत पदनी बनेली छे; एटले के पूर्व पद आठ वर्णनूं अने उत्तर पद बार वर्णनूं छे[३]. बे पद मळी आखा छंदना वीस वर्ण थाय, ते लेखे एने जूनी परिभाषानूं वर्गबोधक द्विपदा विराज् नाम भाष्यमां आप्यूं छे. पूर्वे शुद्ध छंद, मिश्र छंद अने प्रगाथ ए जे त्रण प्रकार हूं कही गयो, ते पैकी चर्चास्पद सूक्त मिश्र छंदमां छे. एने आ नवी पद्धतिमां वैराज पदना द्विपदा विराज् छंदनूं उपर जे निरूपण कर्यूं छे, ते लागु पडी शके नहि. सूक्त नीचे आपूं छूं. ते विचारवाथी आ विषयमां कंइ पण भ्रम के गेरसमज उदय थवा पामशे नहि.

आ याहि वनसा सह गावः सचन्त वर्तनिं यदूधभिः ॥१॥

आ याहि वस्व्या धिया मंहिष्ठो जारयन्मखः सुदानुभिः ॥२॥

---

२ जुओ चालु व्याख्यानने छेडे आपेलूं आवेस्ताकनी पद्यरचना विशेनूं परिशिष्ट.

३ आ सूक्तनी ऋचामा ज्यारे पहेलूं गायत्र अने बीजूं जागत पद छे, त्यारे आठमा मंडळना ओगणत्रीसमा सूक्तनी ऋचाओमा पहेलूं जागत अने बीजूं गायत्र पद जोवामां आवे छे. अहीं पण भाष्यमां द्विपदा विराज् संज्ञाथी छंदनो निर्देश छे.

पितृभृतो न तन्तुमित् सुदानवः प्रति दध्मो यजामसि ॥३॥
उषा अप स्वसुस्तमः सं वर्तयति वर्तनिं सुजातता ॥४॥

८ प्रसंगवशात् छंदोना वर्गीकरणनी प्राचीन पद्धति अने में योजेली नवीन पद्धति, ए बेना भेद विशे खुलासो करवो इष्ट छे. नवीन पद्धति आजथी पा सदी उपर बीजी गूजराती साहित्य परिषद माटे तैयार करेला मारा 'पद्यरचनाना प्रकार' नामे लेखमां ऊपजावी हती[४]; अने सांप्रत आलोचनामां तेने हुं अनुसरूं छुं. प्राचीन पद्धतिमां, आखो छंद एकम तरीके लेई बधा पदोना कुल वर्ण गणतां जे सरवाळो आवे, तेने अनुसरीने एनूं वर्गीकरण सधाय छे. एमां पदनूं स्थान गौण छे. ए पद्धति ऊंडा ऊतर्या वगर अर्थ साधनारी योजना तरीके ठीक छे. परंतु, अमुक भाषामां अमुक पद्यरचनाना बीजमांथी अनेक शाखा प्रशाखावाळूं मनोहर पुष्पफळनी समृद्धिवाळूं वृक्ष शी रीते विस्तार पाम्यूं, तेनी प्रतीति ए पद्धतिथी थती नथी. पद्यबंधनी संपत्ति, भाषामां केटला छंद प्रयुक्त छे अथवा प्रस्तारथी शक्य छे, तेनी गणतरीथी मपाती नथी. पण साहित्यमां वपरायला छंदो पैकी कया कया छंदमां खरी सर्गशक्ति स्फुरे छे अने कया कया छंद अमुक मौलिक छंद उपरथी जोडी काढवामां आव्या छे, तेना विवेकथी ज ए संपत्ति अंकाय छे. छंदोनां पण गोत्रो छे, गोत्रपुरुषो छे, वंशविस्तार छे, वंशानुकीर्तन छे. छंदोविधाना प्रादुर्भाव अने विकासनूं दर्शन नवीन पद्धतिए ज साध्य छे. ए कारणथी पदने बाजु उपर राखी आखा छंदनी आंकणी अने वर्गणी करवा बदल में छंदने बाजु उपर राखी पद किंवा चरण उपर दृष्टि ठेरववी योग्य धारी छे, अने पदने ज छंदना निरूपणना एकम तरीके स्वीकार्यूं छे, जो के छंदनां नाम तो जूनां ज नभावी लीधां छे. प्रकृतिविकृतिनो भेद स्फुट थवा उपर आपेला वैराज पदना विवरणमां पांच वर्णना पदने बीजभूत अने दस वर्णना द्विपदा विरा-

४ जुओ बुद्धिप्रकाश, इसवीसन १९०८, जानुआरी-एप्रिल.

ज्ना पदने तेम ज वीस वर्णना मुखपाठात्मक पदने उक्त बीजमांथी फूटेला फणगारूप गणेल छे. पंचवर्ण वैराज पद प्रकृति छे अने दस तथा वीस वर्णनां पद तेनी विकृति छे. दसमा मंडळना एक सो बोतेरमा सूक्तनी चार ऋचाना छंदनो वैराज गोत्रमां अंतर्भाव नथी कर्यो ते पण छंदोविद्यामां सर्गशक्तिनो आविर्भाव मापवाना अने वास्तविक छंदसमृद्धि आंकवाना उद्देशथी **'पद्यरचनाना प्रकार'**मां ऊपजावी काढेली पद्धतिने अवलंबीने ज.

९ ऋक्साहित्यनी पद्यरचनानुं बीजूं बीजभूत पद जे गायत्र, तेनो **गायत्री** छंद बने छे. एमां आठ आठ वर्णनां त्रण पद आवे छे. ऋग्वेदसंहितानुं आदिसूक्त आ छंदमां छे. तेनी पहेली ऋचा **गायत्री** छंदना उदाहरण तरीके नीचे आपूं छुं.

अग्निमीळे पुरोहितं
यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्।

संध्योपासनामां सविताने अर्घ आपवानो बहु जाणीतो मंत्र पण **गायत्री** छंदमां छे. ए ऋचाना देवता सविता भगवान छे, तेथी ते सावित्री कहेवाय छे. गायत्री अने सावित्री पर्यायशब्द नथी. एकमां छंदनो अने अन्यमां देवनो संकेत छे. संहितानो लगभग चोथो भाग **गायत्री** छंदमां छे.

१० चार गायत्र पदनो अनुष्टुभ् छंद बने छे. एनुं उदाहरण नीचे प्रमाणे छे.

यत् पर्जन्य कनिक्रदत्
स्तनयन् हंसि दुष्कृतः।
प्रतीदं विश्वं मोदते
यत् किं च पृथिव्यामधि ॥५।८३।९॥

गायत्री अने **अनुष्टुभ्** छंदनी आंतर घटना लगभग सरखी छे. **अनुष्टुभ्** छंदनी उत्पत्ति गायत्री छंदमांथी थई छे. **गायत्री** प्रकृति छे अने **अनुष्टुभ्** तेनी विकृति छे. संहितानो बारमो भाग **अनुष्टुभ्**मां छे.

११ वर्णात्मक पदरचनानूं त्रीजूं पगथियूं त्रैष्टुभ पद छे; तेनो **त्रिष्टुभ्** छंद बने छे. अगियार अगियार वर्णनां चार पद, ते **त्रिष्टुभ्**. द्विजनामधारीनी प्रात संध्याना सूर्योपस्थाननो मंत्र जे नीचे आपवामा आव्यो छे, ते **त्रिष्टुभ्** छंदनूं उदाहरण छे.

चित्रं देवानामुदंगादनीकं
चक्षुर्मित्रस्य वरुंणस्याग्नेः ।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं
सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥१।११५।१॥

बह्वृचोना **ऐतरेय** ब्राह्मणना बीजा अध्यायना त्रीजा खंडमां चार पुरुषनी उपासना कही छे, तेमांना महापुरुषनी भावना जे सूर्यमां करी छे ते उपरना मंत्रने अवलंबीने छे. **त्रिष्टुभ्** छंद ऋकालमां सौथी वधारे लोकप्रिय होय एम जणाय छे. संहितामां एनो वपराट गायत्री छदथी लगभग पोणा बे गणो छे.

१२ **त्रिष्टुभ्** छंदमांथी **जगति**नो आविर्भाव थाय छे. बार बार वर्णनां चार पदथी आ छद नीपजे छे. अगियार वर्णना त्रैष्टुभ पदमां बारमो वर्ण ऊमेरतां सवाद जाळववा अगियारमा लाघा उच्चारना वर्ण बदल ट्का उच्चारनो वर्ण गोठववो आवश्यक छे. अगियार वर्णना पदो भेगूं बार वर्णनूं पद अने बार वर्णनां पदो भेगूं अगियार वर्णनूं पद मेळव्याना दृष्टात सूचवे छे, के त्रिष्टुभ् अने जगतानी उच्चारणा अभिन्न छे. जेम **अनुष्टुभ्** छंद **गायत्री**नी विकृति छे, तेम **जगती** पण **त्रिष्टुभ्**नी विकृति छे. संहितानो लगभग आठमो भाग **जगती** छंदमां छे. एनूं उदाहरण—

यमेरिरे भृगवो विश्ववेदसं
नाभा पृथिव्या भुवनस्य मज्मना ।
अग्निं तं गीर्भिर्हिनुहि स्व आ दमे
य एको वस्वो वरुणो न राजति ॥१।१४३।४॥

१३ पूर्वोक्त गायत्री, अनुष्टुभ्, त्रिष्टुभ् अने जगती ए चार ऋग्वेद-संहिताना प्रधान छंद छे. लगभग नव हजार ऋचाओ ए छंदमां रचायली छे. बीजा छंदमां गूंथायली ऋचानी कुल संख्या मात्र दोढ हजार ज छे. वैराज, गायत्र अने त्रैष्टुभ, ए आर्चिक पद्यरचनाना मौलिक प्रकार छे. हिंद-इरानीय भाषाशाखा पैकी इरानीय प्राचीन वाणीमां पारसी भाइओना अवेस्ता नामे धर्मपुस्तकमां प्रस्तुत त्रण प्रकारनी पद्यरचनाने मळती पद्यरचना आपणुं ध्यान खेंचे छे. एमां अष्टवर्ण पदना, एकादशवर्ण पदना अने द्वादशवर्ण पदना मंत्रो मळे छे. ए बधा पदसंख्याना बंधन विनाना शुद्ध वर्णबंध छे. बंने धार्मिक साहित्यना पद्यात्मक वाहननी आ समानता निःसंशयपणे सूचवे छे के प्राचीन देवपूजक अने आतशपरस्त बंधुओ अविभक्त जनताना स्वरूपे पूर्वे अभिन्न निवासमां रहेता हशे, त्यारे उक्त त्रण मौलिक पदनी पद्यरचनानो संयुक्त प्रजामां प्रचार थई चूक्यो हशे, अने आतशपरस्त टोळुं जुदुं पड्युं त्यारे उक्त पद्यरचना पण तेना साथमां रही हशे.

१४ वैराज पद गायत्र अने त्रैष्टुभ पदथी वर्णसंख्यामां जेम टूंकुं छे, तेम उत्पत्तिना क्रममां जूनुं छे. श्रुतिनी पद्यरचनानो सामान्य स्थापित सिद्धांत छे के पद अने तेनो छेल्लो शब्द—बंने साथे पूरां थवां जोईए. पद पूरूं थाय त्यां पदनो छेल्लो शब्द पण पूरो थवो ज घटे. पदनी समाप्तिए अंतिम शब्दना कटका पाडी एक कडको पूर्व पदमां अने बीजो उत्तर पदमां लेई शकाय नहि. संधिना लीधे जे संधाण थयुं होय ते काढी नांखी, पूर्व पदनो छेल्लो अने उत्तर पदनो पहेलो शब्द—ए बेने छूटा पाडीने ज

ते ते पदना वर्णनी गणतरी करवी बहुधा विहित छे. उल्लिखित सिद्धांतनुं उल्लंघन द्विपदा, विराज् छंदमां त्रण चार थयेलुं छे. ए त्रण प्रसंग जाते निर्धारवानी मने अनुकूळता मळी नथी. तेथी युरोपीय विद्वानना कथनने अनुसरीने तेना आधारे हुं-अटकळ बांधुं छुं के उक्त विराज् पद्यबंध उद्भवी वपरातो थयो हशे, त्यारे पदांते विरामनो सिद्धांत स्थापित थया हशे नहि; केवळ संवादी वर्णरचना उपर ज ध्यान अपातुं हशे. इतर छूटना भेगी विरामना अनादरनी छूट पण ते काळना ऋषिओ भोगवता हशे. बीजा कोइ पण आर्चिक छंदमां नहि ने विराज्मां आ छूट लेवाती जोवामां आवे छे; तेथी वैराज पद्यरचनानी, अर्थात् विराज् छंदनी उत्पत्ति विनअपवादे पदांते विराम स्वीकारनारा गायत्री आदि बीजा बधा छंदना पूर्वे थयेली होवी संभवे छे. आ व्याख्यानना उत्तरांग रूपे पुरुषसूक्तनूं विवेचन आवशे, तेमां आद्य पद्यरचनानो विषय फरी चर्चाशे.

१५ गायत्री आदि छंदना चरणनी समाप्तिए आवेलो वर्ण ह्रस्व होय, तो पण ते स्वाभाविक रीतेज दीर्घ बोलाई विवर्धित थतो हतो; तेथी पदांते विरामना संकेत माटे विवर्धितनी योजना मूळे थई जणाय छे. पछीथी 'द्विर्बद्धं सुबद्धम्।' ए न्याये एक ज वर्णमां नहि पण छेल्ला बे वर्णमां अने तेथी आगळ वधी त्रण वर्णमां ए संकेत रूढ थयो जोवामां आवे छे. सदर संकेत सूचवनार वर्णने हूं स्थिर वर्ण कहूं छूं. वैराज पदनो स्थिर वर्ण एक ज वा छे. गायत्र पदमां कवा तेम ज वावा स्थिर वर्ण तरीके लेखाय छे, जेमा वधारे उपयोग कवानो थाय छे. गायत्री छदमां साठ सित्तेर टका अने मिश्र छंदना तथा संमिश्र प्रगाथना गायत्र पदमां सोए सो टका कवा पदांत नजरे पडे छे. अनुष्टुभ् छंद गायत्र पदनो बनेलो छे. तेना सम पदमां विरल अपवाद बाद करतां सर्वत्र कवा पदांत योजेलो जोइये छिये, ज्यारे विषम पद कवा पदात उपरथी वावा पदांत तरफ ढळतां जाय छे. ए योजनानूं गौरव केटलेक काळे भगवान वाल्मीकिने नूतन रूपरचनाना अवतारमां प्रतीत

थाय छे; ते आपणे त्रीजा दृष्टिपातमां जोइशुं. त्रिष्टुभ् छंदमां बहुधा कवावा अने जगतीमां वाकवा पदांत बने छे. पदांतना आ सांकेतिक वर्ण सिवायना पदगत वर्ण अस्थिर छे. स्थिर वर्णनो चर वर्णथी विवेक, एकवडी अने बेवडी ऊभी लींटीनी पेठे, मात्र पदांतना संकेतनी बुद्धिथी करवामां आव्यो छे, नहि के रूपबुद्धिथी. जो मंत्रद्रष्टाओने रूपबुद्धि स्फुरी होत, तो त्रिष्टुभ्मांथी उपेन्द्रवज्रा तथा इन्द्रवज्रा अने जगतीमांथी वंशस्थ रूपबंध क्यारना ए रचाया न होत? तेमना जन्म माटे तो आपणे आख्यानकाल सूधी तपवूं पडे छे.

१६ हवे पदांतना अपवाद विचारिये. वैराज पदनो जे वा पदांत कह्यो छे, तेनो अपवाद संभवतो ज नथी. गायत्र पदमां कवा तथा वावा बंने शक्य पदांत स्वीकारी लीधा छे, एटले करीने गायत्री छंदनां त्रणे पदमां अने अनुष्टुभ्नां बे विषम पदमां अपवादनो अवकाश छे नहि. परंतु अनुष्टुभ् छंदनां उभय सम पदमां एकलो कवा पदांत अभिमत छे; तेनो एक अपवाद छे. पुरुषसूक्तनी अगियारमी ऋचाना चोथा पदमां ए अपवाद लक्ष खेंचे छे. 'का ऊरू पादा उच्येते' ए पदने छेडे रूढ धोरण प्रमाणे पदांत कवा जोईए, तेने बदले वावा छे. त्रैष्टुभ पदना कवावा पदांतनो एक अपवाद, संहितानां बीजा मंडळना पांत्रीसमा सूक्तनी अगियारमी ऋचानूं बीजूं पद जे '(अं)पीच्यं वर्धते नप्तुरपाम्' छे, तेमां मळी आवे छे. अहीं ककवा पदांत योजेल छे. जागत पदना वाकवा पदांतनो अपवाद मारा ध्यानमां नथी.

१७ उपर आपेला अने तेना जेवा बीजा अपवादनो संभव क्यारे, के ज्यारे पदांतमां विराम पूरती ज बुद्धि होय त्यारे, एटले के रूपबुद्धि संकेतित न होय त्यारे ज. रूपना संकल्पपूर्वक रचाता काव्यकालना कोइ पण रूपबंधमां लघु रूपने स्थाने गुरु रूप अने गुरु रूपने स्थाने लघु रूप कदी पण वापरी शकातूं नथी. भिन्न रूपनो प्रयोग थाय, के छंदनी संज्ञा एनी ए न ज रहे; भिन्न संज्ञा पडे ज. आख्यानकालमां प्रगटेला अने आज पर्यंत वपराता उपेन्द्रवज्रा अने इन्द्रवज्रा छंद ज विचारिये. बंने उच्चारणामां

वधी रीते मळता छे. पटनामां अगियार रूप पैकी दस उभयमां समान छे. पण एकमां आद्य रूप लघु छे अने बीजामां गुरु छे, ते कारणथी ए बे छंद रूपबंध तरीके विभिन्न लेखाय छे. ऋक्साहित्यमां तो पदना छेडाना बे त्रण वर्ण बदलाय छे, ते छतां छंदनो तेना ते ज नामे व्यवहार थाय छे. तेनुं कारण, भिन्न भिन्न पदांतना वर्णमां वर्णवृद्धि छे—रूपवृद्धि नथी, ए ज छे. जो पदांतना स्थिर वर्णमां रूपवृद्धि उदय पामी होय, तो छंदनी एनी ए संज्ञा रहे ज नहि. आवी समजथी, मंत्रद्रष्टाने रूपवृद्धि स्फुरी न हती, एम हुं कहुं छुं; अने ऋकालना छंदने नखशिख वर्णबंध ज लेखुं छुं.

१८ उक्त कथननी सत्यता अर्वाचीन परिचित पद्यरचनाना दृष्टांतथी स्पष्ट थशे. पदांतनो व्यवहार आपणा वर्णबंधमां अने मात्राबंधमां पण उतरी आव्यो छे. वर्णात्मक पद्यरचनाना उदाहरण तरीके कवि दलपतरामना पिंगळमांथी नीचेना बे छंद लेउं छुं.

ऊंट कहे, 'आ समामां वांकां अंगवाळां भुंडां
भूतळमां पक्षीओ ने पशुओ अपार छे.
बगलानी डोक वांकी, पोपटनी चांच वांकी,
कूतरानी पूंछडीनो वांको विसतार छे.
वारणनी सूंड वांकी, वाघना छे नख वांका,
भेंशने तो शीश वांकां शींगडांनो भार छे–'
सांभळी शियाळ बोल्यो (दाखे दलपतराम),
'अन्यनुं तो एक वांकुं; आपनां अढार छे!'

प्यारा पियुजी ! पराई प्रीतनी प्रतीत तजो.
वीसरतां वीसरतां वीसारी वीसरी जाय.
फूलेलां देखीने फूल फोगट फूलावु नहि;
फूलनी सफाइ तो फर्ये दिवसे फरी जाय.

पीतळनो, प्रीतनो, पतंगनो, पोथीनो रंग
नवो नवो नव दिन सुधी हैयुं हरी जाय.
न्हाईने चडाविये, तो चारगणो चडयो जाय;
ऊतरवा दैये तो ऊतरतां ऊतरी जाय.

आमांनो पहेलो छंद मनहर अने बीजो घनाक्षरी छे. पहेलाना पदना अंतमां सद्‌गत कवि गानूं (अर्थात् आपणा थानू) अने बीजाना पदना अंतमां गागानूं (अर्थात् आपणा वावानूं) विधान करे छे. परतु तेमां वास्तविक वर्णवृद्धि छे, रूपवृद्धि नथी. शाथी जे बने छंदनी गणना वर्णबंध तरीके थाय छे, वर्ण अने रूपना मिश्रणथी थयेला मिश्र छंद तरीके थती नथी. हवे मात्रात्मक पद्यरचनाना दृष्टांत तपासिये. तेने माटे दलपतपिंगळमांथी लीधेला नीचेना ऊतारा बस थशे.

मन ! तुं मूर्ख चाळा मेल.
खटपट–खेलमां शिद खेल?
धर तुं धरणिधरनुं ध्यान.
मन ! तुं मारि शिक्षा मान.

पाडोशणने ‘आटो आपो’, घरनां चाटे घंटी !
छोकरडां तो छाश पिए ने बावो मागे बंटी !
स्वारथियां छे एवां सघळे. जोवलणी नहि जाणे,
पर्वत जेवी परनी पीडा अंतरमां ते आणे.

तुं जीव ! सर्वने मित्र जाण.
पूरण प्रकारथी प्रेम आण;
भीतरथी टाळ ज वैरभाव,
तज द्वेष क्लेशकारी बनाव.

उत्तरोक्त पण छंद अनुक्रमे उद्धोर चोपाया अने पद्धरा के पद्धडीना नामे जाणीता छे. पहेलामां पदने अंते गाल, बीजामां गागा अने त्रीजामां लगाल छे. एना विधानमां पण रूपनी पाछळ वाट, बाबा अने हवाहना आकारमां मात्रावृद्धि ज टोकियां करे छे. पदांतने रूपात्मक तरीके मात्रानी गणनामांथी अलग राखता नथी; आखा पदनी मात्रा गणवामां आवे छे. त्रणे छंद मात्राबंध ज लेखाय छे. मात्रा अने रूपना देखीता संमिश्रणने आगळ करीने मिश्र छंदनी संज्ञा तेमने नथी. ए ज रूढिने अनुसरीने ऋक्कालना छंदोना पदांतमां हुं वर्णवृद्धि ज जोउं छुं, रूपवृद्धि स्वीकारी शकतो नथी.

१९ युरोपीय विद्वानो आठ अने तेथी वधारे वर्णना पदना भाग पाडे छे. पण मारी नजरे तेनी उपपत्ति जणाती नथी. गायत्री वगेरे छंदोनां पद भाग पड्या वगर सळंग ज बोलाय छे. दक्षिणी अभंग बंगाळी पयार अने हिंदीगुजराती कवितमां वर्णोनां जूथ बंधायलां जोवामां आवे छे, तेवां जूथ बंधावानो अवसर पण पद्यबंधना ए उदयकाळमां छे नहि. आवी समजथी विदेशी विद्वानोए गायत्र आदि पदना पाडेला भागनुं हुं अहीं निरूपण करतो नथी.

२० शुद्ध छंदनुं पदसंख्यात्मक बंधारण, पदनी वर्णसंख्यात्मक रचना अने पदना अंतभागनी वर्णवृद्धिकृत विशिष्ट स्थिरवर्णात्मक घटना, ए त्रण तत्त्वना निरूपण पछी मिश्र छंदनी आलोचना बहु सरळ थई पडे छे. परोष्णिह्, पुरउष्णिह्, ककुभ्, बृहती, सतोबृहती, अतिशक्वरी अने अत्यष्टि, ए मुख्य मिश्र छंद छे. ए साते अष्टवर्ण गायत्र अने द्वादशवर्ण जागत पदना मिश्रणथी बने छे. परोष्णिहमां पहेलां बे गायत्र अने ते पछी एक जागत पद आवे छे. उदाहरण—

अग्ने वाजस्य गोमत-
ईशानः सहसो यहो।

अस्मे धेहि जातवेदो मही श्रवः ॥ १ । ७९ । ४ ॥

पुरउष्णिह् प्रथम एक जागत अने पछी बे गायत्र पदथी थाय। उदाहरण—

अप्स्व १ न्तरमृतमप्सु भेषज-
मपामुत प्रशस्तये ।
देवा भवत वाजिनः ॥१।२३।१९॥

पहेलुं अने त्रीजुं गायत्र पद अने ए बेनी वच्चे जागत पद, ते ककु छंद. उदाहरण—

अधाहीन्द्र गिर्वण
उप त्वा कामान् महः संसृज्महे ।
उदेव यन्त उदभिः ॥ ८ । ८७ । ७ ॥

परोष्णिह, पुरउष्णिह अने ककुभ् ए त्रणे छंद त्रण त्रण पदना; ज्यारे बृहती अने सतोबृहतीमां चार चार पद आवे छे. त्रीजुं पद जागत अ बाकीनां गायत्र आणवाथी बृहती छंद बने छे. उदाहरण—

शचीभिर्नः शचावसू
दिवा नक्तं दशस्यतम् ।
मा वां रातिरुपदसत् कदा चना-
स्मद्रातिः कदा चन ॥ १ । ३९ । ५ ॥

विषम पद जागत अने सम पद गायत्र राखवाथी सतोबृहती नीपजे; उदाहरण—

जनासो अग्निं दधिरे सहोवृधं
हविष्मन्तो विधेम ते
स त्वं नो अद्य सुमना इहाविता
भवा वाजेषु सन्त्य ॥ १ । २६ । २ ॥

अतिशकरी अने अत्यष्टिमां पदनी संख्या वधीने सात थाय छे. छट्ठं पद जागत अने बाकीनां गायत्र ते अतिशकरी. उदाहरण–

सुषुमा यातमद्रिभिः–
गोश्रीता मत्सरा इमे
सोमासो मत्सरा इमे।
आ राजाना दिविस्पृशा–
स्मत्रा गन्तमुप नः।
इमे वां मित्रावरुणा गवाशिरः
सोमाः शुक्रा गवाशिरः ॥१।१३७।१॥

पहेलुं बीजुं तथा छट्ठुं जागत अने बाकीनां पद गायत्र, ते अत्यष्टि. उदाहरण–

स नो नेदिष्ठं ददृशान आ भरा–
ग्ने देवेभिः सचनाः सुचेतुना
महो रायः सुचेतुना
महि शविष्ठ नस्कृधि
संचक्षे भुजो अस्यै।
महि स्तोतृभ्यो मघवन्त्सुवीर्यं
मथीरुग्रो न शवसा ॥१।१२८।११॥

२१ शुद्ध अने मिश्र छंद पछी विचारणीय त्रीजो प्रकार प्रगाथने नामे जाणीता संमिश्र छंदनो छे. एमा बे छंद नोंधुं छु. काकुभ प्रगाथ अने बार्हत प्रगाथ. पहेलो ककुभ् अने सतोबृहती ए बे मिश्र छंदनो बने छे, एटले एमां सात पद होय छे. उदाहरण–

आ नो अश्वावदश्विना
वर्तिर्यासिष्टं मधुपातमा नरा ।
गोमद् दस्रा हिरण्यवत् ॥
सुप्रावर्गं सुवीर्यं सुष्ठु वार्य-
मनाधृष्टं रक्षस्विना ।
अस्मिन्नावामायाने वाजिनीवसू
विश्वा वामानि धीमहि ॥८।२२।१७-१८॥

बीजो प्रगाथ बृहती अने सतोबृहती ए बे मिश्र छंद मळीने नीपजे छे, एटले एमां आठ पद होय छे. उदाहरण—

द्युम्नी वां स्तोमो अश्विना
क्रिविर्न सेक आगतम् ।
मध्वः सुतस्य स दिवि प्रियो नरा
पातं गौराविवेरिणे ॥
पिबतं घर्मं मधुमन्तमश्विना
बर्हिः सीदतं नरा ।
ता मन्दसाना मनुषो दुरोण आ
नि पातं वेदसा वयः ॥८।७३।१-२॥

आ बंने प्रगाथना उत्तर भागमां सतोबृहती समान होई तेमनो विवेक पूर्व भागना ककुभ् अने बृहती छंदथी थाय छे, तेने लीधे तेमने अनुक्रमे काकुभ अने बार्हत उपपद मळ्यां छे.

२२ भाषानो प्रचार पहेलो अने साहित्यनो उदय पछी, ए प्रमाण-

निरपेक्ष सिद्धांत छे. ऋग्वेदनी ऋचाओ प्रगटी ते मंत्रद्रष्टाना आर्ष संस्कृतमां रचाई. तेनी पद्यरचनानो जन्म ते काळनी गद्य वाणीमांथी थयो छे. ऋच् यजुस् अने सामन्‌नी सत्ता पुरुषसूक्तमां साथे वर्णवी छे; ते उपरथी एम ठरतुं नथी के इष्टि द्वारा पूर्वकालीन देवार्चनमां उत्तरकालीन यजुस् जेवां 'अग्नये स्वाहा' 'इदमग्नये न मम' आदि वाक्य आहुति अर्पवाना प्रसंगे बोलातां नहि होय. ए प्रयोगोने आपणे इतिहासातीत यजुस् कहीशुं. ए फरी फरीने वपराता रूढ पंचवर्णादि प्रयोगना वर्णसंख्यात्मक स्वरूपे वर्णसंवादनूं प्रथम भान ऋषिओने कराव्यूं हशे. आगो जे रीते उत्तर काळना आरंभमां वर्णसंवादना आर्ष छंदे भगवान वाल्मीकिने रूपसंवादनूं प्रथम दर्शन कराव्यांनूं त्रीजा दृष्टिपातमां निरूपण करवामां आवशे. विद्यमान यजुर्वेदसंहितामां पण केटलांक यजुस्मां पद्यरचनानो सुवास म्हेके छे. तेवी ज रीते जैन बंधुओना आचाराङ्गनी केटलीक पंक्तिओ वृत्तगंधि मालूम पडे छे. उपर कहेलां इतिहासातीत यजुस्माथी ऋग्वेदनी पद्यरचना उदय पामी, गद्यमांथी पद्यनूं प्रथम दर्शन थयूं; अने वर्णसंख्याए सुझाडेली पद्यरचनाए होताने मुखे मोटेथी बोलाती ऋचा द्वारा, रहस्यबुद्धिथी गळामां गुंजाता अध्वर्युनां स्वगत यजुस् तथा ऋत्विजोने आदेश आपता प्रगट निगद द्वारा अने देवोनी स्तुति अर्थे गानना रूपमां गोठवातां उद्गातानां आर्चिक द्वारा यजनकर्ममां अपूर्व मनोहरता तथा भव्यता आणी ऋक्काळना सुभव्य यज्ञने जन्म आप्यो. आ इतिहास पुरुषसूक्तनी आलंकारिक वाणीमां गूंथायलो विद्यमान छे. भक्तिभावित ऋषिओ बीजी बक्षीसोनी साथे पद्यरचनाने पण 'सहस्रशीर्षा पुरुष'नी प्रसादी माने छे. ए पुरुष विराज्‌ने अवतारे छे. अवतार पामेली विराज् संज्ञाए ओळखाती पद्यरचना यज्ञने जन्म आपे छे. ते यज्ञने पुरुषनंठि कल्पी आद्य ऋषिओ अने तेमने सहकार आपनारा देवो तेनूं आलंकारिक यजन करे छे. आ प्रस्ताव विस्तारथी आगळ आवशे. अहीं तो एटलू नोंधवूं प्राप्त थाय छे के पचवर्ण वैराज पद,

ते पूर्वे गणावेलां बीजभूत पदोमां सौथी जूनूं छे. तेमां त्रण त्रण वर्णनो वधारो थई गायत्र तथा त्रैष्टुभ पद उद्भवे छे, अने त्रैष्टुभमां एक अक्षरनो वधारो थई जागत पद रचाय छे. व्हेलो उदय पामेलो **विराज्** छंद 'इन्द्राय त्वा,' 'अग्नये त्वा' आदि याजुष वाक्यना जेवो ज लगभग छे. वळी ते बहु ज टूंको होई तेमां अर्थनो झाझो समास थवो शक्य नथी. तेनी साथे आदिकाळथी वपरातो आव्याथी तेने कंइक जूनापणानी झांखाश लागी होय एम जणाय छे. ए बधां कारणाने लीधे तेनी रंजकता ओछी थाय छे अने तेनो वपराट घटे छे. नवा प्रगटेला मनोमोहक **गायत्री** अने **त्रिष्टुभ्** छंदना बहोळा प्रचारने लीधे ते अछताई जाय छे. गौरववाळी वैराज गायत्र अने त्रैष्टुभ पद्यरचना हिंदइरानीय भाषाशाखाना साहित्यनूं सामान्य मंडाण छे. तेमांथी आर्चिक **अनुष्टुभ्** अने **त्रिष्टुभ्** छंद जनमे छे. **उष्णिह्, बृहती,** आदि मिश्र छंद पण गायत्र अने जागत पदना विविध योगथी नीपजे छे. **सामवेदसंहितानूं** अक्षरशरीर अत्रोक्त **गायत्री** अने **प्रगाथ** छंदमां रचायली ऋचाओनूं घडाय छे. 'वेदानां **सामवेदो**ऽहम् ।' ए वचन **सामवेदने** महत्ता आपे छे, ते एमां वपरायला गाननी विभूतिवाळा उक्त बे छंदने लीधे ज छे.

२३ आ व्याख्यानमां वर्णवेला छंदोनां नाम बहु सूचक छे. छंदोविद्यानो **विराज्**, सांख्यदर्शननो रजस् अने संगीतशास्त्रनो राग बोल, ए त्रणेनूं एक ज मूळ छे. राजनीतिनो राजन् शब्द पण ए ज सामान्य गोत्रनो छे. **रघुवंशमां** एनी व्युत्पत्ति रञ्ज् धातु उपरथी कालिदास कविए करी छे तेमां केवळ कल्पनानो चमत्कारो नथी. रञ्ज् धातु पण **विराज्** आदि शब्दनो सगोत्र छे. प्रीतिवाचक मौलिक नष्ट धातु रज्नो रञ्ज् विकृति छे. गद्यने मुकाबले आव पद्यरचनारूपे विशेष प्रिय थई पडेली वाणी ते **विराज्**, त्रिगुणात्मक प्रकृतिनो स्त्रीपुत्र आदिमां प्रीति बधावनार गुण ते रजस्, पाठ्यनी सरखामणीमां रंजक थई पडेलो स्वयंत्र ते . राग, प्राचीन

गणराज्यना तंत्रमां शासक तरीकेनी नीमणूकना प्रसंगमां जे प्रजानी प्रीतिनुं पात्र थाय ते राजन्. निर्दिष्ट चारे गोत्रीओनो, गोत्रपुरुष नष्ट रज् धातु छे. प्रीति ऊपजावे ते,मनोहर पण होय, एवा कार्यकारणना संबंधथी शोभावाचक राज् धातु.पण ए ज.गोत्रपुरुषनो वंशज छे. हृदयरंजक आव 'पद्यरचनानी **विराज्** संज्ञा पूरेपूरी सार्थक अने सुघटित छे. पद्यरचनानी पूर्वेना देशीगाननो एकम चार अक्षरनो बनेलो हशे तेथी अथवा बीजा कोई अजाण्या कारणथी **विराज्** छंदनी साममां, योजना न थई. वैराज पदमां त्रण अक्षरना वधाराथी गायत्र पद थयुं. तेनो जे नवो छंद बन्यो ते सामगानने अनुकूळ नीवड्यो अने, **गायत्री** एटले सामना रूपमां गोठवाय एवी छंदामयी वाणी, एवा; अर्थवाहक नामथी ओळखायो. सोम पवमानना मंत्रोनो साममां विनियोग छे, तेनो मोटो भाग आ छंदमां छे. **गायत्री** छंद ऋचाना रूपमां तो पाठ्य ज छे, परंतु तेमां सामनी गेयता निगूढ रहेली छे; तेने लीधे तेनी **गायत्री** संज्ञा पडी छे. **अनुष्टुभ्** अने **त्रिष्टुभ्** शब्दनी घटनामां नजरे पडतो स्तुभ् शब्द छूटो वपरायलो मळी आवतो नथी. परंतु ते स्तुतिवाचक स्तुभ् धातु उपरथी उत्पन्न थई एक काळे वपरातुं स्त्रीलिंग धातुनाम होवुं जोईए. आ तर्क 'पद्यरचनाना प्रकार'मां में पा सदी उपर रजू कर्यो हतो. पदना पर्यायरूप स्तुभ् नाम पूर्वोक्त रज् धातुनी पेठे नाश पाम्युं छे. गायत्र त्रण पद पछी(अनु) जेमां एक पद(स्तुभ्) अधिक आवे, ते **अनुष्टुभ्**. आनाथी स्हेज जुदो त्रिष्टुभ्नो विग्रह छे. ए शब्दने हुं 'शाकपार्थिव'ना जेवो मध्यमपदलोपी समास समजूं छुं. अष्टवर्ण गायत्र पदमां त्रण वर्ण जेमां वर्धित होय ते, अर्थात् एकादशवर्ण पदनो छंद, ते **त्रिष्टुभ्**. बंने छंद त्रण पदना **गायत्री** छंदथी आगळ वधी चार पदना बने छे. आ फेरफार एटलो व्यापक थई पडे छे, के छंद ते चार पदनो ज होय एवी समज।साधारण रीते रूढ थाय छे. परंतु ए मान्यता, छंदोनो जे क्रमिक 'विकास अहीं वर्णव्यो'छे तेनुं तोळन करी जोतां, मारा मनथी. मूळ

भरेली लागे छे. प्रधान शुद्ध छंदमां छेल्लो **जगती** छे, ए शब्द गतिवाचक **गम्** के एना कोइ पूर्वरूप उपरथी उत्पन्न थयो छे; अने त्रैष्टुभ् पदनाथी वर्णसंख्यामां एक अक्षर आगळ वधवानो भाव एमां रह्यो छे.

२४ मिश्र छंद गायत्र अने जागत पदना मिश्रणथी बने छे. बे गायत्र पछी छेडे एक जागत पद वळगाडयूं होय, ते **पुरोष्णिह्** लेखाय छे. जो जागत पद बे गायत्र पदना पूर्वे वळगाडेलुं होय, तो **पुरउष्णिह्** संज्ञाथी ते छंद ओळखाय छे. परस् अने पुरस् निपात जागत पदना वळगणनी दिशा बतावे छे. उत् साथे स्निह् धातुनो अर्थ वळगवूं थाय छे, ते उपरथी **उष्णिह्** शब्द ऊतरी आव्यो छे. त्रीजा मिश्र छंदनूं नाम **ककुभ्** छे, ते लाक्षणिक छे. स्त्रीलिंग ककुभ्नो अर्थ शिखर थाय छे. बे न्हानां गायत्र पदना वच्चे पर्वतना शिखर जेवूं अर्थात् मोटूं जागत पद आवतूं होवाथी प्रस्तुत मिश्र छंदनूं नाम ककुभ् पडयूं संभवे छे. बाकीना चार छंदनां नाम ते ते छंदनां बधां पदोना वर्णोनी संख्यामां थता वधाराने आधारे राख्यां जणाय छे. **बृहती** छंदमां कुल छत्रीस वर्ण आवे छे, ते संख्या कुल अठ्ठावीस अने बत्रीसना आंकथी बृहत् एटले मोटी होवाथी ते छंदने **बृहती** कहे छे. तेनाथी पण मोटी संख्यानो कुल चाळीस वर्णनो छंद, ते **सतोबृहती**. **अतिशक्करी** संज्ञा **शक्करी** उपरथी पडी छे. बहु अर्थ समाववा समर्थ कुल छप्पन वर्णना छंदने **शक्करी** कहे छे. तेनाथी वधारे मोटो होई वधारे अर्थ समावाई शकाय एवो छंद ते कुल साठ वर्णनो **अतिशक्करी**. आवी ज रीते कुल चोसठ अक्षरना **अष्टि** छंदथी मोटो, ते अडसठ अक्षरनो **अत्यष्टि** छंद. उपरांत काकुभ अने **बार्हत प्रगाथ** गणाव्या छे, ते गायत्रीनी पेठे सामगानना रूपमां गोठवाय छे; तेणे करीने तेमनी **प्रगाथ** संज्ञा ठरावी जणाय छे.

२५ शुद्ध अने मिश्र छंदनां नाम बधां ए स्त्रीलिंगे छे. तेनूं कारण में '**पद्यरचनाना प्रकार**'मां समजाव्यूं छे. **विराज्**, **गायत्री**, वगेरे सत्य-

वाचक नाम नथी, पण गुणवाचक छे. विशेषण होई तेमनो अन्वय स्त्रीलिंग वाच् विशेष्य साथे थतो होवाथी ते पण स्त्रीलिंगमां देखा दे छे. पद्यात्मक रचना माटे वाच् शब्दनो प्रयोग कवि भवभूति उत्तररामचरितमां करे छे. गूजरातीमां पण वाच्‌ना पर्याय वाणी बोलनो प्रयोग एवा ज अर्थमां थाय छे; उदाहरण, अखा भगतनी वाणी. उत्तर काळना उपेंद्रवज्रा अने इंद्रवज्रा बोलनो स्त्रीलिंगे व्यवहार पण ऐतिहासिक दृष्टिए ए ज प्रकारनो छे, ते यथास्थान प्रगट करवामां आवशे. प्रगाथ बोल पुंल्लिंगे वपराय छे तेनो अन्वय पुंल्लिंग मन्त्र साथे इष्ट होवाथी तेनी पुंल्लिंगे योजना जोवामां आवे छे. आवी ज रीते आख्यानकालनो वंशस्थ शब्द जे नपुंसकलिंगे वपराय छे, ते नपुंसक छन्दस् विशेष्य साथे संबंध धरावतो होवाथी तेनो नपुंसक लिंगे प्रयोग रूढ थयो छे.

२६ आ छंदोविधानी उत्पत्ति क्यारे केवा संजोगोमां थई, तेना भणकारा शरवा कानने पुरुषसूक्तमां संभळाय छे. ऋग्वेदसंहिताना दशमा मंडळनूं ए नेवुमूं सूक्त छे. पश्चिमना विद्वानोना मते दशमा मंडळनां सूक्तो मोडामां मोडां संहिताना व्यूहमां गोठवायां छे. बीजां सूक्तोनी सरखामणीमां पुरुषसूक्तनी रचना पण मोडी थई मानवामां आवे छे. व्याकरणना प्रयोग वगेरे मुद्दाओ बाजू उपर राखतां पण तेनी आगळ पचेली आलंकारिक वाणी उपरथी ज ऋक्कालना साहित्यना परिपाकना फळ तरीके तेने स्वीकारवाने वाचक आपोआप प्रेराय छे. परंतु ए वात स्वीकारतां बीजी महत्त्वनी वात भूली जवी न जोईए के, मोडूं मोडूं पण पुरुषसूक्त पुराण ऋक्कालनो फाल छे. ए फाल पाछळथी खळीमां एकठो करवामां आव्यो अने अनेक कोठारमां सुरक्षित राखवामां आव्यो. सूक्तो छूटा एकमो रूपे रचायां अने संहितामां अनुसूत्रित मणकारूपे ग्रथित थयां, ते वच्चे अंतर लांबूं छे. रचनाकाळनो विचार करतां पण पुरुषसूक्तनी उत्पत्ति छेक मोडी नहि थई होय, एनो मुद्दो तेना पद्यबंधनी आंतर घटना

उपरथी उपस्थित थाय छे. ए झीणी चर्चामां झंपलावता पहेलां मूळ सूक्त अने एक सळंग सुसंबद्ध काव्यकृति तरीके तेनो अनुवाद अपेक्षित छे. ते आपणे प्रथम लक्षमां लेइये.

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम् ॥१॥
पुरुष एवेदं सर्वं यद् भूतं यच्च भव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥२॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥३॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुष पादोऽस्येहाभवत् पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत् साशनानशने अभि ॥४॥
तस्माद्विराळजायत विराजो अधि पूरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः ॥५॥
यत् पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥६॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥७॥
तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम् ।
पशून् तांश्चक्रे वायव्यानारण्यान् ग्राम्याश्च ये ॥८॥
तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।

छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत ॥९॥

तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः ॥१०॥

यत् पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते ॥११॥

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद् वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ॥१२॥

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद् वायुरजायत ॥१३॥

नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात् तथा लोकाँ अकल्पयन् ॥१४॥

सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद् यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥१५॥

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्
तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त
यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥१६॥

(जेने) हजारो मस्तक छे, हजारो नेत्र छे, (अने) हजारो पग छे, एवो पुरुष (आर्य)भूमिने सर्व बाजूए आवरी लेई तेनी बहार (मात्र)

दश अंगुल प्रतिष्ठा पामेलो छे. १

आ (जे) सर्व छे, जे हतुं अने जे हशे, ते पुरुष ज छे. ते वळी मृत्युरहित(देवो)नो शासक छे; अने अन्न वडे जे वधे छे (ते प्राणीओनो पण शासक छे). २

आवुं तेनुं महानपणुं छे. एनाथी पण पुरुष आदकेरूं महानपणुं धरावनारो छे. (आ) सर्व भूतमात्र तेनो पा भाग छे. तेनो पोणो भाग द्युलोकमां(नो) देवसमूह छे. ३

पोणा भागनो पुरुष ऊर्ध्वगामी रह्यो. पा भागनो पुरुष अहीं पुनरावर्ती थयो. ते (पा भाग)थी विश्वरूपधारी (पुरुष), जेने आहार जोईए छे अने जेने नथी जोईतो, ए उभयमां संक्रांत थयो छे. ४

ते(आदि पुरुष)थी **विराज्** जनमी. **विराज्**थी (यज्ञ)पुरुष[५] जनम्यो. ते जनम्यो सतो (आर्य)भूमिने वटावीने पश्चिममां तेम ज पूर्वमां थयो. ५

(ए जन्मधारी) पुरुषरूप बलि वडे देवोए यज्ञ(समारंभ) कर्यो, त्यारे तेनुं आज्य वसंत, तेनां इंधणां ग्रीष्म अने तेनुं हविष्यान्न शरद बन्यां. ६

देवोए ते यज्ञ(बलि)नुं आदिए कुशना आस्तरणे प्रोक्षण कर्युं. ते (यज्ञबलि) वडे आराध्य देवोए अने जे ऋषि कहेवाय–तेओए यजन कर्युं. ७

सर्व द्रव्यनी आहुतिवाळा ते यज्ञ(समारंभ)थी टपकतुं आज्य प्रगट्युं. (ते आज्यना अभ्यंजनथी) प्रसिद्ध वायुमांनां तथा वनमांनां (यज्ञ)पशु, अने वळी गाममांनां जे (यज्ञपशु), तेनुं पण विधान थयुं. ८

---

५ जेवो अहीं यज्ञ (sacrificial ritual) विशे **पुरुषनो** अध्यवसानात्मक उपचार कर्यो छे, तेवो जाणीती ' द्वा सुपर्णा ' प्रतीकनी श्रुतिमा परमात्मा अने जीवात्मा विशे बे सुपर्णनो अध्यवसानात्मक उपचार करेलो सुप्रसिद्ध छे. बीजा पण आवा उपचारना दृष्टांत श्रुतिसाहित्यमा बहु मळी आवे छे.

सर्व द्रव्यनी आहुतिवाळा ते यज्ञ(समारंभ)थी ऋचाना अने सामना मंत्रो प्रगट्या. ते यज्ञ(समारंभ)थी छंद प्रगट्या. ते यज्ञ(समारंभ)थी यजुस् प्रगटेल छे. ९

ते यज्ञ(समारंभ)थी अश्वो थया छे अने [6]उपरनीचेदांतवाळां जे (बीजां प्राणी) छे, (ते थयां छे). ते (यज्ञसमारंभ)थी गायगोधा थयां छे. ते (यज्ञसमारंभ)थी बकरां अने घेटां थयां छे. १०

ज्यारे (ते) पुरुपनूं (पशु तरीके) विधान तेओए कर्यु, त्यारे केटला प्रकारे (तेनां अंगनी) कल्पना करी ? तेनूं वदन कयूं ? तेना बे बाहु कया ? बे जांघ कई ? बे पग कया कहेवामां आवे छे ? ११

ब्राह्मण तेनूं वदन थयो. क्षत्रिय तेना बे बाहु ठरावायो. जे वैश्य, ते एनी बे जांघ थयो. बे पग बदल शूद्रनी भावना थई. १२

(ते पुरुपना) मन बदल चंद्रमा संभावित थयो. चक्षु बदल सूर्य संभावित थयो. मुख बदल इंद्र अने अग्निनी संभावना थई. प्राण बदल वायु कल्पायो. १३

(ते पुरुपनी) नाभि बदल अंतरिक्षनूं विधान थयूं. मस्तक बदल भूलोकनूं अने श्रवण बदल दिशाओनूं विधान थयूं. ए रीते देवोए (त्रण) लोकनी (आ अंगरूपे) कल्पना करी. १४

ज्यारे यज्ञसमारंभ करनारा देवोए पुरुपने (यज्ञ)पशुरूपे बांध्यो[7], त्यारे तेनी आसपास सात परिधि गोठववामां आव्या (अने त्यां) त्रण वार सात अर्थात् एकवीस समिध राखवामा आवी. १५

---

६ गर्दभ वगेरे.

७ तैत्तिरीय, मैत्रायणी, काठक अने वाजसनेयी संहितामा पाच यज्ञपशु कह्या छे, घोडो, गाय, घेटो, बकरो अने पुरुप पाचेमा पुरुपपशु प्रधान मनाय छे, जुओ Vedic Index, पुरुप अने पशु शब्द.

(आ प्रकारे) देवोए (यज्ञपुरुषरूप) पशु वडे यज्ञ(समारंभ) कर्यो. ते विधान आद्य यजनविधान हतां. (ए यजनविधान वडे) ते महिमाशाळी देवो, ज्यां प्राक्तन आराध्य देवो वसे छे, ते द्युलोकने पाम्या. १६

२७ आ सूक्तनी ऋचा १ मां हजारो मस्तक हजारो नेत्र अने हजारो पगवाळो पुरुष जे कह्यो छे, तेमां इतिहासातीत आर्यजनताना देवोनी समष्टिनो संकेत हुं समजूं छुं. ए संकेत अभिप्रेत होवाथी ज पुरुषने आर्यभूमिमां प्रतिष्ठा पामेलो अर्थात् अर्चातो ऋषिए कह्यो छे. भूमिमां एटले अखिल भूमंडळमां महाना व्यापकपणा परत्वे आ ऋचानो अर्थ करवो मने इष्ट जणातो नथी; केमके ऋचा ४ मां अंशी पुरुषना चतुर्थांशने ज अखिल भूमंडळमां व्यापी रहेलो वर्णव्यो छे. उक्त इतिहासातीत काळमां आर्यप्रजा आर्यभूमि बहार बहु पसरी न हती, ते बाबत आसपासना प्रदेशमां तेना दशांगुल ज विस्तारना निर्देशथी स्पष्ट थाय छे.

ऋचा २ मां पुरुषनो महिमा वखाण्यो छे. भूत भावी अने वर्तमान सृष्टि ते पुरुष ज छे, अर्थात् ते पुरुषमां तेनो अंतर्भाव थाय छे. उक्त पुरुष देवोनो अने प्राणीमात्रनो शासक छे.

ऋचा ३–४ मां पुरुषनो पोणो भाग देवसृष्टिरूपे ऊर्ध्वगामी कह्यो छे अने पा भाग भूलोकमां भूतसृष्टिरूपे पुनरावर्ती निर्दिष्ट छे. अहीं आदि-पुरुष विशेनो प्रस्ताव पूरो थाय छे.

ऋचा ५ मां आदिपुरुषथी **विराज्** अने **विराज्**थी पुरुष जन्मे छे: आदिपुरुषने हजारो मस्तक हजारो नेत्र अने हजारो पग छे; अर्थात् ते देवोनी समष्टि छे. *अपरपुरुषने एक मस्तक अने बे पग छे;* ए रीते आदिपुरुषथी अपरपुरुषनो विवेक करेलो छे. ए अपरपुरुषनो ऋचा ७ वगेरेमां यज्ञ शब्दे निर्देश कर्यो छे; अर्थात् ते यज्ञ(sacrifice, sacrificial ritual)नुं रूपक छे. आदिपुरुष अने यज्ञपुरुषनो संबंध जोड-नारी कडी **विराज्** छे. ए शब्द स्त्रीलिंगे पूर्वोक्त एक वैदिक पद्यरचनानी संज्ञा छे.

वैराज पदनूं माप पांच वर्ण छे. तेथी दशवर्णात्मक पदवाळा वैदिक छंदने, **द्विपदा विराज्** एटले द्विमूर्त (वेवडायला) पदवाळी **विराज्**, एवी विशिष्ट संज्ञा मळी छे. आदिपुरुषथी **विराज्** जनमी, कही छे तेनो अर्थ ए छे, के आदिपुरुष निमित्ते **विराज्** नामे पद्यात्मक रचना उद्भव पामी. ऋक्कालनी उषामां देवोनी स्तुति ए रीते गद्यात्मक मटी पद्यात्मक बनी ते ए पंचवर्ण **विराज्** रूपे. ए पद्यबंधनो यजनकर्ममां विनियोग थई नवा यज्ञ(sacrificial ritual)नो अवतार थयो. आ भाव '**विराज्**थी (यज्ञ)पुरुष जनमेल छे' एम कही सूचव्यो छे. ए यज्ञपुरुष पश्चिममां तेम ज पूर्वमां आगळ वधे छे एवो जे आलंकारिक निर्देश छे, ते उपरथी सूचित थाय छे के यज्ञपरायण आर्यो वखत जतां आर्यभूमि वहार ए बे दिशामां आगळ वध्या.

आदिपुरुष अने **विराज्**नी जनकजन्यता निमित्त अने नैमित्तिकना संबंधने अवलंबीने कही छे. आदिपुरुषना अर्चन अर्थे **विराज्**नो विनियोग थाय छे; एटले आदिपुरुष ते निमित्त अने **विराज्** ते नैमित्तिक छे. **विराज्** अने यज्ञपुरुष वच्चेनो जनक अने जन्यनो संबंध औपचारिक छे.

ऋचा ६ मां, देवोए यज्ञपुरुषने वलि कल्पी यजन कर्यूं तेमां वसंत ग्रीष्म अने शरदनी अनुक्रमे आज्य इंधन अने हविष्यान्नरूपे कल्पना करवामां आवी, तेनो निर्देश छे. उज्ज्वळ पुष्पोनी समृद्धिने उद्देशीने वसंतमां आज्यनो आरोप छे. अत्यारे पण उत्तम घीने फूलनी उपमा अपाय छे. प्रखर तापने उद्देशीने ग्रीष्ममां होमनां ईंधणांनो आरोप कर्यो छे. शारदी ज्योत्स्नाने अथवा तो नवा पाकने उद्देशीने शरदमां हविष्यान्ननो आरोप करेलो लागे छे. यज्ञपुरुषमां वलिनी भावनानो ऋचा १५ मां फरी निर्देश कर्यो छे.

ऋचा ७ मां यज्ञपुरुषरूप वलि वडे यज्ञसमारंभ(sacrificial celebration)नूं वर्णन छे. देवो अने ऋषिओ कुशाना आस्तरण उपर यज्ञवलिनूं प्रोक्षण करे छे. आ ऋचामां वापरेलो साध्याः शब्द छेल्ली ऋचामां पण वापर्यो छे. बेउ स्थळे ए देवा: नूं विशेषण छे; अने तेनो

अर्थ 'जेनी साधना एटले आराधना किंवा अर्चना करवामां आवे छे ते, आराध्य, अर्चनीय' एवो छे. अन्य विद्वानो पित्री(सं. पितृ)नी पेठे 'साध्य ए संज्ञाना देव' एवो अर्थ ले छे. एनी अहीं खास उपपत्ति मारा जाणवामां नथी.

ऋचा ८ मां आदरेला यज्ञसमारंभनी प्रसिद्ध पशुसमृद्धि' गणावतां खेचर वनचर अने वसतिचर यज्ञपशु सर्वेनो निर्देश कर्यो छे; केमके प्रस्तुत समारंभ सर्वहुत् एटले सर्व द्रव्यनी आहुतिवाळो छे.

ऋचा ९ मां उक्त यज्ञसमारंभना कारणथी उद्भवेला साहित्यनूं निरूपण छे. तेना अंगे ऋच् एटले प्रार्थनाना मंत्रो तथा सामन् एटले गानना मंत्रो उत्पन्न थाय छे; अनेक छंद (छन्दस्) रचाय छे; अने यजुस् एटले यजनना मंत्रो अस्तित्वमां आवे छे. अहीं ऋच् सामन् अने यजुस् शब्द मंत्रोना अर्थमां छे, संहिताना एटले के ऋग्वेद सामवेद अने यजुर्वेदनी संहिताना अर्थमां नथी, ते कहेवानी जरूर नथी. पूर्वे ऋचा ५ मां पद्यात्मक रचनानो निर्देश करी अहीं ऋचा ९ मां यज्ञपुरुषरूप बलि वडे आदरेला यज्ञसमारंभना संबंधे उत्पन्न थयेला पद्यात्मक श्रौत साहित्यना विविध छंदोनो आविर्भाव थयो छे. तेथी वैजिक वैराज पदथी आगळ वधी ऋकालमां गायत्र त्रैष्टुभ आदि पदनो विस्तार विवक्षित छे.

ऋचा १० मां पाळेलां जानवरोनी उक्त यज्ञसमारंभना संबंधथी उत्पत्ति वर्णवी छे. घोडा तथा घोडाना जेवां उपरनीचेदांतवाळां खर वगेरे जानवर, गोधा तथा गाय, अने बकरां तथा घेटां पाळवामां आवे छे.

ऋचा ११ थी १४ मां यज्ञपुरुषरूप पशुनां विविध अंगनी कल्पना करवामां आवी छे. प्रस्तुत समारंभमां ऋच् सामन् अने यजुस्ना मंत्रो भणनारा ब्राह्मणने वाणीना व्यापारना अंग तरीके यज्ञपुरुषनूं मुख कह्यूं छे; धर्मद्रोही मनुष्य अने इतर दुष्ट सत्त्वना उपद्रव सामे समारंभनूं रक्षण करनार क्षत्रियने रक्षाकार्यना संबंधथी बाहु कह्यो छे; यज्ञसंभार पंथ करी पूरो

पाडनारा। जंघाल[८] वैश्यने जांघ कर्यो छे; अने हलका परिचारकनूं काम करनारा शूद्रने पग कर्यो छे. अहीं ब्राह्मण, राजन्य, वैश्य अने शूद्र शब्द जन्ममूलक चातुर्वर्ण्यना वाचक नथी, पण कर्ममूलक मनुष्यगणना वाचक छे. ऋक्कालना वर्ण तो बे ज, आर्यवर्ण अने दासवर्ण; एक गौर अने बीजो श्याम. ए भेद चामडीना रंग(वर्ण)ने आधारे पडेलो छे; अने ते अति घणो जूनो छे. ब्राह्मण आदि गणनो यज्ञपुरुषना मुख आदि अंग तरीके उपचार वाणी आदि व्यापारने अवलंबीने करवामां आव्यो छे. ज्ञाननां साधनरूप मन अने चक्षु बदल प्रकाशस्वरूप चंद्र अने सूर्यनी भावना करी छे; अशन व्यापारना साधनरूप मुख बदल हविर्ग्रहणनो प्रधान अधिकार धरावता इंद्र अने अग्निनी योजना करी छे; अने सतत वहा करनारा प्राण बदल वायुनो निर्देश छे. वळी यज्ञपुरुषना यज्ञभूमिरूप शरीरना शिरोभाग नाभि अने चरण बदल प्राकृतिक क्रमने अनुसरी देवलोक अंतरिक्ष अने भूलोकनूं विधान कर्यूं छे, तेम ज कर्णभाग बदल दिशाओनूं विधान करेलुं जोवामां आवे छे.

आ ऋचाओमां आरोपविषय अने आरोप्यमाणना सामानाधिकरण्यथी पण आरोप बताव्यो छे अने वैयधिकरण्यथी पण बताव्यो छे. ऋचा १२ मां यज्ञपुरुषनां मुख बाहु तथा ऊरू ए आरोपविषयोनूं अने ब्राह्मण राजन्य तथा वैश्य ए आरोप्यमाण पदार्थोनूं सामानाधिकरण्य छे, एटलेके उभय एक ज विभक्तिमां छे. बाकीना बधा आरोपमां आरोपविषयनूं अने आरोप्यमाणनूं वैयधिकरण्य छे; आरोपविषय पंचमी विभक्तिमां छे अने आरोप्यमाण प्रथमामां छे. ए वैयधिकरण्यवाळा दृष्टांतोमां पंचमी प्रतिविधान(बदला)ना अर्थमां होय एम मारूं धारवूं छे[९]. स्पष्टता

८, जंघाल–मजल करतो, प्रवासी, गामोगाम फरनार

९ आ वैदिक प्रयोग साथे 'तिलेभ्य प्रतियच्छति माषान्' ए लौकिक प्रयोग सरखाववा जोग छे. लौकिक दृष्टांतमां एक बदल बीजानूं ग्रहण विनिमयात्मक छे, वैदिकमां उपचारात्मक छे

सारूं एक ज दृष्टांत लेइये. 'नाभ्यां आसीदन्तरिक्षम्।' एटले यज्ञपुरुषनी नाभि बदल अंतरिक्षनूं विधान थयूं, नाभिनूं स्थान अंतरिक्षे लीधूं, अंतरिक्षमां नाभिनी कल्पना थई; अर्थात् नाभिनो आरोप करवामां आव्यो. आरोप ज सर्व दृष्टांतमां विवक्षित छे, ते वात ऋचा १२ मां साथे साथे सामानाधिकरण्यनी अने वैयधिकरण्यनी रचनाना प्रयोगथी प्रतीत थाय छे. ए ऋचानां पहेलां त्रण पदमां उत्पत्तिनो अर्थ विवक्षित छे–एटलेके यज्ञपुरुषना मुखमांथी ब्राह्मण बाहुयुगमांथी क्षत्रिय अने ऊरुयुगमांथी वैश्य उत्पन्न थयो एवो भाव छे, एम तो कोइ आ जमानामां कहेशे नहि. जो कहेवा इच्छशे, तो ऋचा ११ तेनूं म्हो बंध करी देशे. एमां जुदा जुदा अंगनी शी रीते कल्पना थई, एवो प्रश्न उठाव्यो छे; अने तेना उत्तर रूपे ते पछीनी ऋचाओमां ए अंगो कल्पी बतावावामां आव्यां छे. वळी ऋचा ११ ना व्यकल्पयन् बोलने अर्थमां पूरेपूरी रीते मळतो अने रचनामां लेशमात्र ज तेनाथी भिन्न अकल्पयन् बोल ऋचा १४मां वापरेलो छे, ते पण वाचकनूं आरोपपक्ष तरफ ध्यान खेंचे छे. आ कारणथी उक्त ऋचाओमां उत्पत्ति अर्थनी विवक्षा नथी–आरोप अर्थनी ज छे, ए निर्णयथी हूं अनुवाद करवामां दोरायो छूं.

ऋचा १५ मां याज्ञिकी प्रक्रिया अनुसार परिधि अने समिध्नी योजना करवामां आवी छे. एमां आरोपनो अतिदेश करवो अनावश्यक छे. यज्ञपुरुषने बलि कल्पीने आदरेला यज्ञसमारंभनूं आलंकारिक वर्णन अहीं समाप्त थाय छे.

ऋचा १६ मां प्रस्तुत यजनविधाननो आदियजनविधान तरीके उल्लेख कर्यो छे. ए यजनविधान वडे देवो द्युलोकने पामे छे अने प्राक्तन देवोना समागममां वसे छे. आ फलश्रुतिनी ऋचा छे. एमां कहेला प्राक्तन देवो (पूर्वे देवाः) बोल ऋक्कालनी पूर्वेना देवोने लक्षित करे छे. ए प्राचीनतर देवो ते, ग्रीक वगेरे टोळांना अने आर्यटोळाना पूर्वजो एकत्र

वसता हशे, तेओ वडे पूजाता देवो होवा संभवे छे. तेओमांना वै. धोस्–ग्री. झ्यूस–स्के. त्यूस जेवा ख्याखड्या देव सिवाय अन्यनां नाम भूली जवामां आव्यां जणायछे, कारण के तेमनी ख्याति जाळवी राखे एवूं स्थायी साहित्य हिंदजर्मनीय एकत्रवासी लोकमां ते अत्यंत प्राचीन काळे उत्पन्न थयूं न हतूं. अभिन्न निवासस्थानमां जो साहित्य खेडायूं होत, तो भिन्ननिवासी टोळानूं ते केटलेक अंशे मौलिक साहित्य बनी जूनामां जूनां संस्मरणो जाळवी राखत; अने बधां टोळांनी भाषाओ अने सर्वनी देववर्गनी भावना जेम परस्पर मळती आवे छे तेम, एमना साहित्यनी पद्यरचनामां पण मळतापणाना अंश सचवाई रहेला दृष्टिगोचर थात.

२८ सायणाचार्य पुरुषसूक्तने सृष्टिप्रतिपादक सूक्त कहे छे. भाष्यमां ए सृष्टिनो, पूर्व सृष्टि अने उत्तर सृष्टि, एवो विवेक कर्यो छे. आदिपुरुषथी **विराज्** अने **विराज्**थी अपरपुरुष प्रगटे छे; ए पूर्व सृष्टि. एना विधायक पूर्व देव (पूर्वे देवाः) कह्या छे. तेमने 'साध्याः' विशेषण सूक्तमां लगाडयूं छे; तेनो भाष्यमां '**विराज्**नी उत्पत्तिना साधक' एवो अर्थ कर्यो छे. उत्तर सृष्टिमां पृषदाज्य अने वायव्य पशु आरण्य पशु तथा ग्राम्य पशु, ऋच् सामन् तथा यजुस् अने छन्दस्, अश्वादि गवादि अने अजादि पाळेलां जानवर, ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य अने शूद्र, चंद्र सूर्य इंद्र तथा अग्नि अने वायु, अंतरिक्ष द्युलोक तथा भूलोक अने दिशाओ, उपरांत भाष्यकारना सूचन प्रमाणे सात छन्दस्नो अने बार मास पांच ऋतु त्रण लोक तथा एक आदित्य ए एकवीसना समूहनो समावेश थाय छे. ए सौ अपरपुरुषनां अंगोमांथी प्रगटे छे. ए उत्तर सृष्टिना विधायक अपर देव कह्या छे. तेमने पण 'साध्य' विशेषण लगाडेलूं छे, जेनो भाष्यमां 'सृष्टिसाधनयोग्य' एवो अर्थ आप्यो छे. पूर्व सृष्टिनूं उपकरण भाष्य प्रमाणे आदिपुरुष अने उत्तर सृष्टिनूं अपरपुरुष छे. पहेलां पूर्व देवो आदिपुरुषमांथी **विराज्** अने अपरपुरुष ऊपजावे छे; पण ते शी रीते, आदिपुरुषना यज्ञथी के अन्यथा,

ए भाष्यकारे जणाव्यूं नथी. पछी अपर देवो पुरुषनो अर्थात् अपरपुरुषनो यज्ञ करी उत्तर सृष्टि ऊपजावे छे, एवो भाष्यमां स्पष्ट उल्लेख कर्यो छे.

आदिपुरुषने भाष्यमां ब्रह्मांडात्मक देहनो देही कह्यो छे; अने ब्रह्मांडांतःपाती असंख्य प्राणीओना मस्तकादि अवयवोने आदिपुरुषना ते ते अवयवो मान्या छे. ए आदिपुरुषने ऋचा १ ना भाष्यमां विराज् आख्याथी ओळखाव्यो छे. आगळ जतां ऋचा ५ ना व्याख्यानमां उक्त आदिपुरुषना ब्रह्मांडदेहना विशे पुंल्लिंग विराज् संज्ञानो प्रयोग कर्यो छे. ते विराज्थी प्रगटेलो अपरपुरुष ते ब्रह्मांडदेहाभिमानिदेवात्मक जाव. सूक्तमां विराज् शब्दनी देहीमां अने देहमां एम द्विधा योजना जे करवामां आवेली छे, ते मूझवनारी छे.

भगवान भाष्यकार पूर्व सृष्टिना विधायक तरीके पूर्व देवोनो निर्देश करे छे ते कया, एवो प्रश्न उपस्थित थाय छे. तेमने सृष्टिकार्य अधूरूं केम मूकवूं पड्यूं, ए बीजो प्रश्न छे. उत्तर सृष्टिना विधायक देवो अर्थात् अपर देवो जे कह्या छे तेओमां इंद्र तथा अग्नि आवी जाय के नहि, ए पण एक सवाल छे. जो आवी जाय, तो पूर्वदेवांतर्गत इंद्र तथा अग्नि उत्तर सृष्टिमां गणावेला इंद्र तथा अग्निने सरजे छे ते कथननो खुलासो शो करवो, ते पण प्रष्टव्य छे.

आचार्यश्री ऋचा १ मां भूमि बोल चालु 'भूमि' ना अर्थमां नहि, पण ब्रह्मांडगोलकना अर्थमां ले छे. ए अर्थ शी रीते ऊपजाववो ? आदिपुरुष अने ब्रह्मांडगोलक वच्चे व्यापक अने व्याप्यनो संबंध ऋचामां कह्यो छे. ए आदिपुरुषनूं महानपणूं निर्देश्य होतां ब्रह्मांडगोलकथी मात्र दश अंगुलपूर अधिकतानी मर्यादा बांधेली लेवी पडे छे, ते शूं बराबर छे ?

ऋचा ४ मां आदिपुरुषने चतुर्थांशरूपे चेतन अने अचेतनमां व्यापतो वर्णव्यो छे, ते चेतन अने अचेतन कयां ? उत्तर सृष्टिनां तो होई शके नहि; केमके ते तो अपर देवोना हाथे उत्तर काळमां अपरपुरुषमांथी प्रगटे छे. भाष्यकार

प्रस्तुत ऋचाना चोथा चरणमां ससर्ज क्रियापद अध्याहार ले छे, अने ए शब्दनी पूर्तिथी ' अपरपुरुषे पछी भूमि तथा शरीरो (पुरः) सरज्यां' एम व्याख्यान आपे छे[१०]. परंतु सजर्ज जेवो खरेखरो मुद्दानो बोल, वाक्यमां सर्जनक्रियानो व्यंजक कोइ शब्द न होवा छतां, अध्याहार लेई शकाय खरो ?

ऋचा ६ मां सृष्टिप्रतिपादक यज्ञसमारंभना आज्याद उपस्कर तरीके वसंतादिनो निर्देश छे. पण ऋचा १५ उपरना भाष्यमां पंच ऋतुने तो एकवीस समिध्मां गणी लीधी छे. आनूं समाधान शी रीते करवूं ?

ऋचा ८ मां अपरपुरुष वडे आदरायला यज्ञमां आज्य संभृत कर्यूं छे अने ऋचा ५ मां वसंतनूं आज्य तरीके विधान कर्यानो उल्लेख छे. एमां परस्पर विरोध जेवूं कंइ लागतूं नथी ?

ऋचा १२ मां अपरपुरुषना मुखथी ब्राह्मण अने तरत ज ऋचा १३ मां इंद्र तथा अग्नि उत्पन्न थयानूं कहूं छे; तेवी ज रीते ऋचा १२ मां पगथी शूद्रनी अने ऋचा १३ मां पृथ्वीनी उत्पत्ति भाखी छे; तेनूं केम ?

ऋचा १४ मां अपर देवोए अपरपुरुषमांथी भूमि सरजेली कही छे, ते कथन ऋचा ५ मां अपरपुरुषे भूमि सरज्या विशेना भाष्यकारना निर्देश साथे शी रीते घटाववूं ?

ऋचा १५ ना भाष्यमां गायत्री आदि सात छन्दस्नो यज्ञना सात परिधि तरीके निर्देश कर्यो छे अने बार मास पांच ऋतु त्रण लोक तथा एक आदित्य ए एकवीसना समूहनूं एकवीस समिध् तरीके निरूपण छे. परंतु पांच ऋतु पैकी वसंतनूं ग्रहण तो ऋचा ८ मां कराई चूक्यूं छे. वळी आदित्य शब्द सूर्यना अर्थमां लेइये, तो तेनूं ग्रहण पण ऋचा १४ मां

---

१० आकांक्षा संनिधि योग्यता आदि अर्थनिर्णायक साधनथी अध्याहार रहेलो शब्द पूरो पाडी शकाय छे 'यथ निम्न परशुना यथैन मधुरापिधा। यथैनं खण्डशाखायै सर्वत्र कद्रुरेव स ॥' ए श्लोकमां परशुना वगेरे पद छिनत्ति आदि क्रियापद मागी ज ले छे, अन्यथा निर्वाह शक्य ज नथी. तेवो प्रसंग ऋचा ४ मां उपस्थित थतो नथी, के ससर्ज क्रियापद अध्याहार लेवूं पडे.

कराई चूक्यूं छे. परिधि अने समिध्नी घटना विशे बीजो पक्ष पण छे. ते पक्षे क्षीरोदादि सात समुद्रनी सात परिधिरूपे अने गायत्र्यादि सप्तक अतिजगत्यादि सप्तक तथा कृत्यादि सप्तक ए त्रण छन्दःसप्तकनी एकवीस समिध्रूपे गणना करवामां आवे छे. हवे ऋकालना ऋषिओने जोके समुद्र अजाण्यो न हतो; तथापि क्षीरोदादि सप्त समुद्र तो पौराण काळनी कल्पना छे. तेवी ज रीते कृत्यादि छन्दःसप्तक ऋकालमां अज्ञात छे. कृति प्रकृति आदि पद्यरचना ऋग्वेदमां शोधी जडती नथी. सद्गत रणछोडभाइ उदयरामे एमना **रणपिंगळ**मां कृत्यादिनां उदाहरण आप्यां छे; पण ते पद्य नथी, गद्य छे. ए गद्यात्मक यजुर्मंत्रो छे, ते वात बाजु उपर मूकतां पण एक ज ऋचाना अर्थना संबंधमां आम बे पक्ष ऊभा थवा ते उक्त ऋचानो चोकस अर्थ भूलाई गयो छे एवूं अनुमान बांधवानूं कारण बने छे.

उपर दर्शावेली अनेक शंकाओ, पुरुषसूक्तनो सृष्टिप्रतिपादक अर्थ जे करवामां आवे छे, तेनी विरुद्ध जाय छे. तेने लीधे ए सूक्तने सृष्टिप्रतिपादक अर्थमां लेतां हूं पाछो हठूं छूं.

२९ प्रस्तुत सूक्तमां यज्ञविधानी परिभाषाने अनुसरीने यज्ञ विशे पुरुषबलि तरीके उपचार छे. ते उपचार क्वचित अध्यवसाननी अने अन्यत्र अध्यारोपनी पद्धतिए करेलो छे. ऋकालना देवार्चननो प्रकार मात्र यज्ञसमारंभ हतो. तेना सार्वत्रिक प्रचारने लीधे रूढ थयेला 'पुरुषेण हविषा यज्ञमतन्वत,' 'यज्ञेन यज्ञमयजन्त' आदि प्रयोग सूक्तमां दर्शन दे छे. परिधि अने समिध्नो उल्लेख पण याज्ञिकी व्यवहारु भाषाना प्रसारने लीधे छे. आ प्रयोगो ऋकालमां रूढ अने सुगम छतां ते पछीना काळमां वपराशमांथी जता रह्या एटले करीने दुर्गम बन्या. वर्तमान काळना यज्ञसमारंभमां पिष्टपशु कल्पवामां आवे छे, तेने बदले ऋकालमां मनुष्यावधि प्राणीनूं पशु तरीके विधान थतूं हतूं. आथी आदिपुरुषने अर्पवाना यज्ञ विशे पुरुषपशुनो उपचार करवामां आव्यो छे. 'यज्ञं पुरुषम्' (७) ए उदाहरणमा अध्यारोपात्मक

उपचार होवाथी आरोपविषय अने आरोप्यमाण बंने उक्त छे. परंतु 'पुरुषम्' (११), 'पुरुषेण हविषा' (६) अने 'पुरुषं मनुष्यम्' (१५) ए उदाहरणोमां अध्यवसानात्मक उपचार होवाथी आरोपविषय गम्यमान रहे छे.

३० आ सूक्त यज्ञविधानी प्राचीनताना निरूपण साथे तेनो महिमा गाय छे अने तेनी फलश्रुतिनूं श्रवण करावे छे. संहिताओ गोठवाई ए न हती ते पहेलां यज्ञविधा हती. ए यज्ञविधाना अवतार पूर्वे विराज् नामे आद्य पद्यरचना उद्भवे छे. तेमांथी समय जतां गायत्री द्विपदा-विराज् अनुष्टुभ् त्रिष्टुभ् जगती आदि छंदो उदय पामे छे; अने यज्ञविधा माटे ऋच्साहित्य उत्पन्न थाय छे तेमां साकार थई ते दर्शन दे छे. ऋचाओनो नवो अवतार जे साम तेनो अने यज्ञकर्ममां डगले डगले जरूरना जे यजुर्मंत्रो तेनो समूह ऊभो थाय छे. बीजा शब्दमां कहिये तो ऋच् सामन् अने यजुस्थी होता उद्गाता अने अध्वर्युनूं काम करनारा ब्रह्मभावित ब्राह्मणोनो गण अस्तित्वमां आवे छे. परिधि, समिध्, हविस्, आज्य आदि यज्ञविधानी परिभाषा घडाय छे. ते काळमां यज्ञनी प्रक्रिया सर्वहुत् आदि विशेषना स्वरूपमां विस्तार पामी हती. यज्ञपशुनां विविध अंगनो विवेक पण अवगत हतो. इंद्र अने अग्निने देवोमां प्राधान्य प्राप्त थयूं हतूं. यज्ञनी उत्पत्ति प्राचीन ऋषिओ अने देवोथी थई हती. तेमणे आदिपुरुषनूं यज्ञ रूपी पुरुषबलि वडे अर्चन कर्यूं हतूं[११]. ए आद्य यजनविधानना प्रभावे देवो द्युलोकने पाम्यानी मान्यता पसरी हती. अनेकदेववादमांथी सर्व देवोनी समष्टिरूप सभर भरेला पुरुषनो एकेश्वरवाद प्रगटी चूक्यो हतो. यज्ञनो जेनाथी अवतार कहेल छे, ते विराज् पूर्वोक्त पंचवर्ण पद्यरचना छे. ए पद्यबंध सूझ्यो ते पहेलां हवनकर्म नहि थतां होय एम कंइ कहेवूं नथी; ते थतां हशे; पण ते गद्य वाणीना व्यवहारथी थतां हशे. विविध हिंस्रकर्म-

११ पुरुष शब्दनी आदिपुरुष तेम ज अपरपुरुष किंवा यज्ञपुरुष परत्वे 'पृणाति विश्वमिति पुरुषः।' एवी व्युत्पत्ति मारे योजवी पडी छे. बाकी 'पुरि शेते इति पुरुषः।' ए निर्वचन उभय प्रयोगमां बंध बेसतूं नथी.

नीय भाषाओनी पद्यरचना विचारिये छिये, तो ऋग्वेद अने अवेस्ता सिवाय अन्यत्र वर्णसंख्यात्मक पद्यबंध दृष्टिए पडता नथी. ते उपरथी अनुमान बंधाय छे, के छूटां पडनारां ग्रीक आदि टोळां हिंदइरानीय बंधुओना उक्त पद्यबंधना उदय पहेलां छूटां पड्यां होवां जोईए.

३१ पुरुष सूक्तनी छेल्ली ऋचा त्रिष्टुभ् छंदमां छे. ते पहेलानी बधी ए ऋचामां अनुष्टुभ्नो प्रयोग छे. प्रस्तुत पंदर अनुष्टुभ् पैकी अगियारमा छंदनूं चोथूं चरण नोंध लेवा जोग छे. एमां वावा पदांत योजेल छे. प्रस्ताव १५ मां जणाव्या प्रमाणे अनुष्टुभ्ना बीजा अने चोथा चरणमां कवा पदांत अपेक्षित छे. एज पदांत गायत्री छंदमां साठसित्तेर टका अने मिश्र छंदना तथा संमिश्र प्रगाथना गायत्र पदमां सोए सो टका नजरे पडे छे. ते जोतां ऋचा ११ नी 'का ऊरू पादा उच्येते।' ए पदमां विरामना संकेतथी वावा पदांतनो प्रयोग अपवादभूत छे. एनो वपराट गायत्रीमां त्रीसचाळीस अने त्रिष्टुभ्मां लगभग सो टका जोवामां आवे छे. निर्दिष्ट अपवादभूत वावा उपर दृष्टि ठेरवतां एवो भास थाय छे के पुरुषसूक्तनो आविर्भाव त्रिष्टुभ् पछी, पण मिश्र तथा संमिश्र छंद पहेलां थयो होय.

३२ आख्यानकालनी पद्यरचनामां उतरता पहेलां ऋक्कालनी पद्यरचना तरफ सिंहावलोकनन्याये दृष्टि फेरवी जइये अने तरी आवतां तत्त्वो याददास्तनी पोथीमां टपकावी लेइये. अज्ञात देशकाळमां एकवार ज्यारे हिंदजर्मनीय भाषाकुटुंबनी मौलिक बोली बोलनारां टोळां एकत्र वसतां हतां, त्यारे द्यौस्, वरुण, द्यावापृथिवी आदि स्मरणमां टकी रहेला अने बीजा विस्मरणने शरण थयेला देवोनूं यजनपूजन थतूं हतूं. ते पूर्वे देवोनो प्राक्तन स्तुतिपाठ अर्वाक्तन नमकसूक्तनी पद्धतिए केवळ गद्यात्मक हतो. तेमनूं यजनकर्म प्रत्येक मनुष्य बीजानी सहायता वगर सरळताथी करी शके एवूं सादूं अने टूंकूं हतूं. ए इतिहासातीत काळमां एकेश्वरवाद उद्भव्यो न हतो. अभिन्न निवासमांथी भिन्न भिन्न टोळां छूटां पड्यां ते वखते मूल-

स्थाननी देवभावना अने बोली सामान्य पूंजी तरीके तेओ लेतां गयां. तेनो उल्लेख स्पष्ट ऊकेलाय एम तेमनी संस्कृतिना पटमां उत्कीर्ण छे. ए प्राक्तन प्रस्थान पछी हिंदइरानीय टोळाना वासमां केटलेक काळे पद्यरचनानो प्रादुर्भाव थयो. आहुतिए आहुतिए उच्चाराता 'अग्नये स्वाहा,' 'इदमग्नये न मम' इत्यादि वाक्यमां संवादना वर्णसंख्यात्मक तत्त्वनूं दर्शन स्फुरतां विराज् नामे टूंकामां टूंकी पद्यरचना प्रगटी. तेणे छंदोविधानूं बीज रोप्यूं. पछी गायत्री, अनुष्टुभ्, त्रिष्टुभ्, जगती, ए पदांतविरामवाळा शुद्ध वर्णबंध रचाया; गायत्र तथा जागत, पदना मिश्रणना बनेला मिश्र छंद प्रचारमां आव्या; अने सामगानने अनुकूळ संमिश्र छंद प्रगाथनी पण योजना थई. ऋक्कालनी पद्यरचनामां पदनी समाप्ति केवळ अने विवर्धित स्थिर वर्ण द्वारा बतावाती हती. ते स्थिरवर्णनो प्रयोग वर्णवृद्धिथी ज करवामां आवतो हतो, नहि के रूपवृद्धिथी. वैराज गायत्र आदि पद अविभक्त एकमरूप हतां, एटलेके एना भाग पडता न हता. विषम अने सम पदनो भिन्न पदांत वडे विवेक मात्र अनुष्टुभ् छंदमां ज नवोसवो चाउ थवा मांड्यो हतो. सूक्तनी समाप्ति भिन्न छंदथी सूचववानी पद्धति पण प्रचारमां हती. 'महा हेतवाळी दयाळी ज, मा तुं' जेवी टेकनी पंक्तिनी योजना पण घणा जूना समयथी जाणवामां हती; अने कुंडळियामां तथा चंद्रावळीमां वपराती कुंडळीना जेवी रचनानो उपयोग पण उत्तर काळमां शरू थयो हतो.

३३ आर्ष छंदोविधाना वर्णबंधनां मौलिक पद त्रण ज छे, वैराज, गायत्र अने त्रैष्टुभ्. विविध शुद्ध छंद मिश्र छंद अने प्रगाथनो विकास ए त्रण पदमांथी थयो छे. प्राचीन वर्णबंधनां आ मौलिक तत्त्व साथे त्रण चार शतकनी हयाती धरावता अर्वाचीन वर्णबंधनां मौलिक तत्त्व सरखाववाथी छंदोविधाना प्रदेशमां ऋषिओनी सर्गशक्तिनो कंईक ख्याल आवे छे. वर्तमान काळनो अभंग एकवर्ण तथा द्विवर्ण संधिनो अने कवित तथा पयार चतुर्वर्ण संधिना बनेल छे. आ त्रणथी चोथो संधि अद्यापि उद्भव्यो नथी. ए त्रण

संधिनो विविध वर्णबंधात्मक विस्तार पण बहु ज परिमित छे. प्राचीन काळनां वैराज, गायत्र अने त्रैष्टुग पद पांच आठ अने अगियार वर्णनां बनेलां छे. ते एटलां उत्तरोत्तर वृद्धिंगत छतां संधिभेदरहित छे. प्रत्येक पदनो संवाद पण न्यारो छे अने तेनो विविध छंदना आकारमां विस्तार बहु बहोळो छे. विशेषमां प्राचीन वर्णबंध पाठ्य छे. वर्तमान अभंग कवित अने पयार छंदमां वधतूंओछूं गेयतत्व समायलुं होतां छतां करी ते शुद्ध पाठ्य बनी शकता नथी. आर्ष वैराज, गायत्र अने त्रैष्टुभ पदना छंद आपणा साहित्यमां–खास करीने नाटकसाहित्यमां उतारवाथी आपणा वर्णबंधनी ऊणप कंइक दूर थाय एम छे. आर्ष साहित्यनो विनाधनवेळे प्रगट थयेलो ए निधि आपणा छे. ते भोगवी विशेष समृद्धिमान थवूं कया कलाप्रियने प्रीतिकर नहि होय?

३४ पद्यरचनानी उत्पत्तिने पगले संगीतना प्राचीन प्रस्थाननो पण उदय थाय छे; ऋचामांथी साम प्रगटे छे. प्राचीन पंडितो ऋचाने सामनी योनि एटले तेनूं उत्पत्तिस्थान कहे छे. सामगानने अनुकूळ पद्यबंध गायत्री अने प्रगाथ ज नीवडे छे. ए छंद मूळ ऋचाना स्वरूपमां पाठ्य छे अने नवा सामना स्वरूपमां गेय बने छे. ऋचा अने साम बंनेनूं स्थूल शरीर छंद छे ए अभिप्रायथी पुरुषसूक्तमां 'ऋचः' अने 'सामानि'ना उल्लेख साथे 'छन्दांसि'नो उल्लेख जोड्यो छे; अने गद्यात्मक स्थूल शरीरना यजुस्ने नोखा निर्देशथी अलग राखेल छे. आ अति प्राचीन काळमां संहिताओ गूंथाई न हती अने तेमनो त्रयी संज्ञाथी समुच्चय करायो न हतो. ऋक्काल संहिताकालथी प्राचीन छे.

३५ आर्ष छंदोबद्ध वाणीनो महिमा श्रौत अने सौत्र साहित्यमां बहु वधी जाय छे. ऋकालना छंद देव तरीके पूजा पामे छे अने तेमने यज्ञभाग पण मळे छे. ए देव आपणा साहित्यमंदिरमां पण प्रतिष्ठित थाओ अने पूजाओ!

परिशिष्ट.

अवेस्तानी पद्यरचना.

अवेस्ता ए पारसीओनुं पुराणुं धर्मपुस्तक छे. संस्कृत अभ्यस्तिस् किंवा अभ्यस्तिः, झंद अइभिश्चातिश्, पहेलवी अपिस्ताक्, संस्कृत छायाटिप्पण रचनार नइर्योसंगे प्रयुक्त अविस्ता अने सांप्रत काळमां रुढ अवेस्ता के अवस्ता, ए पदनो अर्थ भणतर थाय छे. ए पवित्र भणतरनो केटलोक भाग पद्यात्मक छे.

उपर कहेला आवेस्तिक भाषनी पद्यरचना अमुक अंशमां आर्चिक पद्यरचना साथे मळती आवे छे अने अमुक अंशमां तेनाथी जुदी पडे छे. एमां योजेला पद्यबंध बधा ए वर्णमेळ छे. प्रत्येक पद्यबंधनुं चरण पांच अक्षरनुं, आठ अक्षरनुं के अगियार अक्षरनुं होय छे, जेनो हुं अनुक्रमे वैराज, गायत्र अने त्रैष्टुभ संज्ञाथी व्यवहार करूं छुं. वखते उक्त चरणमां एकाद अक्षर अधिक के न्यून पण होय छे. आर्चिक पद्यरचनानां वैदिक चरणो पण वैराज गायत्र अने त्रैष्टुभ छे अने ए चरणमां पण यथोक्त न्यूनाधिकता नभावी लेवामां आवे छे. आ अंशो उभय पद्यरचनामां समान छे. ए बेमां जे भिन्नता छे ते पदांतना अने चरणनी संख्याना विषयमां छे. आर्चिक छंदमां चरणना छेडे स्थिर वर्ण होय छे अने चरणनी संख्या बहुधा निश्चित होय छे. आवेस्तिक पद्यरचनाए आ बे बंधननो त्याग कर्यो छे. आर्चिक गायत्र अने त्रैष्टुभ चरणनो अंत्य भाग अनुक्रमे कया अने कयाधानो बनेलो जोवामां आवे छे. आवेस्तिक चरणना अंत्य भागमां उक्त स्थिर अक्षर अपेक्षित नथी. ऋग्वेदमां त्रण गायत्र चरणनो गायत्री अने चारनो अनुष्टुभ् छंद बने छे. आवो विवेक अवेस्तामां छे नहि; एना अष्टाक्षर पद्यबंधनां तो बेथी मांडी दस पर्यंत चरण होय छे. चरणनी संख्याने अवलंबीने ए विविध पद्यबंध जुदा जुदा नामथी ओळखावामां आवता नथी.

आवेस्तिक पद्यरचना उक्त बंधनोना त्यागने लीधे आर्चिक पद्यरचनानी सरखामणीमां बहु सादी छे. परंतु अवेस्तानी वर्णयोजना कइंक विलक्षण छे. ए विलक्षणता लक्षमां लीधा वगर

पद्यबंध वैराज, गायत्र अने त्रैष्टुभ पैकी कया चरणनो छे ते निर्धारवूं लगभग अशक्य थई पडे छे. वैदिक देवासस्–देवासः–देवासो पदमां त्रण अक्षर छे ए बोल आवेस्तिक वर्णयोजनामां दएवाओङ्हो एवा स्वरूपे पांच वर्णनो बनी रहे छे. वैदिक पदना पहेला अने छेल्ला वर्णमांना ए अने ओ स्वर छूटा पडे छे; अने बीजा वर्णनो उष्मव्यंजन छूटो पडी प्राणावशेष बनो उपप्राणनी रीते ओ ना पडखामां पेसवानूं करे छे[1]. लिपिमां जेनो पांच वर्णथी निर्देश कर्यो छे, ते बोल मूळे तो त्रण वर्णनो ज उच्चारातो हशे. वर्णयोजनाने अंगे उद्भवतो आ तर्क आवेस्तिक पद्यबंधोना चरणनी घटना विचारतां दृढ थाय छे. आगामी सूत्रकालना व्याख्यानमां एकीकरण विधाननो उल्लेख छे तेने अनुसरी पंचवर्णात्मक दएवाओङ्हो बोलनूं वस्तुगत त्रिवर्णात्मक दएवाओङ्हो स्वरूप नीपजी आवे छे. विकृत योजनावाळा चरणनी शुद्ध योजना साध्या पछी चरणनी ऊठवणीनो तरत उकेल पडे छे.

आटली प्रास्ताविक सूचना पछी आवेस्तिक त्रिविध चरणना विविध पद्यबंध विचारिये. टूंकामां टूंकूं चरण वैराज छे, तेना पद्यबंधनो दृष्टांत नीचे प्रमाणे छे.

अव   वहिश्तृ ।
अव   स्पएश्तृ ।
दएसाम   श्या ।
पइरि श्या जम्याम ।

हमेमू श्या हवम ॥

आ पांच वैराज चरणो पैकी बीजामां एक अक्षर कमी अने चोथामां एक जास्ती छे.

बीजूं चरण ते गायत्र, तेनाथी बनेला पद्यबंधना बे दृष्टांत नीचे आप्या छे.

यथा अहू वइर्यो[2] ।

---

१ केवळ अनुनासिक आगतुक छे.

२ आ मंत्रनी सदा छन्दमां अने पहेलवीमां अनुक्रमे अहुन वइर्य अने अहुन वर छे. ते जोतां पहेला चरणमां हाल अहू वइर्यो भणाय

अथ स्तुश् अपात् चित् हचा |
यद्देउश् दजा मनडहो |
द्यओथननाम् अड्हेउश् मज्दाइ |

क्षथ्रेम चा अहुराइ आ |
यिम् द्रिगुब्यो ददत् वास्तारेम् ||
आत् मे अपम् पुरुथ ओखत् |
हओमो अपथ दूरओषो |
अज़ेम् अक्षि जरथुश्त्र |
हओमो अपथ दूरओषो |
आ माम् यासडुह स्पितम |
मा माम् हुन्वडुह खरे तेष |

अभि माम् स्तोमने स्तुइधि |
यथ मा सोश्यन्तो स्तवान् ||

घे उदाहरण पैकी पहेला पद्यबंधमां छ अने बीजामां आठ चरण छे बंने मन्त्रोमां चरणनी अंदर वर्णनी प न्यूनाधिक्ता छे

गायत्र पछीनूं चरण जे त्रैष्टुभ, तेनाथी बनेला पद्यबंधना पण घे दृष्टांत आपू छू, पक त्रण चरणनो अने बीजो चारनो

छे तेने बदले प्राचीन काळ्मां अहुन वइर्यो पाठ भणातो हशे, एवो भास थाय छे. वळी मंत्र लोके हाल यथा बोलथी शरू थाय छे, तथापि ज्यारे तेनी अहुन वइर्य सज्ञा पडी हशे, त्यारे तो अहुन वइर्यो बोल ज आरंभे हशे अने यथा बोल तेना पछी बोलातो हशे, एवो पण भास मने थाय छे शायीजे मन्त्रोने आरंभना पद.थी ओळखाववानी पद्धति आवेस्तिक साहित्यमां रूढ जणाय छे, जुओ अयेम् वोहू, येङ्हे हातम् आदि सज्ञाओ श्रुतिसाहित्यमा पण एवोज प्रचार प्रवर्ततो जोवामां आवे छे. ईश किंवा ईशावास्य उपनिषद अने केन उपनिषद ए नाम उक्त उपनिषद्ना आरंभना बोल उपरथीज पड्यां छे सरखावो वळी नासदीयसूक्त, शक्रादयस्तुति, महिम्नस्तोत्र, भक्तामरस्तवन. आ चर्चा अवेस्तानो ऊंडो अभ्यास धरावनारा धुरंधर विद्वानोना अधिकारनी होई हूं मारा तर्क उपर भार मूकवा मागतो नथी अहुन वर ए अवेस्तानो एक जूनामां जूनो मंत्र मनाय छे मौलिक अइभिधर्तिरू सज्ञाने काळनो घसारो लाग्यो छे, तेवो प्रस्तुत मंत्रनी सज्ञाने लाग्यो होय अने पदोना क्रमनू परिवर्तन पण थयूं होय, ए संभवित छे.

યેહ્‌ह्ये दाताम् आअत् येस्ने पइति वङ्हो ।
मज्दाओ अहुरो ष्पया अषात् हचा ।
याओङ्हाम् चा तांस् चा ताओस् चा यजमइदे ॥
के वृथेम्-जा थ्वा पोइ सेङ्हा योइ हेन्ती ।
चिथ्रा मोइ दाम् अहुम्-बिश् रतूम् चिज्दी ।
अत् होइ वोहु स्रोशो जन्तु मनङ्हा ।
मज्दा अह्माइ यह्माइ वशी कह्माइ-चित् ॥

ઉપરના બંને મંત્રોનાં ચરણ અગિયાર અક્ષરનાં છે. વૈરાજ અને ગાયત્ર ચરણની પેઠે ત્રૈષ્ટુભ ચરણમાં પણ અક્ષરની સંખ્યા કમી જાસ્તી હોય છે. નીચેના મંત્રના પ્રત્યેક ચરણમાં એક એક અક્ષર વધારે છે.

ताइश् थाओ यश्नाइश् पइति स्तवसे अयेनी ।
मज्दा अवा वह्हेउश् श्यओथ्नाइश् मनङ्हो ॥

આ પરિશિષ્ટમાં જે છ મંત્ર આવેસ્તિક પદ્યરચનાના દૃષ્ટાંત તરીકે આપ્યા છે, તે પૈકી બીજો અને છઠ્ઠો એ બે મંત્ર શ્રીયુત માનશંકર પીતાંબરદાસ મહેતાના ફાર્બસ સભાએ છપાવેલા 'અહુનવર' એ નામના નિબંધમાંથી લીધા છે; પહેલો ત્રીજો અને પાંચમો એ ત્રણ મંત્ર ડૉ. એરચ જહાંગીર તારાપોરવાલાના 'પારસી ધર્મગ્રંથ અવેસ્તાનો અને વૈદિક છંદોનો મુકાબલો' એ મથાળાવાળા[3] લેખમાંથી ઉતાર્યા છે; અને ચોથો મંત્ર મારા ઉપરના ડૉ. તારાપોરવાલાના પત્રમાંથી સંગ્રહ્યો છે.

---

૩ જુઓ મુંબઈના સાપ્તાહિક ગુજરાતીનો તા. ૧૬ મી ઑગસ્ટ સન ૧૯૩૧ નો અંક.

પદ્યરચનાની ઐતિહાસિક આલોચના

દૃષ્ટિપાત ૩

આખ્યાનકાલ

૧ ઋગ્વેદના સરળ વર્ણાત્મક પદ્યબંધ પછીનો કલાવિધાનમાં તેમ જ સર્ગશક્તિમાં સાધેલી પ્રગતિને લીધે ધ્યાન ખેંચનારો જે પદ્યબંધ, તે બે મહાખ્યાનો (epics) પૂરો પાડે છે. ઋકાલ અને આખ્યાનકાલ મધ્યે અનેક અજ્ઞાત શતકોનું અંતર છે, તે લાંબા ગાળામાં ગદ્યપ્રધાન બ્રાહ્મણભાગ ઉદય પામે છે, પ શ્રુતિના મંત્રભાગની અર્થવાદાત્મક અનુપૂર્તિ છે. તે કાળનું આખ્યાન, અન્વાખ્યાન, ઇતિહાસ, પુરાણ, નારાશંસી, ગાથા આદિ સંગૃહીત અને અસંગૃહીત સાહિત્ય ઉત્તર કાળના નવા વિશાળ આખ્યાનસાહિત્યની ભૂમિકા તૈયાર કરે છે. ઐતરેય બ્રાહ્મણની શુનઃશેપની કથા જેવી અનેક કથાઓ નવતર સાહિત્યના કર્તાને આખ્યાન સંજ્ઞા પૂરી પાડે છે. એકની રૂપરેખા અન્યની રૂપરેખાને અનુસરતી છે; એકની વર્ણચ્છાયા બીજામાં ઉતરે છે; એકનો પદ્યપ્રવાહ ઇતરમાં પણ શ્રવણને આકર્ષે છે. પરંતુ એ બેની રૂપરેખાના પરિમાણમાં અને મરોડમાં ભારે ભેદ તરે છે, વર્ણચ્છાયાની વિવિધતામાં મનોહર તારતમ્ય ઝિલાય છે, અને પુરાણી પદ્યગંગામાં નવી ગંગોત્રીથી ફૂટતાં લઘુગુરુવીચિતરંગવાળાં વહેણ મળે છે.

૨ જે મહાખ્યાનોની પદ્યરચના ચાલુ દૃષ્ટિપાતનો વિષય છે, તે જગતના ચિરંજીવી સાહિત્યમાં અગ્રસ્થાન ભોગવનારાં રામાયણ અને મહાભારત છે: તેમનો વિસ્તાર મહાસાગર સરખો છે. પહેલાનું ગ્રંથમાન ચોવીસ હજાર અને બીજાનું એક લાખ શ્લોકને આશરે કહેવાય છે. આ અસાધારણ કદના પ્રમાણમાં પદ્યની વિવિધતા વિશાળ નથી. નવા પ્રકારો ધ્યાનમાં લેવા, ઉક્ત મહાખ્યાનોનો આખો અધ્યાય અથવા તેનો મોટો ભાગ જે છંદમાં રચાયો હોય તે વ્યાપક અને જે છંદ વ્યાપક ન હોય તે એકદેશી, એ બે શ્રેણીને અનુસરીને ક્રમશઃ ઉક્ત મહાખ્યાનોની પદ્યરચના તપાસિયે.

३ **रामायण** अने **महाभारत** ए बेमां पूर्वोक्त वधारे प्राचीन मनाय छे. ए महाख्यानना सात भाग पाडेला छे; तेने पुराण आर्ष साहित्यनी परिभाषाने अनुसरतुं काण्ड नाम आपेलुं छे. प्रत्येक काण्डनी न्हानामोटा अध्यायमां वेंचणी करी छे. समग्र महाख्यानमां कुल छसेंने पिस्तालीस [1]अध्याय छे. अमुक प्रकरण के प्रस्ताव वर्णवता परस्पर संबंध धरावता श्लोकनो एकीकृत समूह ते अध्याय. श्रुतिसाहित्यनो आ बोल दैनिक अध्ययनना परिमाणनो वाचक छे; ऋग्वेदना सूक्तनी पेठे अध्याय बहुधा एक ज छंदमां रचवामां आवे छे.

४ **रामायण**नो प्रधान व्यापक छंद अनुष्टुभ् छे. छसें पिस्तालीस अध्याय पैकी सातेक ज बाद करतां ए महाख्यानना बाकीना अध्याय आ छंदमां छे. मात्र अध्यायना अंते वैविध्य खातर वखते वखते छंद बदलाय छे. ए नवतर छंदनी नोंध एकदेशीना प्रस्तावमां लेवाशे. अहीं तो अनुष्टुभ् आदि व्यापक छंदनी आलोचना प्रस्तुत छे; तेमां प्रवृत्त रहीशुं. **रामायण**ना व्यापक अनुष्टुभ्‌ना अने पूर्वे दृष्टिपातना ऋक्साहित्यना अनुष्टुभ्‌ना प्रचारमां तेम ज बंधारणमां ध्यानपात्र भेद छे. ऋक्कालना पहेला चार प्रधान छंदोमां सौथी वधारे वपरास त्रिष्टुभ्‌नो, तेथी ऊतरतो **गायत्री**नो, तेथी पण ऊतरतो **जगती**नो अने जगतीथी ए ऊतरतो **अनुष्टुभ्**नो छे. ऋग्वेदमां अने **रामायण**मां एक तरफ एकलो अनुष्टुभ् लेइये अने बीजी तरफ समस्त अन्य छंद एकत्र करिये, तो आर्चिक अनुष्टुभ्‌ने मुकाबले आख्यानिक अनुष्टुभ्‌नो

---

१ मुंबई तेम ज कलकत्तामां छपायेला **रामायण**मां सर्ग शब्द अध्यायने बदले वापरेलो जोवामां आवे छे. परंतु भवभूति **उत्तररामचरित** नाटकना छट्ठा अंकमां कुशना मुखे **रामायण**ना बे श्लोक बोलावे छे, ते प्रसंगे बालचरितना अंत्य अध्यायना ए बे श्लोक छे एवो उल्लेख करे छे. ते उपरथी प्रचलित सर्ग बदल अध्याय शब्दनो में प्रयोग कर्यो छे. **महाभारत** तरफ नजर फेरवतां पण आख्यानकालनो पारिभाषिक बोल अध्याय ज ठरे छे. भवभूतिए ऊतारेला श्लोक रा. १। ७७।२६–२७ आंकना छे.

वपराट व्यस्त प्रमाणमां वधी जाय छे. आख्यानकालना अनुष्टुभ्‌ना बंधारणमां पण तेवी ज सूचक भिन्नता तपासनारने मालम पडशे. पदरचनानी दृष्टिए ए छंदना प्रत्येक पद किंवा चरणना बे भाग पडे छे, पूर्व अने उत्तर. चारे पूर्व भाग चार चार वर्णना बनेला, अर्थात् वर्णबद्ध जोवामां आवे छे. चारे उत्तर भागमां केवळ रूप ज नजरे चडे छे. बीजा अने चोथा चरणनो एटले-के सम चरणनो उत्तर भाग ऐकांतिक लगालगा ए रूपचतुष्कनो बने छे. पहेला अने त्रीजा एटलेके विषम चरणना उत्तर भागनी रचना वैकल्पिक छे. तेमां बहुधा लगागागा, गालगागा, गागागागा, ललगा अने गाललगा ए पांच रूपचतुष्कमांथी गमे ते एक आवे छे. परंतु वधारे प्रचार लगागागा रूपचतुष्कनो नजरे पडे छे. प्रस्तुत विकल्पने लीधे पहेला अने त्रीजा चरणना उत्तर भागमां बंधनी सरळता अने घटनानी चित्रता साधी शकाय छे. आख्यानिक अनुष्टुभ् अत्रोक्त विशिष्ट बंधारणने लीधे वर्णसंवाद अने रूपसंवादना प्रवाहोनूं संगमतीर्थ नीवडे छे. वर्णात्मक सादी सटक साथे संधायला मनोहर रूपरचनाना छ घाटथी आख्यानकालना उक्त संगमतीर्थनूं अवगाहन नीचेनां अवतरणोए[२] सधाय छेः—

सम चरणना उत्तर भागनो घाट

लगालगा....**कृतविद्यौ मनस्विनौ** । म.भा.।वि.प.।५३।१५।

विषम चरणना उत्तर भागना घाट

लगागागा...**अश्वाः शोणाः प्रकाशन्ते** । म.भा.।वि.प.।५३।४।

गालगागा....**तयोरासीत्संप्रहारः** । म. भा.।वि.प.।५३।५३।

गागागागा....**अथान्तरिक्षे नादोऽभूत्** । म.भा.।वि.प.।५३।६३।

---

२ शास्त्रीय संशोधनपद्धतिथी **रामायण**नी वाचना स्थापित थई नथी. हाल तो **महाभारत**नूं विराटपर्व ज उक्त पद्धतिए भंडारकर ओरीएंटल रिसर्च इन्स्टिट्यूट तरफथी पूने सुसंस्कृत थई बहार पड्यूं छे. एटले आख्यानकालना छंदोनां उदाहरण तेमांथी ज लेवामां आव्यां छे, **रामायण**मांथी नथी लीधां.

ललगा....बुध्या तुल्यो शनसा । म.म.।वि.प.।५३।७।
गाललगा....आचार्यशिष्यावजितौ । म.भा.।वि.प.।५३।१५।

५ आर्चिक अनुष्टुभ् आख्यानिक अनुष्टुभ्मां परिणाम पामवानी साथे त्रिष्टुभ् छंद उपजातिनूं स्वरूप धारण करी रामायणनो बीजो व्यापक छंद बने छे. छन्दःसूत्रमां वर्णवेला अगियार अक्षरना उपेन्द्रवज्रा अने इन्द्रवज्राना मिश्रणथी बनेलो छंद ते प्रसिद्ध उपजाति. बार अक्षरना वंशस्थ अने इन्द्रवंशानां चरणोना मिश्रणनो बीजो पण उपजाति छंद बने छे; ते ओछो जाणीतो अने ओछो वपरायलो छे. आ बे उपजाति वच्चे भ्रम न थाय ए हेतुथी प्रसिद्ध उपजातिने त्रैष्टुभ अने ओछा जाणाता उपजाति छंदने जागत विशेषण हूं लगाडूं छूं. अहीं कहेलो त्रैष्टुभ उपजाति छंद रामायणना छ अध्यायमां व्यापकरूपे देखा दे छे. उपेन्द्रवज्रा अने इन्द्रवज्रा बंने रूपबंध छे. एटले त्रैष्टुभ उपजाति पण रूपबंध छे, ए जणाववानी जरूर रहेती नथी. उक्त एकादशाक्षर रूपबद्ध उपजातिनूं उदाहरण नीचे प्रमाणेः—

ततः स तेषां पुरुषप्रवीरः
शरासनार्चिः शरवेगतापः ।
व्रातान् रथानामदहत् समन्यु-
र्वनं यथाग्निः कुरुपुंगवाग्र्यः ।।म.भा.।वि.प.।४९।८।।

आ उपजातिना अंगभूत उपेन्द्रवज्रा अने इन्द्रवज्रानां लक्षण एकदेशी छंदना निरूपणमां आगळ आवशे.

६ गत प्रस्तावमां प्रसंगवशात् जागत उपजातिनो उल्लेख कर्यो छे. तेना बंधारणमां आवनारा बे छंदोमांनो एक जे वंशस्थ, ते वाल्मीकिना महाख्याननो त्रीजो व्यापक छंद छे. तेनो प्रयोग मात्र एक ज [३]अध्यायमां

३ जुओ सुन्दरकाण्ड, अध्याय ८ । आ अध्याय कदाच क्षेपक होय. एमा रावणनी महेलातना एक भागमां मूकेला पुष्पक विमाननूं वर्णन छे, उक्त अध्याय सिवाय बीजे कहीं वंशस्थनो व्यापक तरीके प्रयोग दृष्टिगोचर थतो नथी. परंतु एकदेशी तरीके ते घणी वार वपरायो छे, तेथी मौलिक रामायणना पद्यबंधमां में तेनी नोंध कायम राखी छे.

करेलो छे. रामायणना आठ छंदना ए न्हानकडा अध्यायमां सात वंशस्थ व्यापकरूपे देखा दे छे. लगाल गागा लगाल गागा, ए चार रूपजूथोनो ए रूपबंध बने छे. तेनूं उदाहरणः—

बलेन तुल्यो न हि दृश्यते मया
नियुद्धशीलश्च तथैव पार्थिव ।
गजैश्च सिंहैश्च समेयिवानहं
सदा करिष्यामि च ते नृप प्रियम् ॥म.भा.।वि.प.।६।११॥

७ रामायणना एकदेशी छंदनी मीमांसा माटे तेमने बे विभागमां व्हेंची नांखवा पडे छे, संभाव्य कोटिना एकदेशी अने असंभाव्य कोटिना. अकाल-थी आराळ वधतो पद्यप्रवाह आख्यानकालमां क्रमश व्यवस्थित प्रगति करे, ए समजी शकाय एम छे. पात्र पण बदलाय, धारा पण नवी फूटे, ए प्रकृतिना नियमने अनुसरतूं छे. उक्त मर्यादामां जे छंदो आवी शके, तेमने हूं संभाव्य कोटिना एकदेशी छन्द लेखूं छूं, अने जे छन्दो उक्त मर्यादा-मां न आवी शके, तेमने असंभाव्य कोटिमां मूकूं छूं. आ रीतना विभाग स्वीकारी संभाव्य कोटिना एकदेशी छंदनूं विवेचन हूं प्रथम हाथ धरूं छूं.

८ रामायणना संभाव्य कोटिना एकदेशी छंद उपेन्द्रवज्रा, इन्द्रवज्रा, त्रैष्टुभजागत उपजाति, जागत उपजाति अने त्रिष्टुभ् छे. पूर्वोक्त त्रैष्टुभ उप-जाति अने वंशस्थ तेम ज अत्रोक्त उपेन्द्रवज्रा इन्द्रवज्रा अने जागत उपजाति चार चार समान चरणोना बने छे. बीजभूत आर्चिक त्रिष्टुभ् अने जगतीनी उच्चारणा अभिन्न छे, तेने लीधे ए बे वर्णबंध उपरथी सधायला प्रस्तुत रूप-बंधनी उच्चारणा पण अभिन्न ज छे. उपेन्द्रवज्रा अने इन्द्रवज्रानां चरणना पण वंशस्थनी पेठे चार भाग पडे छे; पहेलो अनुक्रमे लगाल तथा गागाल रूप-त्रिकनो अने बीजो त्रीजो तथा चोथो उभयमां अनुक्रमे गागा रूपद्विकनो ललगाल रूपचतुष्कनो तथा गागा रूपद्विकनो. चरणना आ न्हानामोटा जूथने हूं संधि

संज्ञाथी ओळखावूं छूं. प्रत्येक संधिनो आद्य अक्षर भारयुक्त होय छे अने ते पछीना अक्षर भारमुक्त रहे छे. उपेन्द्रवज्रा अने इन्द्रवज्रामां मात्र प्रथम संधिना आद्य रूपमां ज तफावत छे. एकमां ते रूप लघु अने बीजामां गुरु छे. आटला न्हानासरखा भेदना कारणथी ए बे छंद भिन्न नामथी ओळखाय छे. रूपबंधना आ विशिष्ट लक्षणनी विस्मृति कदी पण थवी न जोईए. उपेन्द्रवज्रा अने इन्द्रवज्रानां उदाहरण अनुक्रमे नीचे प्रमाणेः–

प्रकीर्णपर्णानि यथा वसन्ते
निशातयन् वात्यनिलो नुदन् वै ।
तथा सपत्नान् विकिरन् किरीटी
चचार संख्येऽतिरथो रथेन ॥ ग.भा.।वि.प.।४९।१७॥
ततः स विद्धे भरतर्षभेण
बाणेन गात्रातिबलातिगेन ।
गतासुराजौ निपपात भूमौ
नगो नगान्तादिव वायुभग्न ॥ म.भा.।वि.प.।४९।१३॥

जागत उपजातिनी घटनामां वंशस्थ साथे जे बीजा रूपबंधनो उपयोग थाय छे, ते इन्द्रवंशा. एना चरणमां गागाल, गागा, ललगाल, गागा, ए चार रूपजूथ आवे छे. एनो प्रयोग मुक्तकाल उपरना दृष्टिपातमां नोंधाशे. निर्दिष्ट वंशस्थ अने इन्द्रवंशानां चरणोना मिश्रणथी नीपजनारा आख्यानकालना रूपात्मक जागत उपजाति छंदनो दृष्टांत नीचे आप्यो छेः–

[4]युधिष्ठिरस्यासमहं सखा पुरा
वैयाघ्रपादः प्रवरोऽस्मि चाडवः ।
अक्षान् प्रवप्तुं कुशलोऽस्मि देवने
कङ्कोऽथ नाम्नास्मि विराटविश्रुतः॥म.भा.।वि.प.।६।११॥

---

४ मुद्रित पाठ वड्केति छे. ते व्याकरणनी दृष्टिए अशुद्ध छे. ते बदल उपर आपेलो पाठ कल्पित छे.

त्रिष्टुभ् छंद जोके रामायणमां मळी आवतो नथी, तोपण ते वपरायो होवो संभवे छे; केमके ते उत्तरकालीन महाभारतमां मळी आवे छे. ए आर्चिक त्रिष्टुभ्नूं लक्षण ऋक्काल उपरना दृष्टिपातमां अपाई चूक्यूं छे; तेनी पुनरुक्ति करवी अनुचित छे. ए छंदनूं महाख्यानमांनूं उदाहरण नीचे प्रमाणेः—

अथोत्तरस्त्वरमाणस्तु दूता–
नाज्ञापयद् वचनात्फाल्गुनस्य ।
आचक्षध्वं विजयं पार्थिवस्य
भग्नाः परे ते विजिताश्च गावः ।म.भा.।वि.प.।६२।११॥

अवशिष्ट त्रैष्टुभजागत उपजाति पण ऋक्कालना वारसानो वर्णवध छे. तेथी तेनूं लक्षण अहा पुनरुक्त न करतां मात्र तेनूं आख्यानकालनूं उदाहरण नीचे टाकूं छूं:

ततः स वह्निप्रतिमो महाकपिः
सहैव भूतैर्दिवमुत्पपात ।
तथैव मायाः सकलाश्च ता वै
ध्वजं च सिंहं युयुजे रथे च ।म.भा.।वि.प.।६१।३६॥

आ त्रैष्टुभजागत उपजातिनी अने त्रैष्टुभ उपजाति तथा जागत उपजातिनी वच्चे भ्रम थवा संभव छे, पण ते भ्रम एकज व्यावर्तक लक्षण ध्यानमां राखवाथी टळी जाय छे. आख्यानकालनूं त्रैष्टुभ उपजाति अने जागत उपजातिनूं जोटकूं रूपबंध छे, ज्यारे ऋक्कालथी चाल्यो आवतो त्रैष्टुभजागत-उपजाति छंद तो वर्णवध छे. उपर गणावेला एकदेशी उपरांत पूर्वे व्यापक तरीके नोंधायला केटलाक छंद पण एकदेशी तरीके देखा दे छे. तेमना लक्षणनी पुनरुक्ति निरर्थक छे.

९ रामायणना असंमान्य कोटिना एकदेशी छंद चौद छे, (१) अपरवक्त्र, (२) पुष्पिताग्रा, (३) वियोगिनी, (४) माल्यभारिणी, (५) वैतालीयोपजाति, (६) अपूर्व, (७) मृगेन्द्रमुख, (८) वसन्ततिलका, (९) ऋषिगण,

(१०) भुजंगप्रयात, (११) शालिनी, (१२) वैश्वदेवी (१३) प्रहर्षिणी, (१४) स्रग्धरा. 'एकथी सात आंकवाळा छंदनूं एक कुटुंब बने छे, तेने हुं वैतालीयकुटुंब एवी संज्ञा आपूं छूं; केमके ते सुत्तकालना वैतालीय छंद साथे संबंध धरावे छे. हवेपछीना दृष्टिपातमां कहेवामां आवशे तेम ए-सौत्तिक वैतालीयना चरणोनो पूर्वभाग मात्रात्मक अने उत्तरभाग रूपात्मक छे. मात्राभाग अने रूपभागनी संसृष्टिवाळां प्रस्तुत चरणो समय जतां सळंग रूपात्मक स्वरूप धारण करे छे, अने अपरवक्त्र, पुष्पिताग्रा, वियोगिनी तथा माल्यभारिणी, ए चार अर्धसम रूपबंधने जन्म आपे छे. आ विषयनी सविस्तर मीमांसा पांचमा दृष्टिपातमां आपवामां आवशे. अहीं तो एटली ज नोंध लेवानी जरूर छे के सुत्तकाल पछी प्रवर्तनारा प्रस्तुत चार छंदनो अने तेमनां चरणना मिश्रणथी थनार छंद जेने में वैतालीयोपजाति नाम आपेल छे तेनो प्रयोग ए सुत्तकाल पूर्वे संभवतो ज नथी. वळी कल्पित अपूर्व संज्ञावाळा अर्धसम छंदनी तेम ज समपद मृगेन्द्रमुखनी उत्पत्ति पण ए ज सुत्तकालना गोत्रपुरुष वैतालीयथी थई छे. अर्थात् ए बेनो उदय पण आख्यानकालमां संभवतो नथी. ते कारणथी उक्त साते छंदने असंभाव्य कोटिमां मूकवा पडे छे.

१० बाकीना एकदेशी वृत्तनी चर्चामां उतरतां पहेलां त्रण बाबत पर लक्ष ठेरववूं घटे छेः (१) आख्यानकालमां बारथी अधिक रूपनूं चरण अस्तित्वमां आव्यूं न हतूं; (२) ए काळमां आवृत्तसंधिना छंद पण हयाती धरावता न हता; अने (३) ए काळमां चरणनी अंदर यति एटले छांदस विरामनो प्रचार पण उद्भव्यो न हतो. आ कसोटीए चडावतां, अवशिष्ट एकदेशी पैकी वसन्ततिलका (रा.।७।८।२८।) अने ऋषिगण (रा.।२।११६। २५।) ए बे छंदना चरणमां चौद चौद रूप आवे छे, ते कारणथी ते असंभाव्य कोटिमां मूकाय छे. वसन्ततिलकाना चरणमां अटपटी लोमप्रतिलोम रूपव्यवस्थानो जे प्रयोग छे, ते पण उपरना मतनी पुष्टि करे छे. बीजो छंद जे ऋषिगण, तेनूं तो नाम सरखूं ए छंदोविधाना ग्रंथोमां जडतूं नथी. एनां पहेलां बे चरण अनुक्रमे भभननलग तथा भभनजलगनां अने पछीनां

बे, पैकी प्रत्येक मतनसगण-नूं बनेलुं छे. एना उदाहरणना पहेला चरणमां **ऋषिगण** पद आवे छे तेने आगळ करीने एनुं **ऋषिगण**[5] नाम में कल्प्युं छे. प्रस्तुत उपान्त्य अने ते पछीनो अंत्य ए बंने श्लोक पूर्वापरसंबंध जोतां प्रथम दृष्टिए ज अध्यायने छेडे पाछळथी उमेरायला एटले प्रक्षिप्त ठरे छे. ए पछीनो एकदेशी जे **भुजङ्गभयात**, तेमां आवृत्त संधि आवे छे. ते पण असंभाव्य कोटिनो ज छे; केमके आवृत्त संधिनो प्रयोग आख्यानकालथी अर्वाचीन छे. त्यारपछी विचारवाना एकदेशी जे **शालिनी**, **वैश्वदेवी**, **महर्षणी** अने **रुचिरा**, ते चारे मध्य यतिनी अपेक्षा राखे छे. पहेलामां चोथा, बीजामां पांचमा, त्रीजामां त्रीजा अने चोथामां चोथा अक्षर पछी छंदोनुसारी विराम आवश्यक छे. ए मध्य यतिना कारणथी ए चार छंद पण असंभाव्य कोटिमां गोठवाय छे.

११ उपरनी समीक्षा अनुसार **रामायण**नो पद्यबंध, ऋक्कालनो त्रैष्टुभ-जागत **उपजाति** छंद बाद करतां, **अनुष्टुभ्**, **त्रैष्टुभ उपजाति**, **उपेन्द्रवज्रा** **इन्द्रवज्रा**, जागत **उपजाति** अने **वंशस्थ** ए छ छंदनो बन्यो छे. एमांनो पहेलो अर्ध वर्णात्मक तथा अर्ध रूपात्मक, अने बाकीना पांच पूर्ण रूपात्मक छे.

१२ **रामायण**ना पद्यबंध जोई जई हवे **महाभारत**ना पद्यबंध तरफ लक्ष वाळिये. प्रथम दृष्टिपाते ए महाख्यानमां छंदोनी मीमांसा माटे रस्तो काढवो दुर्घट जणाय छे; कारणके भिन्न भिन्न पाठनी, वधताओछा श्लोक अने अध्यायनी, एकबीजाथी जुदी पडी मूझवनारी वाचनाओ प्रस्तुत महाख्याननी विद्यमान छे, जेने लीधे छंदोना स्वीकार अने त्यागनी बाबतमां अनंत विप्रतिपत्ति ऊभी थाय छे. सांप्रत काळमां आपणी पासे आरुं संशोधित **महाभारत** नथी के तेने आपणे पद्यरचनानी आलोचना माटे आधाररूपे

---

५ प्रस्तुत श्लोक नीचे प्रमाणे छेः रामः सखाप्य ऋषिगणमनुगमनात् देवान् तस्मात् कुलपतिमभिवाद्य वशिष्ठम् । सम्यक् प्रीतैस्तैरनुमत उपदिष्टार्थः पुण्यं वासाय स्वनिलयमुपसंपेदे ॥. ऋषिगण नाम पसंद करवानुं निमित्त उपर जणाव्युं छे ते उपरांत बीजुं पण एक छे. मुख्य प्रसिद्ध ऋषिओना ये गण सात आठना जाणीता छे. ते थे ए वर्णोने प्रस्तुत छंदना चरणनी रूपसंख्या भेद सूचित थाय छे.

उपयोगमां लेइये. प्रस्तुत महाख्याननाा समुद्धारनूं विकट कार्य केटलाक वखतथी पूनानी Dr. Bhandarkar Research Institute संस्थाए हाथ धर्यू छे. आजपर्यंत ए संस्था द्वारा पूरूं पर्व एक ज बहार पड्यूं छे, विराटपर्व. एना आधारे स्थालीपुलाकन्याये **महाभारत**ना पद्यबंधनी समीक्षा करवानो मारो संकल्प छे. पूनानी संस्थाना विराटपर्वमां एकंदर बे हजार अने तेत्रीस श्लोक छे. तेमां व्यापक छंदो चार तरी आवे छे, अनुष्टुभ् (१८६७), त्रैष्टुभ उपजाति (७७), वंशस्थ (२१) अने जागत उपजाति (२९). ए पर्वना एकदेशी छंद पण चार छे, उपेन्द्रवज्रा (३), इन्द्रवज्रा (११) त्रैष्टुभजागत उपजाति (९) अने आर्चिक त्रिष्टुभ् (६). आ आठे छंदोनां लक्षण पूर्वे कहेवामां आव्यां छे, तेथी तेनी पुनरुक्ति हूं करतो नथी.

१३ उपर गणावेला **महाभारत**ना छंद पूर्वोक्त **रामायण**ना छंद साथे एकता धरावे छे; अने ते आख्यानकाळना साधारण वपराटना छंद छे. जरा ऊंडा ऊतरीने तपासीशूं तो जणाशे, के **महाभारत**नो व्यापक छंद जागत उपजाति, ते **रामायण**मां एकदेशी तरीके ज देखा दे छे. वळी **महाभारत**मां आर्चिक त्रिष्टुभ् एकदेशीमां स्थान ले छे, तेनूं **रामायण**मां दर्शन ज थतूं नथी. कोइने शंका थशे के पूर्वकाळनो आर्चिक त्रिष्टुभ् छंद वचगाळाना **रामायण**मां नथी मळी आवतो अने उत्तर काळना **महाभारत**मां देखा दे छे तेनूं शूं कारण ? आख्यानकालमांथी सुक्तकालमां ऊतरी आवतो अने चालु रहेतो आ ऋकालनो छंद **रामायण**मां न जणाय तेनूं कारण एवूं तो न ज होई शके के, ए महाख्यानना रचनाकाळमां तेनो प्रयोग उच्छिन्न थयो होय. संभव तो एम लागे छे के वाल्मीकि मुनिए ते छंद स्वरचित महाख्यानमां वापर्यो होय, परंतु ए वर्णबंध तेमांथी ऊतरी आवता रूपबंधमां नजीवा फेरफारथी पाछळथी रूपांतर पमाडायो होय तेने लीधे **रामायण**मां तेनो अभाव अत्यारे जणाय. भविष्यमां अनेक जूनी हाथप्रतोने आधारे समर्थ संशोधकोनां हाथे **रामायण**नी वाचना स्थापित थई ते वाचनामां आर्चिक त्रिष्टुभनां उदाहरण

मळी पण आवे. महाभारतनो समुद्धार कराय छे, तेवो रामायणनो पण व्हेलो थवा पामो.

१४ आख्यानिक छंदोए आर्चिक छंदो करतां जे अधिकतर प्रगति करी, ते अत्यारसुधीना विवेचनने अनुसरनार स्हेजे समजी शकशे. आर्चिक छंद वर्णबंध हता. वैदिक ऋषिओने रूपरचनानुं दर्शन थयुं न हतुं. ए रचनानी झाखी आख्यानकालमा थवा लागी. आर्चिक अनुष्टुभ् ते आठ आठ वर्णना चार चरणनो छंद. आख्यानिक अनुष्टुभ्, ते पण आठ आठ वर्णनां चार-चरणनो छंद, परतु प्रगति ए के तेनां सम अने विषम चरणना उत्तर भागना वर्णचतुष्कमां रूपनी भावना उदय पामे छे. सम चरणमांनी रूपरचना स्थिर बनी जाय छे. विषम चरणमांनी स्थिर थवाने पथे छे; ए वैकल्पिक रहे छे, स्थिर थवा पामती नथी. आख्यानिक अनुष्टुभ्ना चरणमां वर्णबंधना विधानने अन्वये वर्णचतुष्कनो बनेलो पूर्व भाग चर ज रहे छे. आ प्रमाणे आख्यानकालना अनुष्टुभमा रूपरचना चरणना अर्धा भागमा पहेलां दाखल थाय छे. पछी वाल्मीकि मुनिने हाथे रामायणमा ज त्रैष्टुभ उपजाति, उपेन्द्रवज्रा, इन्द्रवज्रा अने वंशस्थमां रूपरचना पाकी जमावट साधे छे. आ बाबत सविस्तर विगतवार विवेचन ए छंदोना लक्षणना प्रस्तावमां अपाई चूक्युं छे. आख्यानकालमां रूपरचनानो उदय थयो छतां य त्रिष्टुभ् अने त्रैष्टुभजागत उपजाति जेवा आर्चिक वर्णबंध वपराता बंध पड्या न हता. त्रिष्टुभ् वर्णबद्ध स्वरूपे ठेठ सुत्रकाल सूधी चाल्या रहे छे. वंशस्थ अने इन्द्रवंशाना मिश्र चरणोनो बनेलो जागत उपजाति जे रामायणमा एकदेशी हतो, ते महाभारतमा व्यापक बने छे. वळी छ छ चरणना आख्यानिक अनुष्टुभ् पण बने महाख्यानोमां वपरायला नजरे पडे छे.

१५ आख्यानकालना उक्त पद्यबंधनो उदय रामायणना आरंभे चमत्कारात्मक वाणीमां आ प्रमाणे वर्णव्यो छे. एक समये वाल्मीकि मुनिए भगवान नारदने विज्ञप्ति करी के 'सांप्रत युगमा गुणवान, वीर्यवान, धर्मज्ञ

कृतज्ञ, सत्यवादी अने दृढव्रत आ जगतना विशे कई व्यक्ति छे ते जणाविये.' देवर्षिए उत्तर वाळ्यो के 'तमे जाणवा मागो छो एवी व्यक्ति तो एक रामचंद्र छे. इक्ष्वाकुवंशमां प्रगटेला ए महान पुरुष आत्मसंपन्न, महावीर्यवान, तेजस्वी तेम ज संयमी छे.' पछी नारद मुनि संक्षेपमां रामनूं चरित्र वर्णवी आकाशमार्गे चालता थया. एक मुहूर्त वही गयूं; त्यारबाद भगवान वाल्मीकि शिष्य सहित जाह्नवीना पडखामां वहेती तमसा नदीए स्नानार्थे पधार्या. त्यां निर्दोष क्रौञ्च पक्षीनी एक जोडी तेमणे क्रीडा करती दीठी. एटलामां एक पारधी आवी चडयो. तेणे तीरथी नरने वींधी नांखी जोडी खंडित करी. लोहीथी लदबद थयेलो नर तत्क्षण भोंय ढळी पडी तरफडियां खाई मरण पाम्यो. एकली पडेली क्रौञ्ची चीसेचीस नांखी आक्रंद करवा लागी. दरमियान ते त्रासदायक बनावथी अंतरमां भारे आघात पामेला धर्मात्मा मुनिना मुखमांथी एकाएक एवा अर्थनी संस्कृत वाणी नीकळी के 'अरे जंगली मनुष्य ! तूं हाश करीने बेसवा नहि पामे, रखडी रझळीने मरी जईश. शाथी-जे प्रेममां मुग्ध बनी क्रीडा करता एक पक्षीनो वध करी आ क्रौञ्च पक्षीनी जोडी तें खंडित करी छे[६] !' ए स्वयंभू पद्यात्मक वाणीना उद्गारथी विस्मय पामता मुनीश्वरे विचार्यू के 'अहो ! आ ते केवा प्रकारनी वाणी मारा मुखमांथी नीकळी !' तरत मनथी निर्णय बांधता वाल्मीकि भगवाने शिष्य प्रत्ये कह्यूं जे 'शोकपीडित मारा मुखथी प्रवर्तेलो, चरणमां सरखाइ धरावतो, संख्या तथा रूपमां अक्षरसंवादवाळो, अने वीणा साथे मेळ खाय एवो आ श्लोक अन्यथा थवो—मिथ्या जवो न जोईए, अर्थात् महान आख्यानमां योजाई सार्थक नीवडवो जोईए[७].' पछी स्नानथी परवारी मुनि आश्रमे आव्या अने वार्तालाप बाद ध्यानमग्न थया. एवे भगवान ब्रह्मा तेमने मळवा

६. जुओ रा. १।२।१५। मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ॥

७. जुओ रा. १।२।१८। पादबद्धोऽक्षरसमस्तन्त्रीलयसमन्वितः ।
शोकार्तस्य प्रवृत्तो मे श्लोको भवतु नान्यथा ॥

आस्या. ध्यानस्थदशामां पण पापी पारधीनूं दुष्ट कृत्य अने मरणान्मुख क्रौञ्चीनूं करुण आक्रंद मुनिने खटक्या करतूं हतूं. आथी ब्रह्मदेव आगळ पण तेमना मुखमांथी पूर्वोक्त स्वयंभू संस्कृत श्लोक नीकळी गयो. ते सांभळी सृष्टिना कर्ता स्हेज म्हो मलकावी वाल्मीकि मुनि प्रत्ये बोल्या के 'हे ब्रह्मन्! मारी इच्छाना योगे ज तमारा मुखमांथी आ वाणी प्रवर्तेली छे. एनी पद्यरचनाना संबंधमां तमारे विमासणमां पडवूं घटतूं नथी. तमे ए बंध एटले मेळथी युक्त श्लोक ज रच्यो छे. अस्तु, हवे हे ऋषिवर्य! ए श्लोकमां तमे रामचंद्रनूं समग्र चरित्र रचो. नारदना मुखेथी ए धैर्यशील महान पुरुषनो वृत्तांत जेवो तमे सांभळ्यो छे तेवो वर्णवो.' परम पितामहनो आदेश थयो तेनी साथे सहस्र सूर्य समी वाल्मीकि मुनिनी प्रतिभा प्रकाशी; अने 'सरखाइ वाळां चार चरणोए मुनीश्वरनी शोकनी (करुण) वाणी जे प्रथम उच्चाराई हती, ते पछीथी रामचंद्रना चरित्रना कथनथी श्लोकपणाने पामी[९].'

१६ उपरनी अद्भुत कथानूं तात्पर्य विचारिये तो एटलूं ज जणाय छे, के भगवान वाल्मीकि चरणना पूर्व अर्धभागमां वर्णबद्ध अने उत्तर अर्धभागमां रूपबद्ध रचनावाळा प्रस्तुत अनुष्टुभना आद्यद्रष्टा हता. तेओ रामकथा रचवाना विचारमां हता ते संधिमां तेमने आ नवी पद्यरचना स्फुरी. ए नवा पद्यबंधमां मोटे भागे रामायण रचायूं. ते महाख्यान अपूर्व कवित्वने लीधे

८ जुओ रा.।१।२।३१-३२-३३। श्लोक एवास्त्वय बद्धो नात्र कार्या विचारणा। मच्छन्दादेव ते ब्रह्मन् प्रवृत्तेयं सरस्वती॥ रामस्य चरितं कृत्स्नं कुरु त्वं ऋषिसत्तम।........। वृत्तं कथय धीरस्य यथा ते नारदाच्छ्रुतम्।........॥.

९ जुओ रा..।१।२।४०। समाक्षरैश्चतुर्भिर्यः पादैर्गीतो महर्षिणा। सोऽनुव्याहरणाद्भूयः शोकः श्लोकत्वमागतः। ॥. जुओ वळी र.ब.।१५।३३। निषादविद्धाण्डजदर्शनोत्थः श्लोकत्वमापद्यत यस्य शोकः।. हालना रामायणना बालकाण्डनो पहेलो अध्याय क्षेपक छे. छतां तेमां वाल्मीकि मुनिने थयेला आख्यानिक अनुष्टुभना दर्शननी कथा जे वर्णवी छे ते, रघुवंशमाना अवतरणथी जणाय छे के, महाकवि कालिदासथी पण प्राचीन छे. आ समजथी ते अहीं में नोंधी छे.

काव्यकालमां आदिकाव्य कहेवायूं. **उत्तररामचरितमां** कवि भवभूति ब्रह्मदेव पासे वाल्मीकि मुनि प्रत्ये 'भगवान आदिकवि[१०] छो' एम उचारावे छे, ते आदिष्ट रामकथाना कर्ता थई भविष्यमां आदिकवि लेखावाना आशीर्वाद रूपे अभिप्रेत छे. ए बधूं जेम हो तेम हो. आख्यानकाल उपरना वर्तमान दृष्टिपातमां आपणी नजरे भगवान वाल्मीकि अनेक सूर्यना तेजथी प्रकाशे छे, ते तो पद्यरचनानी रूपात्मक नामे नवीन सृष्टिना विधाता तरीके प्रकाशे छे. ए रचनानूं प्रथम दर्शन थयूं ते ए महामुनिने. **रामायण** आदि महाख्यान छे अने एना कर्ता वाल्मीकि एमां योजेला प्रधान व्यापक छंदना आदिद्रष्टा छे,—जे छंद समग्र संस्कृत साहित्यनो पण प्रधान व्यापक छंद बने छे.

१७ आपणे उपर जोई गया ते आख्यानिक छंदोना त्रण वर्ग पडे छे, (१) अर्ध रूपरचनानो **अनुष्टुभ्** (२) संपूर्ण रूपरचनाना **उपेन्द्रवज्रा, इन्द्रवज्रा, त्रैष्टुभ उपजाति, वंशस्थ** तथा **जागत उपजाति** अने (३) आर्चिक **त्रिष्टुभ्** तथा **त्रैष्टुभजागत उपजाति.** ते पैकी **अनुष्टुभ्** अने **त्रिष्टुभ्** संज्ञा स्त्रीलिंगे शा कारणथी वपराय छे ते ऋक्काल उपरना व्याख्यानमां कहेवाई गयूं छे. **उपजाति** नाम उप+जन् धातु उपरथी थयूं छे. एनो अर्थ, बे मूळछंद उपरथी थयेलो मिश्र छंद, एवो थाय छे. ए शब्द स्त्रीलिंग नाम होई **त्रैष्टुभ उपजाति** तथा **त्रैष्टुभजागत उपजाति** स्त्रीलिंगे वपराय छे. ए संज्ञाओनूं निर्वचन पण बीजा दृष्टिपातमां नोंधाई गयूं छे. एमां एवूं पण जणाववामां आव्यूं छे के चरणांत बाद करतां **त्रिष्टुभ्** अने **जगतीनी** रचना उच्चारणामां समान छे. उक्त चरणांतनो भेद छंदःशास्त्रना अजाणनूं ध्यान पण न खेंचे एवो अने जाणने न खूंचे एवो, बलके जाणअजाण उभयने रुचिकर थाय एवो होई ए बे छंदोनां चरणोनो त्रैष्टुभजागत उपजाति नामे मिश्र छंद बने छे; अने ते ऋक्कालमां छूटथी प्रचलित थाय छे. ए मिश्र छंद आख्यानकालमां पण ऊतरी आवी ते काळना छंदोनूं एक नवूं गोत्र स्थापनार नीवडे छे. ए गोत्रने आपणे **त्रिष्टुब्जगतीकुटुंब** तरीके ओळखीशूं. उपर कहेला

---

१० जुओ उ. रा. च.। अंक पहेल्य अने बीजा वच्चेनो विष्कंभक.

उपेन्द्रवज्रा, इन्द्रवज्रा, त्रैष्टुभ उपजाति वंशस्थ अने जागत उपजाति छंद ए कुटुंबना छे. आख्यानकाळना उपेन्द्र अने इन्द्र ए वे देवना नामथी उपेन्द्रवज्रा अने इन्द्रवज्रा संज्ञाओ उद्भवी छे. ए काळमां उपेन्द्र एटले विष्णु भगवाननो महिमा वधतो जतो हतो अने इन्द्रनो ओछो थतो हतो. तदनुसार अधिक प्रचारवाळी रूपरचना उपेन्द्रवज्रानुं अने न्यून प्रचारवाळी रूपरचना इन्द्रवज्रानुं नाम पामी होय एवो तर्क थाय छे. उपेन्द्र अने इन्द्रना नामथी अंकित कठिन (वज्र. विशे.) रूपरचना, ते अनुक्रमे उपेन्द्रवज्रा अने इन्द्रवज्रा. ऋक्कालनी गायत्री त्रिष्टुभ् आदि संज्ञाओनी पेठे आ वे पण स्त्रीलिंगे वपराय छे. त्रिष्टुब्जगतीकुटुंबमां उपेन्द्रवज्रा साथे साम्य धरावतो समान वंशनो छंद, ते वंशस्थ. ते शब्द संस्कृत छन्दस् नामना विशेषणरूपे नपुंसक लिंगे वपराय छे. त्रिष्टुभ् शाखामां त्रैष्टुभउपजाति, उपेन्द्रवज्रा तथा इन्द्रवज्रा अनुक्रमे ऊतरती संख्यामां वपरायला जोवामां आवे छे; अने ते ज स्थिति जगती शाखामां जागत उपजाति तथा वंशस्थनी छे. त्रिष्टुभ् शाखाना इन्द्रवज्राने जवाब आपतो जगती शाखानो इन्द्रवंशा छंद तो आख्यानकाळमां उद्भवी प्रचार पाम्यो जणातो नथी. छंदोविधानना प्रदेशमां आख्यानकाळनी सर्गशक्ति त्रैष्टुभ उपजाति, उपेन्द्रवज्रा, इन्द्रवज्रा, जागत उपजाति अने वंशस्थना रूपविधानमां प्रगट थाय छे. पांचमा दृष्टिपातना संस्कृत साहित्यमां आकर्षता अने विस्मय पमाडता वडवाईओना विस्तारी घटाटोपनूं सूक्ष्म बीज आख्यानकाळमां उपर कह्या प्रमाणे रोपाय छे. छंदनां चारे चरणोमां लघुगुरुनो दृढ संवाद साचववानो आग्रह वंधाय छे. अगियार अने बार वर्णनां त्रैष्टुभ अने जागत चरणो ए मेळमां गोठवाई वर्णात्मक स्वरूपमांथी रूपात्मक स्वरूप धारण करे छे; अने छंदनां चारे चरण रूपरचनामां एकधारां वनी नवा छंद समचतुष्पद किंवा समपद के सम एवी विशिष्ट संज्ञा पामे छे, जेमांथी काळांतरे अर्धसमपद अने विषमपदनां डाळांपांखडां फूटे छे.

१८ उपरना प्रस्तावमां त्रैष्टुभ उपजाति, उपेन्द्रवज्रा तथा इन्द्रवज्राना अने जागत उपजाति तथा वंशस्थना प्रादुर्भावनो जे क्रम वताव्यो छे, तेना

संबंधमां कोइ शंका ले के एम केम बने? छंदो ज तेमना नामनो पूरावो रजू करी उक्त निर्णयना विरुद्ध साक्षी आपे छे. त्रिष्टुभ्शाखामां पहेलो प्रकटे **इन्द्रवज्रा**, पछी **उपेन्द्रवज्रा** अने ते पछी तेमनां चरणोना मिश्रणथी बनेलो **उपजाति** छंद. तेवी ज रीते जगतीशाखामां पहेलो उदय **इन्द्रवज्राने** जवाब आपता **इन्द्रवंशानो**, पछी **उपेन्द्रवज्राने** जवाब आपता **इन्द्रवंशाना** ज वंशना **वंशस्थनो** अने ते पछी तेमनां चरणोना मिश्रणथी बनेला **उपजाति** छंदनो थवो घटे छे. ए शंकाना समाधान अर्थे जणाववूं जोईए के बाळक जन्मे छे पहेलुं, अने तेनूं नाम पडे छे पछी. ए प्रमाणे प्रस्तुत छंदो उद्भवी पहेला प्रचारमां आव्या अने पछी तेमने नामकरण संस्कार थयो, एम जणाय छे. ए अवसरे उत्पत्तिक्रम उपर दृष्टि न रहेतां न्यूनाधिक प्रयोग अनुसार **इन्द्रवज्रा** तथा **उपेन्द्रवज्रा** नाम संपूर्ण स्थिर नवी रूपात्मक रचनावाळा उक्त छंदोने अपायां. ए शुद्ध पद्यबंधोनां चरणोना मिश्रणथी बनेला त्रीजा छंदने मिश्र बंधारणना कारणथी **उपजाति** संज्ञा मळी, एवी मारी समज छे. ए ज धोरणे जगती–शाखाना शुद्ध अने मिश्र छंदनां नाम रखायां संभवे छे. जन्म अने नामकरण वच्चे आ रीते अंतर पडेलुं छे. जन्म पाम्या छतां प्रचारमां न आवनार छंद नामरहित पण रही जाय छे. तेनूं उदाहरण आपणी भाषानूं जोईतूं होय, तो ते **रोपदर्शिका सत्यभामा आख्यानमांनूं** नीचेनूं पद्य छे:

नवनीत नवलकिशोरे चोर्यूं चोर्यूं चपाचप होरे,
नवरीत नवल निचोरे कार्यं कार्यं हृदे रूप कोरे.
नव भीत नवल चिकोरे अंगो अंगे कचेष्टित मोरे.
नव–नीत नवल चकोरे धारी धारी युवा–मणि चोरे[११].

१९ **रामायण** अने **महाभारत** भगवान वाल्मीकि अने व्यासनी कृति तरीके जाणीतां छे. ए बे मुनिओ तेमणे रचेलां महाख्यानोना कथापुरुषना समयमां थया कहेवाय छे. परंतु मारी समज एवी छे के ऋग्वेदना बांजा

११ आ छंदना संबंधमां दृष्टिपात १, प्रस्ताव ९ मां जे कह्युं छे ते जोवूं.

मंडळथी आठमा मंडळ पर्यंतना सात भागं अनेक मंत्रद्रष्टानां सात गोत्रमां स्वाध्यायना वारसा तरीके पृथक् पृथक् सूक्तसमूहरूपे जेम जळवाई रहेला जणाय छे, तेम ज आ बे महाख्यानना अनेक कथापुरुषनां भिन्न भिन्न आख्याताए तेना समयमां गायेलां आख्यानो ते ते आख्याता साथे संबंध धरावतां भिन्न भिन्न कुटुंबमां साहित्यना वारसा तरीके वचगाळे सचवाई रह्यां हशे; अने ते छूटी छूटी पूर्वकृतिओने आधारे वाल्मीकि तथा व्यास-मुनिए पछीथी रामायण तथा महाभारत ए महाख्यान सर्ज्यां हशे. छूटां आख्यानोना कर्ता जुदा अने ते आख्यानोना वस्तुने संबंध पूर्वक गोठवी नवेसर रचेलां स्वतंत्र महाख्यानोना कर्ता जुदा. छूटां आख्यानोनां अने तेमना कर्ताओनां नाम लुप्त थयां छे. तेना स्थाने ते ते महाख्यान अने तेना सर्जकनां नाम रूढ थयां छे. प्रस्तुत मौलिक महाख्यानोना कर्ता तेमनी इतिहासातीतताने लीधे कथापुरुषना सहजीवी गणाया छे. रामायणना विधाताना विशेषनाम तरीके वाल्मीकि बोलनो प्रयोग प्रचलित छे. ए मुनिए रामचरित पहेलवहेलं गायूं. ए वृत्तांत वाल्मीकीय रामायणमां आप्यो छे. परंतु ए प्रस्ताव वाल्मीकिना मुखमां मूक्यो नथी; एटले ते रामायणनो महिमा वधारनारो अर्वाचीन उमेरो ठरे छे. वास्तविक रीते वसिष्ठ विश्वामित्र आदि संज्ञानी पेठे वाल्मीकि पण गोत्रसंज्ञा छे. भृगुगोत्रना वत्सगणमां ते संज्ञा मळी आवे छे[१२]. कृष्णयजुर्वेदना तैत्तिरीयप्रातिशाख्यमां अने शुक्लयजुर्वेदनी संहितामां पण प्राचीन ऋषि तरीके वाल्मीकिनो निर्देश छे[१३]. ते रामायणना कर्ताना सगोत्र पूर्वज संभवे छे. आदिकवि तरीके जाणीता वाल्मीकिनूं विशेषनाम उपलब्ध नथी. महाभारतना विधाता व्यास कहेवाय छे. ते बोल उपनाम छे. कर्तानूं विशेषनाम तो कृष्ण छे. तेने द्वैपायन

१२ जुओ प्रवरमञ्जरी अने प्रवरदर्पण, गोत्रप्रवरनिबन्धकदम्ब पृ. २२ अने ११०. जुओ वळी रामा. ।७।९२।२५।. अहीं गोत्रकृत भार्गव संज्ञाथी वाल्मीकिनो निर्देश कर्यो छे. ए संज्ञा उपर तिलकवाळूं टिप्पण भूल भरेलूं छे.

१३ जुओ the Riddle of the Ramayana, chapter iii

विशेषण लगाडवामां आवे छे, ते ए मुनिनी जन्मभूमिनूं बोधक छे. वसिष्ठ गोत्रना पेटामां गणवेला पराशरगोत्रमां ते जनम्या हता; तेथी पाराशर्य संज्ञाथी पण ते ओळखाय छे. व्यास उपनाम संबंधपूर्वक पर्वोनी व्हेंचणी करीने **महाभारत**ना रचनार तरीके कृष्ण द्वैपायनने मळ्यूं छे. आवी ज रीते विविध उपनिषद्‌ना सिद्धांतोने संबंधपूर्वक अध्यायोमां व्हेंचीने **ब्रह्मसूत्र**ना रचनार[१४] बादरायण मुनिने पण व्यास उपनाम आपवामां आव्यूं छे. पूर्व सूरिओनी कृतिने आधारे रचायलूं **रघुवंश** महाकाव्य जेम कवि कालिदासनी स्वतंत्र कृति छे, तेम ज मौलिक **रामायण** अने **महाभारत** ए बे महाख्यानोने हूं वाल्मीकि अने व्यासनी स्वतंत्र कृति मानूं छूं. उक्त मुनिओ छूटां जूनां अन्यकर्तृक आख्यानोना मात्र संग्राहक कर्ता नथी, पण सुश्लिष्ट महाख्यानोना सर्जक कर्ता छे. संविधान, पात्रालेखन, पद्यबंध, शैली, सर्व तत्त्वो तपासतां विद्यमान महाख्यानोमां अभिन्नकर्तृकतानूं दर्शन थया विना रहेतूं नथी. ऋक्संहितामां क्षेपक भागनो प्रायः अभाव छे; परंतु उक्त महाख्यानोमां अध्यायोना अध्याय पेसी गया छे. तेनूं समाधान ए छे के श्रुति ज्यारे शब्द-प्रधान मनाय छे, त्यारे आख्यानपुराण केवळ अर्थप्रधान कहेवाय छे. वैदिक साहित्यमां एक अक्षरनी पण वधघट थई शके ज नहि, स्वर पण भिन्न लेवाय नहि, एवूं विधान चिरस्थापित छे. लौकिक साहित्यना संबंधमां अर्थ उपर भार मूकाय छे. एथी अर्थनूं उपबृंहण करनारो उमेरो तेमां पेसवा पामे छे. रखेलेला धानमांथी राख चाळी कढाय छे, तेम आ क्षेपक भाग पण पद्यबंधनी समीक्षा आदि वारीक चाळवणीथी जुदो पाडी शकाय छे.

२० जेम प्राचीन ग्रीस देशमां काव्येतिहासनूं प्रकाशन ओलिम्पियाना मेदानना अक्षवाटमां थयेलूं कहेवाय छे तेम, प्राचीन आर्यावर्त यज्ञविद्यानूं

१४ बादरायण व्यास भरद्वाजगोत्रना विष्णुवृद्ध पेटामां गणावेला बादरायण गोत्रना हता. जुओ गोत्रप्रवरनिबन्धकदम्बमां संग्रहेल **प्रवरमञ्जरी** अने **प्रवरदर्पण**.

उपासक होवाथी, अहीं आख्यानसाहित्य पूर्वे यज्ञवाटमां ऊछरी वृद्धि पाम्युं हतुं. दिवसोना दिवसो चालता, वर्षोना वर्षो पण म्होचता सत्रमां दैनिक कर्मजाळमांथी छूटा थयेला ऋषिमुनिओ कर्णपेय आख्यानो सांभळीने विनोद अने विश्रांति मेळवता हता. ऐतरेयब्राह्मणमां[१५] राजसूय दरमियान होतां शुनःशेपाख्यान कहे छे. शतपथब्राह्मणमां[१६] अश्वमेध यज्ञ विशे आवां कथाचक्र प्रवर्तवानो उल्लेख छे. एक वर्ष माटे यज्ञिय अश्व छूटो मूकवामां आवतो; ते समय द्विजमंडळ आख्यानना कथनश्रवणमां गाळतुं हतुं. यास्क भगवान निरुक्तमां आख्यान शब्द बहुवार वापरे छे. वेदविद्याना ए पुराण अंगमां स्यमंतक मणिनी चोरी साथे संबंध धरावतुं 'अक्रूरो ददते मणिम्' एवुं अनुष्टुभनुं एक चरण मळी आवे छे[१७]. उत्तर काळमां भगवान पाणिनि यायातिक अने यावक्रीतिक[१८] शब्दोनी नीचे प्रमाणे घटना समजावे छेः— ययातिनुं आख्यान कहेनार ते यायातिक अने यवक्रीतनुं आख्यान कहेनार ते यावक्रीतिक. ए शब्दसिद्धि उपरथी ययाति अने यवक्रीतनां छूटां आख्यानोनुं अस्तित्व पण सिद्ध थाय छे. तात्पर्य ए छे के महर्षि ऐतरेयथी मांडीने भगवान पाणिनिना समयपर्यंतना गाळामां आख्यानना प्राकट्यनो वृत्तांत विस्तर्यो छे, आपणां महाख्यान पैकी महाभारतनी उत्पत्ति अने विवृद्धिनी विगत सादी अने स्पष्ट प्राप्त थाय छे, पण रामायणनी तेवी सादी अने स्पष्ट नथी. व्यास भगवानना [१९]जय संज्ञा धरावता महाख्याननुं

१५ जुओ ए. ब्रा. । ५ । ३ ।

१६ जुओ श. प. । १३ । ३ । ः २ । ५ ।.

१७ जुओ. निरुक्त । २ । २ ।.

१८ जुओ. पा. व्या । ४ । २ । ६० ।. वळी पा. व्या. । ३ । २ । ५६ । मा भारतसंग्रामनो उल्लेख छे.'

१९ महाभारतना आदिमंगलमा जयसंज्ञानो प्रयोग छे. प्रस्तुत श्लोक नीचे प्रमाणे छेः–नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्। देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत् ॥ चालु पाठ उदीरयेत् छे, ते रचनारना मुखमां याधित छे. विध्यर्थं

पारायण तेमना शिष्य वैशंपायन महाराजा जनमेजय समक्ष करे छे. प्रसिद्ध सर्पसत्रना पारायणमां तेमना हाथना ऊमेरा सहित उक्त संहिता थई ते शत पर्वमां विभक्त संहिता **भारत** संज्ञाथी ओळखाय छे. त्यारपछी केटलेक काळे पुराण साहित्यमां पारंगत ब्राह्मणवर्य सौति उग्रश्रवा नैमिषारण्यना द्वादशवार्षिक सत्रमां मुनिमंडळ आगळ एनुं बीजी वारनुं पारायण करे छे. सूत अने सौतिने हाथे वैशंपायननी संहिता **भारत** मटी उपाख्यानोना ऊमेराए करीने **महाभारत** बने छे[२०]. **रामायण**नी उत्पत्ति अने विवृद्धिनी विगत अद्भुत कल्पनाना अंधार तळे ढंकाई गई छे. सत्यना मुख उपरनुं ए हिरण्मय ढांकण दूर करनारने स्वयंभू अनुष्टुभ् छंदमां मौलिक **रामायण**नी रचना करता धर्ममूर्ति वाल्मीकि मुनिनुं दर्शन थाय छे. ए महाख्यान कुशीलवोने मुखे अश्वमेध यज्ञोमां वीणाना साज साथे गवाय छे; अने समय जतां महापुरुषोनां आख्यान गाई आजीविका मेळवनारा ए वंदिजनोने हाथे विस्तार पामे छे. कुशीलवोनी परंपरामां कोइने पोताना वर्गनो महिमा वधारवानुं सूझ्युं हशे; तेणे वाल्मीकि भगवानना रघुवंशी शिष्यो कुश अने लवना मुखे रामचंद्रना अश्वमेध यज्ञमां **रामायण** गायानी कथा जोडी कुशीलवोनी उत्पत्ति कुश अने लवथी ऊपजावी काढी मूळमां ऊमेरी जणाय छे. वाल्मीकिना अने व्यासना महाख्यानमां थयेला ऊमेरा चाळी काढवा अहीं अप्रस्तुत छे. आपणने सीधो संबंध ए बेनी पद्यरचना साथे छे. तेनां झरणां तो वर्तमान वाचनामां पण तेनां ते अतूट वह्या करे छे, ते आपणे उपर जोयूं.

२१ आख्यानकाल अने ऋक्काल वच्चे गाळो केटलो लांबो छे तेनो ख्याल पद्यरचनानी समीक्षा उपरथी सारी रीते बंधाय छे, अने तेनूं समर्थन ए बे काळना साहित्यनी भिन्नताथी पूरेपूरूं थाय छे. ऋक्कालनी भाषा

त्रीजा पुरुषना उदीरयेत् बदल वर्तमान पहेला पुरुषनूं उदीरये रूप अहीं अपेक्षित होवाथी मे भ्रष्ट पाठ सुधारी लीधो छे.

२० जुओ The Mahabharata :—A criticism, by C. V. Vaidya.

उदात्त अनुदात्त अने स्वरित ए आरोहावरोहसिद्ध स्वरथी उपन्यस्त छे. तेनी रूपाख्यानसमृद्धि अर्थवाही, शुद्धिगामी, तेम ज विशाल छे. तेना केटलाक शब्दोनो अर्थ समजातो बंध पड्यो छे. आख्यानकालनी भाषामां उक्त त्रण स्वरनो प्रयोग घसाई जाय छे. ए काव्यमां रूपाख्यान सामान्य थतुं अटकी केटलांक रूप व्यवहारमां वपरातां बंध पडे छे; वळी यज्ञभूमिमां पूराई न रही विविध क्षेत्रमां विचरता साहित्यनो व्याप्तिप्रदेश अने शब्दकोश बहु ज विस्तार पामे छे. ऋक्कालनी आर्ष भाषा लोकभाषा हती, ए कहेवाई गयुं छे. आख्यानकालना साहित्यनी भाषा पण ते समयना कवि अने पंडितोनी ज नहि, पण समस्त जनसमूहनी व्यवहारु वाणी हती--ते लोकभाषा ज हती आपणां बन्ने महाख्यानो ए लोकभाषामां रचायां छे. आख्यान वास्तविक रीते लोकसाहित्य हतुं, एटले लोकभाषामां ज रचायुं होई शके. बन्ने महाख्यानोनी भाषानी सरळता अने तेमां लांबा समासनो अने अटपटां रूपनो अभाव ए निर्णयने मक्कम बनावे छे. आपणे ए लोकभाषाने पौराण संस्कृत तरीके ओळखावीशुं. संस्कृत नाम भाषाने बहु पाछळथी मळ्युं छे. सैकाओ पछीना वैनयिक संस्कृतथी विवेक करवा पौराण विशेषण में तेनी साथे जोड्युं छे. संस्कारवाळी एटले शुद्ध उच्चारवाळी भाषा ते संस्कृत[२१]. दरेक भाषामां शुद्ध संस्कारी उच्चार माटे आग्रह रहे छे. आपणे पण शुद्ध उच्चार अने अशुद्ध उच्चार किंवा संस्कारी वाणी अने असंस्कारी वाणीनो भेद करिये छिये. ए भेद प्राचीन काळथी चाल्यो आवे छे. जेम संस्कार शब्द उच्चारनी शुद्धतानो वाचक छे, तेम उच्चारनी अशुद्धताना अर्थमां म्लेच्छ् धातु वपराय छे. शतपथब्राह्मणमां भ्रष्ट भाषा बोलनार माटे म्लेच्छ शब्दनो प्रयोग

२१ 'संस्कारवाळुं किंवा शुद्ध उच्चारवाळुं' एवा अर्थमां 'संस्कृत' बोलना प्रयोग माटे जुओ रामा. । ७ । ७१ । १५–१६, सन्धिविग्रहमाधुर्य स्थिरयानकरणान्वितम् । संस्कृते स्वराणोपेतं समवाक्यसमन्वितम् । इत्यादि रामचरित संस्कृत माटे [illegible] कृतम् ॥

थयो छे. संस्कार एटले उच्चार शुद्धिने केटलुं महत्त्व अपातुं हतुं ते नीचेनी संक्षिप्त पुराणी कथा उपरथी समजाशे. 'वज्रनाभ नामे असुर ब्रह्मदेवनां वरदान पामी महा बळवान थई पड्यो हतो. तेनो घाट घडवा प्रद्युम्न सांब गद आदि यादवो नटना वेषमां तेनी राजधानी जे वज्रपुर, त्यां जाय छे. शहेर बहार परामा उतरी तेओ रामजन्मनुं आख्यान भजवी बतावे छे. एमा गणिका द्वारा ऋष्यशृंगना प्रलोभनथी आरंभी रामचंद्रना जन्म पर्यंत वृत्तांत समाव्यो हतो. तेना विविध प्रस्तावना साक्षात्कारथी, हृदयंगम अभिनयथी, आबाद संस्कारथी, अने आद्यंत समग्र प्रवेशथी असुरो विस्मित थया.'[२३] आ उतारामां प्रयोगनी सफळतानां अनेक अंगमा संस्कार अंगनो पण उल्लेख छे. तेनुं कारण ए छे के नटनो धंधो निकृष्ट वर्ग करतो हतो. ते वर्गना उच्चार केळवणीनी खामीने लीधे भ्रष्ट जोवामा आवता. परंतु रामजन्मना भजवनारा तो राजवंशी यादवकुळना क्षत्रियो हता. तेमना वर्णोच्चारनी शुद्धतामा कशी न्यूनता हती ज नहि. एमने नटनो वेष धारण करनार यादवो नहि पण खरेखरा नट समजी तेमना अत्यंत शुद्ध उच्चारथी सांभळनारने विस्मय थयो ए स्वाभाविक ज हतो. आ उच्चारशुद्धिनी चीवटने लीधे भाषाने संस्कृत नाम मळ्युं. रामायण अने महाभारत साथे प्राचीन पुराण पण ए लोकभाषामा होवाथी एने में पौराण संस्कृत कह्युं छे.[२४] समग्र

२३ जुओ ह वं । ९३ । १० । संस्काराभिनयौ तेषां प्रस्तावाना च धारणम् । दृष्ट्वा सर्वं प्रवेशं च दानवा विस्मयं गता ॥ अहीं सर्वं पाठ कल्पित छे मुद्रित प्रतमा सर्वे छे आमा प्रवेश शब्द 'रंगभूमि उपर प्रवेश करनारा पात्रोना मुखनुं समग्र वाक्य, प्रयोगबंध' एवा अर्थमा वपरायो छे. तेनो वपराट उत्तर काळना संस्कृत साहित्यमा क्यांए मळी आवतो नथी

२४ पुराणोनी मौलिक वाचना प्राकृतमा हती, अर्थात् पुराणो मूळे प्राकृत भाषामा रचाया हता. एवो सद्गत डॉ पार्जिटरनो तर्क छे परंतु पुराणी आख्यानकालमा प्रथम रचल्या, त्यारे चालु दृष्टिपातमा आगळ कहेवामा आवशे तेम लोकभाषा संस्कृत हती. प्राकृत तो ते काळे उद्भव ज पाम्युं न हतुं एटले उक्त तर्क असाध्य छे

आख्यानसाहित्य सार्वलौकिक श्रवणग्राह्य हतु, एटले उक्त पौराणसंस्कृतमां ज ते रचायु हतु. आ + ख्या तथा कथ् धातु अने आख्यान तथा कथा नाम पर्यायरूप छे. अर्वाचीन काळमां कथाभट वादिंनना साज साथे पूर्वे शहेरमा कथा करता हता अने हाल करे छे तेओ जेम अर्वाचीन काळनी लोकभाषामा करता हता अने करे छे, तेम भगवान वाल्मीकि अने व्यासनी कृतिओ पण उक्त प्राचीन काळनी लोकभाषामा ज हती ए निर्णयने विशेष प्रमाणनी अपेक्षा नथी.

२२ वाणीनी शुद्धता बतावनार सस्कार शब्द उपर प्रकाश पाडनारो वाणीनी अशुद्धतानो वाचक म्लेच्छ शब्द पण महाभारतमा प्रयुक्त छे. तेना वपराटनो प्रसग आदिपर्वमा नीचे प्रमाण छे. पाडवोनो घाट घडवाने तत्पर रहेलो दुर्योधन साधेला मत्रीओना मुखे गगातीरे आवेला वारणावतमा[२५]

२५ मुबई (बी B) कलकत्ता (सी C) अने कुभकोनम (के K)मा छपायला **महाभारतना** आदिपर्वना पेटान्म जतुगृहदाहपर्वमा पदर श्लोकनो एक अध्याय (बी, १४९) आप्यो छे, तेमा सुरंग मार्फत नाशी छूटेला पांडवो विदुरे तैयार रखावेली होडीमा गंगा ऊतर्यान् वर्णन छे पूनानी Bhandarkar Research Institute नामे सस्था तरफथी छपाता **महाभारतना** आदिपर्वना भाग ५ मा ए अध्याय क्षेपक गणी काढी नांख्यो छे. ए सस्थाए उपयोगमा लीधेली TG (टी जी) सज्ञानी हाथप्रतमा उक्त पदर श्लोक आप्या छे पण ते पूनानी सस्थाना आदिपर्वना अध्याय १३७ नी पूठे जुदा अध्यायरूपे नहि, परंतु अध्याय १३७ ना अत पाती श्लोक समूहरूपे मजकूर अध्याय १३७ ना सत्तरमा श्लोक पछी आप्या छे था ज ए पदर श्लोकनु वास्तविक स्थान छे एम पूनाना विद्वान सस्कर्ता एक तरफथी स्वीकारे छे अने बीजी तरफथी Cd (सी डी) हाथप्रतमां आप्या न होवाथी ए श्लोकने प्रक्षिप्त लेखवी तनी दे छे घडीभर तकरारी श्लोकनो पुरावो बाजु उपर राखी घीडी एक बाबत तपासिये उक्त अध्याय १३७ ना सत्तरमा श्लोकना उत्तरार्ध बदल K_4 N V_1 BD (except D_5)ने आधारे जे पाठातर आप्यु छे तेमा तथा अध्याय १३८ ना चोथा श्लोकना उत्तरार्ध बदल S K D ने अनुसरी जे पाठातर नोंध्यु छे तेमा पण वारणावत छोडया पछी पाडवोए गगा ओळग्यानो निर्देश छे, तेथी स्पष्ट थाय

ऊजवानारा आगामी महादेवना महोत्सवनां विस्मयकारक वखाण करावी पांडवोने त्यां जवा ललचावे छे. पांचे पांडवो कुंती माता सहित वारणावत जवा नीकळे छे. दुर्योधननूं कपट बधूं ए विदुरना जाणवामां आवे छे. तेना कावतरानी चेतवणी आपवा, ते पांडवोने वळाववा जाय छे, ते अवसरे बहारथी जाणे वारणावत जतां प्रवासनां जोखमो तरफ ध्यान खेंचता होय अने अंदरखानेथी लाक्षागृहना महेलनी आग सामे जाग्रत् रहेवा बोध आपता होय एवी कविपणाने छाजती द्विअर्थी वाणी ते उच्चारे छे; अने युधिष्ठिर 'हां, समज्यो' एवो उत्तर वाळे छे. त्यारपछी विदुर पाछा फरे छे; अने मातुश्री सहित पांडवो वारणावत सिधावे छे. त्यां तेओ शहेर बहारना ऊतारामां थोडो वखत गाळी तेमने माटे तैयार करेला महेलमां रहेवा जाय छे. बाद विदुरनो मोकलेलो खनक युधिष्ठिरने मळवा आवे छे अने युधिष्ठिरने प्रयाण समये विदुरे कहेलां वचन प्रत्ये ईसारो करी ते जणावे छे के 'हे पांडुपुत्र! वडील विदुरे तमने म्लेच्छवाणीमां

छे के लाक्षागृहवाळूं शहेर गंगाने कांठे ज हतूं. तकरारी पंदर श्लोक पैकी श्लोक ३, ९, ११ ने १२ वधारे पडता छे. बाकीना अगियार श्लोक बारीक नजरे तपासतां पूनानी संस्थाना आदिपर्वना अध्याय १३७ ना सत्तरमा श्लोकना स्थाने गोठवावा घटे छे. ए असल स्थळे पूर्वे कोइ हायप्रतमां ए श्लोक ऊतारवा रही गया हशे अने ते पाछळथी प्रतना कोरा भागमां ऊतार्या हशे. प्रत मजकूरनी नकल करनारे अध्याय १३७ मां असल जगाए चर्चास्पद श्लोको न मूकतां जुदा अध्यायरूपे सदर अध्याय १३७ नी पूर्वे भूलथी मूकया हशे. अध्याय १३७ मां उक्त श्लोकोने स्थाने उत्तरार्धमां पूर्वे में नोंधेला पाठांतरवाळो सत्तरमो श्लोक गंगा ओळंग्याना वर्णनना तकरारी श्लोकनूं अस्तित्व मागी ले छे; पण पुनरुक्तिग्रस्त छे; अर्थात् त्याज्य छे. ए तजवा योग्य ठरेला श्लोकनी जगा, ते गंगा ओळंग्याना वर्णनना चर्चास्पद श्लोकोनूं स्थान छे. आ विवेचन पछी अध्याय १३८ ना चोथा श्लोकनी नोंध लेवी अपेक्षित नथी. निर्णय एटलो ठरे छे के पूनाना विद्वान संस्कर्ताए तजी दीधेला पंदर श्लोक पैकी उपर तारवेला अगियार श्लोक मौलिक छे; अने तेमनूं स्थान अध्याय १३७ ना सत्तरमा श्लोकनी जगाए छे.

कंइक कह्यूं हतुं, अने तमे तेनो 'हां, समज्यो' ए शब्दथी उत्तर वाळ्यो 'हतो;' ते एंधाणीथी तमने मारो विश्वास आवशे.' पछी तेणे गुप्त रही लाक्षागृहथी गंगाना कांठा सुधी सुरंग करी आपी. ते रस्ते, महेलने आग लगाडी, पांडवो कुंतीजी समेत नाशी छूट्या. गंगाकांठे विदुरे अगाउथी मोकलेलो विद्वान ब्राह्मण तेमना आववानी वाट जोतो हतो. तेणे तेमने विश्वासु माछीवाळी होडीमां बेसारी सहीसलामत सामे कांठे प्होचाडी दीधा.[२६]

२३ पांडवो अने तेमनां मातुश्रीना जीव बचाववा धर्मात्मा विदुर त्रण पगलां भरे छे. प्रथम वदायगिरी वखते जाते लाक्षागृहना अग्निदाहनी च्चेतवणी आपे छे. पछी खनक मार्फत सुरंग करावे छे. ते पछी विश्वासु माछीवाळी होडीमां ए तेमने सामे कांठे प्होचाडे छे. पहेला पगलाने लगता श्लोक जे म्लेच्छवाणी (म्लेच्छवाच्)मां होवानूं कहेलुं छे, तेनो उतारो प्रस्तावक श्लोक अने प्रत्युक्तिना श्लोक सहित नीचे प्रमाणे छेः—

पौरेषु विनिवृत्तेषु विदुरः सर्वधर्मवित्।
बोधयन् पाण्डवश्रेष्ठमिदं वचनमब्रवीत् ॥ १९ ॥
प्राज्ञः प्राज्ञं प्रलापज्ञः प्रलापज्ञम्, 'इदं वचः।
यो जानाति, परप्रज्ञां नीतिशास्त्रानुसारिणीम्।
विज्ञायेह तथा कुर्यादापदं निस्तरेद् यथा. ॥ २० ॥
अलोहं निशितं शस्त्रं शरीरपरिकर्तनम्।
यो वेत्ति, तं तु न घ्नन्ति प्रतिघातविदं द्विषः. ॥२१॥
कक्षघ्नः शिशिरघ्नश्च महाकक्षे बिलौकसः।
न दहेदिति चात्मानं यो रक्षति स जीवति. ॥२२॥
नाचक्षुर्वेत्ति पन्थानं, नाचक्षुर्विन्दते दिशः,।
नाधृतिर्भूतिमाप्नोति; बुध्यस्वैवं प्रबोधितः. ॥२३॥

२६ जुओ आदिपर्वना पेटानूं जतुगृहदाहपर्व.

२४ प्रस्तुत उक्ति रूपांतर पामी छतां पण अल्पज्ञ पुरुषो कहेशे के ए संस्कृतमां छे. ए कोइ संस्कृतथी भिन्न भाषामां तो नथी ज. तेम ते कोइ सांकेतिक कृत्रिम भाषामां पण नथी' के संकेत कल्पी काढी ते उकेलवी पडे. ते साथे बीजी बाबत ए ध्यानमां राखवानी छे के उद्धृत उक्तिमां मात्र लाक्षागृहना अग्निदाह विशे ज कथन छे, नहि के संस्कृत टीकाकार माने छे तेम उत्तर पर्यटन विशे अने अंते राज्यप्राप्ति विशे पण एमां सूचन समायूं छे. वळी ए पण लक्ष बहार न जवूं जोईए के अवसर लांबा नीतिबोधनो नथी, मुद्दासर संक्षिप्त बोधवचननो ज छे. ए त्रण प्रकारनी सावचेती धरावनारने जणाशे के उपर आपेला उतारामां ओगणीस आंकनो श्लोक तो उक्तिना अवतरणरूपे छे, ते उक्ति-अंतर्गत नथी. वीस आंकवाळो केवळ सामान्योक्तिरूप छे, एटले फरीने वधारो पडतो छे. एकवीसमो श्लोक बावीसमानी जोडमां निरर्थक बने छे. गंगाकांठे विदुरे मोकलेलो ब्राह्मण विश्वास उपजाववा युधिष्ठिर प्रत्ये बावीसमो श्लोक ज कहे छे, एकवीसमो नथी कहेतो[२८]; ते जोतां पण एकवीसमो प्रक्षिप्त ठरे छे. त्रेवीसमा श्लोकमां लाक्षागृह संबंधी एक पण शब्द नथी. ए पण सामान्योक्ति छे. ते कारणथी एने पण मारे क्षेपक गणवो पडे छे. रह्या मात्र बावीस, चोवीस अने पचीस ए आंकवाळा श्लोक. ए त्रण अनुष्टुभ् छंदमां ज विदुरनी उक्ति समायली छे. एनो उपलब्ध पाठ बहु रूपांतर पामेलो छे. उक्त रूपांतरने लीधे विद्वान टीकाकार पण ए श्लोकोनूं हार्द समजवामां आडे रस्ते चडी जाय छे. विदुरनूं वक्तव्य स्फुट थवा मौलिक पाठनो उद्धार इष्ट छे. वकानूं द्रुध जोनन

२८ जुओ कलकत्तानुं म भा. ।१।१५१।६-८। तत पुनरथोवाच ज्ञापकं पूर्वचोदितम्। युधिष्ठिर निबोधेदं सङ्गार्थं वचनं कवे ॥ कक्षघ्नः शिशिरघ्नश्च महाकक्षे बिलौकसः। न दहतीत्येवमात्मानं यो जानाति स जीवति ॥ तेन मां प्रेषितं विद्धि विश्वस्त सङ्गयानया। अहीं एवं आपला अवतरणमांना दहेदिति न बहुल हन्तीत्येवम्, अने रक्षति यदत् जानाति पाठांतर छे. पूनानो वरयाना आदिपर्वमां उक्त अध्याय गाळी नाख्यो छे, एटले तेनो हवालो आप्यो नथी.

ए कार्यनो ऊकेल पाडे एम छे विदुर मातृपक्षे शूद्र हता तेओ ए वर्णनी विभाषा किंवा बोली माताना धावण साथे धाव्या हता. तेमणे मोटा थता ऊची केळवणी प्राप्त करी हती. व्यास भगवान तेमने कवि पद लगाडे छे ए शास्त्रज्ञ कविए अभ्याससिद्ध भाषामा विदुरनीति रचेली छे. चालु प्रस्तावना त्रण श्लोक शूद्र कविए जन्मसिद्ध विभाषामा रच्या समवे छे. ए विषयमा कइ पण शंका ऊपजे, तो ते खनकना मुखना स्पष्टीकरणथी निर्मूळ थाय छे, अने निर्दिष्ट समव केवळ समव मटी वास्तवनू स्वरूप धारण करे छे[२९]. आनी समजथी रूपातर दूर करी प्रस्तुत त्रण अनुष्टुभ् नीचे प्रमाणे म्लेच्छवाचा वाचवाने हूं प्रेराउ छूं

कक्षाग्निः सिसिरघ्नो हि महाकक्षे बिडौकश ।
न दहत्येवमात्मानं यो रक्षति श जीवति ॥ १ ॥
अनार्यैदत्तमाप्नोति सश्वं नरो-नलोरजम् ।
श्वाविच्छरणमासाद्य मुच्यते श हुतासनात् ॥ २ ॥
चरन्मार्गं विजानाति नक्षत्रैर्विन्दते दिसम् ।
आत्मना चात्मनः पञ्चायपीडन् नानु पील्यते ॥[३०]

जेम खेडुत वगेरे बोले छे तो गूजराती–पण ते उच्चारमां विकृत होय छे, तेम विदुरनी आ उक्ति छे पौराण संस्कृत–पण ते उच्चारमां विकृत छे. विकृतिना तत्त्वो त्रण ज छे, डकार लकारनो, बकार वकारनो, अने शकार सकारनो गोटाळो ए विकृति दूर करता प्रकृत स्वरूप वे सिद्ध थाय छे, प्रवासनी उपाधि परत्वे एक अने लाक्षागृहना अग्निदाह परत्वे बीजू, शाथीजे पूर्वे कहेवामा आव्यू छे तेम उक्ति द्विअर्थी छे जंगलना जोख-

२९ जुओ म भा १।१४८।६। विचित्र विदुरेणोक्तो म्लेच्छवाचा सि पाण्डव। स्वयाच तत् तथेत्युक्तमेतद्विश्वासकारणम् ॥, अथवा पूतानो सस्थान् आदिपर्व ।१३५।६।

३० आ श्लोकोमा वपरायला शब्दोना वेवटा अर्थने माटे चोउ दृष्टिपातने अंते आपेलूं परिशिष्ट जुओ.

मनो निर्देश करतूं अविकृत किंवा संस्कारशुद्ध स्वरूप नीचे प्रमाणे गोठवाय छे.

कक्षघ्नः शिशिरघ्नो हि महाकक्षे बिलौकसः ।
न दहत्येवमात्मानं यो रक्षति स जीवति ॥१॥
अनार्यैर्दत्तमाप्नोति शस्त्रं नरो नढोहजम् ।
श्वाविच्छरणमासाद्य मुच्यते स हुताशनात ॥२॥
चरन्मार्गं विजानाति नक्षत्रैर्विन्दते दिशम् ।
आत्मना चात्मनः पश्चयापीलयन् नानु पीडयते ॥३॥

अहीं जणाववूं जोईए के पांडवो वारणावत जवा नीकळ्या, त्यारे शिशिरऋतुनी कडकडती[31] टाढ पडती हती. ए टाढ सामे बचाव करवानो जंगलमां एक ज रस्तो हतो. प्रवासीओ रातवासो रहेता त्या ठेरठेर आखी रात सळगती तापणीओ राखता. ते तापणीथी क्वचित् एम बनतूं के आसपासनी खसली सळगी ऊठती अने बिचारा मुसाफरोने सर्वभक्षक दावानळना सपाटामांथी नासी छूटतां भोंय भारे थती. ते वारे ऊंडी खोह कूवो के एवी बीजी आश्रय लेवानी जगामां भराई तेओ पोतानो जीव बचावता. ते तरफ लक्ष खेंची विदुर उपरथी कहे छे के 'टाढ ऊडाडवा सळगावेलो घासनो अग्नि (मार्गमा आवता)[32] महाकक्ष वनमां (फेलाता) ऊंडी खोह वगेरे बिलनो आश्रय लेनारने बाळतो नथी, ए रीते जे पुरुष

31 जुओ म भा ।१।१४७।३३। अष्टमेऽहनि रोहिण्या प्रयाता फाल्गुनस्य वै । वारणावतमासाद्य ददृशुर्नागरं जनम् ॥, अथवा पूनानी संस्थाना, आदिपर्वनो अध्याय १३३, श्लोक ३० फागण ते शिशिरऋतुनो बीजो मास

३२ सावचेत रहेवानी पांडवोने चेतवणी आपता विदुरे जाहेर चोक्स भय स्थाननो नाम निर्देश करवो ईष्ट छे ए कारणथी हुं अहीं महाकक्ष विशेषनाम तरीके लेउं छूं हस्तिनापुरथी वारणावत जतां मार्गमा पूर्वे मोटुं घासनु जंगल आवतु हशे अने ते महाकक्ष तरीके ओळखातु हशे, एवु मारुं समजवु छे.

पोतानूं रक्षण करे छे, ते (त्यां) जीवतो रहे छे (१). [32]अनार्योए आदरेली, नड नामना तृणनो घाण काढनारी, विनाशकारक योजनामां (पण) मुसाफर सपडाय छे, (ते अवसरे) ते शाहुडीना घरना जेवा बिलनो[33] आश्रय लेई तेना सपाटामांथी मुक्त थाय छे (२). भमतां भमतां भमनारने (जंगलमां) मार्ग जडे छे; ताराओना आधारे दिशा सूझे छे; अने (ए रीते ते) मन साथे मननी पांचे (इंद्रियो) ने प्रेरतो पुरुष आगळ उपर पीडातो नथी (३).

२५ विदुरनी उक्तिनो एक अर्थ थई गयो. हवे बीजो अर्थ आपवो बाकी रह्यो. लाक्षागृहना अग्निदाह परत्वना ए अर्थनूं गूढ सूचन करतूं पूर्वोक्त विकृत बोलीनूं अविकृत किंवा संस्कारशुद्ध स्वरूप नीचे प्रमाणे छे.

कक्षाग्निः शिशिरघ्नो हि महाकक्षे बिलौकसः ।
न दहत्येवमात्मानं यो रक्षति स जीवति ॥ १ ॥
अनार्यैर्दत्तमाप्नोति शस्त्रं नरोऽनलोहजम् ।
श्वाविच्छरणमासाद्य मुच्यते स हुताशनात् ॥२॥
चरन् मार्गं विजानाति नक्षत्रैर्विन्दते दिशम् ।
आत्मना चात्मनः पञ्चापीलयन् नानु पीडचते ॥३॥

आ गूढ कथननो अर्थ सहेलाइथी कळवामां आवे एटला माटे जणावबूं जोईए के पांडवोनी सरभरा करवा प्रोचन नामे दुर्योधन तरफनो एक अमात्य वारणावतना महेलना एक भागमां रहेतो हतो, ते टाढ न वाय ए निमित्ते पोताना खंडमां राते देवता सळगतो राखतो हतो; परंतु तेनी मतलब तो लाग साधी दुर्योधननी आज्ञा अनुसार पांडवोना ए उताराने आग लगाडवानी हती. ए बाबतनी तेम ज तेमने बचाववा पोते मोकलवा धारेला खनकनी अने गंगा पार उतारवा रोकेला विश्वासु माछीनी गोठवणनो ख्याल

---

३२ जंगल सळगावी जंगलवासीओ दावानळना भयथी भागतां प्राणीनो सहेलाइथी शिकार करे छे, तेनो अहीं निर्देश छे. डुंगरो न्हवरावनारी रूढी बीजा हेतुथी प्रवर्ती छे.

३३ अर्थात् ते वारणावाळी सुरंगनो.

आपवा विदुर अंदरखानेथी सूचने छे के 'दाह ऊठाडवाने म्हाने ओरडामां बळतो राखेलो अग्नि मोटा ओरडायोवाळा वासमां (फेलातां) सुरंगनो आश्रय लेनारने बाळतो नथी; ए रीते जे पोतानूं रक्षण करे छे, ते जीवतो रहे छे (१). दुश्मेए आपेला भाग उगाडनारी वस्तुओनी मेळवणीना वपराशथी रचेला शयनमंदिरमां जे पुरुष सपडाय छे, ते स्वपदनानी ओळखना पुरुषनो आश्रय लेई (ए रीते) आगना सपाटामांथी मुक्त थाय छे. (२) पंथे पटनारने मार्ग सूझे छे; (दिङ्मूढ थतां) तेने (माछीडा जेवा) अक्षत्रिय (नदीना उतारनी) दिशाए दोरे छे; अने ए रीते ते पोताना पंट समेत तेनां पांचे सगांने पंथ करावतो करावतो आगळ उपर पीडा पामतो नथी. (३).'

२६ उपर वर्णवेलो प्रस्ताव जेमां विस्तारथी आपेलो छे ते जतुगृहदाहपर्व व्यास भगवानना जयसंज्ञाना महाख्याननो मौलिक भाग छे. एनां स्रीपात्रोमां द्रौपदी अग्रस्थान धरावे छे. तेना स्वयंवरनूं जतुगृहदाहपर्व आनुख छे, एटले करीने ए भाग क्षेपक संभवी शकतो नथी. आ मंतव्यथी विदुरनी म्लेच्छवाचनूं निरूपण जयसंहिताना निर्माणना समयनी लोकभाषानी चर्चाने अंगे कर्यूं छे. उक्त द्वैभाषिक प्रस्ताव द्वारा व्यासमुनिए श्रीमुखे ज प्रस्तुत महाख्यान पौराण संस्कृतमां रच्यानूं परोक्ष जणायूं छे. ए मौलिक संहिता राष्ट्रिय भाषामां ठर्या पछी वाल्मीकि मुनिना महाख्याननी भाषा पण सहेजे ज पौराण संस्कृत ठरे छे. पद्यबंधनी कसोटीथी दीसी आवे छे के आपणां आ बे महाख्यानोना निर्माणकाळ वच्चे बहु लांबूं अंतर नथी.

२७ सिंहावलोकन करतां ऋक्कालना वर्णात्मक पद्यप्रवाहना बे ज झरा आख्यानकालमां वहेता उपलब्ध थाय छे, त्रिष्टुभ् अने त्रैष्टुभजागत उपजाति; बीजा झरा बधा बंध पडी जाय छे. साहित्यपलटाना ए संधिमां वाल्मीकि मुनिना मुखेथी क्रौञ्चवधना हृदयभेदक प्रसंगे, आर्चिक अनुष्टुभ्ने मळती ए खरी अने तेनाथी जुदी पडती ए खरी, एवी एक नवतर पद्यरचना स्वयंभू प्रवर्ती.- आ छंद ते आख्यानिक अनुष्टुभ्. ए पद्यबंध तेना आदिद्रष्टाना

महाख्यानमां रणकार करतो करतो, व्यासमुनिना मौलिक महाभारतमां रमी रहेतो, प्राक्तन पुराणोमां विचरतो, अन्यान्य क्षेत्रमां भमतो भमतो, समस्त संस्कृतसाहित्यनो व्यापक छंद बने छे. एना विपुल प्रयोगनूं लेखूं लाखे थवूं पण अशक्य छे. गद्य न छतां लगभग गद्यना जेटली सरळता अने सुगमता ए धरावे छे. एनो रणकार वीणाना रणकारमां पण ऊतरे छे. आख्यानकालनो आ एक ज छंद तेनूं गौरव स्थापित करवाने बस छे. तो पछी त्रैष्टुभ उपजाति, जागत उपजाति अने समपद उपेन्द्रवज्रा, इन्द्रवज्रा तथा वंशस्थ, ए पांच झराथी वहेतो नवो रूपरचनानो प्रवाह ते काळने अपूर्व फळरूप बनावी तेना गौरवमां जे असाधारण वधारो करे छे, तेनूं तो कहेवूं ज शूं? खरूं छे के आख्यानकालना छंदनी संख्या ओछी छे; परंतु ए काळनी कीर्ति गणितना आंकडे मापवानी नथी. ऋक्कालनी महत्ता जेम एना वर्णरचनाना प्रवाहथी, तेम आख्यानकालनी महत्ता एना रूपरचनाना प्रवाहथी मपाय छे; एना प्रादुर्भावमां प्रकाशती विशिष्ट सर्गशक्तिथी अंकाय छे. त्रिष्टुभ् अने जगती शब्द जे पूर्व काळमां असमचतुष्पद वर्णबंधना अर्थमां वपराता हता, ते उत्तर काळमां समचतुष्पद रूपबंधना वर्गना वाचक बने छे. आख्यानकाल वे ज वर्गनो परिचय करावे छे, त्रिष्टुभ्–वर्ग अने जगती–वर्ग. अर्वाक्तन संज्ञाओ उपरथी एम मानवामां आवे के त्रिष्टुभ्-वर्गमां प्रथम इन्द्रवज्रा पछी उपेन्द्रवज्रा अने ते पछी उपजाति छंद अस्तित्वमां आव्यो हशे. परंतु ते समज भ्रांतिजनित छे. ए रूपबंधोना आविर्भावनो क्रम तो तेथी ऊलटो ज छे, ते चालु दृष्टिपातनी चर्चाए मनमां ऊतार्यूं हशे. निर्दिष्ट छंदोमां रचायलां महाख्यान कई भाषामां छे ते विशे पण शंकाने स्थान नथी. बंनेनूं निर्माण पौराण संस्कृतमां एटले जेने आपणे विस्तृत अर्थमां साधारण रीते संस्कृत कहिये छिये ते भाषामां छे. प्रत्येक भाषानां वे रूप होय छे, अविकृत अने विकृत. ते मुजब पौराण संस्कृत पण वे रूपमां देखा दे छे. दासीपुत्र शास्त्रपारंगत विदुरनी विदुरनीति पहेला रूपमां छे अने लाक्षागृहना संबंधमां तेमणे युधिष्ठिरने आपेली चेतवणी

बीजा रूपमां पण छे. व्यासमुनि पौराण संस्कृतना आ बीजा रूपनो म्लेच्छवाच् संज्ञाथी निर्देश करे छे. छेल्ला प्रस्तावमां आपेला लांबा विवेचन पछी लाक्षा-गृह संबंधी चेतवणीना श्लोक आर्यावर्तनी कोइ अनार्य प्रजानी भाषामां छे ज नहि एम भार मूकीने कहेवानी अगत्य रहेती नथी[३४]. महाख्यानोनी पौराण संस्कृत भाषा ते आख्यानकालनी लोकभाषा हती; अने वाल्मीकिनूं रामायण अने व्यासनूं महाभारत बंने सार्वजनिक श्रवणग्राह्य महाख्यानो ए भाषामां रचायां हतां. एक दीपक जेम बीजा अनेक दीपक प्रगटावे छे, तेम ते मुनीश्वरोनी कृतिओ एमना महान अने अक्षत प्रेरणाबळथी आपणी भाषामां महाख्यान प्रगटावो !

परिशिष्ट

विदुरनी म्लेच्छवाचूनो शब्दार्थसूचि.

प्रवासना शब्द	ऊतारानां शब्द.
१ कक्ष पुं. घास.	कक्षा स्त्री. ओरडा.
कक्षाग्नि पुं. घासनूं तापणूं.	कक्षाग्नि पुं. ओरडामां राखेलो अग्नि.

३४. जर्मन विद्वान Winternitz चर्चास्पद श्लोक कोइ अनार्य प्रजानी भाषामां छे एम माने छे, जुओ एमना आर्यावर्तनी भाषाना साहित्यना इतिहासना पृष्ठ ३३१ मांथी लीधेलो नीचेनो उतारोः–Vidura tells Yudhishthira privately of the treacherous plan and for this communication he makes use of a Mlechchha language, i. e. the language of a non-Indian tribe which was not understood by others. आ लेखथी उत्थान पामता भ्रमना निराकरण पूरती ज उपर में मारा मतनी पुनरुक्ति करी छे. उक्त जर्मन विद्वाने म्लेच्छवाचूना अर्थग्रहणमां भूल करी छे, ते ज सुप्रसिद्ध C. V. Vaidya नाथी पण थई गई छे. एओ पण प्रस्तुत शब्दनो a Mlechchha or un-Aryan tongue एवो अर्थ करे छे, जुओ The Mahābhārata : A criticism, p. 120.

१। सिसिर [वि ; सं. शिशिर] न. टाढ.	शिशिर न. टाढ.
सिसिरघ्न [वि.] विशे. टाढ हणनार.	शिशिरघ्न विशे. टाढ हणनार.
महाकक्ष न. ए नामनूं घासनूं वन.	महाकक्ष पुं. मोटा ओरडावाळो घास, महेल.
विड [वि. ; सं. बिल] न. ऊंडी खोह.	विल न. सुरंग.
विडौकश् [वि.;सं. बिलौकस्] पुं. खोहनो आश्रय लेनार.	बिलौकस पु सुरंगनो आश्रय लेनार. १।
२। अनार्य पुं. आर्यथी भिन्न जातिनो मनुष्य.	अनार्य विशे. दुष्ट.
सद्म [वि. ; स. शद्म] न. (शस् १ परस्मै. हणवूं) संहार, हत्याकारी योजना.	शद्म न. (शस् २ परस्मै. ऊंघवुं) शयनगृह.
नड [वि. ; स. नल] पुं. वरु.	अनल पुं. अग्नि, आग.
नडोद्भज [वि.] विशे. वरुना जथामां प्रगटेल.	अनलोद्भज विशे. ज्वालाग्राही पदार्थथी रचेल.
श्वाविध् पु. शाहुडी.	स्वाविद् [वि. श्वाविद्] विशे (स्व पोताना पक्षनूं. आविद् २ परस्मै. ओळखवूं) विशे. पोताना पक्षनानी ओळखाण धरावनार.
शरण न. घर, आश्रयस्थान.	शरण न आश्रय, शरण्.
श्वाविच्छरण न. शाहुडीना घर जेवू आश्रयस्थान.	स्वाविच्छरण [वि. श्वाविच्छरण] न. पोताना पक्षनानी ओळखाण धरावनारनो आश्रय २।
३। नक्षत्र न. तारानु झूमखू.	न-क्षत्र पु. क्षत्रिय नहि ते.
आत्मन् पु मन.	आत्मन् पुं. पोते.
इडयन् [वि.;स इलयन्] व. कृ. गति करावतो, प्रेरतो.	इलयत् व.कृ (इल् ६ परस्मै जवुं) पंथ करावतो.
अनु अव्य. त्यारपछी, आगळ उपर.	अनु अव्य. त्यारपछी, आगळ उपर. ३।

सा. क.—वि. संज्ञा विकृत किंवा विकारी भाषा माटे छे; अने सं० संज्ञा शुद्ध किंवा संस्कारी माटे छे.

पद्यरचनानी ऐतिहासिक आलोचना

दृष्टिपात ४

सुत्तकाळ

१ आपणी पद्यरचनाना भाषात्मक [1]प्रस्रवणप्रदेशमांथी प्रवर्तता बीजा प्रवाहनी पंचतीर्थी पूरी करी हवे त्रीजा प्रवाहनी यात्रा आदरिये. ए प्रवाह जे भूमिनूं सिंचन करे छे ते विस्तीर्ण सुत्तसाहित्य छे. एक तरफ नजर नांखतां वर्धमान महावीरने पगले अनेक शाखामां वहेतूं पुराणूं छतां नवो देखाव धारण करतूं जैन सुत्त अने बीजी तरफ दृष्टि वाळतां सिद्धार्थ बुद्धने पगले त्रण पात्रमां विभक्त थई प्रसरतूं देखाव पण पुराणो राखतूं बौद्ध सुत्त तेमना प्रौढ प्रवाहनी सौम्य शीतळ लहरीओए आपणने एकसाथे नोतरे छे. लयनो अने उपवनोमां कर्णपावन गूंजन पूरता ए प्रवाहोनी झांखी करवा करावावानो आ दृष्टिपातमां उद्देश राख्यो छे.

२ आख्यानकालना अने सुत्तकालना साहित्य वच्चे आकाश अने पाताळ जेटलुं अंतर छे. एकमां सप्तद्वीप पृथ्वीना एकाकार सागरनो क्षोभ अने गर्जना छे. बीजामां पाताळतळ उपर दृढ आसन वाळी बेठेला प्रशांत महाह्रदनां उपसम[2] अने उवहान[3] छे. एकनी भाषा पूर्वे कहेवामां आव्यूं छे ते मुजब पौराण संस्कृत छे; बीजानी भाषा हवे पछी कहेवामां आवशे ते मुजब अग्रिम प्राकृत छे. एकनूं वस्तु संसार छे; बीजानूं संसारनो त्याग छे. बन्नेनी पद्यरचनामां पण जातीय भेद ध्यान खेंचे छे. आख्यानसाहित्यनी अने सुत्तसाहित्यनी उत्पत्ति वच्चे पण अनेक शतकोनो गाळो जोवामां आवे छे. ए बाबत अत्रे गौण होवाथी टूंकावी दैई, प्रधान विषय जे सुत्तकालनी पद्यरचनानी आलोचना, तेमां प्रवृत्त थइये.

---

1. Water-shed.

२ उपशम, शांति.

३ उपधान, समाधिस्थनी स्थिति.

ऋग्वेदनो कोइ पण मंत्र भणतां देवता अने ऋषिनां नाम साथे छंदनूं नाम भणवानो पण संप्रदाय चाल्यो आवे छे. ए रीते ते सुस्थापित अने सुरक्षित छे. **रामायण** अने **महाभारतना** छंदोनां नाम अने लक्षण छंदःशास्त्रना ग्रंथोमां सुलभ छे. परंतु जैन तेम ज बौद्ध सुत्तसाहित्यना छंदोनां नाम घणे भागे मूळग्रन्थोमां नथी मळतां, टीकाओमां नथी जडतां, तेम ज हेमाचार्यना **छंदोऽनुशासनमां** के बीजां छंदःशास्त्रनां संस्कृत प्राकृत पुस्तकमां नथी हाथ लागतां. **आयार** अने **सूयगड** अंगना अर्थ उपर प्रकाश पाडनारां साधन पुष्कळ छे. परंतु तेनी प्राचीन पद्यरचनानो परिचय करावनारूं साधन एक पण छे नहि. स्वतंत्रपणे माप विचारवा जइये छिये, त्यां वाचना घणूंखरूं वधघटथी एवी अनियमित बनेली ऊतरी आवी छे, के कोइ जातनो मेळ नजरे तरतो नथी. ए वधी मुस्केली अने मूंझवण छतां ए खंतथी अने सावधानीथी पगलां भरनारने म.र्ग जडे खरो. आवी रीते शोध चलावतां, जोइये, पद्यसृष्टिनो कोइ अजाण्यो खंड जाण्यामां आवे छे ?

६ सुत्तकालना सांप्रत व्याख्यानमां आधार तरीके स्वीकारेलां **आयार** अने **सूयगड** अंगमां चार ज छंदनो प्रयोग छे, **अनुष्टुभ्नो त्रिष्टुभ्नो वैतालीय**(प्रा. वेआलीय)नो अने **गाथानुष्टुभी** संसृष्टिनो. सौमां अधिक प्रचार **अनुष्टुभ्नो** छे. एमां आर्चिक **अनुष्टुभ्नो**, आख्यानिक **अनुष्टुभ्नो** अने सौत्त **अनुष्टुभ्नो** अंतर्भाव थाय छे. पहेलो ऋक्कालथी अने बीजो आख्यानकालथी ऊतरी आवेल छे. एनो वपराट सुत्तकालमां बहु ज कमी छे. वाल्मीकि भगवाने सरजेला आख्यानिक **अनुष्टुभ्नी** अधिकतर मनोहरताने लीधे अने सौत्त **अनुष्टुभ्नी** विशेष सरळताने लीधे आर्चिक **अनुष्टुभ्** अछताई गयो लागे छे. तेना पछीना आख्यानिक **अनुष्टुभ्** छंदनी संख्या बहु मोटी(२५४) छे. आर्चिक **अनुष्टुभ्** अने आख्यानिक **अनुष्टुभ्नां** लक्षण अने उदाहरण गया बे दृष्टिपातमां अपाई चूक्यां छे. एटले तेमने पडता मूकी सौत्त **अनुष्टुभ्ना** संबंधमां ज विवेचन आपवुं

प्राप्त थाय छे एनो प्रयोग आख्यानिक अनुष्टुभ्‌ना मुकाबले मात्र चोथा भागनो छे. छतां पण, सौत्त पद्यरचनामां एक विलक्षण विक्रियाना प्रवेशनूं ते द्वार बने छे, ते कारणथी ए खास नोंधने पात्र छे. आ विक्रिया ते एक विवर्धित वर्ण अने गुरु रूपना बदले अनुक्रमे बे केवल वर्ण अने बे लघु रूपनो उपयोग. पाछला दृष्टिपातमां कहेवाई गयूं छे के आख्यानिक अनुष्टुभ्‌नां चरणोना प्रत्येकना बे भाग पडे छे, वर्णात्मक अने रूपात्मक. एमांना वर्णात्मक अर्धियामां ज्यां विवर्धित वर्ण अने रूपात्मक अर्धियामां गुरु रूप वपराय छे, त्यां सौत्त अनुष्टुभ्‌मां अनुक्रमे बे केवळ वर्ण अने बे लघु रूप वारंवार वपरायलां जोवामां आवे छे. कोइ वखते तेथी ऊलटूं पण बने छे, परंतु ते कोइ वखते ज. सुत्तसाहित्यमां आ प्रथा क्यारथी चालती थइ ते सप्रमाण निर्धारी शकाय एम नथी. एना निर्णय माटे पूर्वतर अग्रिम–प्राकृत साहित्यनी अपेक्षा रहे छे; ते तो लभ्य छे नहि. एटले करीने उक्त विक्रियाना प्रचारनी समजूती माटे कल्पनानो आश्रय लेवो पडे छे. मने लागे छे के विवर्धित वर्ण अने गुरु रूप बदल अनुक्रमे जे केवळ वर्णनूं अने लघु रूपनूं जोडकूं योजायूं हशे, तेनो उत्तर वर्ण निःस्वर एटले व्यंजन तरीके अधुरो उच्चाराई पूर्व वर्णमां विवर्धित वर्णनी अने एक गुरू रूपनी श्रुति सधाती हशे; ए रीते बे केवळ वर्ण अने बे लघु रूप एक विवर्धित वर्णनी अने एक गुरु रूपनी गरज सारतां हशे. छंदःशास्त्रनी दृष्टिए प्रस्तुत पद्यबंधनो मेळ मेळववाने माटे उपर कहेली जरूरियातना संबंधे स्वाभाविक रीते सामान्य मनुष्यनूं दुर्लक्ष थतां उक्त जोटकाना बन्ने वर्ण पूरा उच्चाराया; अने एक विवर्धित वर्ण तेम ज एक गुरु रूप बराबर अनुक्रमे बे केवळ वर्ण तेम ज बे लघु रूप, *एवूं समीकरण बंधायूं; तथा ऊलटूं समीकरण पण स्वीकारायूं.* आ रीते अहीं नोंधवामां आवेली सौत्त विक्रियानी प्रथानी उत्पत्ति संभवे छे. ए विक्रिया जे नवा प्रवाहनूं दर्शन करावे छे, ते विशे वैतालीयना प्रस्तावमां कहेवाशे. चालु प्रस्ताव आटलेथी संकेली लेई सौत्त अनुष्टुभ्‌नूं उदाहरण आपूं छूं.

जे केइ तसा पाणा चिट्ठन्ति अदु थावरा ।
२
परियाए अत्थि से अञ्जू जेण ते तसथावरा ॥ सू०|१|१|४|८॥
१

उपर ऊतारेला श्लोकना पहेला चरणना पांचमा सा अक्षरनुं स अने आमां पृथक्करण करवाथी ए चरणना उत्तर भागमां खूंचती क्षति दूर थाय छे. ए रीते उक्त चरण सात अक्षरनूं मटीने पूरेपूरां चार वर्ण अने चार रूपनूं बने छे. त्रीजा चरणमां अक्षर खूटवाने बदले वधे छे; ते वधारो परि बदल पर् वांचवाथी टळी जाय छेः अहीं बे वर्णनूं एकीकरण करवूं पडे छे. एक अने बेना अंक उक्त एकीकरण अने पृथक्करणना सूचक छे.

७ अहीं नोंधेली विक्रिया पहेला दृष्टिपातमां कहेवामां आवेली लयात्मकपद्यरचना तरफ ढळती जणाय छे. ए वलण दृढ वर्णात्मक अने रूपात्मक पद्यरचनाओनूं विघातक छे. ए कारणने अवलंबीने प्रस्तुत वलणने विक्रिया संज्ञाथी ओळखाव्यूं छे.

८ सुत्तसाहित्यमां अनुष्टुभ् पछी प्रचारनी दृष्टिए विचारवा जोग छंद त्रिष्टुभ् छे. ते चार स्वरूपे वपरायो छे, आर्चिक त्रिष्टुभ्, त्रैष्टुभी उपजाति, इन्द्रवज्रा अने सौत्त त्रिष्टुभ्. पहेलो ऋक्कालथी चाल्यो आवेलो वर्णबंध छे. बीजो अने त्रीजो ए बे आख्यानकालना रूपबंध छे. एमनां लक्षण अने उदाहरण बीजा अने त्रीजा दृष्टिपातमां आप्यां छे. सूयगडमां एकनी संख्या छेतालीस छे अने बीजानी तेथी बमणी छे. एमां इन्द्रवज्रानो प्रयोग पचीस वार थयेलो छे. सूयगडनी आ संख्या न्हानी छतां रामायणना मुकाबले मोटी छे. ए छंदनो वपराट वधे छे एटलूं ज नहि, पण आख्यानकालना एना मोटा सहोदर उपेन्द्रवज्रा करतां ते छंद सुत्तकालमां वधारे लोकप्रिय थतो जणाय छे. सूयगडमां उपेन्द्रवज्राना एक पण उदाहरण तरफ मारूं लक्ष खेंचायूं नथी. सुत्तनिपातमां ए छंद देखा दे छे. पण तेनो प्रयोग बहु कमी छे, ज्यारे तेनी सरखामणीमां इन्द्रवज्रानो वपराट, कहेवूं

जोईए के, मध्यम कोटिए पहोचे छे. आ रीते उपेन्द्रवज्रा छंद उपेन्द्र+वज्रा मटी उप+इन्द्रवज्रा थवाना पंथे चडे छे.

९ आर्चिक त्रिष्टुभ्‌ना संबंधमां एक वात नोंधवा जेवी छे. ऋक्कालनो प्रधान छंद होई ते घणो जूनो छतां प्रचारमां टकी रहेवानी शक्ति तेनामां विशेष छे. आर्चिक अनुष्टुभ्‌ सुत्तकालमां अछताई जाय छे, त्यारे आर्चिक त्रिष्टुभ्‌ आख्यानकाल अने सुत्तकाळ सारी रीते पसार करी काव्यकालमां पण 'हूं हयात छूं हो' एम कहेतो माथूं ऊंचूं करे छे. एनूं अपवादभूत उदाहरण महाकवि कालिदास नीचे प्रमाणे पूरूं पाडे छे.

अमी वेदिं परितः क्लृप्तधिष्ण्याः
समिद्वन्तः प्रान्तसंस्तीर्णदर्भाः।
अपघ्नन्तो दुरितं हव्यगन्धै-
र्वैतानास्त्वां वह्नयः पावयन्तु॥ अ. शा.। ४।

१० त्रिष्टुभ्‌ छंदनूं चोथूं स्वरूप जे सौत्त त्रिष्टुभ्‌, तेनी उत्पत्ति त्रैष्टुभी उपजातिमांथी थई छे. सौत्त अनुष्टुभ्‌ना प्रस्तावमां नोंधेली विक्रिया प्रस्तुत स्वरूपमां प्रवर्तमान होवाथी तेने सौत्त त्रिष्टुभ्‌ नाम आपवूं पड्यूं छे. एक गुरु रूप बराबर बे लघु रूप अने तेथी ऊलटूं बे लघु रूप बराबर एक गुरु रूप, ए समीकरणो आ रूपबंधनी रचनामां पण स्वीकारायां छे. तेने लीधे नडती रूपनी न्यूनाधिकता सौत्त अनुष्टुभ्‌ना संबंधमां सूचवेला पृथक्करण अने एकीकरणनो आश्रय लेई टाळवामां आवे छे. आ सौत्त स्वरूपनो प्रयोग त्रैष्टुभी उपजाति(९२)ना करतां आपणे वधतो जोइये छिये, ते उपरथी अटकळ बंधाय छे के तेनो उदय सुधर्मा स्वामीना पूर्वे थयो हशे. सौत्त त्रिष्टुभ्‌नूं उदाहरण नीचे मुजब.

निसम्म से भिक्खु समीहियट्ठं
पडिभाणवं होइ विसारए य।

१

आयाणअट्ठी चोदाणमोणं
उवेच सुद्धेण उवेइ मोक्खं ॥सू.।१।१४।१७॥

उपरना छंदना बीजा चरणमां बे लघु रूपनूं जोडकूं 'पडि' एकीकरण प्रक्रियाथी एक गुरु रूपनूं काम बजावे छे अने त्रीजा चरणमां एक गुरु 'वो' पृथक्करण प्रक्रियाथी 'वच' किंवा 'वउ (सं. व्यव)' ए बे लघुना जोडकानी गरज सारे छे.

११ सुत्तकालनो त्रीजो छंद सं. वैतालीय (प्रा. वेआलीय) छे. ए इन्द्रवज्रा आदि छंदनी पेठे चार चरणनो बने छे. परंतु इन्द्रवज्रा समपद छे, त्यारे वैतालीय अर्धसमपद छे. एना विषम एटले पहेला तथा त्रीजा चरणनी रचना एकधारी छे, अने सम एटले बीजा तथा चोथा चरणनी एकधारी छे. उक्त चारे चरणनो उत्तर भाग आख्यानिक अनुष्टुभूनां समचरणना उत्तर भाग जेवो ज रूपात्मक छे, एटलेके वैतालीय छंदना चरणोना पाछला भागमां लगालगा रूपचतुष्क आवे छे. परतु आख्यानिक अनुष्टुभ्नी चारे चरणनो पूर्व भाग ज्यारे वर्णात्मक छे, त्यारे वैतालीयनां चरणोनो पूर्व भाग वर्णात्मक नथी, रूपात्मक नथी, पण कोइ नवतर स्वरूपनो छे. छंद शास्त्रनी परिभाषामा ए मात्रात्मक कहेवाय छे. मात्रानूं लेखूं करवा अक्षरना बे वर्ग पडे छे, ह्रस्व अने बृहत्. जे अक्षर उच्चारवामा ओछामां ओछो समय रोकाय ते ह्रस्व; अने जेना उच्चारणमा ह्रस्वथी बमणो समय जाय ते बृहत् लेखाय छे. गत व्याख्यानोमां कहेला केवळ वर्ण तथा लघु रूप ते आ व्याख्याननी परिभाषामां ह्रस्व, अने विवर्धित वर्ण तथा गुरु रूप ते बृहत् कहेवाय छे. ह्रस्व अक्षरनी एक अने बृहत्नी बे मात्रा गणाय छे. आ संकेत अनुसार वैतालीय छंदनां चरणोना पूर्व भागनूं घडतर मात्रात्मक छे. एना विषम चरणनो मात्रात्मक भाग आठ मात्रानो बनेलो जोवामां आवे छे. सम चरणोना ए भागमां बे मात्रा वधारे होय छे. आ मात्राबद्ध भाग

अनेक आकारमां देखा दे छे[५]. ए उपरथी एम समजाय छे, के ए छंदनो प्रचार अग्रिम प्राकृतमां ताजो होवो जोईए, व्हेलांनो न होय. **वैतालीयनूं** उदाहरण,

सीओदग पडि दुगुञ्छिणो
अपरिग्गस्स लवावसप्पिणो।
सामाइयमाहु तस्स जं
गिहिमत्ते असणं न भुञ्जइ ॥ सू.।१।२।२।२०॥[६]

१२ **उपेन्द्रवज्रा** अने **इन्द्रवज्रा**ने जवाब आपता जेम **वंशस्थ** अने **इन्द्रवंशा** छे, तेम **वैतालीय**ने जवाब आपतो एक छंद सुत्तकालमां प्रगटे छे. ते वैतालीयना चरणोना रूपबद्ध भागने अंते एक गुरु रूपनी वृद्धिथी नीपजे छे, ते कारणथी हूं तेने **वृद्धवैतालीय** नामथी ओळखावूं छूं. छंदःशास्त्रनां पुस्तकोमां एनो **औपच्छन्दसिक** संज्ञाथी निर्देश छे. आ छंद **सूयगड**मां हाथ लाग्यो नथी. पण तेनो पूर्वगामी **उपजाति** छंद, जेने आ व्याख्यानमां वैतालीयकी **उपजाति** एवूं नाम आपवूं पडयूं छे, ते मळी

---

५ आवां खास ध्यान खेंचनारा **वैतालीय**नां चरणो नीचे आपेलां चार छे.-सीओदग पडि दुगुञ्छिणो । सू.।१।२।२।२०।, जमिअं जगई पुढो जगा । सू.।१।२।१।४।, आयदण्ड एगन्तलूसगा । सू.।१।२।३।९।,कासवस्स अणुधम्मचारिणो । सू.।१।२।३।२०।. आ उदाहरण उपरथी एक वात स्हेजे लक्षमां आवशे के **वैतालीयना** मात्रात्मक भागनी छेल्ली बे मात्रा, छूटी मटी, एकठी मळी गुरु रूपना आकारमां देखा दे छे ते पछी वखत जतां तेना पूर्वेनी मात्राना अक्षरो पण, सवाद वधारे रोचक रीते जाळवे, एवा लघुगुरुना आकारमां गोठवाय छे, अने तेम थतां *मिश्र **वैतालीय** संपूर्ण रूपबद्ध **वियोगिनी** अने **अपरवक्त्र** ए बे छंदमां* परिणाम पामे छे. ए ज प्रकारे मिश्र **वृद्धवैतालीय** पलटाई संपूर्ण रूपबद्ध **माल्यभारिणी** अने **पुष्पिताग्रा** वृत्त प्रगटे छे. ए विशे उत्तर दृष्टिपातमां कहेवाशे.

६ उत्तरार्धनो मुद्रित पाठ 'सामाहियमाहु तस्स जं जो गिहिमत्तेऽसणं न भुञ्जई ।' छे.

आवे छे. जेम त्रैष्टुभी उपजातिना बंधारणमां उपेन्द्रवज्रा तथा इन्द्रवज्रानां चरणोनूं अने जागती उपजातिना बंधारणमां वंशस्थ तथा इन्द्रवंशानां चरणोनूं मिश्रण होय छे, तेम आ वैतालीयकी उपजातिमां उक्त वैतालीय तथा वृद्धवैतालीयनां चरणोनूं मिश्रण जोवामां आवे छे. सूयगडमांथी तेनूं उदाहरण नीचे प्रमाणे.

कामेहि य संथवेहि गिद्धा
कम्मसहा कालेण जन्तवो।
ताले जह बन्धणच्चुए
एवं आयुखयम्मि तुट्टइ ॥ सू.।१।२।१।६॥

उपर आपेलां उदाहरणमां पहेलूं चरण वृद्धवैतालीयनूं छे; अने बाकीनां वैतालीयनां छे. कहेवानी जरूर जणाती नथी के वैतालीय, वृद्धवैतालीय अने वैतालीयकी उपजाति, ए त्रणेनी ऊच्चारणा समान छे.

१३ सुत्तसाहित्यना चोथा छंदनूं नाम कहीं पण मळी आवतूं नथी. आ छंदनो प्रयोग आयारमां तेम ज सूयगडमां करेलो छे. पहेला अंगमां प्रथम श्रुतस्कंधनूं छेल्लूं अज्झयण, जे उवहाणसुय एवा नामे जाणीतूं छे, तेनो ए व्यापक छंद छे. ए प्राचीन जैन [७]सप्ततिना चार उद्देशना चार समाप्ति श्लोक अनुष्टुभ् छे. ए चार एकदेशी बाद करतां बाकी ए सप्तति प्रस्तुत नाम रहित छंदमां छे. आ नवो छंद, बीजा अंगना प्रथम श्रुतस्कंधनूं चोथूं अज्झयण जे इत्थीपरिन्ना, तेना बंने उद्देशमां व्यापकरूपे प्रवर्ते छे, अने अन्य अज्झयणोमां समाप्तिश्लोकरूपे पण देखा दे छे. एना बंधारणमां सौत्त अनुष्टुभूनां चरणोनो अने उत्तर कालना गाथा छंदना खंडोनो उपयोग थाय छे. छेल्लो कहेलो छंद मात्राबद्ध छे. पथ्या स्वरूपे गाथाना बंधारणमां त्रण मात्रामक खंड वपराय छे; एक बार मात्रानो, ते गाथानां बंने दलना पूर्वभागमां; बीजो अढार मात्रानो, ते

७ सित्तेर श्लोकनो समह.

प्रथम दलना उत्तर भागमां; अने त्रीजो पंदर मात्रानो, ते बीजा दलना उत्तर भागमां. आ रीते अनुष्टुभ् अने गाथाना जोडाणने लीधे में उक्त ननामा छंदने गाथानुष्टुभी संसृष्टि एवुं कल्पित नाम आप्युं छे. निर्दिष्ट त्रण गाथिक खंड पैकी लघु खंडना प्रयोगनुं उदाहरण शय्यंभव मुनिना दसवेयालियमां मळी आवे छे. ते विशे आगळ कहेवामां आवशे. उवहाण-सुयमांनी उक्त संसृष्टिनां सम चरण वृद्ध के वृद्धतर गाथिक खंडनां अने विषम चरण अनुष्टुभनां बनेलां जोईये छिये. सूयगडमां क्वचित् ए संसृष्टिनुं छेल्लुं ज सम चरण वृद्ध के वृद्धतर गाथिक खंडनुं होय छे. उदाहरण नीचे प्रमाणेः—

सयणासणेहिं भोगेहिं
इत्थीओ एगया निमन्तेन्ति ।
एयाणि चेव से जाणे
पासाणि विरूवरूवाणि ॥सू. । १ । ४ । १ । ४ ॥
असंवुडा अणाईयं
भमिहिन्ति पुणो पुणो ।
कप्पकालं उवज्जन्ति
ठाणा [८]आसुरकिब्बिसिय ॥ सू. ।१।१।३।१६॥
झाणजोगं समाहट्टु
कायं विउसेज्ज सव्वसो ।
तितिक्खं परमं णच्चा
आ मोक्खाए परिव्वएज्जासि ॥सू.।१।१।८।२६॥

पहेला उदाहरणमां विषम चरण अनुष्टुभनां छे; सम चरण पैकी एक वृद्धतर गाथिक खंडनुं एटलेके अढार मात्रानुं अने बीजुं वृद्ध खंडनुं एटले-

८ मुद्रित पाठ 'आसुर' छे; तेथी मापमा बांधो आवे छे.

के पंदर मात्रानूं छे. आरंभना चरणमां सौत्त विक्रियानो प्रयोग छे. ए विक्रिया एकीकरणथी दूर थाय छे. बीजा तेम ज त्रीजा उदाहरणमां पहेलुं, बीजुं अने त्रीजुं ए त्रणे चरण अनुष्टुभ्नां छे; मात्र चोथुं ज गाथिक खंडनुं छे. बीजा उदाहरणनो गाथिक खंड पंदर मात्रानो अने त्रीजानो अढार मात्रानो छे.

१४ आयार अने सूयगड साथे सरखामणीमां सुत्तनिपातमां छंदोनी विविधता विशेष छे. उपर गणावेलां अनुष्टुभ्, त्रिष्टुभ्, वैतालीय अने गाथानुष्टुभी संसृष्टि ए चार कुटुंबना कुल दसे छंद प्रस्तुत बौद्ध सुत्तमां वपरायला छे. एनां लक्षण अने उदाहरण सुत्तनिपातमांथी ऊतारा टांकी वेवटाववामां कांइ लाभ नथी. वळी त्रैष्टुभजागती उपजाति तथा अतिजगती ए बे ऋक्कालना, अने उपेन्द्रवज्रा जागती उपजाति तथा वंशस्थ ए त्रण आख्यानकालना छंद पण एमां उपयुक्त छे. तेनां लक्षण अने उदाहरणनूं पुनःकथने निरर्थक छे. उक्त बौद्ध सुत्तना जे छंदो विवेचननी अपेक्षा राखे छे ते नव छे,–त्रैष्टुभानुष्टुभी संसृष्टि, आनुष्टुभवैतालीयकी संसृष्टि, इन्द्रवंशा, वृद्धवैतालीय, कौकालियकी उपजाति, कोकालिय, आनुष्टुभकौकालियकी संसृष्टि अने आनुष्टुभवैतालीयकौकालियकी संसृष्टि. आ छंद पूर्वे वपरायला जाणवामां छे नहि. एमांना एकला इन्द्रवंशा सिवाय कोइ ए छंदना नामनो पत्तो लाग्यो नथी. आथी सूचक कल्पित नामथी तेमनां लक्षण आपवानो प्रसंग प्राप्त थयो छे. उपजाति छंदःशास्त्रनो पारिभाषिक शब्द छे. एक ज प्रकारनी पद्यरचनानां, अर्थात्, सजातीय भिन्न भिन्न चरणोना जोडाणथी थनारा मिश्र छंद माटे ते बोल वपराय छे. आख्यानकालना त्रैष्टुभ उपजाति अने जागत उपजाति छंद आवां सजातीय लग्ननी प्रजा छे. निरनिराळी पद्यरचनानां, अर्थात्, विजातीय भिन्न भिन्न चरणोनूं जोडाण पण सुत्तसाहित्यमां सधाय छे. आ प्रकारनो छंद ते त्रैष्टुभानुष्टुभी संसृष्टि छे. प्रयाग आगळ थई वहेता गंगा तथा यमुनाना प्रवाहोनी पेठे वर्णात्मक तथा रूपात्मक पद्यरचनाना प्रवाहो भिन्नता जाळवी संयुक्तपणे वहे

छे, ते कारणथी तेना नाममां संसृष्टि शब्दनी योजना करी छे. एनूं वंधारण एना नामने अनुसरतूं छे. सौत्त अनुष्टुभ् अने सौत्त त्रिष्टुभ्नां चरणोना संयोगथी ए छंद नीपजे छे. वर्णना अने रूपना तारो एमां भेगा वणाया छे. नीचे एनां उदाहरण आप्यां छे; तेमां पूर्वे कहेली विक्रिया प्रवर्तती जोवामां आवशे.

. पङ्के सयानो परिफन्दमानो
दीपा दीपं उपप्लविं।
अथऽद्दसासि संबुद्धं
ओघतिण्णं अनासवं ।सु. नि. । ५।१८।२२।। (1145)

असंहीरं असंकुप्पं
यस्स नत्थि उपमा क्वचि।
अद्धा गमिस्सामि न मेऽत्थ कङ्खा
एवं मं धारेहि अधिमुत्तचित्तं ।।सु.नि.।५।१८।२६।।(1149)

धम्मारामो धम्मरतो
धम्मे ठितो धम्मविनिच्छयञ्ञू।
नेवाचरे धम्मसंदोसवादं
तच्छेहि नीयेथ सुभासितेहि ।।सु.नि.।२।८।४।।(327)

पहेला उदाहरणमां अनुष्टुभ्नां त्रण चरण, बीजामां बे अने त्रीजामां एक छे. बीजा छंदना बीजा चरणमां रूपात्मक भागनूं पहेलूं रूप बे लघुना एकीकरणथी साध्य छे[a]. ए छन्दना चोथा चरणनी विक्रिया पण ए ज विधानथी दूर थाय छे.

१५ प्रस्तुत जूथनो बीजो छंद आनुष्टुभवैतालीयकी संसृष्टि छे.

---

[a] सुयगड अंगना प्रथम श्रुतस्कंधना बीजा अज्झयणना बीजा उद्देशने छेडे जे गद्य भाग छे, ते उपर नोंधेली त्रैष्टुभानुष्टुभी संसृष्टि साथे संवाद

वर्ण रूप अने मात्राना संगमनी आ त्रिवेणीनां दर्शन नीचेनां उदाहरण करावशे.

अज्ज पॅण्णरसो उपोसथो
दिव्या रत्ति उपट्ठिता।
अनोमनामं सत्थारं
हन्द पस्साम गोंदमं ॥सु. नि. । ११९ । १॥(1153)

वाहेत्वा सव्वपापानि
विमलो साधुसमाहितो ठितत्तो।
संसारमतिच केवली सो
असितो तादि पवुचसे स ब्रह्मा॥सु.नि.।११।६।१०॥(5119)

पहेला छंदमां अनुष्टुभूनां त्रण चरण अने एक वैतालीयनूं छे. बीजामां

धरावती जागतानुष्टुभी संसृष्टिमां मूळे होय एवो सबळ अभिप्राय बंधाय छे 'एव से उदाहु अनुत्तरनाणी अनुत्तरदसी अनुत्तरनाणदसणधरे । अरहा नायपुत्ते भगवं वेसालिए वियाहिये ॥' ए सळंग वाक्य गद्यात्मक छतां पद्यनी रीतनी पूर्वार्ध अने उत्तरार्धनो विवेक सूचवती एकवडी अने बेवडी विरामरेखायी मध्यमां अने अंते अंकित छे, प्रस्तुत अज्झयणना पहेला बे उद्देशानी समाप्ति पद्यबंधथी करी छे, ते जोतां त्रीजा उद्देशने छेडे गद्य नहि पण पद्य ज शमवे छे. आखा ए प्रथम श्रुतस्कंध उपर दृष्टि फेरवतां छेग्ग गाह (प्रा. गाहा) एटले स्वरसमहना अज्झयण सिवाय अन्यत्र कोइ पण ठेकाणे गद्यनो उपयोग करेलो जोवामां आवतो नथी. ए हकिकत ध्यानमां लेई हूं एने नीचे प्रमाणे पद्यस्वरूपमां वांचवा प्रेराऊं छूं–एवं से उदाहु अनुत्तर-नाणेऽनुत्तरदसीऽनुत्तरदसणनाणे । अरहा नायपुते भगवं' वेसालिए वियाहिए ॥.
१ १ १ १
आनूं पूर्वार्ध जागत चरणोमां अने उत्तरार्ध आनुष्टुभ चरणोमां छे. क्रियाना आवरणने लीधे एनूं पद्यात्मकपणूं भूलाय छे अने में सूचवेलूं स्वरूप स्वीकारतां आयार अने सूयगडना पद्यबंधोमां जागतानुष्टुभी संसृष्टिनो उमेरो करवो पडे.

एक अनुष्टुभ्नूं छे अने त्रण वृद्धवैतालीयनां छे. वैतालीय चरणनूं त्रीजूं रूप गुरु छतां लघु वांचवानूं छे. तेवी ज रीते वृद्धवैतालीयना छेल्ला चरणमां स रूप धडकाय छे ते छतां लघु लेखवानूं छे.

१६ चालु जूथनो त्रीजो छंद त्रैष्टुभवैतालीयकी संसृष्टि छे. एमां रूपरचना अने मात्रारचनाना प्रवाहो मळे छे. तेनूं उदाहरण

दूरं सभिया त्वमागतोऽसि[१०]
पञ्हे पुच्छितुमभिकङ्खमानो।
ते सन्तकरो भवामि पुट्ठो
अनुपुब्बं अनुधम्मं ब्याकरोमि ॥ सु.नि.।१।६।२॥ (511)

अहीं त्रण चरण वृद्धवैतालीयनां अने एक त्रिष्टुभ्नूं छे. छेल्ला चरणमां म्मं रूप लघु गणवूं पडे छे.

१७ जूथ मजकूरनो चोथो छंद इन्द्रवंशा छे. एनूं लक्षण आख्यानकालना महाख्यानना जागत उपजातिना पेटामां अपाई गयूं छे. ए रूपबंधनूं सुत्तकालनूं उदाहरण नीचे मुजब.

मालं न धारे न च गन्धमाचरे
मञ्ञे छमायं च सयेथ संतते।
एतं हि अट्ठङ्गिकमाहुऽपोसथं
बुद्धेन दुक्खन्तगुना पकासितं॥ सु.नि.।२।१४।२६॥ (401)

इन्द्रवंशानो वपराट सुत्तनिपातमां बहु कमी छे, जाणे ए छंद ताजो ज प्रचारमां आव्यो न होय !

१८ उक्त छंद पछी वृद्धवैतालीय छे, ते चालु जूथनो पांचमो छंद छे. तेनूं लक्षण वैतालीयकी उपजातिना पेटामां कहेवामां आव्यूं छे. इन्द्र-

---

१० मुद्रित पाठ दूरतो आगतोऽसि सभिया छे.

वंशानी पेठे ए पण आयार अने सुयगड अंगमां वपरायो न होवाथी उक्त प्रसंगमां उदाहरण आप्यूं न हतूं, ते अहीं सुत्तनिपातमांथी नीचे प्रमाणे:—

यो उप्पतितं विनेति कोधं
विसतं सप्पविसंऽव ओसधेहि।
सो भिक्खु जहाति ओरपारं
उरगो जिण्णं इव[११] तचं पुराणम्॥ सु.नि.।१।१।१॥ (1)

१९ ते पछी जूथमां कोकालियकी उपजाती आवे छे. ए छंद चौद अने सोळ मात्रानां चरणोना मिश्रणनो बनेलो छे. चरणो अभिन्न उच्चारणानां होवाथी जूथमांना आ छट्ठा छंदना नाममां उपजाति पद जोडयूं छे. कोकालियसुत्तमां एना प्रयोगने अनुलक्षीने एनूं नाम में पाडयूं छे. उदाहरण नीचे प्रमाणे.

यो लोभगुणे अनुयुत्तो
सो वचसा परिभासति अञ्ञे।
अस्सद्धो कदरियोऽवदञ्ञू
मच्छरि पेसुणियानुयुत्तो॥[१२] सु.नि.।३।१०।७॥(663)

२० सातमो छंद जूथमां कोकालिय छे. तेनां चारे चरण सोळ सोळ मात्रानां रचेलां होय छे. उपर कहेला कोकालियसुत्तना छेल्ला बे छंद आ मात्रात्मक पद्यरचनामां छे. तेमांथी एक उदाहरणरूपे आपूं छूं:

यावदुकूस्वा निरया इध वुत्ता
तत्थऽपि ताव चिरं वसितब्बं।

---

११ मुद्रित पाठ जिण्णमिव छे जेथी मात्र तूटे छे.

१२ मुद्रित पाठ अस्सद्धो कदरियो अवदञ्ञू मच्छरि पेसुणियम्हि अनुयुत्तो छे. तेथी मापमां बाधो आवे छे.

तस्मा पेसलसाधुगुणेसु
वाचं मनं सततं परिरक्खे॥[13]सु.नि.।३।१०।२२॥ (674)

आपेला उदाहरणना पहेला चरणमां दु थडकाई बृहत् बने छे. अने चोथा चरणमां चं अनुस्वारयुक्त होई ते पण बृहत् बने छे. छतां ए प्रत्येकनी बे मात्रा नहि, पण एक ज लेखाय छे.

२१ आठमो छंद आनुष्टुभकोकालियकी संसृष्टि छे. एना नाम प्रमाणे ए सौत्त अनुष्टुभ् अने कोकालियनां विजातीय चरणोना संयोग-थी नीपजे छे. एनूं उदाहरण नीचे प्रमाणे.

अकित्तयि विवटचक्खू
सक्खिधम्मं परिस्सयविनयं
पटिपदं वदेहि भद्दं ते
पातिमोक्खमथवाऽपि समाधिं[14] ।।सु. नि.।४।१४।७।। (921)

उपरना उदाहरणमां विषम चरणो सौत्त अनुष्टुभ्नां छे अने सम चरणो कोकालियनां छे. पहेला अने त्रीजा चरणमां सौत्त विक्रियानो उपयोग कर्यो छे. ए नडतर, एकीकरणसूचक अंक में मूकेल छे, तेथी स्हेजे दूर थई शकशे.

२२ नवमो छंद आनुष्टुभवैतालीयकोकालियकी संसृष्टी छे. एमां पण वर्ण रूप अने कलानो त्रिरंगी संगम छे. तेनूं उदाहरण:—

---

१३ मुद्रित पाठ **तस्मा सुचिपेसल०** छे. ते स्वीकारवाथी बे मात्रा वधी पडे छे.

१४ मुद्रित पाठ **पातिमोक्ख अथ** छे. ते प्रमाणे मापमां एक मात्रा वधी जाय छे.

यं मे कङ्खितमञ्ञासि
[15]विचिकिच्छमतारेसि नमो ते।
मुनि मोनपथेसु पत्तिपत्त
[16]अखिलादिच्चबन्धु सोरतोऽसि॥ सु.।नि.।३।६।३१॥(540)

अहीं पहेलुं चरण अनुष्टुभनुं छे, बीजुं कौकालियनुं छे; अने उत्तरार्ध वृद्धवैतालीय छंदनुं छे. छेल्ला चरणमां दि वरडी थडकाई बृहत् थवा जाय छे, ते न थडकावतां ह्रस्व उच्चारवानी छे.

२३ चालु व्याख्यानमां एकंदर ओगणीस छंदनी नोंध लीधी छे. तेमांना आर्चिक अनुष्टुभ्, आख्यानिक अनुष्टुभ्, आर्चिक त्रिष्टुभ्, त्रैष्टुभी उपजाति अने इन्द्रवज्रा, ए पांचना विकास विषे बीजा अने त्रीजा दृष्टिपातमां कहेवाई गयूं छे. बाकीना चौद सुत्तकालनी प्रसूति छे. तेमनो विकास हवे विचारणीय छे. ए चौद पैकी इन्द्रवंशा छंद त्रैष्टुभ-जागत गोत्रनी जागत शाखानी छेल्ली कूंपळी छे. ते पैकी सौत्त अनुष्टुभ् छंद आख्यानिक अनुष्टुभ् छंदमांथी अने सौत्त त्रिष्टुभ् छंद त्रैष्टुभी उप-जाति तथा तेना पेटामांथी फूटे छे, अने फाले छे. तेओ सौत्त विक्रियाना समीकरणोथी मळती सरळताने लीधे बहु प्रचार पामे छे. एक विवर्धित वर्ण बराबर बे केवळ अने एक गुरु रूप बराबर बे लघु, तेम ज बे केवळ बराबर एक विवर्धित अने बे लघु बराबर एक गुरु, ए चार समीकरणो सौत्त पद्यात्मक साहित्यनूं विशेष लक्षण नीवडे छे. उक्त विक्रियाए नवा छंदने जन्म नथी आप्यो, विद्यमान प्रकृतिभूत छंदोनी मूझावी नांखनारी अनेकानेक विकृतिओ ऊपजावी छे. छंदःशास्त्रना अष्टाक्षर अनुष्टुभ् वर्गमां

१५ मुद्रित पाठ विचिकिच्छं म अतारेसि नमो ते छे. तेमां मात्र घरतां वधारे मात्रा छे.

१६ मुद्रित पाठ अखिल आदिच्चबन्धु सोरतोऽसि छे; ते मापमां आडो आवे छे.

एकलो अनुष्टुभ् छंद ज सुत्तकालमां जाणीतो हतो, ज्यारे एकादशाक्षर त्रिष्टुभ् वर्गमां त्रैष्टुभी उपजाति, उन्पेंद्रवज्रा अने इन्द्रवज्रा, ए त्रण छंद साहित्यमां प्रतिष्ठा पामी चूक्या हता. पटेलनी विवृतिने सौत्त अनुष्टुभ् नाम में आप्यूं छे, अने त्रिष्टुभ् वर्गना त्रण छंदोनी विकृतिओ सौत्त त्रिष्टुभ् मां अंतर्भूत करी छे. सुत्तकालमां जे नवा छंद उदय पामे छे तेनां वर्णात्मक अने रूपात्मक अंगमां पण सौत्त विक्रिया प्रवर्ते छे. ए सुत्तकालना छंदो होई एमना नाम साथे सौत्त विशेषण जोडवानी आवश्यकता जणाती नथी. कालवच्छेदे करीने ए छंदोमां प्रस्तुत विक्रियानी प्रवृत्ति आक्षिप्त ज छे, कंठतः उक्त करवानी अपेक्षा नथी. दाखला तरीके सुत्तकालना छंदोमां मोखरे त्रैष्टुभानुष्टुभी संसृष्टि शुद्ध तेम ज वैकृत स्वरूपमां प्रचलित छे. ए संसृष्टि आख्यानकालना अनुष्टुभनां अने त्रिष्टुभ वर्गना चरणोनां जोटाणथी नीपजे छे. ए सजातीय चरणोनी चोकडी शुद्ध स्वरूपमां आख्यानकालनी अने वैकृत स्वरूपमां सौत्त विक्रियानी पेदाश छे, अर्थात् एमां विकासनां तत्त्वनो अभाव छे. ए तत्त्वो अवशिष्ट दश छंदोनी घटनामां नजरे पडे छे. जूना जाणीता छंदना पाया उपर नवा छदनी दीवालो ऊभी थाय छे, अने काम आगळ वधी बे त्रण भव्य प्रासादो बधाई चूके छे. एकनूं बांधकाम वधारे विकट होई अधुरूं रहे छे, तेने उत्तर काळमां कळश चडे छे. आ छंदोनो विकासक्रम सरळ तेम ज बोधक छे. अनुष्टुभ् अने त्रिष्टुभ् साथे एक नवा छंदनूं जोटाण प्रथम थाय छे. आ पद्यबध छंद शास्त्रमां वैतालीय संज्ञाथी जाणीतो छे. एना प्रत्येक चरणने छेडे एक गुरु रूपना ऊमेराथी नीपजता छंदने आ व्याख्यानमा वृद्धवैतालीय नाम आप्यूं छे. अनुष्टुभ् अने त्रिष्टुभ् साथे आ छंदोना योगथी आनुष्टुभवैतालीयकी संसृष्टि अने त्रैष्टुभवैतालीयकी संसृष्टि ए बे नवा छंदो बने छे. एमनां लक्षण बांधतां आपेलां उदाहरणना घटतरमां नवा छंदनां चरणोनो एकथी त्रण सूधी उत्तरोत्तर वधारो अनायासे दृष्टिए तरे छे. प्रस्तुत संसृष्टिओना वैतालीय अने वृद्धवैतालीय चरणोमां रूपना सहचारमां मात्रानूं पहेलवहेलूं दर्शन थाय छे.

ते पछी विजातीय जूना छंदने पडता मूकी सजातीय वैतालीय अने वृद्धवैतालीयना वधारे सुश्लिष्ट संयोगथी वैतालीयकी उपजाति ए मिश्र छंद प्रगटे छे, अने तेमांथी अमिश्र अर्धसम वैतालीय तथा वृद्धवैतालीय प्रादुर्भाव पामे छे. आवी रीते जूना नवाना योगथी पहेलां आनुष्टुभकौकालियकी संसृष्टि तथा आनुष्टुभवैतालीयकौकालियकी संसृष्टि, ते पछी कौकालियकी उपजाति अने छेवटे कौकालिय छंद अस्तित्वमां आवे छे. आ छेल्लो पद्यबंध आय संपूर्ण मात्रात्मक समचतुष्पद छंद छे. ए उपरांत बीजा एक मात्रात्मक पद्यबंधनूं बीज गाथाष्टुभी संसृष्टिनी रचनामां रोपाय छे. एमां अनुष्टुभूनां चरणनो अने गाथा किंवा पथ्या आर्यांना पंदर अने अढार मात्राना खंडनो योग सधाय छे. तेमां चार मात्रानो खंड ऊमेराई बीजी पेढीए संपूर्ण मात्रात्मक गाथा किंवा आर्या प्रकटे छे. अत्रे आपेला विवेचनने अनुसरीने मुक्तकालना नवा छंदना विकासनो क्रम आ प्रमाणे गोठवायछे. प्रथम जूनानवानी संसृष्टिरूप मिश्र छंद, ते पछी सजातीय बे नवानी उपजातिरूप मिश्र छंद अने अंते अमिश्र छंद. ए क्रम ऋक्कालनी पद्यरचनाए साधेला क्रमथी जुदो पडे छे. एमां आपणे जोई गया ते प्रमाणे प्रथम गायत्री आदि मौलिक छंद प्रगटे छे, ते पछी ककुभ् आदि मिश्र छंदनूं सप्तक गायत्र अने जागत चरणना जोडाणथी उद्भवे छे अने ते पछी काकुभ प्रगाथ आदि संमिश्र छंद सतोबृहती साथे ककुभ् आदि छंदना योगथी जनमे छे. ए काळना केटलाक छंद आख्यानकालमां अने आख्यानकालना केटलाक मुक्तकालमां ऊतरी आवे छे. तेमनी साथे मैत्री साधी मुक्तकालना नवा छंदो प्रसिद्धिमां आववा मथे छे; अने चलण वधतां पाछळथी अमिश्र छंद तरीके पद्यबंधमां स्थान ले छे.

२४ मुक्तकालना नवा छंदोनां नामनी समजूती तेमनां लक्षणना प्रस्तावमां मोटे भागे अपाई चूकी छे. एमांना घणाखरानां रूढ नाम न मळ्याना कारणथी तेमने नवां नाम आपवानी जरूर पडी हती. ए नाम-

समावेला विषयनूं नहि; पण तेमां वापरेल छंदनूं ज्ञापक छे. आ अपवादभूत प्रयोग एवूं अनुमान करवा प्रेरे छे के, वेआलीअ छंदना नाममां असाधारण आकर्षण हतूं. एनामां नवीनता उपरांत मनमोहक गेयता हती. भास कविना **प्रतिज्ञायौगन्धरायण** नाटकना बीजा अंकमां वेआलिआ बोल आवे छे, ते वीणाशिक्षिकाना अर्थमां वपरायो छे. ते उपरथी अटकळ बंधाय छे के इसवी सन पूर्वेना अग्रिम प्राकृतमां वेआली बोलनो वीणाना अर्थमां प्रयोग रूढ हशे. ए अटकळने **जीवाजीवाभिगमसूत्र**।३।मांथी **पाइअसद्दमहण्णवो**मां उतारेला वीणाविशेषना अर्थना वेआलिआ बोलथी टेको मळे छे. वेआलीना एटले वीणाना साज साथे गावानो छंद ते **वेआलीअ**; तेवी ज रीते वीणामां उतारी मंगळपाठ गानारो बंदिजन ते वेआलिअ. अग्रिम प्राकृतनो बीजभूत वेआली बोल लुप्त थयो, पण तेना उपरथी थयेला वेआलिआ, वेआलिअ, तथा वेआलीअ, ए त्रण बोल प्राकृतमां ऊतरी आव्या; अने ते वैतालिका वैतालिक तथा **वैतालीय** एवा स्वरूपे संस्कृतमां पण रूढ थया. आख्यानकालना कुशीलवोनी वीणामां जेम **रामायण**नो श्लोक झणत्कार करी रहेतो हतो तेम सुत्तकालना णिग्गन्थ अने भिक्खुओनी वीणामां झणत्कार मचावी मूकता आ नवा छंदनूं **वेआलीअ** नाम, कोण कहेशे के, सार्थक नथी?

२५ सुत्तसाहित्यनी अनोखी पद्यरचना कया समयमां प्रगटी, ए प्रश्न अहीं उपस्थित थाय छे. **आयार** अने **सूयगड** अंगना प्रथम श्रुतस्कंध सुधर्मा स्वामीनी प्रसादी छे. वीरसंवत् २० मां ए युगप्रधान गणधर निर्वाण पाम्या हता, एम **परिशिष्टपर्व**मां आपणे वांचिये छिये[१८]; एटले करीने ए अंगोना निर्माणनो उत्तर अवधि एमना निर्वाणना वर्षथी मोडो होई शके नहि. बीजी तरफ पूर्व अवधि एमनी प्रव्रज्याना वर्षथी वहेलो पण न होई शके. एकंदरे विचारतां संभव ए छे के तीर्थंकरना पाटे आव्या पछी सुधर्मा स्वामीए प्रव्रज्या स्वीकारनारनी अनुकूळता माटे जैन सिद्धांतना उक्त ग्रंथ अग्रिम

१८ जुओ प.प.।४।५७-५९।

प्राकृतमां रच्या. ए अटकळ अनुसार हूं ए बेनो निर्माणकाळ इसवी सन पूर्वेना पांचमा शतकना बीजा चरणनी आसपास टेवूं छूं. जर्मन विद्वान् जेकोबी प्रस्तुत जैन अंगोनो रचनाकाळ बहु मोडो माने छे. **सुत्तनिपात** पछी **धम्मपद** अने **धम्मपद** पछी **आयार** तथा **सूयगड**नी रचना थई, एवो एमनो मत छे. तेओ जणावे छे के "पालिमां रचायला प्राचीन (बौद्ध) ग्रंथोमां **आर्या** छंदमां रचेली कविता जोवामां आवती नथी; **धम्मपद**मां तो ते नथी ज, अने बीजा ग्रंथोमां पण मने ते मळी नथी. पण **आयार** अने **सूयगड** अंग बन्नेमां एक एक अज्झयण आखूं ए **आर्या** छंदमां छे, जे निःसंशय चालु **आर्या** करतां जूना रूपमां छे; अने संभवित छे के चालु आर्या एनी प्रसूति छे[१९]." पंडित जेकोबीना आ लखाणमां **आयार**ना उपधानसुय अज्झयणनो अने **सूयगड**ना इत्थीपरिन्ना अज्झयणनो निर्देश रहेलो समजाय छे. ए बे अज्झयण **गायानुष्टुभी संसृष्टि**ना प्रस्तावमां जणाव्या प्रमाणे अनुष्टुभ अने गायाना योगथी बनेला छंदमां रचायलां छे.

---

१९ जुओ. S.B.E, Vol. XXII Intro. xli माथी नीचेनो उतारो: "Ancient Pali Works seem to contain no verses in the Āryā metre, at least there are none in the Dhammapadam nor have I observed them in other works But both the Achārāṅga and Sūtrakritāṅga contain each a whole lesson in Āryā verses......" जुओ वळी S B E, Vol. XLV, p. 271. foot-note 2, "The whole Adhyāya(सू.१।४।)is composed in the archaic form of the Āryā of which I have treated at length in the thirty-eighth Volume of the Journal of the German Oriental Society, p. 594." माराथी प्रो. जेकोबीए करेला विवेचननो लाभ लेवायो नथी. **गायानुष्टुभी संसृष्टि** ए नामकरण पण मारुं पोतानुं घडेलुं छे, अने ए संसृष्टिमार्थी मोटी **आर्या** क्रमशः प्रकटवी ए वाद पण मारो पोतानो छे.

ए मिश्र छंदने आर्या नाम आपी शकाय नहि. जो गाथानुष्टुभी संसृष्टिने तेमां वपरायला गाथिक खंडने लीधे गाथा किंवा आर्या नाम अपातूं होय, तो नीचे आपेला छंदने कयूं नाम आपवूं ?

जो सहइ हु गामकण्टए
अक्कोसपहारतज्जणाओ अ।
भयभेरवसद्दसप्पहो
समसुहदुक्खसहे अ जे स भिक्खू ॥ द.वै.।१०।११॥

आ उदाहरणमां पहेलुं चरण वैतालीयनूं अने त्रीजूं तथा चोथूं ए बे इद्धवैतालीयनां छे ए कारणथी एने वैतालीयकी उपजाति संज्ञा आपवी के पछी बीजूं चरण वृद्धतरगाथिक खंडनूं छे ते कारणथी गाथा किंवा आर्या संज्ञा आपवी ? खरूं जोतां मिश्र छंदनो शुद्ध छंदनी संज्ञाथी व्यवहार थाय ज नहि. एटले करीने मारे तेने गाथावैतालीयकी संसृष्टि नाम आपवूं पडे छे. त्रण गाथिक खंड पैकी सुधर्मा स्वामीने तो, पंदर मात्रानो अने अढार मात्रानो, ए बे खंडो ज जाणीता हता. ए बे खंडनी अने अनुष्टुभूनां चरणनी संसृष्टि जेने में गाथानुष्टुभी संसृष्टि संज्ञाथी ओळखावी छे, अने जेने जर्मन विद्वद्वर्य आर्या कहे छे तथा प्राचीन बौद्ध सुत्तमां ते छे नहि एम जणावे छे, तेनो प्रयोग प्राचीनतम सूक्तसंग्रह जे सुत्तनिपात, तेमां अनेक स्थळे मळी आवे छे. एनूं मेत्तसुत्त समग्र अने तुवट्टकसुत्तनो मोटो भाग पण ए ज मिश्र छंदमां छे[२०]. आ रीते, प्राचीन बौद्धसाहित्यमां प्रस्तुत गाथानुष्टुभी संसृष्टिनो प्रयोग नथी एम जे पंडित जेकोबी कहे छे, ते निराधार ठरे छे. जैन अने बौद्ध उभय सुत्तसाहित्यमां गाथा किंवा आर्याना वृद्ध अने वृद्धतर खंड पद्यरचनामां वपराया छे. त्रीजो बार मात्रानो खंड, जेने में गाथानुष्टुभी संसृष्टिनूं लक्षण बांधतां लघु गाथिक खंड एवी संज्ञाथी

२० जुओ आ दृष्टिपातना अनुसंधानमां आपेलूं परिशिष्ट.

ओळखाव्यो छे, तेनो प्रयोग जैन **दसवेआलिय** (सं. दशवैकालिक)मां पहेलवहेलो नीचेना उदाहरणमां मने हाथ लाग्यो छे.

पढमं नाणं तओ दया
एवं चिट्ठइ सव्वसंजए।
अन्नाणी किं काही
किंवा नाही छेअपावगं ॥ द. वे. ।४।१०॥

उपरना उतारानूं त्रीजूं चरण गाथिक लघु खंडनूं बनेलुं छे; बाकीनां त्रण चरण सुत्तकालमां प्रगटेला **वैतालीय**नां छे. प्रस्तुत गाथिक लघु खंड प्रचारमां आवतां संपूर्ण **गाथा** किंवा **आर्या**नूं प्रथम दर्शन पण **दसवेआलिय** ज नीचेना उदाहरणमां करावे छे.

गेरुअवन्निअसेढिअ—
सोरट्ठिअपिट्ठकुक्कुसकए य।
उक्किट्ठमंससट्ठे
संसट्ठे चेव बोद्धव्वे ॥ द. वे. । ५ । ३४ ॥

दसवेआलिय सुधर्मा गणधरना प्रशिष्य शय्यंभव स्वामीनी कृति छे. ए मुनिनूं धर्मराज्य वीरसंवत् ७५ थी ९८ सूधी प्होच्यूं हतूं. **गाथानुष्टुभी संसृष्टि**नी उत्पत्ति तो तेना पूर्वे एक शतक जूनी, एटलेके, जैन बौद्ध संघोनी स्थापनाना अरसानी संभवे छे. आ लांबी चर्चाथी स्पष्ट थशे के **गाथानुष्टुभी संसृष्टि**ने प्राचीन **आर्या** कहेवामां तेम ज **आयार** अने **सूयगड** अंगने **धम्मपद** पछी मूकवामां पंडित जेकोबीनी कंइक सरतचूक थई छे. जो **गाथानुष्टुभी संसृष्टि**ना प्रयोगना कारणथी उक्त जैन अंगोने **धम्मपद** पछी मूकिये, तो बौद्ध **सुत्तनिपात**मां तेनो प्रयोग होवाथी तेने पण **धम्मपद** पछी मूकवानो प्रसंग प्राप्त थाय, जे सर्व कोइ कहेशे के अनिष्ट छे. ए ए सुत्तोना संग्रहनो उत्तर अवधि बुद्ध भगवानना प्रथम शिष्योनी जीवनचर्याथी मोडा नथी, एवो पश्चिमना विद्वानोनो निर्णय छे. **धम्मपद**नो संग्रह

सुत्तनिपात पछी थयो छे ए विषे मतभेद छे नहि अने आगळ उपर थवानो संभव नथी. दुश थयेला शब्दो जूना प्रयोगो अने भिक्खुनी सादी असली रहेणीकरणीने आधारे ठरी चूक्यूं छे के सुत्तनिपात जूनामां जूनो बौद्ध पद्यात्मक संग्रह छे. बौद्ध संघनी स्थापना ते एनो पूर्व अवधि मनाय छे. आयार अने सूयगड अंग एक ज जैन मुनिनी कृति छे, ज्यारे सुत्तनिपात अनेक भिन्नकाळना बौद्ध भिक्खुनां सुत्तोनो संग्रह छे. पद्यबंधनी कसोटी सूचवे छे के ए संग्रहनो त्रिष्टुभानुष्टुभी संसृष्टिमां रचायलो सुत्तवाळो भाग आयार अने सूयगडथी कंइक जूनो जणाय छे; अने वैकालियक कुटुंब साथे संबंध धरावतो भाग उक्त जैन अंगोथी अर्धी सदी मोडो रचायलो संभवे छे. संपूर्ण आर्या एमां उपलब्ध नथी ते कारणथी प्रस्तुत बौद्ध सुत्त शय्यंभव मुनिना दसवेआलियनी पूर्वे गोठवाय छे. सामान्य रीते विद्वानो प्राचीन जैन साहित्यने प्राचीन बौद्ध साहित्यना पछी मूके छे, ए ग्रह जैन अंग अने त्रिपिटकनी पारंपरिक वाचनानी भाषामां जे अंतर जणाय छे तेने लीधे बंधायो होय, तो ते शक्य छे. परंतु पद्यबंधनी कसोटी तेम ज सुधर्मा स्वामीना धर्मराज्यनी तारीखो ए ग्रहनी विरुद्ध पडे छे. प्राचीनतम जैन अने बौद्ध सुत्तसाहित्य समकालीन छे. वधारे चोकखाइथी कहिये, तो सुत्तनिपात-मां केटलांक सुत्तो आयार अने सूयगड अंगना पहेलानां, केटलांक ते बेना पछीनां अने केटलांक समकालीन लागे छे.

२६ आयार तथा सूयगडनो अने सुत्तनिपातनो पद्यबंध समान छे, छतां जैन अंग अने बौद्ध सुत्तनी भाषाना बाह्य स्वरूपमां भारे अंतर छे. श्वेताम्बरोनी अर्धमागधी किंवा आर्ष बोली अने हीनया-नीओनी मागधी किंवा पालि बोली जाणे जुदे काळे वपराती जुदी भाषाओ होय एवो आपततः भास थाय छे. परंतु कहेवूं जोईए के ते भास ज छे, मिथ्या भास ज छे. पद्यबंधनी समानता जेवी उपर नोंधी छे, तेवी ज एमना शब्दकोशनी समानता छे. एमना वैयाकरण

प्रयोगनी छे, एमनामां प्रतिबिंब पामता देशकाळनी छे. धर्मवासनाने अंगे मानवहृदयमां क्षोभ मचावता महाप्रश्नो पण एना ए उभयमां चर्चाय छे. संघना अंदरनी अने बहारनी संस्कृति पण अभिन्न ज छे. आ बधा संवादी सुरोमां विसंवादी सुर जे संभळाय छे, ते मात्र वर्णना तारमांथी नीकळे छे. संवादी सुर रचनाकाळनूं भान करावे छे, ज्यारे विसंवादी सुर कंठस्थ श्रुतना संग्रहनो अने पत्रारोहणनो काळभेद सूचवे छे. आयार सूयगड अने सुत्तनिपातना निर्माणकाळनो निर्देश गया प्रस्तावमां कर्यो छे. उक्त साहित्यनो उदय लगभग अभिन्न समये थयो समजाय छे. परंतु ते भिन्नभिन्न काळे संगृहीत अने पत्रारूढ थाय छे. इसवी सन पूर्वे चोथा सैकाना अंत्य चरणमां पाटलिपुत्रनो जैन संघ अंगोनो संग्रह करे छे. त्यारपछी आशरे एक हजार वर्षे समग्र जैन सिद्धांत देवर्द्धि गणीना प्रशस्य प्रयासे पत्रारूढ थवा पामे छे. एटला लांबा गाळामां एकना मुखेथी बीजाना मुखे, बीजानाथी त्रीजाना, एम परंपराए ऊतरी आवेलां अंगोनी वाचनानी भाषाना एकदेशमां उत्क्रांतिनो[२१] अमल अधिकतर अने बलवत्तर थाय, ए समजाय एवूं अने मनाय एवूं छे. पांचेक शतक उपर थयेला भक्त नरसंहनां कंठप्रतिकंठ ऊतरी आवेलां लोकप्रिय पदनी ज स्थिति जुओ. ते जाणे गई काले ज कोइए रच्यां होय एवा स्वरूपमां जूनापणानो दावो न करनारा हस्तलिखित चोपडाओमां अने काव्यदोहन जेवा मुद्रित संग्रहोमां शूं नथी जणातां ? एमां पांचसें वर्ष उपरना गूजरातीनी छांट सरखी पण जडती नथी. तेना मुकाबलामां दश शतक वटावनार अंगोनी स्थिति बेशक सारी छे. उत्क्रांतिनो असर एकली [२२]वर्णगत ज नजरे पडे छे. वर्णोनूं आ उत्क्रमण [२३]रूपना उत्क्रमणनो भ्रम ऊपजावे छे. सुत्तनिपातमां वर्णगत उत्क्रमण थयूं छे खरूं; पण ते बहु अल्प छे. त्रिपिटकनो संग्रह अंगोना करतां

२१ Evolution.
२२ Phonological.
२३ Morphological.

अर्धी सदी व्हेलो थयो हतो; अने तेनी साथे वाचना पण ते ज काळे स्थापित थई हती. इसवी सन पूर्वे चोथा शतकना पहेला चरणमां बीजी बौद्ध महासंगीतिए एने स्थिर स्वरूप आप्यूं हतूं. ए ज स्वरूपमां अशोकना शासनथी त्रिपिटक सिंहलद्वीपमां प्होंचवा पाम्यूं हतूं. एनी वाचनामां इसवी सन पूर्वेना त्रीजा शतकनी भाषा जळवाई रहानी प्रतीति अशोकना शिलालेखोनी भाषा साथेना साम्यथी थाय छे. त्रिपिटकनो संग्रह बुद्ध अने महावीरना निर्वाणना समयथी आगेरे दोढसो वर्स वर्ष मोडो छे. प्रेमानंदना वखतना गूजरातीमां अने हालना गूजरातीमां थोडूं ज अंतर छे. ए दृष्टांतथी आपणे मानी शकिये के भगवान बुद्ध अने महावीरे लगभग सुत्तनिपातनी ज भाषा द्वारा लोकने प्रबोध्या हता. ए भाषाने श्वेतांबरो अर्धमागधी नाम आपे छे, अने हीनयानीओ मागधी कहे छे. ए बंने संज्ञा मगधने लक्षित करे छे. ते काळना काशी, कोशल, विदेह, वत्स, शूरसेन आदि देशोमां मगध देश अग्रस्थान धरावतो हतो. गंगानदीना पात्रमां आवेला ए देशोमां हाल जेम हिंदी बोलाय छे तेम अढी हजार वर्ष उपर त्यां अभिन्न प्राकृत बोलातूं हतूं. एनी विविध बोलीओमां राजकीय महत्त्वाने लीधे मगधनी बोली आगळ पडती होय अने तेने लीधे बुद्ध तथा महावीरे उपदेशमां एनो उपयोग कर्यो होय एम संभवे छे. ते मगधनी प्राकृत बोली होवाथी एक रीते मागधी कहेवाय; अने इतर देशमां सर्वसुगम थवा माटे तेमांना प्रांतिक प्रयोगनो त्याग करवाना कारणथी ते बीजी रीते अर्धमागधी पण कहेवाय. आम एक ज अभिन्न प्राकृतनां बे जुदां नाम पड्यां जणाय छे. अहीं एक बाबत स्पष्ट करवानी जरूर छे के वररुचि हेमचंद्र आदि वैयाकरणो जेने मागधी नाम आपे छे अने भास कालिदास आदि कवि जेने नीच वर्णना मुखमां मूके छे, ते मागधीनाथी आ बुद्ध अने महावीरनी मागधी बहु भिन्न छे. व्याकरण अने नाटकनी मागधी करतां आयार, सूयगड अने सुत्तनिपातनी मागधी बहु जूनी छे. प्राचीन मागधी-

नो विश्वासपात्र ऐतिहासिक नमूनो एक बच्यो छे. मथुराथी बार माइल उपर सोनौत गाममांथी एक पूतळा नीचे ब्राह्मी लिपिमां कोतरेलो त्रण लीटोनो लेख मळी आव्यो छे. ते प्रसिद्ध पौरातनिक जयस्वालजीए इसवी सन १९१९ ना The Journal of the Bihar and Orissa Research Society मां प्रकाशित कर्यो छे. एओ प्रस्तुत लेख नीचे प्रमाणे वाचे छेः–(१) सिनि दरसि कारिता (२) + + + (ल्) आचा कुनिकाज (३) । + + (न) + कता।. हुं, सिनि नहि पण सिरि हशे, एम मानूं छूं. खूटता अक्षर पूरा करी ए लेख हुं नीचे मुजब वांचूं छूंः–सिरि दरिस(क) कारिता (२) (पतिमा) लाआज कुनिकाज (३) + + + न (अ) कता।[२४]. एनो अर्थ आ प्रमाणे थाय छेः–"राजा कुणिकनी (आ प्रतिमा) श्रीदर्शके करावी (अने) + + + करी." आ लेखमां प्रयोजेलो कुनिक (सं. कुणिक) बोल ते शैशुनाग वंशना अजातशत्रुनूं बीजूं नाम छे. प्राचीन जैन सुत्तमां कुनिक के कुणिक नामथी ज ए राजानो निर्देश करेलो छे. ते महावीर अने बुद्ध भगवानना सहजीवी हतो; अने ए बंनेना प्रसंगमां पण आव्यो हतो. उक्त लेखमां दर्शकनो उल्लेख छे, ते कुणिक अजातशत्रु पछी मगधनी गादीए आवनार राजा. एणे पितानी प्रतिमा तेना स्वर्गवास पछी कोइ शिल्पी पासे करावी हती, जेना नामना अक्षर लेखमां खवाई गया छे. मरनार राजानी प्रतिमा करावी राखवानो संप्रदाय बहु जूनो छे. भास कवि **प्रतिमादशरथ** नाटकमा आपणने तेनो परिचय करावे छे[२५]. आ लेखनूं अग्रिम प्राकृत ते महावीर अने बुद्धनी धर्मदेशनानुं प्राकृत. आयार, सूयगड अने **सुत्तनिपात**नी भाषा मूळे आने मळती होवी जोईए. ते इसवी सन पूर्वे पांचमा छट्ठा सैकानी लोकभाषा. ए

२४ संस्कृत छाया नीचे प्रमाणे–श्रीदर्शनकारिता प्रतिमा राज्ञः कुणिकाना ++++न च कृता।. अहीं लाआन कुनिकाज (सं. राज्ञः कुणिकस्य) मानार्थे बहुवचन छे.

२५ जुओ प्र. द. १३।

जमानाना सुशिक्षित वर्गनी पण ए जन्मभाषा हती. परंतु व्यवहारमां अने साहित्यमां एओ वैनयिक[२६] संस्कृतनो उपयोग करता हता. तेने अने अग्रिम प्राकृतने एटलो बधो नजीकनो संबंध हतो, के प्राकृतभाषी पुरुषो ते स्हेलथी समजी शकता. ए काळ आ रीते द्वैभाषिक हतो. नाटक प्रायः जमानानूं प्रतिबिंब रजू करतूं होवाथी रंगभूमिए पण द्वैभाषिकतानो गर्भ धारण कर्यो. नाटकसाहित्यमां उक्त बे भाषाओ वच्चे सहकार थयो तेना परिणामे वैनयिक संस्कृत तेनी शिष्टताने लीधे राजाना मुखमां मूकातूं हतूं, त्यारे अग्रिम प्राकृत तेनी मृदुताने लीधे राणीना मुखमां सत्कार पामतूं हतूं. बीजी तरफ अग्रिम प्राकृतमां धर्मदेशना गजावनार महावीर स्वामीए चौद पूर्वनी रचना वैनयिक संस्कृतमां कोली होवानूं कहेवाय छे. तात्पर्य ए छे के इसवी सन पूर्वे पांचमा छट्ठा सैकामां वैनयिक संस्कृत अने अग्रिम प्राकृत बंने एकसरखां प्रचारमां हतां, ते पैकी अग्रिम प्राकृत जनतानी जन्मभाषा होई ते भाषामां आयार, सूयगड अने सुत्तनिपात रचायां हतां.

२७ सुत्तकाळनी महत्ता भरतखंडना इतिहासमां जैन अने बौद्ध ए बे महान धर्मनी स्थापनाने लीधे छे. एक काळे बे प्रभाकर युगनो अंधकार दूर करवा उदय पामे छे. एक साथे बे सुधाकर तृषातुर जगतने सुधानूं पान करावे छे. ए महोदय पर्वमां निर्ग्रन्थ अने भिक्षुओना आवाहनथी सरस्वती नवा देहे प्राच्य देशमां अवतरे छे. आ नवो देह ते चालु व्याख्यानमां वर्णवेली मात्रात्मक पद्यरचना. ए नवी रचनानो पहेलो अने छेल्लो सौत्त फाल कोकालिय छंद छे. ते छंद संसृष्टि अने उपजातिनी अवस्थाओ पसार करी नवो जन्म लेई समचतुष्पद स्वरूपे दर्शन दे छे. ए ज अवस्थाओ वटावी कोकालियना पूर्वे रूपमात्रात्मक अर्धसमपद वैतालीय अने वृद्धवैतालीय ए बे सहोदर मिश्र छंद प्रगटे छे. वचगाळामां गाथा किंवा आर्याना वृद्ध अने वृद्धतर ए बे खंड गाथानुष्टुभी संसृष्टिना चरणोना घडतरमां योजाय छे, पण संसृष्टिनी भूमिकाथी आगळ वधता नथी. सिद्ध समचतुष्पद मात्रात्मक छंद

२६ Cultural.

परिशिष्ट

कोकालियसुत्त[1]

प्रचलित वाचना	नवी वाचना
यो लोभगुणे अनुयुत्तो	यो लोभगुणे अनुयुत्तो
सो वचसा परिभासति अञ्ञे ।	सो वचसा परिभासति अञ्ञे ।
अस्सद्धो कदरियो अवदञ्ञू	अस्सद्धो कदरियोऽवदञ्ञू
मच्छरि पेसुणियम्हि अनुयुत्तो ॥७॥	मच्छरि पेसुणियानुयुत्तो ॥७॥
मुखदुग्ग विभूतमनरिय	मुखदुग्ग विभूतं अनरिय
भूनहु पापक दुक्कतकारि ।	भूनहु पापक दुक्कतकारि ।
पुरिसन्तकलि अवजात	पुरिसन्तकारि अवजात
मा बहु भाणिऽध नेरयिकोऽसि ॥८॥	बहु माऽभाणिऽध नेरयिकोऽसि ॥८॥
रजमाकिरसि अहिताय	रज आकिरसि अहिताय
सन्ते गरहसि किब्बिसकारि ।	सन्ते गरहसि किब्बिसकारि ।
बहूनि दुच्चरितानि चरित्वा	बहूनि दुच्चरितानि चरित्वा
गच्छिसि खो पपतं चिररत्तं ॥९॥	गच्छिसि खलु पपतं चिररत्त ॥९॥
न हि नस्सति कस्सचि कम्मं	न हि नस्सति कस्स चि कम्म
एति ह न लभतेऽथ सुवामि ।	एति ह न लभतेऽथ सुवामि ।
दुक्खं मन्दो परलोके	दुक्ख मन्दो परलोके
अत्तनि पस्सति किब्बिसकारी ॥१०॥	अत्तनि पस्सति किब्बिसकारि ॥१०॥
अयोसंकुसमाहतट्ठानं	अयोसङ्कुमाहतठानं ।
तिण्हधारं अयसूलमुपेति ।	तिण्हधारमयसूलमुपेति ।
अथ तत्तअयोगुळसन्निभं	अथ तत्तअयोगुळसंनिभ
भोजनमत्थि तथा पतिरूपं ॥११॥	भोजनमत्थि तथा पतिरूप ॥११॥

---

१ आ सुत्तनो पूर्व भाग गद्यमां अने उत्तर भाग पद्यमां छे पद्यात्मक भागना पहेला छ श्लोक अन्य वृत्तमां होवाथी अहीं नथी उतार्या श्लोक ७–२० कोकालियकी उपजातिमां अने ते पछीना बे कोकालिय छंदमां छे, माटे ते अहीं आप्या छे. एनुं वधारण तपासतां वाचा संधिनो प्रयोग सुत्तनाळमां रुढ थयो जणातो नथी

न हि वग्गु वदन्ति वदन्ता
नाभिजवन्ति न ताणमुपेन्ति।
अंगारे संथते सेन्ति
अग्गिनिसमं जलितं पविसन्ति॥
१२॥

जालेन च ओनहियाना
तत्थ हनन्ति अयोमयकूटेहि।
अन्धंऽव तिमिसमायन्ति
तं विततं हि यथा महिकायो॥१३॥

अथ लोहमयं पन कुम्भिं
अग्गिनिसमं जलितं पविसन्ति।
पच्चन्ति हि तासु चिररत्तं
अग्गिनिसमासु समुप्पिलवासो॥
१४॥

अथ पुब्बलोहितमिस्से
तत्थ किं पच्चति किब्बिसकारी।
यं यं दिसतं अधिसेति
तत्थ किलिस्सति सकुसमानो॥१५॥

पुब्बावसथे सलिलस्मिं
तत्थ किं पच्चति किब्बिसकारी
गन्तुं न हि तीरमपत्थि
सब्बसमा हि समन्तकपल्ला॥१६॥

असिपत्तवनं पन तिण्हं
तं पविसन्ति समच्छिदगत्ता।
जिह्वं बलिसेन गहेत्वा
आरचयारचया विहनन्ति॥१७॥

अथं वेतरणिं पन दुग्गं
तिण्हधारं खुरधारमुपेति।
तत्थ मन्दा पपतन्ति
पापकरा पापानि करित्वा॥१८॥

खादन्ति हि तत्थ रुदन्ते
सामा सबला काकोलगणा च।

न हि वग्गु वदन्ति वदन्ता
नाभिजवन्ति न ताणमुपेन्ति।
अङ्गारे सेन्ति संतते
अग्गिनिसमं जलितं पविसन्ति॥
१२॥

जालेन च ओनहियाना
तत्थ हनन्ति अयोकूटेभि।
अन्धंऽव तिमिरमायन्ति
तं विततं हि यथा महिकायो॥१३॥

अथ लोहमयं पन कुम्भिं
अग्गिनिसमं जलितं पविसन्ति।
पचन्ति तासु चिररत्तं
अग्गिनिसमासु समुप्पिलवा सो॥
१४॥

अथ पपुण्णलोहितमिस्से
तत्थ किं पचति किब्बिसकारी।
यं यं दिसतं अधिसेते
तत्थ किलिस्सति संफुसमानो॥१५॥

पुळआवसथे सलिलस्मिं
तत्थ किं पचति किब्बिसकारी।
गन्तुं न हि तीरमपत्थि
सब्बसमा हि समन्तकपल्ला॥१६॥

असिपत्तवनं पन तिण्हं
तं पविसन्ति समुच्छिन्नङ्गा।
जिह्वं बलिसेन गहेत्वा
आरचयारचया विहनन्ति॥१७॥

अथ वेतरणिं पन दुग्गं
तिण्हं खुरधारं खु उपेन्ति।
तत्थ च मन्दा पपतन्ति
पापकरा पापानि करेत्वा॥१८॥

खादन्ति हि तत्थ रुदन्ते
सामा सबला काकोलगणा।

सोणा सिगाला पटिगिज्झा कुलला वायसा च वितुदन्ति॥१९॥	सुना सिगाला पटिगिज्झा कुलला वायसा च वितुदन्ति॥१९॥
किच्छा वताथं इध वुत्ति यं जनो पस्सति किब्बिसकारी। तस्मा इध जीवितसेसे किचकरो सिया नरो न च मज्जे॥२०॥	किच्छा वतायमिधवत्ती यं यं पस्सति किब्बिसकारी। तस्मा इध जीवितसेसे नो किचकरो सिया न मज्जे॥२०॥
ते गणिता विदूहि तिलवाहा ये पदुमे निरये उपनीता। नहुतानि हि कोटियो पञ्च भवन्ति द्वादस कोटिसतानि पुनऽञ्ञा॥ २१॥	ते गणिता विदूहि तिलवाहा ये पदुमे निरये उपनीता। न तानि कोटी पञ्च भवन्ति द्वादस कोटिसतानि पुनऽञ्ञा॥ २१॥
यावदुक्खा निरया इध वुत्ता तत्थऽपि ताव चिरं वसितब्बं तस्मा सुचिपेसल साधुगुणेसु वाचं मनं सततं परिरक्खेऽत्ति॥२२॥	यावदुक्खा निरया इध वुत्ता तत्थपि ताव चिरं वसितब्बं। ता सुचिपेसलसाधुगुणेसु वाचं मनं सततं परिरक्खे॥२२॥
कोकालियसुत्तं निट्ठितं	सु.नि. ।३।१०।७-२२। (86)

तुवट्टकसुत्तं।[२]

पुच्छामि तं आदिच्चबन्धुं विवेकं सन्तिपदं च महेसिं। कथं दिस्वा निब्बाति भिक्खु अनुपादियानो लोकस्मिं किंचि॥ १॥	पुच्छामि आदिच्चबन्धुं विवेकिनं सन्तिदं महेसिमहं। कथं दिस्वा निब्बाति भिक्खू लोकस्मिं किंचि अनुपादियानो॥ १॥
मूलं पपंचसंखाया (ति भगवता) मन्ता अस्मीति सब्बमुपरुन्धे।	मूलं प्रपञ्चसंखाय मन्ता अस्मिऽत्ति सब्बमुपरुन्धे।

२. आ सुत्तमां कुल चाळीस गाथिक चरणो छे. ते पैकी अठ्ठावीस वृद्धतर खंडनां अने चार वृद्ध खंडनां बनेलां छे. उत्तर काळनी गाथा विना आर्याना बंधारणमां रूढ थयेला वाना इत्याह आदि चतुष्काल संधि सुत्तकालमां स्थापित थया न हता, ते चरणना आरंभे जोवामां आवता अष्टकल संधिना प्रयोगथी प्रतीत थाय छे. वृद्धतर खंडमां बारमी अने वृद्धमां नवमी मात्रा ते पछीनी मात्रा साथे मळी जई बे मात्रानो बहुल वर्ण वपरायलो क्वचित् दृष्टिए पडे छे, ते पण ध्यानमां लेवा योग्य तत्त्व छे. सुत्तनिपातमां गाथानुष्टुभी संसृष्टिनुं स्वरूप आयार अने सूयगडनी सरसामणीमां ठीक जळवायुं छे.

या काचि तण्हा अज्झत्तं
तासं विनया सदा सतो सिक्खे॥
२ ॥

यं किंचि धम्ममभिजञ्ञा
अज्झत्तं अथ वाऽपि बहिद्धा ।
न तेन मानं कुब्बेथ
न हि सा निब्बुति सतं वुत्ता ॥३॥

सेय्यो न तेन मञ्ञेय्य
नीचेय्यो अथ वाऽपि सरिक्खो ।
फुट्ठो अनेकरूपेहि
नातुमानं विकप्पयं तिट्ठे ॥४॥

अज्झत्तमेव उपसमे
नाञ्ञतो भिक्खु सन्तिमेसेय्य ।
अज्झत्तं उपसन्तस्स
नत्थि अत्तं कुतो निरत्तं वा ॥५॥

मज्झे यथा समुद्दस्स
ऊमि नो जायति ठितो होति ।
एवं ठितो अनेजस्स
उस्सदं भिक्खु न करेय्य कुहिं चि
॥६॥

अकित्तयि विवटचक्खु
सक्खिधम्मं परिस्सयविनयं ।
पटिपदं वदेहि भद्दं ते
पातिमोक्खं अथ वाऽपि समाधिं ॥७॥

चक्खूहि नेव लोलस्स
गामकथाय आवरये सोतं ।
रसे च नानुगिज्झेय्य
न च ममायेथ किञ्चि लोकस्मिं ॥८॥

फस्सेन यदा फुट्ठस्स
परिदेवं भिक्खु न करेय्य कुहिं चि ।

या काचि तण्हा अज्झत्तं
तासं विनया सदा सतो सिक्खे॥
२ ॥

यं किंचि धम्ममभिजञ्ञा
अज्झत्तं वा अपि बहिद्धा ।
न तेन मानं कुब्बेथ
न हि सा निब्बुत्ति सतं वुत्ता॥३॥

सेय्यो न तेन मञ्ञेय्य
निचेय्यो वा अपि सरिक्खो ।
फुट्ठा अनेकरूपेहि
नो अनुमानं विकप्पयं तिट्ठे ॥४॥

अज्झत्तं एवोपसमे
न अञ्ञतो भिक्खु सन्तिमेसेय्य ।
अज्झत्तं उपसन्तस्स
न अत्थि अत्तं कुतो निरत्तं वा॥५॥

मज्झे यथा समुद्दस्स
उम्मी न जाति ठितो होति ।
एवं ठितो अनेजस्स
उस्सादं भिक्खु न करेय्य ॥६॥

अकित्तयि विवटचक्खु
परिस्सयविनय सक्खिधम्मं ।
पटिपद वदेहि भद्दं ते
पाटिमोक्खमथ वा समाधिं॥७॥

चक्खूहि नेव लोलोऽस्स
गामकथाय आवरये सोत्तं ।
रसे च नानुगिज्झेय्य
ममाये न किञ्चि लोकस्मिं ॥८॥

फस्सेन यदा फुट्ठस्स
परिदेवं कुहिं चि भिक्खु न करेय्य ।

भवं च नाभिजप्पेय्य भेरवेसु च न सम्पवेधेय्य ॥९॥	भव च नाभिजप्पेय्य भेरवेसु उत न संपवेय्य ॥९॥
अन्नानमथो पानानं खादनीयानमथोऽपि वत्थानं । लद्धा न सन्निधिं कयिरा न च परित्तसे तानि अलभमानो॥ १०॥	अन्नानि अथ पानानि वत्थानि अथापि खादनीयानि। लद्धा न सन्निधिं कयिरा[1] नो च परितसे अलभमानो॥१०॥
झायी न पादलोलस्स विरमे कुक्कुच्चा न प्पमज्जेय । अथ आसनेसु सयनेसु अप्पसद्देसु भिक्खु विहरेय्य ॥११॥	झायी न पादलोलस्स विरमे कुक्कुच्च नो पमज्जेय्य । अथासनेसु सयनेसु[1] भिक्खु विहरेय्य अप्पसद्देसु ॥११॥
निद्दं न बहुलीकरेय्य जागरियं भजेय्य आतापि। तन्दिं मायं हस्सं खिड्डं मेथुनं विप्पजहे सविभूसं ॥१२॥	निद्द बहुल न करेय्य जागरियमथो भजेय्य आतापी। तन्दिं मायं हस्सं खिड्डं विप्पजहे मेथुन च सविभूसं॥१२॥
आथब्बणं सुपिनं लक्खणं नो विदहे अथोपि नक्खत्तं विरुतं च गब्भकरणं तिकिच्छं मामको न सेवेय्य॥१३॥	आथब्बणं च सुपिनं च लक्खणमथ न वदेय्य नक्खत्तं । विरुतं च गब्भकरणं च तिकिच्छं मामको[1] न सेवेय्य॥१३॥
निन्दाय न प्पवेधेय्य न उण्णमेय्य पससितो भिक्खु लोभं सह मच्छरियेन कोधं पेसुणियं च पनुदेय्य ॥१४॥	निन्दाय न पवेधेय्य न उन्नमेय्य च पसंसितो भिक्खू। लोभं सह मच्छरियेन कोधं पेसुणिय[1] च पनुदेय्य ॥१४॥
कयविक्कये न तिट्ठेय्य उपवादं भिक्खु न करेय्य सहि चि गामे च नाभिसज्जेय्य लाभकम्या जनं न लापयेय्य ॥१५॥	कयविक्कये न तिट्ठेय्य उपवादं[1] कुहि चि भिक्खु न करेय्य। गामे च नाभिसज्जेय्य न लाभकम्याय लापयेय्य जनं॥१५॥
न च कत्थिता सिया भिक्खु न च वाचं पयुतं भासेय्य पागब्भियं न सिक्खेय्य कथं विग्गाहिकं न कथयेय्य॥१६॥	न कत्थेय्य सिया भिक्खू वाच नो च पयुत्तं भासेय्य । पागब्भियं न सिक्खेय्य विग्गहिकथं न कथयेय्य ॥१६॥

मोसवज्जे न निय्येय	मोसवज्जे न निय्येथ
संपजानो सठानि न कयिरा।	संपज्जानो सठानि नो कयिरा।
अथ जीवितेन पञ्ञाय	अथ जीवितेन पञ्ञाय
	१
सीलब्बतेन नाञ्ञमतिमञ्ञे॥१७॥	सीलब्बतेन न अञ्ञमतिमञ्ञे॥१७॥
सुत्वा रुसितो बहुं वाचं	सुत्वा रुसितो बहुं वाचं
	१
समणानं पुथुवचनानं ।	पुथुवचनानं खु समणानं ।
फरुसेन ते न पतिवज्जा	फरुसेन ते न पतिवज्जा
	१ १
न हि सन्तो पटिसेनिकरोन्ति॥ १८॥	सन्तो न करेन्ति पतिसेनिं ॥ १८ ॥
एतं च धम्ममञ्ञाय	एतं च धम्ममञ्ञाय
विचिनं भिक्खु सदा सतो सिक्खे।	विचिनं भिक्खू सदा सतो सिक्खे।
सन्तीति निब्बुतिं ञत्वा	सन्तीति निब्बुतिं ञत्वा
सासने गोतमस्स न प्पमज्जेय्य॥ १९॥	सासनेऽथ गोतमस्स न पमज्जे॥ १९॥
अभिभू हि सो अनभिभूतो	अभिभू हि सो अनभिभूतो
	१ १
सक्खिधम्मं अनीतिहमदस्सी।	सक्खिधम्ममथ अनीतिहमदस्सी।
तस्मा हि तस्स भगवतो	तस्स तस्मा भगवतो
सासने अप्पमत्तो सदा नमस्स- मनुसिक्खेऽति (भगवाति) ॥२०॥	सासने सदा नमस्समनुसिक्खे॥ २०॥
तुवट्टकसुत्तं निट्ठितं	सु नि. । ४। १४। (52)

उपधानस्सुतं ।[३]

अहा-सुयं वइस्सामि	अथ स्सुतं वदिस्सामि
जहा से समणे भगवं उट्ठाय।	समणो भगवं यथा स उत्थाय।
संखाय तंसि हेमन्ते	संखातो तस्मिं हेमन्ते
अहुणा-पव्वाइए रीइत्था ॥१॥	रीइत्थाऽभिनवपब्बजितो ॥१॥

३ आयार अने सूयगडना प्रथम श्रुतस्कंधनां उपधावस्सुत अने इत्थी-परिन्ना ए बे अज्झयण असली गाथा किंवा आर्यामां रचायां छे; ए मत

'नो चेवि'मेण वत्थेणं ।
पीहिस्सामि तंसि हेमन्ते-'
से पारए आवकहाए ,
एयं खु अणुधम्मियं तस्स ॥२॥

नो चेव वत्थकमिमं,
पिहिस्सामि तस्मिँ हेमन्ते।
सो पारगो; यावकथं
एवं अनुधम्मिकं तस्स ॥२॥

चत्तारि साहिए मासे
बहवे पाण-जाइयागम्म
अभिरुज्झ काये विहरिंसु
आरुसियाणं तत्थ हिंसिंसु ॥३॥

चत्तारो साधिके मासे
बहवो पाणा च आगम्म ।
अभिरुज्झ कायं विहरिंसु
आरुसिआ णं अहिंसिंसु ॥३॥

संवच्छरं साहियं मासं
जं न रिक्कासि वत्थगं भगवं।
अचेलए तओ चाई
तं वोसज्ज वत्थमणगारे ।४॥

संवच्छरं साधिकमासं
रिक्कासि न वत्थकं भगवं।
अचेलको ततो चाई
वत्थं वोसज्ज अनगारो ॥४॥

अदु पोरिसिं तिरियभित्तिं
चक्खुमासज्ज अन्तसो झाइ।
अह चक्खु-भीय सहिया ते
"हन्ता हन्ता" बहवे कन्दिंसु॥५॥

उत पोरिसिं तिरिअभत्तिं
चक्खुं आसज्ज झाति सो अन्तो।
अथ च चक्खुभियसंहिता ते
"हत हत' बहवो अकन्दिंसु ॥५॥

सयणेहिं वितिमिस्सेहिं
इत्थिओ तत्थ से परिन्नाया:
सागारियं न से सेवे
इति से सयं पवेसिया झाइ ॥६॥

सद्दनंसि वितिमिस्संसि
इत्थीआ तत्थ सो परिञ्ञाय ।
"सागारिकं न सेवे"ऽत्ति
तत्थ पवेसिय सयं झाति ॥६॥

जे केइमे अगारत्था
मीसीभावं पहाय से झाइ
पुट्ठो वि नाभिभासिंसु
गच्छइ नाइवत्तई अञ्जू ॥७॥

जे के इमे अगारत्था;
मिस्सीभावं पहाय सो तेभि ।
पुट्ठो वि नाभिभासित्था;
गच्छति नातिवत्ती अञ्जू ॥७॥

नो सुकरमेगेसिं
नाभिभासे अभिवायमीणे

नो सुकरमेकमेकस्स,
अभिभासति नाभियादयन्ते सो।

विदेनी वचने ढंग, ए वने अज्झायण अमिथ गाथामां नहि पण गाथानुष्टुभी संसृष्टि एवा नामे ओळखावेला मिश्र छंदमां छे तेना समर्थनमां, आगू ए उपधानसुत अहीं उद्धृतपणे ऊतार्यु छे. ए छंदना बंधारणना संबंधमां सुयडयसुत्त उपरनी टिप्पणी जोवी.

हयपुव्वो तत्थ दण्डेहिं	हतपुब्बो[1] तत्थ दण्डेभि
लूसियपुव्वो अप्प-पुण्णेहिं ॥८॥	लूसितपुब्बो अपुण्णेभि ॥८॥
फरुसाइं दुत्तिइक्खाइं	परुसानि[1] दुत्तितिक्खानि
अइयच्चे मुणी परक्कममाणे	अतिपति मुनी परिक्कमन्तो सो।
आघायनट्टगीयाइं	आघातनट्टगीतानि
दण्ड-जुज्झाइं मुट्ठि-जुज्झाइं ॥९॥	दण्डकयुद्धानि मुट्ठियुद्धानि ॥९॥
गढिए मिहुं-कहासु	मिथो कथासु गधिते
समयम्मि नाइ-सुए विसोए अदक्खू	सम विसोके अदक्खु नातिपतो।
एयाइं सो उरालाइं	एतानि सो उरालानि
गच्छइ नायपुत्ते असरणाए ॥१०॥	च नायको गच्छति असरणताए॥ १०॥
अवि साहिए दुवे वासे	अधि[1] साधिके दुवे मासे
सीओदं अभोच्चा निक्खन्ते,	सीतोदमभुञ्ज[1] निक्खन्तो।
एगत्त-गए पिहियच्चे	एकत्तगतो पिहितच्चा[1]
से अभिन्नाय-दंसणे सन्ते ॥११॥	सदा अभिञ्ञातदस्सणो सन्तो॥ ११॥
पुढविं च आउ कायं	पुढविं च अपकायं
च तेउकायं च वाउकायं च	च तेजकायं च वायुकाय च।
पणगाइं बीयहरियाइं	पणगानि बीजहरितानि[1]
तसकायं च सव्वसो नच्चा ॥१२॥	तसकायं चेव सो नत्वा ॥१२॥
'एयाइं सन्ति' पडिलेहे	"एतानि सन्ति" पडिलेहित्व[1][1]
'चित्तमन्ताइं' से अभिन्नाय।	चेतनवन्तानि सो अभिञ्ञाय।
परिवज्जियाण विहरित्था	परिवज्जित्वा[1] विहरित्था[1]
इति संखाए से महावीरे ॥१३॥	अतिसंखातो महावीरो ॥१३॥
'अदु थावरा य तसत्ताए	"उत[1] थावरा तसत्ताए
तसजीवा य थावरत्ताए,	तसजीवा थावरत्ताए।
अदु सव्वजोणिया सत्ता	उत[1] सब्बयोनिआ सत्ता
कम्मुणा कप्पिया पुढो बाला॥१४॥	कम्मभि पिह कप्पिता बाला"॥१४॥

भगवं च पथमन्नेसी	भगवं[1] च पथमञ्ञेसी
'सोघद्दिए हु लुप्पई धाले';	'सोपधिको लुप्पति खु धालो'।
कम्म च सव्वसो नच्चा	कम्म च सव्वसो नत्था
त पडियाइक्खे पावगं भगवं॥१५॥	त पतिआचक्ख सो भगव ॥१५॥
दुविहं समेच्च मेहावी	दुविधं[1] समेच्च किरिय
किरियमक्खाय'णेलिस-णाणी।	सो पतिअक्खाति मेधावी।
आयाणसोयमइवाय-	आयामस्सोतमतिपात[1]-
सोय जोगं च सव्वसो नच्चा ॥१६॥	स्सोतं योगं च सव्वसो नत्था ॥१६॥
अइवत्तियमणाउट्टि	अतिपातिक[1] अनाकुट्टिं
समयष्नेसि अकरणयाए:	अज्जासी स अकरणताए।
जस्सि'त्थिओ परिन्नाया	यस्सित्थिआ परिञ्ञाता
सव्वकम्मावहाओ अद्दक्खू ॥१७॥	सव्व कम्मं स तमद्दक्खू ॥१७॥
अहा-कड न से सेवे	यथाकतं न सेवति[1] सो
सव्वसो कम्मुणा य अद्दक्खू।	दक्खू कम्मेण सव्वसो बन्धं।
ज किञ्चि पावग, भगव	य किंचि पापक भगव[1]
तं अकुव्व वियड भुञ्जित्था ॥१८॥	तं भुञ्जित्थ विकतमकुब्बं ॥१८॥
नासेवई य परवत्थ,	नो सेवते स परवत्थ[1]
पर-पाए वि से न भुञ्जित्था.	परपत्तं सो न भुञ्जित्था।
परिवज्जियाण ओमाण	परिवज्जिय ओमान
गच्छइ संखडि असरणाए ॥१९॥	संखडिमेति असरणताए ॥१९॥
मायन्ने असणपाणस्स	मत्तञ्ञोऽसनपानस्स
नाणुगिद्धे रसेसु अपडिन्ने,	अनुगिद्धो नो रसस्स अपटिञ्ञो।
अच्छि पि नो पमज्जिया,	अक्खि पि नो पमज्जित्था
नो वि य कण्डूयए मुणी गाय॥२०॥	नापि च कण्डूयते गत्त ॥२०॥
अप्पं तिरियं पेहाए	अप्प तिरियं पेक्खाय
अप्पं पिट्ठओ व पेहाए	अप्पं अपि पिट्ठतो अ पेक्खाय।

अप्पं बुइए पडिभाणी	अप्पपतिभाणी वुदितो
पन्थ-पेहि चरे जयमाणे ॥२१॥	पथपेक्खी सो अ चरति जयमाणो॥२१॥
सिसिरंसि अद्ध-पडिवन्ने	सिसिरेऽद्धपटिपन्ने
तं वोसज्ज वत्थमणगारे	वत्थं वोसज्ज अनगारो ।
पसारेत्तु बाहुँ परक्कमे	पसारिय परिक्कमति
नो अवलंबियाण खन्धंसि ॥२२॥	बाहू नोऽलम्बितून खन्धस्मिं॥२२॥
एस विही अणुक्कन्तो	एसो विधी अनुक्कन्तो
माहणेण मईमया	माहणेन मतिमता ।
बहुसो अपडिन्नेणं	बहुसो अपरिञ्ञेन
भगवया एवं रीयन्ते—त्ति बेमि	एवं रिय्यतु भगवता ॥२३॥
	इतिउपधानस्सुते पढमो उद्देसो ।
चरियासणाइं सेज्जाओ	सदनासनानि चरियाय
एगइयाओ जाओ बुइयाओ	यानि खु एकाकिकानि वुदितानि।
आइक्ख ताइं सयणासणाइं	आचक्खे अथ एतानि
जाइं सेवित्थ से महावीरे ॥१॥	तानि असेवित्थ सो महावीरो॥१॥
आवेसण-सभा-पवासु	आवेसने पपासे वा
पणिय-सालासु एगया वासो	सभाय उत पण्णसालाय ।
अदु वा पलिय-ट्ठाणेसु	उत वा पलिअट्ठानस्मिं
पलाल पुञ्जेसु एगया वासो ॥२॥	पलालपुञ्जे च एकदा वासो ॥२॥
आगन्तारे आरामागारे	आगन्तगारे आरामे
नगरे वि एगया वासो,	आगारस्मिं उत वा नगरे ।
सुसाणे सुन्नगारे वा	सुसाने सुञ्ञागारे वा
रुक्खमूले वि एगया वासो ॥३॥	मूले रुक्खस्स एकदा वासो ॥३॥
एएहिं मुणी सयणेहिं	मुनी एतेसु सदनेसु
समणे आसि प-तेलस वासे;	समणो आसि य एतेरसे वस्से ।
राइंदियं पि जयमाणे	रत्तिदिवं जयमाणो
अप्पमत्ते समाहिये झाइ; ॥४॥	समाहितो अप्पमत्तो च ॥४॥
निद्दं पि नो पगामाए	पकामतो वि नो निद्दं
सेवइ य भगवं उट्ठाए;	,भगवं सेवित्थ उत्थाय ।

जग्गावई य अप्पाणं
ईसिं साइयासी अपडिन्ने ॥५॥
सम्बुज्झमाणे पुनरावि
आसिंसु भगवं उट्ठाए
निक्खम्म एगया राओ
बहिं चंकमिया मुहुत्तागं ॥ ६ ॥
सयणेहिं तस्सुवसग्गा

भीमा आसी अणेग रूवा य,
संसप्पगा य जे पाणा
अदु वा पक्खिणो उवचरन्ति ॥७॥

अदु कुचरा उवचरन्ति

गामरक्खा य सत्तिहत्था य,
अदु गामिया उवसग्गा
इत्थी एगइया पुरिसो वा ॥८॥

इह-लोइयाइ परलोइयाइ
भीमाइ अणेगरूयाई,
अविभव सुब्भि दुब्भि-गन्धाइ
सद्दाइ अणेगरूवाइ ॥ ९ ॥

अहियासए सया समिए

फासाइ विरूव-रूवाइ,

अरइ रइ च अभिभूय

रीयई माहणे अवहु-वाई ॥१०॥

सयणेहि तत्थ पुच्छिंसु
एग-चरा वि एगया राओ,
अव्वाहिए कसाइत्था
पेहमाणे समाहिं अपडिन्ने॥११॥

जागरापेति अत्ताणं
ईसि च असइत्थ अ परिञ्ञ॥५॥
संयुज्झमानो भगवं
पुनरपि आसित्थ उत्थाय।
निक्कम्भ एकदा रत्तो
चङ्कमित्व बहि मुहुत्तक ॥६॥
छद्नेसु[1] तस्सुपसग्गा
भीमा आसी अनेकरूपा च।
संसप्पगा तत्थ पाणा
उत वा तं पक्खिणो अपचरन्ति॥७॥
ऊत[1] अपचरन्ति[1] कुचरा
गामारक्खा च सत्तिहत्था णं।
उत[1] गामिका उपसग्गा
इन्थी एकाकिका च पुरिसो वा॥८॥
पारलोकिकेहिकानि
सत्तानि अनेकरूपाणि।
सुरभसुरभिणो[1] गन्धे
सद्दे भीमे अनेके च ॥ ९ ॥
अधिआसते[1] सदा समितो[1]
भगव फस्से विरूपे च।
अरति[1] रति चाभिभूय
रीइत्थ च माहणो अबहुवादी॥१०॥
तत्थापुच्छिसु सदनस्मि[1]
एकचरा एकदा रत्तो।
अव्वाहिते कसाइंसु
अन्वेक्खमाने समाधिमपतिञ्ञे॥
११॥

" अयमन्तरसि; कों एत्थ ? "	अयमन्तरस्मिं[1] को एत्थ
"अहमसि" त्ति 'मिक्खु' आहट्टु	अहमस्मिऽति भिक्खु आचट्ठ।
अयमुत्तमे सेँ धम्मे	अयमुत्तमो से धम्मो
तुसिणीएँ स कसाइए झाइ ॥१२॥	तुसिणीको सोऽकसाइतो झाति ॥१२॥
जंसि प्पेगे पवेवन्ति	यस्मिं एके पवेपन्ते
सिसिरे मारुए पवायन्ते।	सिसिरे मरुते पवामाणे।
तसि प्पेगे अणगारा	यस्मिं एके अनगारा
हिमवाए निवायमेसन्तिः ॥१३॥	निवातमेसन्ति हिमवाते ॥१३॥
" संघाडीओ पविसिस्सामो	संघाटिं पविसिस्सामो
एहा य समादहमाणा	सम्मं एहेण दहमाणा।
पिहिया वा सक्खामो	पिहिता उत सक्कामो
अइदुक्खं हिमग संफासा ॥१४॥	अतिदुक्खे हि हिमसंपाते ॥१४॥
तसि भगवं अपडिण्णे	तस्मिं भगवं अपतिञ्ञ
अहे-वियडे अहियासए दविए,	दमितो अधिआसतेऽचिकतो।
निक्खम्म एगया राओ	निक्कम्म एकदा रत्तो
चाएइ भगवं समियाए ॥१५॥	भगवं चायति स सम्मत्त ॥१५॥
एस विही अणुक्कन्तो	एसो विधी अनुक्कन्तो
माहणेण मईमया।	माहणेन मतिमता।
बहुसो अपडिण्णेणं	बहुसो अ पतिञ्ञेन
भगवया एवं रीयन्ते-त्ति	एव रियतु भगवता[1] ॥१६॥
बेमि।	इति उपधानस्सुते दुतीयो उद्देसो।

तण-फास सीयफासे य	तणप्फस्से सीतफस्से
तेओफासे य दंसमसए य	तेजप्फस्से च दंसमसके च।
अहियासए सया समिए	अधिआसते[1] सदा समितो[1]
फासाइं विरूवरूवाइं ॥१॥	फस्से च विरूपरूपे सो ॥१॥
अह दुच्चर-लाढं अचारी	अचारी दुच्चरं राढं
वज्जभूमिं च सुब्भभूमिं च।	वज्जभूमिमथ च सुम्हभूमिं च।

पन्त सेज्जं सेविंसु	पन्तं सेय्यं असेवित्थ
आसणगाइं चेव पन्ताइं ॥२॥	आसनानि चेव पन्तानि ॥२॥
लाढेहि तस्सुवसग्गा	राढस्मिं तस्सुपसग्गा
बहवे: जाणवया लूसिंसु ।	बहवोऽलूसिंसु जानपदा।
अह लुक्खदेसिए भत्ते,	अथ रूक्खदेसियं भत्तं
कुक्कुरा तत्थ हिंसिंसु निवइंसु॥ ३ ॥	कुक्कुरका तं अहिंसिंसु ॥३॥
अप्पे जणे निवारेइ	अप्पा जना न वारेंति
लूसणए सुणए डसमाणे,	दसमाने रोसणे सुनके।
'छुच्छुकृ' फारेन्ति आहन्तु	छुच्छुऽत्ति वुचन्ति
"समण कुक्कुरा डसन्तु 'त्ति ॥४॥	समणं सुनका दसन्तुऽत्ति ॥४॥
पलिक्खए जणे भुज्जो	पटिक्खओ जनो भुय्यो
बहवे वज्ज-भूमि फरुसासी,	वज्जभूमिए च फारुसो।
लट्ठिं गहाय नालीयं	लट्ठिं गहाय नालीकं
समणा तत्थ एव विहरिंसु, ॥५॥	समणमहिंसिंसु ते तत्थ ॥५॥
एव पि तत्थ विहरन्ता	एवं पि तत्थ विहरन्तो
पुट्ठ-पुव्वा अहेसि सुणएहिं,	पुट्ठा पुब्बं अहेसि सुनकेभि।
सलुञ्चमाणा सुणएहिं	सलुञ्चमाणा समणा
दुच्चरगाणि तत्थ लाढेहिं ॥६॥	दुच्चरकस्मिं खु राढस्मिं॥ ६॥
निहाय दण्डं पाणेहिं	निधाय दण्डं पाणेसु
त कायं वोसज्जेमणगारे।	कायं वोसट्ठ अनगारो।
अह गामकण्टए भगवं	अथ गामकण्टके भगवं
ते अहियासए अभिसमेच्चा ॥७॥	ते अधिआसति अभिसमेच्चा ॥७॥
'नाओ' संगाम-सीसे व	नागो संगामसिस्से वा
पारए तत्थ से महावीरे।	पारगतो सो महावीरो।
एव पि तत्थ लाढेहिं	एवं पि तेन राढस्मि
अलद्ध-पुव्वो वि एगया गामो॥८॥	अलद्धपुब्बो च एकदा गामो ॥८॥
उवसंकमन्तमपडिन्नं	उपसंकमन्तमपतिञ्ञं

गामन्तियं पि अप्पत्तं	एतं गामन्तिकं पि अप्पत्तं ।
पडिनिक्खमित्तु लूसिंसु	निक्कमित्वा अलूसिंसु
"एयाओ परं पलेहि !" त्ति ॥९॥	परमेतस्मा पलेहिऽत्ति ॥ ९ ॥
हय-पुव्वो तत्थ दण्डेणं	हतपुब्बो[1] तत्थ दण्डेन
अदु वा मुट्ठिणा अदु फलेणं ।	उत वा फलकेन मुट्ठिना उत वा ।
अदु लेलुणा कवालेणं	उत[1] लेड्डुना कपालेन
" हन्ता हन्ता " बहवे कन्दिसु ॥ १० ॥	" हत हत " बहवो अकन्दिसु॥ १० ॥
मंसूणि छिन्न-पुव्वाइं,	मंसूनि तेभि छिन्नानि
ओट्ठभियाए एगया कायं	कायमेकदा अवट्ठभिय ।
परिस्सहाइ लुंचिंसु	परिसहेण[1] अ लुञ्चिंसु
अदु वा पंसुणा उवकरिंसु, ॥११॥	अवाकिरिंसु उत पंसुभि ॥११॥
उच्चालइय निहणिंसु	उच्चालिय अहनिंसु
अदु वा आसणाओ खलइंसु-	उत वा ते आसना समखलिंसु ।
वोसट्ठ-काए पणयासी	वोसट्ठकायो पुनरासी[1]
दुक्ख-सहे भगवं अपडिन्ने ॥१२॥	भगवं सहते च दुक्खमपतिञ्ञु॥१२
सूरो संगामसीसे व	सूरो संगामसिस्सेवा
संवुडे तत्थ से महावीरे	संवुत्तो तत्थ सो महावीरो ।
पडिसेवमाणो फरुसाइं	परिसेवमानो[1] परुसानि[1]
अचले भगवं रीइत्था ॥१३॥	भगवं खु अचेलको अरीइत्थ॥१३॥
एस विही अणुक्कन्तो	एसो विधी अनुक्कन्तो
माहणेण मइमया ।	माहणेन मतिमता।
बहुसोअपडिन्नेणं	बहुसो अपतिञ्ञेन
भगवया एवं रीयन्ते-त्ति	एव रिय्यतु भगवता[1] ॥ १४ ॥
बेमि	इति उपधानसुते ततीयो उद्देसो॥
ओमोयरियं चाएइ	अवमोदरिकं भगवं[1]
अपुट्ठे वि भगवं रोगेहिं;	चायति रोगेभि अप्पुट्ठो ।

पुट्ठो य से अपुट्ठो वा ।	पुट्ठो उत अपुट्ठो वा
नो से साइज्जइ तेइच्छ ॥१॥	नो आसाद्यते तिकिच्छ ॥१॥
ससोहण च वमणं च	संसोधनं च वमनं[1] च
गायब्भगण सिणाणं च	गत्तब्भङ्गं सिनानं च ।
संवाहण न से कप्पे	संवाहनं न कप्पेति
दन्तपक्खालण परिन्नाए ॥२॥	दन्तप्पक्खालनं परिञ्ञातो ॥२॥
विरए य गाम-धम्मेहिं	विरतो[1] च गामधम्मेभि
रीयइ माहणे अबहु-वाई,	रीयते स माहणो अबहुवादी।
सिसिरम्मि एगया भगव	एकदा सिसिरे भगवं[1]
छायाए झाइ आसी य ॥ ३ ॥	छायाय झाति आसित्वा ॥३॥
आयावई य गिम्हाणं	आयाते अथ गिम्हम्हि
अच्छइ उक्कुडुए अभितावे ।	आसते स उक्कटे तापे ।
अदु जावइत्थ लूहेणं	उत[1] यापइत्थ लूहेण ।
ओयण-मन्थु-कुम्मासेण ॥४॥	ओदनकुम्मासमंथूभि ॥ ४ ॥
एयाणि तिण्णि पडिसेवे	सेवते तिण्णि एतानि
अट्ठमासे य जावए भगव	अट्ठ मासे च सो भगवं ।
अपिइत्थ एगया भगव	अपीत्वा एकदा अद्धं
अद्धमास अदु वा मासं पि ॥५॥	मास उत एकमासमपि ॥५॥
अवि साहिए दुवे मासे	अपि[1] साधिके तिण्णि मासे
छप्पि मासे अदु वा अपिवित्ता,	छप्पि च मासे उत अपीत्वा ।
राओवराय अपडिन्ने	रत्तो रत्तो अपरिञ्ञू
अन्न गिलायमेगया भुञ्जे ॥६॥	स मिलानं भुञ्जते अन्नं ॥ ६ ॥
छट्ठेणमेगया भुञ्जे	छट्ठेन एकदा उत[1] वा
अदु वा अट्ठमेण दसमेण	स भुञ्जते अट्ठमेन दसमेन ।
दुवालसमेण एगया भुञ्जे	दुवादसेन उत वा
पेहमाणे समाहिं अपडिन्ने॥७॥	अवेक्खमाणो समाधिमपरिञ्ञू॥७॥
नचाण से महावीरे	नत्वान सो महावीरो
नो वि य पावग सयमकासी ।	नापि च पापं सयमकासी ।

अन्नेहिं वी न कारेत्था
कीरन्तं पि नाणुजाणित्था ॥८॥
गामं पविस्स नगरं वा

घासमेसे कडं परट्ठाए।
सुविसुद्धमेसिया भगवं

आयय-जोगयाएं सेवित्था ॥९॥
अदु वायसा दिगिञ्छन्ता,

जे अन्ने रसेसिणो सत्ता
घासेसणाए चिट्ठन्ते
सययं निवइए य पेहाए ॥१०॥
अदु माहणं व समणं वा

गामपिण्डोलगं च अइहीं वा।
सोवागो मूसियारिं वा
कुक्कुरं वा विविहं ठिय पुरओ,॥
११॥

वित्तिच्छेयं वज्जन्तो
तेसं'प्पत्तियं परिहरन्तो
मन्दं परिक्कमे भगवं,

अहिंसमाणो घासमेसित्था ॥१२॥
अवि सूइयं व सुक्कं वा
सीय-पिण्डं पुराण-कुम्मासं
अदु वोक्कसं पुलागं वा
लद्धे पिण्डे अलद्धए दविए ॥१३॥
अवि झाइ से महावीरे
आसणत्थे अकुक्कुए झाणं,
उड्ढं अहे य तिरियं च

लोए झायइ समाहिमपडिन्ने॥१४॥

अञ्ञेभि पि नं कारेत्थ
कीरन्तं नानुजानित्थ ॥ ८ ॥
गामं पविस्स नगरं[1] वा

घासं एसति कतं परत्थं।
विसुद्धिमेसित्वा[1] भगवं

आगतयोगा च सेवित्थ ॥ ९ ॥
उत[1] वायसा जिघिच्छन्ति

अञ्ञे च रसेसिणो सत्ता।
घासेसणाय तिट्ठन्ति
निवत्तते तेसं पेक्खाय ॥१०॥
उत[1] माहणो समणो वा

अतिथी पिण्डोलगो उत वा।
सोपागो मुसकारी वा
तिट्ठति वा कुक्कुरो पुरतो॥
११॥

वित्तिच्छेदं वज्जयन्तो
तेसि अप्पीतिकं परिहरन्तो।
मन्दं परिक्कमइ[1] भगवं[1]

अहिंसनो घासमेसित्थ ॥१२॥
सूमिकं वापि सुक्कं वा
सीतं पिण्डं पुराणकुम्मासं।
उत बुक्कसं पुलाकं वा
दमितो लद्धा अलद्धा च ॥१३॥
अपि[1] झाति सो महावीरो

अकोकुओ झानमासत्थो।
उध्धं अधापि तिरियं
लोके झाति स समाधिमपतिञ्ञो॥
१४॥

अकासी विगय-गेही य	अकासि विगतगिद्धो च
सद्द-रूवेसु अमुच्छिए झाइ,	सद्दं रूपे अमुच्छितो झाति।
छउमत्थो वि परक्कममाणे	परक्कमन्तो छउमत्थो
न पमायं सइं पि कुव्वित्था ॥१५॥	सयं पमादं न कुब्बित्था ॥१५॥
सयमेव अभिसमागम्म	सयं अभिसमागम्म
आयय-जोगमाय-सोहीए	अत्तसोधिते स अत्तयोगं च।
अभिनिव्वुडे अमाइल्ले	अभिनिब्बुतो अमाइल्लो
आवकहं भगवं समियासी ॥१६॥	यावकथं चेव समियासी ॥१६॥
एस विही अणुक्कन्तो	एसो विधी अनुक्कन्तो
माहणेण मईमया।	माहणेन मतिमता।
बहुसो अपडिन्नेणं	बहुसो अपतिञ्ञेन
भगवया एवं रीयन्ते ॥-त्ति बेमि॥	एवं रियन्तु भगवता ॥ १७ ॥
	इति उपधानस्सुते चतुत्थो उद्देसो।[४]

---

४ चोथा दृष्टिपातना प्रस्तुत परिशिष्टमा आपेला कोकालियसुत्त, तुवटकसुत्त अने उपधानस्सुतना ऊताराओमां अग्रिम प्राकृतनो मागधी बोलीनी झाखी कराववानो आ प्राथमिक प्रयास छे. **सुत्तनिपात**मानां सुत्तनो मुद्रित परंपरागत पाठ फर्ग्युसन कॉलेजना पालिना प्रॉफेसर पी. वी बापट एम. ए. ना **सुत्तनिपातो**माथी लीधो छे; अने अंगना **आयार** उपधानस्सुतनो मुद्रित परंपरागत पाठ पूनानी जैनसाहित्य-संशोधक समितिए बहार पाडेला **आचराङ्गसूत्रम्** (प्रथम श्रुतस्कन्धः)मांथी ऊतार्यो छे.

पद्यरचनानी ऐतिहासिक आलोचना

दृष्टिपात ५

काव्यकाल

१ इसवी सन पूर्वे पांचमा शतकना धुरंधर धर्मस्थापकोए जे भाषाने पद्यात्मक साहित्यनी दिशामां अग्रवेग[१] आप्यो, ते तरफ चोथा दृष्टिपातमां आपणूं ध्यान रोकायूं हतूं. ते अवसरे छेवट छेवटमां एक टूंकी नोंध लीधी हती, ते ए के सुत्तकाल द्वैभाषिक हतो. बुद्ध अने महावीरे अग्रिम प्राकृतमां धर्मघोषणा गजावी हती; ए ज भाषा सुत्तकालनी लोकभाषा हती; ए ज सिद्धार्थ अने वर्धमाननो जन्मभाषा हती. ते काळे [२]विनयननी भाषा बीजी हती. पारंपरिक शिष्ट साहित्य ए भाषामां रचातूं हतूं. केळवायला नागरिक ए ज भाषा बोलता हता. पौराण संस्कृतनी [३]उत्क्रान्तिना बे फांटा, अग्रिम प्राकृत अने समकालीन संस्कृत. बीजा फांटानी भाषाने हूं अंतःपाती संस्कृत नाम आपूं छूं. जूनामां जूनां श्रौत अने गृह्य सूत्रो, कात्यायननां वार्तिक अने व्याडिनो लक्षपूर संग्रह ए भाषामां हतां. पठनपाठन उच्छिन्न थई पाणिनिना वंशजनो संग्रह नाश पाम्यो छे, त्यांथा समयथी नाश पाम्यो छे. अंतःपाती संस्कृतनूं जे स्वल्प साहित्य उतरी आव्यूं छे, ते बहुधा गद्यमां छे; पद्यात्मक साहित्य विनाशने वश थयूं छे. इसवी सन पूर्वे चोथूं पांचमूं अने छठ्ठूं, ए त्रण शतकमां इसवी सन पछीना त्रीजा चोथा अने पांचमा शतकनी पेठे संस्कृत साहित्यनो प्रवाह त्रुटित छे. छतां चतुर्दश नष्ट जैन पूर्वेनो अने मध्य एशिआना रणमां दटायलां शहेरोमांथी मळी आवेला महायानी त्रिपिटकना खंडोनो विचार करिये छिये, त्यारे स्वीकार्या विना रहेवातूं नथी के

---

१ Initial velocity.

२ Culture.

३ Evolution.

अंतःपाती संस्कृतनूं परिवळ समकालीन अग्रिम प्राकृतना जेटलुं ज होवूं जोईए अने तेनी प्रतिष्ठा पण ए प्राकृतना जेवी ज होवी जोईए. एटलुं परिवळ अने एवी प्रतिष्ठा धरावती भाषाना साहित्यनो वेलो आगळ वधवा अने फाळवा न पामे ए असंभवित छे. गादीपति अल्पायु नीवडे ए बने; परंतु गादीनूं नसंतान न जाय. प्रजाना जीवन साथे सजीवन रहेतो पद्यप्रवाह तो वह्या ज करे. आ कथननूं सबळ समर्थन इसवी सन पूर्वे चोथा अने त्रीजा शतकना संधिकाळना नाटककारनी कृतिना एक न्हाना सरखा ऊताराथी थाय छे. भरतनाट्यशास्त्र उपरनी अभिनवभारती टीकामां विद्वद्वर्य अभिनवगुप्त नाट्यायितना दृष्टांत तरीके महाकवि सुबंधुविरचित "वासवदत्तानाट्यधारानूं नाम ले छे अने तेमांथी नीचे आपेलो भाग ऊतारे छे[४].

सूत्रधारः ।

------ तव सुचरितैरेव जयति ॥

उदयनः (वासवदत्ताचेष्टिते सामाजिकीभूतः) कुतो मम सुचरितानि ।

साश्रम् ।

एहाम्ब किं कटकपिङ्गलपालकैस्तै-
र्मुक्तोऽहमप्युदयनः परिपालनीयः।
यौगन्धरायण समानय राजपुत्रीं
हा हर्षरक्षित गतस्त्वमसि क्व तावत्॥ ?

बिन्दुसारः (प्रद्योतवस्तुके उदयनचरिते सामाजिकीभूत.) धन्या खलु सा यामेव प्रलापैरनुशोचति ।

---

४ नाट्यदर्पणमां वासवदत्तानाट्यधार नाम मुद्रित छे, ते वासवदत्तानाट्यधारा संभवे छे.

५ जुओ भ.ना.शा. । २२ । ४६-४७ । उपरनी टीका. एमांथी आपेला ऊतारानी नाट्यसूचिमा में स्पष्टतानी खातर टीकाने आधारे जूज फेरो कर्यो छे अने बीजी उक्तिनो त्रुटित पाठ पूरो करी लीधो छे.

प्रतीहारी (आत्मगतम्) **अगिहिदपरमत्थं अभिलपदि खु देवो।**

[अगृहीतपरमार्थमभिलपति खलु देवः]

अभिनवभारतीकारे आपेला उपरना ऊतारामां बिंदुसार राजानो उल्लेख कर्यो छे. ए नामनो राज्यकर्ता इतिहासमां अने लोककथामां एक ज जाणीतो छे, मौर्य चंद्रगुप्तनो पुत्र[६]. **परिशिष्टपर्व**मां हेमाचार्ये ते द्वितीय मौर्य सार्वभौम राजाना अमात्य तरीके सुबंधुना निर्देश कर्यो छे. तेना उपर कोइ कारणथी एक वखत राजानी इतराजी थतां तेने कारागृह सेववूं पड्यूं हतूं. एवामां पूर्वे नरेश्वरनी आज्ञाथी रचेलं **वासवदत्तानाट्यधारा** नाटक राजभवननी नाटकशाळामां बिंदुसार समक्ष भजवायूं; तेनी रचनाथी प्रसन्न थई राजाए बंदीवान नाटककारने बंधनमुक्त कर्यो, एटलुं ज नहि पण तेना उपर साहित्यरसिक नरेश्वरनो अढळक प्रेम ढळ्यो[७]. उक्त **वासवदत्तानाट्यधारा**ना प्रयोग समये एटलेके इसवी सन पूर्वेना चोथा अने त्रीजा शतकना संधिमां पद्यरचनाए कई दिशामां केटली प्रगति करी हती, तेनो विस्मयकारक पूरावो अभिनवगुप्तनूं प्रस्तुत अवतरण पूरो पाडे छे. एनी पहेली बे उक्तिमां पद्यबंधनो प्रयोग छे. ते पैकी पहेलो छंद त्रुटित छे; अने बीजो आखो ए

---

६ जुओ प.प.।८।४४६।. जुओ वळी भ.ना.शा. ।१८।–। उपरनी **अभिनवभारती**मांनूं नीचेनूं अवतरण :–अनया त्वार्यया चन्द्रगुप्तबिन्दुसाराद्योऽपि संगृह्यन्ते इति।. एमां चंद्रगुप्त साथे बिन्दुसारनो उल्लेख छे, एटले राजा बिन्दुसार मौर्यवंशी संभवे छे. अवतरणमां जेनो निर्देश कर्यो छे, ते **आर्या** कदाच **वासवदत्तानाट्यधारा**मांथी लीधी होय.

७ जुओ दंडी कविनी **अवन्तिसुन्दरी** कथाना उपोद्घातमांनो नीचे आपेलो श्लोकः—सुबन्धुः किल निष्क्रान्तो बिन्दुसारस्य बन्धनात्। तस्यैव हृदयं बद्ध्वाव(न्तिकानाट्यधारया)॥. संस्कृतमां **वासवदत्ता** नामे गद्यवार्ता छे, तेनो कर्ता सुबंधु **वासवदत्तानाट्यधारा**कार सुबंधुथी भिन्न छे. केमके वार्तानी नायिका कल्पित छे; नाटकनी ऐतिहासिक छे. वार्ता घणुं करीने गुप्तवंशना बीजा चंद्रगुप्त विक्रमादित्यना मरणोत्तर रचाई हती; नाटक मौर्य बिंदुसार अभिन्नघातना समक्ष भजवायूं हतूं. बे वच्चे सातसें वर्षनो गाळो छे. बद्ध्वा पछी [आ]वन्तिकानाट्यधारया पाठ कल्पित छे.

उपलब्ध छे. आ बीजो छंद, ते जन्मकाळथी लोकप्रिय नीवडेलो **वसंततिलका** छे. तेनो प्रयोग सूचवे छे के सुबंधुबिन्दुसारना समयमां चौद रूपना शक्करी वर्गना छंदो जाणवामां हता अने लोमप्रतिलोमात्मक रूपसंवाद पण सिद्ध थयो हतो. पहेली उक्ति खंडित छतां पद्यबंध तरत ओळखाय एवो छे. एनो बचेलो भाग **शिखरिणी** छंदना चरणनो उत्तर खंड छे. ते जणावे छे के उक्त काळे अतिशक्करी वर्ग अने अष्टिवर्ग वटावी रूपरचना सत्तर रूपना अत्यष्टि वर्ग सूधी पण पहोंची गई हती. कलाविधानमां मध्य यतिनो प्रयोग पण ते काळे सिद्ध थयो हतो. संभव छे के मध्य यति रहित सत्तर रूपना **पृथ्वी** छंदनो पण ते काळे प्रचार हशे; अने **शार्दूलविक्रीडित**[८] तथा कदाच **स्रग्धरा** पण अजाण्या नहि होय.ते काळे **गाथा** किंवा **आर्या** छंद प्राकृतमां थई संस्कृतमां प्रसार पामी चूक्यो हतो[१०]. आ रीते अंतःपाती संस्कृतना गाळानूं पद्यात्मक साहित्य नाश पाम्यूं छे खरूं, तथापि रूपप्रवाह अने मात्राप्रवाह तो प्रगति साधता ज रह्या छे, ते त्रुटित नथी थया, ए स्पष्ट छे.

२ अंतःपाती संस्कृतना अदृश्य थयेला पद्यप्रवाह उत्तर काळमां सुपुष्ट स्वरूपे वहे छे अने साहित्यना उपवनमां अमृत सींचे छे. प्रस्तुत साहित्य

---

८ जुओ नीचेनी टिप्पणीनूं उदाहरण अने ते उपरनी नोंध.

९ जुओ वामनकृत **काव्यालंकारसूत्रवृत्ति**मांनो नीचेनो उतारोः—"साभिप्रायत्वं यथा

सोऽयं संप्रति चन्द्रगुप्ततनयश्चन्द्रप्रकाशो युवा
जातो भूपतिराश्रयः कृतधियां दिष्ट्या कृतार्थश्रमः ।

आश्रयः कृतधियामित्यस्य सुबन्धुसाचिव्योपक्षेपपरत्वात् साभिप्रायत्वम् ।.' प्रस्तुत पद्यमां कृताधिया पदे करीने प्रधानपणे महाकवि सुबन्धु लक्षित छे. एनो श्रम बिन्दुसारे कृतार्थ कर्यो ते, नाटकथी प्रसन्न थई एने बन्धनमुक्त कर्यो, ते वडे. अवतरणमांनूं श्लोकार्ध **वासवदत्तानाट्यधारा**मांथी लीधूं छे एम मने भासे छे. चरणो **शार्दूलविक्रीडित**नां होवाथी ए छंद में सुबंधुबिन्दुसारना समयमां जाणीतो कह्यो छे.

१० जुओ टिप्पणी ६.

मोटे भागे काव्यप्रधान छे, ते कारणथी ए उत्तर काळने आ व्याख्यानमां काव्यकाल नाम आप्यूं छे. इसवी सन पूर्वे त्रीजा शतकथी आरंभीने इसवी बारमा शतक सुधीनां पंदरसें वर्षनूं तेमां ग्रहण थाय छे. ए अतिदीर्घ काळनूं साहित्य पण अतिविपुल छे. तेना ओवारानी परंपराना केटलाक परथार खंडित छे. पण तेथी पद्यप्रवाहना अखंडित दर्शनमां वांधो आवतो नथी. उपलब्ध पद्यात्मक साहित्यमां ते प्रवाह अतूट अने अस्खलित वहेतो नजरे पडे छे. पद्यरचनानां वे पासां जे कला अने सर्गशक्ति, ए उभयनो आ समयना काव्यसाहित्यमां सुस्पष्ट साक्षात्कार थाय छे. संवादनां नवां तत्त्वो शोधी कढाय छे, वर्णनी अने रूपनी व्यंजकता परखी साहित्य संगीतनी मैत्री साधे छे, नाद तथा वाणीनूं पाणिग्रहण थाय छे अने मोटेरांना आशीर्वादे उक्त शुभ लग्नथी लयबंध जनमे छे. काव्यकाल आ रीते, नवानवा पद्यबंध अने नवी पद्यरचना, ए उभयनी उत्पत्ति विशे बहुबहु जाणवानूं, पूरूं पाडे छे.

३ सुत्तकाळनी पेठे काव्यकाळमां पण साहित्यना प्रदेशमां अनेक भाषानो प्रचार दृष्टिगोचर थाय छे. पहेलां सात शतकमां संस्कृतमां तेम ज प्राकृतमां काव्यनाटक रचाय छे, अने ते पछीनां शतकोमां अपभ्रंशने पण साहित्यनी भाषानी पंक्तिमां स्थान मळे छे. संस्कृतनो प्रयोग वैनयिक भाषा तरीके चालु रह्यो हतो; तेनी साथे अग्रिम प्राकृत उत्क्रांति पामी काव्यकाळनूं प्राकृत बन्यूं हतूं. ए उत्तर प्राकृत जनता समस्तनी जन्मभाषा अने आमवर्गनी व्यवहारु भाषा हती. प्रस्तुत लोकभाषाने आपणे अंतिम प्राकृत नाम आपीशूं. प्राकृतप्रकाशमां जेनूं व्याकरण वररुचि रचे छे ते मागधी, शौरसेनी, पैशाची अने महाराष्ट्री आ अंतिम प्राकृतनी भिन्न देशमां अने भिन्न [११]मानवजातिमां प्रस्तुतकाळे बोलाती बोलीओ छे. मगध शूरसेन अने महाराष्ट्रनी व्यवहारु लोकवाणी ते अनुक्रमे मागधी, शौरसेनी

११ मानवजाति=Ethnic stock; race.

अने महाराष्ट्री कहेवाई; अने आटविक [१२]प्रात्यंतिक देशानी, इतर मानव-जातिए स्वीकारेला प्राकृतनी बोली ते पैशाची संज्ञा पामी. उक्त त्रण नाम आर्य देशनां वाचक छे, अने चोथूं अनार्य जातिनूं[१३] बोधक छे. अहीं गणावेली चार बोलीना उत्क्रमणमां पण फेर छे. विगतमां न उतरतां निर्दिष्ट भेदनूं एक ज उदाहरण आपीशुं. मागधी, शौरसेनी अने पैशाची बोलीमां अनादि असंयुक्त अल्पप्राण अघोष व्यंजनने बदले तेने मळतो घोष व्यंजन वपराय छे, ज्यारे महाराष्ट्रीमां ते व्यंजन नाश पामे छे. आ उत्क्रमणगत भेद सूचवे छे के चारे बोलीओ ऐककालिक नथी. मागधी शौरसेनी अने पैशाची इसवी सनना आरंभनी आसपासनां शतकोमां वपराती जणाय छे. मथुरामां भोंयमांथी मळी आवेला जैन स्तूपोनी प्रतिमाना लेख तथा तर्फाननी रेतीना रणमांथी हाथ लागेला **शारीपुत्रप्रकरणना** कडकाओ शौरसेनी तथा मागधीना इतिहास उपर प्रकाश पाडे छे; अने गुणाढ्य साथे शातवाहननो संबंध पैशाचीनो समय आंके छे. महाराष्ट्रीनूं उत्पत्तिस्थान महाराष्ट्र अने तेनो उत्कर्ष करनार राजा **गाहासत्तसई**नी हालस्स मुद्रावाळी गाथाओनो कर्ता सिरिहाल. तेनूं बिरुद कइवच्छल[१४] (सं. कविवत्सल) हतूं. तेनी गोत्रसंज्ञा शातवाहन (प्रा. सालाहण[१५]). अनेक शतकना निवासने लीधे महाराष्ट्री बोली अपनावनारा आंध्र राजकुळनो उक्त वंशज श्रीहाल तरङ्गवई कथा रचनारा [१६]पालित किंवा श्रीपालितना आश्रयदाता तरीके

१२ सरहद्द उपरना, सीमाडाना.

१३ गोंड सोंथळ वगेरे भूमिया वर्गना.

१४ जुओ गा.स. । १–२, ५, ६ । १०१ ।.

१५ जुओ दे.ना.मा. । सालाहणम्मि हाल: ।; जुओ षष्ठी अ. चि । ३ । हाल: स्यात्सातवाहन: ॥

१६ आ पालित किंवा श्रीपालित हाल राजानो आश्रित कवि हतो. जुओ अभिनंदविरचित **रामचरितना** बत्रीशमा सर्गने छेडे आवेला श्लोकनूं पहेलूं चरण, हालेनोत्तमपूजया कविवृषा श्रीपालितो लालित: ॥. इसवी छठ्ठा सैकाना दामा-

पण साहित्यमां जाणीतो छे. **सत्तसई**मांनी पालित्तस्स मुद्रावाळी **गाथाओ** प्रस्तुत कथामांथी हाले लीधी हशे. त्रीजी **गाथामां**[१७] श्रीमान हाल राजा जणावे छे के "एक करोड **गाथा** मळी आवी हती, तेमांथी अलंकारनी धमकवाळी सातसें **गाथा** तारवी काढी आ संग्रहमां में लीधी छे." अर्थात् हाल शातवाहनना समयमां महाराष्ट्री बोलीमां रचायला **गाथासाहित्यनूं** लाखे लेखूं थतूं हतूं. शातवाहनो पोताना राष्ट्रनी प्राकृत बोली माटे अभिमान धरावता हता; तेमने लीधे महाराष्ट्रीनो आटलो उत्कर्ष थयो जणाय छे. तेमना राज्यनी पूर्व सीमाना आटविक लोकनी पैशाची बोलीमां रचायली

श्रमण जिनभद्र गणीए **आवश्यकसूत्र** उपर **विशेषावश्यकभाष्य** लख्यूं छे, तेमां नीचेनी बे **गाथाओ** छेः-छज्जीवणियायारो णिद्दिट्ठवसेण तह सुयं चरणं। तं चेव य जिणवयणं सव्वं णिद्देसयवसेणं ॥ जह वा णिद्दिट्ठवसा वासवदत्तातरङ्ग-वइआई। लोए णिद्देसगवसओ तु मणू अक्खपाउ त्ति ॥ १५०७–१५०८ ॥. एना उपर आठमा शतकना हरिभद्रसूरिनी **शिष्यहिता** नामे बृहद्वृत्तिमां व्याख्यान नीचे मुजब छेः—लोको द्विधा। अर्हद्दर्शनानुगतो लोकोत्तररूपः तदितरश्च। तत्र लोकोत्तरे निर्दिष्टवशान्निर्देशो यथा षड्जीवनिका नाम अध्ययनम् आचारः आवश्यकम् इत्यादि। तथा अत्रैव लोकोत्तरे तदन्यच्च श्रुतं निर्देशकवशादेवोच्यते, यथा भद्रबाहुनिमित्तम्, नन्दसंहिता, कापिलीयम् इत्यादि। यथा वा इतरलोके निर्दिष्टवशाद् **वासवदत्ता तरङ्गवती** इत्यादि। निर्देशकवशात् तु मनुः अक्षपादः इत्यादि।. उदाहृत भाष्य अने वृत्तिना अभिप्राय प्रमाणे उक्त **तरंगवती**नो कर्ता पालित किंवा श्रीपालित मारी समजमां जैनेतर ठरे छे; केमके ए कथानो समावेश जैनेतर साहित्यमां कर्यो छे ए कथाने हारीतगच्छना सूर्यरूप वीरभद्रना शिष्य नेमिचंद्र गणीना यश नामना शिष्ये **तरंगलोला** एवूं नाम राखी जैनी दीक्षा आपी, एम उक्त कथासारना अंते आवेली भ्रष्ट गाथा उपरथी ठरे छे. अशुद्धि दूर करी ए **गाथा** हूं नीचे प्रमाणे वांचूं छूंः हारीयगच्छसूरस्स वीरभद्दस्स णाम जो सिस्सो। सिरसेण तस्स लिहिआ जसेण गणिणेमिचंदस्स ॥. पालितना नामे **गा. स.** ।१।६३।, ।२।७६।, ३।१७, ४८, ५६।, ४।७, ९३, ९४।, अने ५।१०। ए नव **गाथाओ** आपेली छे.

[१७] उक्त **गाथा** आ प्रमाणे छेः–सत्तसआइं कइवच्छलेण कोडीअ मज्झआरम्मि। हालेण विरइआइं सालंकाराण गाहाणं ॥.

બૃહત્કથા પણ તેમના જ આશ્રયથી પ્રસિદ્ધિ પામી હતી. ઇસવી સનનાં પહેલાં બે ત્રણ સૈકાં તે શાતવાહનોનો ઉત્કર્ષકાળ લેખાય છે. પ્રસ્તુત ચાર બોલી પૈકી પૈશાચી વ્હેલી લુપ્ત થાય છે. જે વાર્તાસંગ્રહમાં તે જીવતી રહી હતી તે બૃહત્કથા પણ કાલાંતરે નાશ પામે છે. બાકીની ત્રણ બોલી ચોથા સૈકા પછી સાહિત્યમાં કૃત્રિમ સ્વરૂપે જીવન ટકાવે છે, અને લોકભાષા અપભ્રંશ થાય છે. આ ભાષા ઉત્તર કાળમાં ચાલુ રહેલા સંસ્કૃત અને પ્રાકૃત સાથે ત્રીજી સાહિત્યની ભાષા તરીકે વપરાય છે. એનો ઉત્તર અવધિ બારમા સૈકાની લગભગ આવે છે. આ રીતે ભાષાને અવલંબીને કાવ્યકાલના દ્વૈભાષિક અને ત્રૈભાષિક એવા ભાગ પડે છે. એની પદ્યરચનાની સમીક્ષા સુગમ થાય એટલા માટે થોડાક માર્ગદર્શક વિવેચનની જરૂર છે. છંદોવિધાની પરિભાષામાં સાધારણ રીતે છંદ એટલે ચાર ચરણનો પદ્યબંધ. તેમાં ચાર ચરણ એક જ માપનાં હોય, તો તે સમચતુષ્પદ સમપદ કિંવા સમ કહેવાય. જો પહેલું ચરણ ત્રીજા સાથે અને બીજું ચોથા સાથે મળતું આવે, તો તે અર્ધસમચતુષ્પદ અર્ધસમપદ કે અર્ધસમ લેખાય છે. જો ચારે ચરણ અણસરખા માપનાં હોય, તો તે વિષમચતુષ્પદ વિષમપદ કિંવા વિષમ છંદ મનાય છે. ચરણ અખંડ હોય અથવા તો સખંડ હોય. જેમાં વચ્ચે કોઇ પણ સ્થળે બોલતાં વિરામ ન લેવો પડે, તે અખંડ ચરણ; અને વચ્ચે એક કે વધારે વાર વિરામ લેવો પડે, તે સખંડ. વિરામને માટે પારિભાષિક શબ્દ યતિ છે. ચરણ અખંડ હોય તો ચરણના અને સખંડ હોય તો ખંડના ઘટકાવયવ તે સંધિ કહેવાય છે. સંધિ બે કરતાં વધારે વાર લાગલાગટ વપરાયો હોય, તો તે આવૃત્ત લેખાય; બાકી અનાવૃત્ત. પ્રત્યેક સંધિના અક્ષરોમાં અમુક એક જ અક્ષર ભારયુક્ત અને બીજા બધા ભારમુક્ત હોય છે.

૪ પદ્યબંધની ભાષાના કામજોગ ખુલાસા પછી આપણે દ્વૈભાષિક કાવ્યકાલની પદ્યરચના તરફ વળિયે. તે કાળના કવિ ભાસ કાલિદાસ અને અશ્વઘોષ. એ ત્રણે નાટકકાર અને ત્રણે કાવ્યકાર હતા. તેમાંથી પહેલાનાં

नाटको ज बच्यां छे[१८]; बीजानां काव्य तेम ज नाटको ऊतरी आव्यां छे[१९]; अने त्रीजानां काव्य ज उपलभ्य छे[२०]. काव्य शाखानो प्रधान छंद **रघुवंश** अने **सौन्दरनन्द** तपासतां त्रैष्टुभी **उपजाति** ठरे छे; अने तेनाथी ऊतरतो दरज्जो आख्यानिक **अनुष्टुभ्** भोगवे छे. नाटक शाखा तरफ नजर फेरवतां कालिदासनी कृतिओमां **गाथा** अने **अनुष्टुभ्** बंने छंद वधारे वपराया छे; तेमां **गाथा**नी संख्या तेना जोडीदारथी दोढी छे. ते उपरथी वगर जोये ज में इ. स. १९१२ मां छपावेली **पराक्रमनी प्रसादी**ना उपोद्घातमां जणाव्या प्रमाणे अनुमान कर्यूं हतुं, के पुरोगामी भासनां नाटकोमां (आख्यानिक) **अनुष्टुभ्** छंद **गाथा** करतां वधारे वपरायो होवो जोईए. ए अनुमान **स्वप्नवासवदत्त** आदि नाटको मुद्रांकित थयाथी खरूं पड्यूं छे. जूनो नाटककार आख्यानकालथी ऊतरी आवेला पुराण **अनुष्टुभ्**ने प्रथम स्थान आपे छे, नवो नाटककार काव्यकालमां नवा प्रगटेला **गाथा** छंदने ते स्थाने स्थापे छे. प्रस्तुत मात्रावंधे तेनी चडियाती गेयताना कारणथी वधती जती लोकप्रियताने लीधे कलारसिक महाकविने आकर्ष्यो हशे. उभय शाखामां अगियार अक्षरथी मांडीने एकवीस अक्षर सूधीना मध्ययतिरहित अने मध्ययतिसहित चरणना विविध समचतुष्पद रूपबंध दृष्टिगोचर थाय छे. ए मोटे

---

१८ भासने नामे तेर नाटक Trivandrum Sanskrit Series मां छपायां छे, ते पैकी **मध्यमक, प्रतिमादशरथ, प्रतिज्ञायौगन्धरायण, स्वप्नवासवदत्त, पञ्चरात्र, अविमारक** तथा **दरिद्रचारुदत्त**, ए आठ भासनी कृति छे. **अभिषेक, ऊरुभङ्ग, कर्णभार, दूतघटोत्कच** तथा **दूतवाक्य**, ए पांच मारी समज प्रमाणे बीजाए बहु पाछळथी रचेलां जणाय छे. भासे **विष्णुधर्माः** नामे काव्य रच्यूं हतुं; जुओ **पृथ्वीराजचरित** ॥१॥३॥ सत्काव्यसंहारविधौ खलानां दीप्तानि वन्हेरपि मानसानि । भासस्य काव्यं खलु विष्णुधर्मान् सोऽप्याननात्पारतवन् मुमोच ॥. ए नाश पाम्यूं छे.

१९ **कुमारसंभव** तथा **रघुवंश** ए बे काव्य अने **मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय** तथा **अभिज्ञानशाकुंतल** ए त्रण नाटक.

२० **शारीपुत्रप्रकरण** अश्वघोषे रच्यूं हतुं; ते नाश पाम्यूं छे.

भागे अनावृत्त संधिवाळा छे. आवृत्त संधिना रूपबंध तो रडयाखडया ज मळी आवे छे, जेमके भासना मेघमाला[२१] तथा चण्डवृष्टिप्रपात,[२२] कालिदासनो निशा किंवा नाराच[२३] अने अश्वघोषनो एक नामरहित अर्धसम छंद[२४]. ते उपरथी अनावृत्त संधिवाळा रूपबंध प्रत्ये द्वैभाषिक काव्यकालनो पक्षपात ऊवाडो देखाई आवे छे. सुत्तकालनो रूपमात्रात्मक मिश्र चरणनो अर्धसम वैतालीय छंद भासनी कृतिमां छेल्लोछेल्लो एक वार दर्शन दे छे[२५]. ए मरण पामेला छंदना शरीरमांथी सिद्धिशाळी साहित्यकारो मंथनथी चार अर्धसम रूपबंध प्रगटावे छे, वियोगिनी किंवा सुन्दरी, अपरवक्त्र, माल्यभारिणी अने पुष्पिताग्रा. आ चारे छंद कालिदासनी कृतिमां वपराया छे; अने छेल्ला पुष्पिताग्रा वृत्तना प्रयोगथी जणाय छे के भासने पण ए रूपबंधोनूं जूथ जाणीतूं हतूं. प्रस्तुत काळमां शुद्ध मात्रात्मक पद्यरचना पण अजाणी न हती, ते भासना नाटकमां गाथाना अने कालिदासनां नाटकमां गाथा तथा उर्वशीना[२६] प्रयोगथी प्रतीत थाय छे. पद्यबंधनी आ नोंध उपरथी स्पष्ट समजाशे के भास अने कालिदास बहु पासेना कवि होवा जोईए. मालविकाग्निमित्र नाटकनी प्रस्तावनामां भासना नामनो उल्लेख छे[२७]; एटले करीने भास अने कालिदासना पौर्वापर्यनो प्रश्न रहेतो नथी. ए

---

२१ जुओ प्रतिमादशरथ ।३।३।.

२२ जुओ आविमारक ।५'६।.

२३ जुओ रघुवंश ।१०।१०४।.

२४. जुओ चिकित्सक उपरनी टिप्पणी ३४.

२५. जुओ प्रतिज्ञायौगंधरायण । ३ । णं पच्छविसेसपिण्डिदा पीदिं धपेदुं उवट्ठिदा । लाअगहा दिण्णमुद्दआ कालवसेण पहूदसघला ॥

२६ जुओ विक्रमोर्वशीय नाटकना बीजा अंकमां उर्वशीए पुरुरवा उपर लखेली प्रेमपत्रिका. पाठ भ्रष्ट छे, तेथी छंद ओळखी शकाय एम नथी. पद्यरचनाने बंध बेसतो शुद्ध पाठ में प्रस्ताव ३९ मां आप्यो छे प्रस्तुत छंदनूं नाम छंदःशास्त्रनां पुस्तकोमां छे नहि ते कारणथी में एने उर्वशीना नामथी ओळखाव्यो छे.

२७ जुओ नीचेनूं वाक्यः—प्रथितयशसां भाससौमिल्लकविमिश्राणां प्रबन्धानतिक्रम्य वर्तमानकवेः कियायां कथं परिषदो बहुमानः।

विशेनी चर्चा तो कालिदास अने अश्वघोषना संबंधमां ऊभी थाय छे. तेमां ऊतरता पहेलां बंनेनां काव्यनी पद्यरचना उपर दृष्टि फेरववी इष्ट छे.

५ कालिदास अने अश्वघोषनी पद्यरचनानी आलोचना माटे **रघुवंश** अने **सौन्दरनन्द** खास उपयोगी छे. खंडित कुमारसंभवमां वपरायला छंद रघुवंशमां आवी जाय छे. वळी खंडित **बुद्धचरित**ना जागती उपजाति, **मालिनी** अने **माल्यभारिणी** सिवायना छंद **सौन्दरनन्द**मां मळी आवे छे. ए त्रण छंदने गणतरीमां लेई उक्त बे काव्योना पद्यबंधनी समीक्षा करतां नोंधवुं जोईए के बंने कविनो आख्यानिक **अनुष्टुभ्** उपर अने त्रैष्टुभजागत कुटुंब उपर एकसरखी प्रीति जणाय छे. ए छंदोमां **रघुवंश**ना ६+८ अने **सौन्दरनन्द**ना ७+८ सर्ग अनुक्रमे रचाया छे. बेउ काव्यमां विशेषे करीने समपद रूपबंधोनो उपयोग करवामां आव्यो छे. बंने कवि व्यापक छंद टूंकडा वापरे छे. ते साथे छंदोनी विविधतानो आंक पण तेमनी कृतिमां समान छे. परंतु कालिदास **रथोद्धता, स्वागता, शालिनी, द्रुतविलंबित, तोटक** जेवा टूंका एकदेशी वापरे छे, ते अश्वघोषना काव्यमां जडता नथी. ए तरफनी खोट अश्वघोष टूंका नवा एकदेशी जोडी काढी अने जूना मोटा एकदेशी काममां लेई केटलेक दरज्जे पूरे छे. रूपबंधनी सम अर्धसम अने विषम ए त्रणे शाखामां बौद्ध कविए एकएक नवो छंद आप्यो छे. **सौन्दरनन्द**ना बीजा सर्गमां १४, १३, १८ अने १५ एवी पलटाती रूपसंख्यानो विषम छंद छे; बारमा तथा तेरमा सर्गमां चौद रूपवाळां चरणनो सम छंद छे; अने पूर्वोक्त तेरमा सर्गमां पंदर अने सोळ रूपनां चरणोनो अर्धसम छंद छे. वळी माहेश्वर कवि ज्यारे सम अने अर्धसम ज व्यापक तरीके योजे छे, त्यारे बौद्ध कवि उद्गता नामे ओळखातो विषम रूपबंध पण व्यापक तरीके उपयोगमां ले छे. भास अने कालिदासना पद्यबंधमां जेटली सरखाइ छे तेटली ज कालिदास अने अश्वघोषना पद्यबंधमां अणसरखाइ छे. पहेला बे पासपासेना नाटककार लागे छे; बीजा बे काव्यकार व्हेलामोडा थयेला जणाय छे.

पद्यबंधमां करेली प्रगति उपरथी सौन्दरनन्दनो कर्ता रघुवंशना कर्ता पछी केटलोक मुद्दते थयो संभवे छे. पाछला काळमां विषम वृत्त उद्गता उद्गत थई प्रचारमां आवे छे; अश्वघोष सौन्दरनन्दमां व्यापक तरीके तेनो उपयोग करे छे; अने उत्तरकाळमां ते चालु रहे छे.

६ छंदोना वपराशनी कसोटीना आधारे बांधेली अटकळने बीजी दिशाएथी टेको मळे छे. अश्वघोष कविए शारीपुत्रप्रकरण[28] नामे नव अंकनूं नाटक रच्यूं हतूं. तेनो जूज भाग मध्य एशिआना रणमांथी जडी आव्यो छे. एनी हाथप्रत प्रथम कुशानोना समयनी ब्राह्मी लिपिमां लखेली छे. ए लिपिना अक्षरो भूंसी नांखी लीटीओ वच्चेना कोरा भागमां खरोष्ठी लिपिमां नवेसर मूळनो उतारो करवामां आव्यो छे. ब्राह्मी लिपिमां लखेलुं मूळ भूंसाया छतां वंचाय एवूं छे, अने लिपि ओळखाई आवे छे. उक्त हाथप्रत ताडपत्र उपर छे. खरोष्ठी लिपिनी नकल माटे नवां कोरां ताडपत्रो न वापरतां जूनां अक्षरांकित ताडपत्रनी पंक्तिओ वच्चेना कोरा भागनो उपयोग करेलो छे, ते सूचवे छे के ते काळे मध्य एशियामां ताडपत्रनी भारे अछत हशे. ऐतिहासिकोनो एवो मत छे के भरतखंडनां ताडपत्र लेखनना साधन तरीके मध्य एशिआमां इसवी सनना पहेला सैकामां प्रवेश पाम्यां हतां. आ वात ध्यानमां लेतां शारीपुत्रप्रकरणनो खरोष्ठी लिपिमां उतारो इसवी सनना बीजा शतकथी मोडो न होई शके. ब्राह्मी लिपिगत मूळ तो तेनाथी पण पहेलां लखायूं होवूं जोईए. एना संबंधमां मारो तर्क एवो छे के कुशानवंशना महा प्रतापी राजा कनिष्के छेल्ली बौद्ध महासंगीति काश्मीरमां मेळवी, ते काळे प्रस्तुत बौद्ध नाटकनी रचना थई हशे. अश्वघोष उक्त धर्मसभानो उपाध्यक्ष हतो. ए महासंगीतिमां चारे दिशाना महायानी भिक्खुओ एकठा थया हता. तेमना विनोदने अर्थे वृद्ध उपाध्यक्ष कविए बुद्ध

२८ अश्वघोषना ए नाटकनूं बीजूं नाम शारद्वतीपुत्रप्रकरण पण छे

भगवानना आदि शिष्यनूं चरित्र **बुद्धचरित** अने **सौन्दरनन्द** काव्योनी अनुपूर्तिरूपे नाटकना आकारमां आलेख्यूं हशे. महासंगीति विसर्जन थतां **शारीपुत्रप्रकरण** खोतनना सीमावासी भिक्खुओ साथे वायव्य बृहद्भारत मां गयूं हशे अने त्यांनी खरोष्ठी लिपिमां तेनी पुनर्भू[२९] प्रत कोइ स्थानिक बौद्ध साधुए पोताना उपयोग अर्थे तैयार करी हशे. ते मध्य एशियानी पाछ-ळथी रणरणाकार थयेली पण पूर्वे आबादी भोगवती भूमिमां कोइ भिक्खु के उपासग साथे जवा पामी हशे. प्रकरण खोतनमां गयूं तेनो समय हूं इसवी सनना पहेला अने बीजा सैकाना संधिमां मूकूं छूं. उक्त नाटकना कर्त्तानो काळ आ रीते इसवी पहेलुं सैकूं संभवे छे. एने युरोपना विद्वानो कालिदास-ना पूर्वे थयेलो शा माटे माने छे, ते समजातूं नथी. पद्यबंधना वपराटनी कसोटी तेमना ए निर्णयना विरुद्धमां जाय छे. उपरांत बीजी पण एक वात ध्यानमां लेवानी छे. जो बौद्ध नाटककार अने काव्यकार माहेश्वर कालि-दासना पूर्वे थयो होय, तो **मालविकाग्निमित्र**नो ऊगतो नाटककार पुरोगामी मानपात्र नाटककारोनां नाम लेतां **शारीपुत्रप्रकरण**ना कर्तानो निर्देश कर्या वगर रहे नहि. कालिदासे भास अने सोमिल[३०] कविमिश्रनां नामना उल्लेख

---

२९ Palimpsest.

३० नाटककार सोमिल विशे कंइ पण जाणवामां नथी. **शूद्रक-कथाना** जोडीदार कर्ताओ तरीके राजशेखर रामिलसोमिलनां नाम ले छे. **शार्ङ्गधरपद्धति**मां एमना संयुक्त नामे सव्याधेः कृशता प्रतीकनो एक श्लोक आप्यो छे; ते जो उक्त कथामांथी लीधो होय, तो ते कृति संस्कृतमां रचाई होवी जोईए. प्रस्तुत श्लोकनी अर्थचित्र शैली जोतां कथाकारथी नाटककार भिन्न तेम ज प्राचीन जणाय छे. जेम भास नाम संस्कृत भाष संज्ञानूं प्राकृत रूप छे, तेम सोमिल पण संस्कृत सौमिकनूं प्राकृत रूप छे, एवी मारी समज छे. सौमिक गोत्र वासिष्ठ गोत्रना पेटामां गणावेल छे. इसवी सन पूर्वे ग्रंथका-रोमां कर्ता तरीके गोत्रनाम आपवानो संप्रदाय हतो. ऐतरेय, कात्यायन, शौनक, यास्क, पाणिनि, आश्वलायन, कौटिल्य, ए बधां गोत्रनाम ज छे. साहित्यकारनूं विशेषनाम क्वचित बचेलूं मळे छे, तो ते इतर प्रवृत्तिने लीधे कतरी आव्यूं जणाय छे; जेमके मौर्य चंद्रगुप्तना अमात्य तरीके कौटिल्यनूं विष्णुगुप्त नाम. मौर्ये

भेगो अश्वघोषना नामनो उल्लेख कर्यो नथी, ते एम सूचवे छे के सौन्दरनन्दनो कर्ता रघुवंशना कर्ताना पूर्वे नहि, पण पछी थयो छे. वळी प्राचीन नाट्यशास्त्रने नाटकमां आठ ज रसनो प्रयोग अभिमत हतो. कालिदासना समय पर्यंत रसनी संख्या जूना नाट्यप्रस्थानमां आठ ज हती. विक्रमोर्वशीय नाटकना बीजा अंकना उत्तर भागमां इंद्र देव समक्ष अप्सराओ द्वारा भजववाना भरत मुनिना प्रयोगनो उल्लेख छे, ते अष्टरसात्मक ज कहेलो छे. अर्थात् जूना नाट्यप्रस्थानना आठ रस साथे शांत रसने कालिदासना समयमां स्थान मळ्यूं न हतुं. ए रसनी जमावट प्रथम शारीपुत्रप्रकरणमां दृष्टिगोचर थाय छे. बुद्धचरित अने सौन्दरनन्द काव्यमां प्रस्तुत रसने बहलावी सिद्धहस्त कवि नाटकमां पण ए रसने अंगी रसनूं स्थान आपे छे. प्रयोगबंधमां आ नवा रसना दर्शनथी जणाई आवे छे के अश्वघोष कालिदासथी मोडो छे. ए त्यागी एकरसरसिक कवि रागी अनेकरसरसिक कविना पछी केटलेक अंतरे थयो छे. प्रथम भास, पछी थोडेक छेटे कालिदास अने पछी केटक लांबे गाळे अश्वघोष, ए रीते मारी समज प्रमाणे तेमनी आनुपूर्वी गोठवाय छे.

७ अश्वघोषे जे नवा त्रण छंद रच्या छे, ते एना पछीना कोइ कविए उपयोगमां लीधा जणाता नथी. एमांना सम अने अर्धसमनां नाम तो छंदोविधाना ग्रंथोमां पण जडतां नथी. एमनी नोंध लेवाना साधन तरीके मारे

बिन्दुसारना अमात्य सुबंधुनी कदाच गोत्रकृत संज्ञा सौमिल होय. अभिनवगुप्त ए अमात्य नाटककारनी वासवदत्तानाट्यधारानी नोंध लेतां तेना नामने 'महाकवि' विशेषण लगाडे छे. जेमां नाटकनी अंदर अंशभूत पेटानाटक होय, ते नाट्यधारा. पेटानाटक संस्कृतमां गर्भाङ्क संज्ञाथी अने गजरातीमां अन्तर्नाटक नामथी ओळखाय छे. तेना उत्पादक होवानूं मान इ. स. पूर्वेना त्रीजा शतकना संमानित नाटककारने घटे छे. आ सुबंधु अने सौमिल एक होय, तो तेना नामने कालिदास 'कविमिश्र' पद लगाडी तेना प्रत्ये भासना जेटली ज मानबुद्धि प्रदर्शित करे अने तेने विख्यात कीर्तिवाळो कहे, ते जुगते जुगतू छे. कदाच बहु जूनो पाठ 'भाससौमिककविमिश्राणाम्' होय. श्रद्धा केटली हदे पहोंची छे तेनो 'भास्कर' अने 'कविमिश्राणाम्' पाठांतरथी कंइक ख्याल आवशे.

एमनां अनुक्रमे **अप्रमत्ता** अने **चिकित्सक** एवां नाम पाडवां पड्यां छे. त्रीजा छंदनूं नाम एक वखत में प्रवर्धमान[३१] राख्यूं हतूं; केमके ए विषम छंदनां चरणोमां अनुक्रमे चौद, तेर, अढार अने पंदर, एम एकएकथी चडियाती अंकसंख्यानां रूप आवतां हतां[३२]. पाछळथी हेमाचार्यना **छंदोनुशासनमां** एनूं **वर्धमान** नाम मळी आव्यूं, एटले ते नामथी तेनो अहीं निर्देश कर्यो छे. **अप्रमत्ता** छंद शक्करी वर्गनो रूपबंध छे. तेनूं चरण गागागागा अने ललललललगा–गालगागा ए बे खंडनूं बने छे[३३]. **चिकित्सकमां** गुरुलघुथी बनेला संधिनूं आवर्तन थया करे छे[३४]. एनां विषम चरण तूणकना अने समचरण **पञ्चचामरना** चरणने मळतां छे. अर्थात् ए उक्त बे रूपबंधनां चरणना योगथी बननारो आवृत्त संधिनो मिश्र छंद छे. **वर्धमाननां** चरणोमां हेमाचार्यना सूत्र अनुसार अनुक्रमे मसजभगग, सनजरग, ननसननस अने ननजय, एवी गणरचना आवे छे. **अप्रमत्तामां** चोथा अक्षर पछी मध्य यति होय, एम मन्दाक्रान्ता साथे ए रूपबंधने मेळवी जोतां समजाय छे. **चिकित्सकमां** मध्य यति नथी. **वर्धमानमां** पहेला चरणना त्रीजा अक्षर पछी मध्य यति संभवे छे. **छंदोऽनुशासनना** त्रीजा अध्यायना उपस्थितप्रचुपित प्रकरणमां आपेला त्रण विषम वृत्तमां **वर्धमान** कलानी दृष्टिए श्रेष्ठ छे. **चिकित्सक** छंद तूणक अने **पञ्चचामर-**

---

३१ जुओ **पराक्रमनी प्रसादी** (आ. ४, ५), उपोद्घात, पृष्ठ ५–६.

३२ जुओ **सौन्दरनन्द** ।२।६४। स प्रेक्ष्यैव हि जीर्णमातुरं च मृतं च, विमृशन् जगदनभिज्ञमार्तचित्तः । हृदयगतपरघृणो न विषयरतिमगमज्, जननमरणभयमभितो विजिघांसुः ॥. जुओ वळी **सौंदरनन्द** ।२।६५।

३३ जुओ **सौ.न.**।३।५६। तस्मादेषामकुशलकराणामरीणां, चक्षुर्घ्राणश्रवणरसनस्पर्शनानाम् । सर्वावस्थं भवविनियमादप्रमत्तो, माऽस्मिन्नर्थे क्षणमपि कृथास्त्वं प्रमादम् ॥. जुओ वळी **सौ. न.** ।१२।४३।

३४ जुओ **सौ. न.** ।१३।५५। कामभोगभोगवद्भिरात्मदृष्टिदृष्टिभिः, प्रमादनैकमूर्धभिः प्रहर्षलोलजिह्वकैः । इन्द्रियोरगैर्मनोबिलेशयैः स्पृहाविषैः, शमागदादृते न दष्टमस्ति यच्चिकित्स्यते ॥. हरप्रसाद शास्त्रीनी अने जोन्स्टननी मुद्रित प्रतमां ' चिकित्सयेत् ' अने चिकित्सेत् ' पाठ छे, ते दूषित छे. नवो पाठ कल्पित छे.

थी गंतार्थ गणाय. पण अप्रमत्त अने वर्धमाननां स्थान तो अन्य मेळापी वृत्तथी पूरावा पाम्यां नथी. अश्वघोषे कलामां करेली प्रगतिनूं माप ए सम अने विषम रूपबंधथी थाय छे.

८ द्वैभाषिक काल जेम भाषाओना प्रचारमां तेम प्रयोगबंधना स्वरूपमां पण त्रैभाषिक काळना पुरोगामी तरीके तरत ओळखाई आवे छे. प्राचीन आख्यानश्रवणमांथी आख्यानदर्शन अस्तित्वमां आव्यूं. तेमांथी प्रगटेलूं नवतर प्रयोज्य[३५] साहित्य द्वैभाषिक काव्यकालमां सामान्य नाटक संज्ञाथी ज जाणीतूं हतूं. कालिदासनूं विक्रमोर्वशीय, ते नाटक हतूं. तेनो त्रोटक तरीके अज्ञानमूलक व्यवहार ते काळे न हतो. उपरूपकना अढार भेदमां त्रोटकनी गणना छे. रूपक अने उपरूपक बन्नेनो वाचिक अभिनयमां समावेश थाय छे. तेम छतां ए इसवी सनना त्रीजा चोथा शतकना **भरतनाट्यशास्त्रमां** वाचिक अभिनयने अंगे दश रूपकनो ज विवेक कर्यो छे. उपरूपकनो प्रकार कर्ताने अवगत होय, तो वाचिक अभिनयना प्रकरणमां के अन्यत्र ते विशे कंइ कहे ज नहि ए बने नहि. स्हेजे एवी अटकळ बंधाय छे के, उपरूपक ते काळे जनम्यां न हतां. आ स्थिति इसवी सनना त्रीजा चोथा शतकनी छे. पहेला शतकमां तो दश रूपकनो विवेक पण अज्ञात छे. अश्वघोषनूं **शारीपुत्रप्रकरण,** ए नाटक छे. तेनूं वस्तु उत्पाद्य नथी, ऐतिहासिक छे; अने ते दस अंकमां नथी, नवमां छे; ते छतां तेने नाटककारे प्रकरण संज्ञा आपी छे, ते नाटकना पर्याय तरीके आपी छे. पुरोयायी कालिदास पण **अभिज्ञानशाकुन्तलनी** प्रस्तावनामां नाटक किंवा प्रयोगबंधना अर्थमां प्रस्तुत प्रकरण बोलनो उपयोग करे छे. **विक्रमोर्वशीय** पेठे भासनां केटलांक नाटकने रूपकउपरूपकना पेटाभेदमां आजकाल गोठववामां आवे छे[३६]. नाटक पांचथी ओछा अंकनूं न होई शके ए

---

३५ भजवी बतावाय एवूं साहित्य.

३६ The Trivandrum Sanskrit Series मां ए नाटको छपायां छे. तेमां सद्गत महामहोपाध्याय त. गणपतिशास्त्रीए आ मिथ्या प्रयास आदर्यो छे.

अर्वाचीन मर्यादाथी दोराई चार अंकना **प्रतिज्ञायौगन्धरायणने** बलात्कारे नाटिका, त्रण अंकना **पञ्चरात्रने** समवकार अने एक अंकना **मध्यमकने** व्यायोग ठरावावानो आ प्रयास निष्फळ छे; केमके ते समयविरोधथी दूषित छे. चोथा अने ते पछीना शतकोनी रूपक अने उपरूपकनी व्यवस्थानो नथी गंध भासने, नथी कालिदासने अने नथी अश्वघोषने. भासने नाट्यशास्त्र विदित हतुं[३७]. तेमां जो व्यायोग समकार वगेरे पुल्लिंगना अने नाटिका वगेरे स्त्रीलिंगना पारिभाषिक शब्द उपयुक्त होत, तो मध्यमकम्, पञ्चरात्रम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् वगेरे नपुंसक लिंगना प्रयोग ते वापरत नहि. **भरत-नाट्यशास्त्रथी** भासादि कवित्रिपुटीना परिचयनुं नाट्यशास्त्र जूदुं हतुं. तेमां रूपक अने उपरूपकना विविध भेदनो निर्देश न हतो. तेमां नाटकना अंकनी संख्या मर्यादित न हती. तेम ज तेमां रंगभूमि उपर नियुद्ध वध अने मरणनां दृश्यनो निषेध न हतो. आ कारणथी भास कालिदास अने अश्वघोष त्रणे नाटककारो **भरतनाट्यशास्त्रथी** अर्थात् इसवी त्रीजा चोथा शतकथी जूना छे[३८].

९ काव्यकालना प्रयोगबंधमां अंतिम प्राकृतनी बोलीओना वपराशमां एक अजब असंगति नजरे पडे छे. एना उदाहरणमां महाकवि कालिदासनुं **अभिज्ञानशाकुन्तल** ज लेइये. ए नाटकना त्रीजा अंकमां शकुन्तला दुष्यंत

---

३७ जुओ **अविमारकना** पहेला अंक पछीना प्रवेशकमांनी नीचेनी उक्तिः— अत्थि **रामाअणं** णाम णट्टसत्थं। आ उक्ति उपरथी, भासना समयमां जेम **रामायण** जाणीतुं हतुं तेम कोइक नाट्यशास्त्र पण रचायलुं जाणीतुं हतुं, एवुं स्थापित थाय छे. पाणिनि भगवानना पूर्वे विविध 'नाट्यसूत्र' अस्तित्व धरावता हतां. तेनाथी भासे जेनो उल्लेख कर्यो छे ते 'नाट्यशास्त्र' अर्वाचीन ठरे छे.

३८ केटलाक विद्वानो **अभिज्ञानशाकुन्तल, रघुवंश** आदि रचनार कालिदासने गुप्तवंशना बीजा चंद्रगुप्तना अने कुमारगुप्तना समयमां मूके छे. रघुना दिग्विजयमां कोइ समुद्रगुप्त पराक्रमादित्यनुं अने **कुमारसंभव** संज्ञामां कोइ कुमार-गुप्तनुं घन माने छे. ए कल्पनानी अनुपपत्ति उपरना लखाणथी जणाई आवशे.

उपर प्रेमपत्रिका लखे छे, तेनी गाथा अंतिम प्राकृतनी प्रादेशिकी (Provincial) महाराष्ट्री बोलीमां छे; अने पांचमा अंकना आरंभमां देवी वसुमती हंसपदिकाना मुखे दुष्यंतने उपालंभ आपे छे ते अन्योक्तिनूं पद्य बीजी प्रादेशिकी बोलीमां, मारी समज प्रमाणे शौरसेनीमां, छे. आ विरोध शी रीते टाळवो? शकुंतला उत्तम पात्र छे अने हंसपदिका पण तत्रभवती विशेषणना ऊमेरणथी उत्तम पात्र ठरे छे. बंने गद्यमां शौरसेनी बोले, ते पैकी एक पात्र पद्यमां महाराष्ट्रीनो अने अन्य शौरसेनीनो उपयोग करे, ए केम संभवे? पांचमा अंक पछी आवेला प्रवेशकमां मागधी बोली बोलनार माछी पोताना धंधानो बचाव करे छे ते पद्य मागधीमां छे; अने छट्ठा अंकना आरंभे शौरसेनी बोलनारी उद्यानपालिका आंबामोरथी वसंतने वधावे छे ते गाथा शौरसेनीमां छे: ते जोतां शौरसेनी बोलनारी शकुंतलानी प्रस्तुत पत्रिका पण शौरसेनीमां ज होवी घटे छे, नहि के महाराष्ट्रीमां. व्यवहारु ऐतिहासिक जीवनकाळमां अमुक बोली बोलनारूं पात्र गद्यमां ते बोली बोले अने पद्यमां बीजीनो आश्रय ले, ए जेवूं असंगत तेवूं ज असंभवित छे. उपालंभनी अन्योक्तिना अने वसंतना वधामणाना दृष्टांतथी एवा निर्णय उपर अवाय छे, के शौरसेनी बोली बोलनारी व्यक्तिओनी पद्यात्मक उक्ति पण ते ज बोलीमां मूळे हशे. इसवी सनना आरंभे दक्षिणापथमां जन्म पामनारी बोली उत्तरापथमां पसरे अने तेनो रूढ शौरसेनीना स्थाने पद्यधमा उपयोग कोइ करे, ए बनवा जोग नथी. कालिदास पछी अश्वघोषना समयमां महाराष्ट्रीनो उदय आपणी गणतरी प्रमाणे थाय छे. ते काळे ए महाराष्ट्र बहार पसरवा ज पामी नहि होय. खरूं छे के उदय थया पछी राजाश्रयने लीधे ते बोलीनो एटलो भारे उत्कर्ष थयो, के संस्कृतनी समोवडी गणाई तेमां काव्यो लखाता थया अने नाटकमां तेणे पगपेसारो कर्यो. जामेली शौरसेनीने ते पदभ्रष्ट करी शकी नहि, पण हठेलीने तेनूं अर्धूं आसन दबावीने ते बेठी नाटकमां शौरसेनी बोलनारां उत्तम अने मध्यम पात्रना

मुखनी कविता महाराष्ट्रीमां जोईए, ए कविसंप्रदाय त्यारथी चालु थयो होय[३९]. तेने लीधे नवा प्रयोज्य साहित्यमां उत्तम मध्यम पात्रना मुखमां मूकवानी कविता महाराष्ट्रीमां रचाई एटलुं ज नहि, पण शौरसेनीमां रचायली पूर्वेनी कविता ए समयविरोधनो विचार न करनाराने हाथे महाराष्ट्रीना संस्कार पामी. आवूं कंइक भास तथा कालिदासना नाटकोना संबंधमां बन्यूं हशे, ए ज उक्त बोलीओनी गूंच ऊकेलवानो मार्ग जणाय छे. आ तर्कनी वास्तविकता जो अंतरमां ऊतरे, तो द्वैभाषिक काळनां नाटकोमांथी महाराष्ट्रीने खसेडीने शौरसेनीने पद्यबंधमां पोताने स्थळे पुनः स्थापित करवी इष्ट छे.

१० काव्यकाळना त्रैभाषिक विभागनूं पद्यात्मक साहित्य संस्कृत प्राकृत अने अपभ्रंश ए त्रण भाषामां छे. संस्कृतमां [४०]श्रव्यबंध एटले (संकुचित अर्थमां) काव्य, अने दृश्यबंध एटले नाटक, बंने खेडायां छे; महाराष्ट्री प्राकृत काव्यमां अने नाटकमां वपरायूं छे. शौरसेनी मागधीनो प्रयोग नाटकमां थयो छे; अने अपभ्रंश काव्यमां प्रचलित छे. पद्यरचनानी आलोचनाने अंगे ए सौमां संस्कृत पद्यात्मक साहित्य विशेष महत्ता धरावे छे. एना विशे बोलतां जे नाम ओठे आवीने रहे छे, ते भारवि अने माघनां छे. महाकवि कालिदासे **कुमारसंभव** अने **रघुवंश** सरजी कथाकाव्यना आदर्शथी संस्कृत साहित्यने विभूषित कर्यूं छे, त्यारे भारविए **महाभारत**मांनो एक टूंको प्रसंग लई, **किरातार्जुनीय**नी रचनाथी प्रस्तावकाव्यनूं नवूं प्रस्थान चलाव्यूं छे. ए ज दिशाए वळीने माघे **शिशुपालवध** नामे काव्य **किरात**नी सरसाइमां रच्यूं जणाय छे. आ बे कविनी कृतिमां जूना व्यापक मात्रेनो पक्षपात कमी थतो जाय छे, अने नवतर व्यापकना प्रयोगथी विविधता आणवानी रुचि

---

३९ जुओ. **साहित्यदर्पण** । ६ । भाषाविभाग।. ४० विश्वनाथ **साहित्यदर्पण**मा श्राव्य शब्द वापरे छे.

वधे छे, ते एटले सुधी के वृत्तकौशल्यना प्रदर्शनमां अने शब्दार्थचित्रना चमत्कारमां जे सर्गो रोकाय छे ते बाद करतां माघ लगभग बाकीना बधा सर्ग नवा नवा व्यापकमां ज रचे छे. एकदेशीनी संख्या कालिदास अश्वघोष अने भारविना काव्योमां बहुधा सरखी छे, पण माघनी कृतिमां ते बमणीना उपर पण पहोंचे छे.

११ व्यापकना अने एकदेशीना प्रयोगमां उपर जे प्रगतिनूं निरूपण कर्यूं छे, तेनो वेग मापवा अने साहित्यना इतिहासनी कालगणनामां कालिदास भारवि तथा माघनूं स्थान अटकळवा ए त्रण कविनां उपर कहेलां काव्यना पद्यबंधनी चोकसाइथी समीक्षा करवानी जरूर छे. आपणे गणतरी करीशूं तो जणाशे, के रघुवंशनी अपेक्षाए किरातार्जुनीयमां अने शिशुपालवधमां व्यापकनी संख्या उत्तरोत्तर वधती जाय छे. रघुना व्यापक उपरांत किरातमां बीजा छ व्यापकनो अने माघकाव्यमां किरातना बार व्यापक उपरांत वळी बीजा छ नो वधारो थाय छे. आ गणितश्रेणिए प्रवर्तती वृद्धि भेळां काळनूं अंतर सूचवनारां अनेक तत्व भळेळां मळी आवे आवे छे. आख्यानकालना अनुष्टुभ्नो प्रयोग भारवि अने माघनी कृतिमां छेक ज घटी जाय छे. ए छंदमां पहेला काव्यना छ सर्गो छे, त्यारे बीजां बे काव्यमां बब्बे ज छे, अने तेमां पण एक एक सर्ग तो शब्दार्थचित्रमां रोकायो छे. उक्त चित्रना प्रदर्शननूं विधान नवूं होई बंधनी सुगमता उपर दृष्टि राखी अनुष्टुभ्नो उपयोग भारविए अने माघे शब्दार्थचित्रना सर्गमां कर्यो होय एम समजाय छे[४१]. आख्यानक अनुष्टुभ्ना जेवो ज घटारो किरात अने माघकाव्यमां त्रैष्टुभी उपजातिना प्रयोगमां थयेलो छे. रघुना आठ सर्ग उक्त पुराणा उपजाति छंदमां छे, तेना मुकाबलामां बीजा बे काव्योनो एक एक सर्ग ज ए छंदमां रचेलो छे. कालिदासना व्यापक

---

४१ नवमा शतकमां रत्नाकर कवि हरविजयमां शब्दार्थचित्रना प्रदर्शन माटे मोटा ७८ वापरे छे.

सम छंद एके एक मध्ययतिरहित छे. भारवि पहेलवहेलो मध्ययतिवाळो प्रहर्षिणी छंद व्यापक तरीके वापरे छे; अने माघ ते उपरांत शालिनी रुचिरा तथा मालिनीनो उपयोग करे छे. अर्धसम अने विषम रूपबंधना प्रयोगमां पण एने जवाब आपती प्रगति नजरे पडे छे. पहेला काव्यमां अर्धसम पैकी एकलो वियोगिनी छंद ज व्यापक तरीके योजेलो छे; बीजां बेमां ते साथे माल्यभारिणी. अने पुष्पिताग्रानो प्रयोग पण छे. रघुनो मोटामां मोटो व्यापक बार रूपनो, किरातनो तेरनो अने माघकाव्यनो पंदरनो छे.

१२ उपरना टांचणमां व्यापकनो आंकडो किरातनो रघुथी बमणो थाय छे, अने माघकाव्यनो किरातथी दोढो थाय छे; एटलेके प्रगतिनूं गुणोत्तर चार अने त्रणना प्रमाणमां आवे छे. ते उपरथी एवी अटकळ बंधाय छे, के भारविथी माघ जेटलो मोडो हशे तेना करतां कालिदासथी भारवि वधारे मोडो थयो हशे. उपर कहेला माल्यभारिणी अने पुष्पिताग्रा ए अर्धसम तेम ज उद्गता ए विषम छन्द भारवि अने माघ व्यापक तरीके योजे छे, ते कालिदासना काव्यमां छे नहि; ए पण कालगणनाना प्रश्ननी चर्चामां ध्यान बहार रहेवूं न जोईए. वळी रघुमां छंदोवैविध्य अने शब्दार्थ-चित्रना सर्ग जुदा नथी, एक ज सर्गमां बंने विषय समाव्या छे; अने तेमां पण चित्रना प्रदेशमां मात्र यमकनूं ज निदर्शन छे. किरातमां उक्त विषयना निरूपणमां कर्ताए बे सर्ग रोक्या छे; अने माघकाव्यमां तो त्रण सर्ग भरीने पण कवि धरातो नथी. [४२]संख्यानविद्याना आ आंकडागणित करतां पण वधारे महत्त्वनो मुद्दो प्रस्थानभेदनो छे. कालिदास अने अश्वघोष एक प्रस्थानना कवि छे. भारवि अने माघनूं प्रस्थान तेथी भिन्न छे. जोके रघुवंश किरातार्जुनीय अने शिशुपालवध एक ज महाकाव्य संज्ञाथी ओळखाय छे, तथापि त्रणे एक कोटिनां काव्य नथी. रघुवंश अने सौन्दरनन्दथी फिरा-

४२ आंकडाशास्त्र [Statistics].

तार्जुनीय अने शिशुपालवधनो आदर्श जुदो छे. पहेलां बे काव्यमा आधिकारिक वस्तु ते आधिकारिक ज रहे छे. तेनो वेगभर मनोहर विकास, ते ज आगळ पडतूं ध्येय छे. बीजां बेमां आधिकारिक वस्तु स्वल्प होई प्रासंगिक ऋतुवर्णन, वनविहार, जलविहार आदिना आवरणने लीधे पाछळ पडी जाय छे. तेना मनोहर विकासनो अवकाश वस्तुना प्रमाणे स्वल्प होवाथी वेग बहु मंद रहे छे. छंदना नादमां काव्यना सुर संभळाता बंध पडे छे; अने अलंकारना ठाठमाठमां अलंकार्यनी मधुर मूर्तिनां दर्शन लुप्तप्राय बने छे. जूना प्रस्थानमा प्रतिभानो विहार छे; नवा प्रस्थानमां कल्पनानो विलास छे. कालिदास अने अश्वघोष श्रोताने यथेच्छ रसनूं पान करावे छे, भारवि अने माघ वाचकने चमत्कारमां बूडावी दे छे. नवा प्रस्थाननो उदय भरतनाट्यशास्त्रना निर्माणथी बहु मोडो नथी. जेटले दरज्जे भास अने कालिदासनूं नाट्यप्रस्थान प्रस्तुत नाट्यशास्त्रना प्रस्थानथी भिन्न छे, तेटले ज दरज्जे अथवा तेथी वधारे कालिदास अने अश्वघोषनूं काव्यप्रस्थान भारवि अने माघना काव्यप्रस्थानथी भिन्न छे; अने विशेषमां कहेवूं जोईए छे के भिन्न होवानी साथे पुराणूं पण छे. निर्दिष्ट भिन्नता अने नवीनताना कारणथी भारविनो पूर्व अवधि इसवी चोथूं शतक संभवे छे. किरातार्जुनीय विशाखदत्तना मुद्राराक्षसथी प्राचीन छे. उक्त नाटकना चोथा अंकनो दसमो श्लोक भारविना काव्यना बीजा सर्गना सुडतालीसमा श्लोकना उत्तरार्धनो सुस्पष्ट अनुवाद छे. भारवि ज्यारे 'सहते न जनोऽप्यध क्रिया किमु लोकाधिकधाम राजकम् ।' एम उचारे छे, त्यारे विशाखदत्त एने मळतूं 'स्वपीडारसच्छेदं प्राकृतोऽपि न मर्षयेत् । किमु लोकोत्तरं तेजो बिभ्राण पृथिवीपति ॥' एम बीजा शब्दमा कहे छे[४३]. विचारनूं मळतापणूं बहु होवाथी नाटकनी हाथप्रतोमां 'लोकोत्तरं तेज.' ने स्थाने 'लोकाधिक धाम' पाठ पेसी

---

४३ Prof. A. Hillebrandt ना संस्करणमां तेज' पाठांतर स्वीकृत छे, ते मराठी कवि मोरोपतना हाथनी प्रतना पाठने पुष्टि आप छे.

गयो छे. जो मोरोपंत कविने हाथे नाटककारनो मूलभूत पोते योजेलो पाठ बचवा पाम्यो न होत, तो तेने माथे **किरात**मांथी पद ऊतारी लीधानो आरोप चोटत; अने भारविना समयनिर्णयनी सीडीनूं एक पगथियूं नष्ट थात. मोरोपंतनी प्रतमां आपेला पाठने आधारे आपणे निश्चयथी कही शकिये छिये, के भारवि विशाखदत्तना पूर्वे थयो हतो. चालु व्याख्यानमां आगळ कहेवामां आवशे ते मुजब **मुद्राराक्षस** छट्ठा शतकनो चोथा चरणमां रचायूं हतूं. तेथी **किरातार्जुनीय**नो रचनाकाळ छट्ठा शतकथी व्हेलो होवो संभवे छे. ए समयने **सेतुबंध** आगळ धकेले छे. एनो कर्ता वाकाटक राजवंशनो द्वितीय प्रवरसेन, ते सार्वभौम चंद्रगुप्त विक्रमादित्यनो दौहित्र थाय. एनो राज्यकाळ पांचमा शतकना पहेला चरणमां आवे छे. एणे **सेतुबन्ध** राजगादीए आव्या पछी तरतमां नवा प्रस्थाननी पद्धतिए रच्यूं हतूं. ए काव्य अणुराअ (सं. अनुराग) मुद्राथी अंकित छे. मुद्रानो उपयोग व्हेलामां व्हेलो **किराता-र्जुनीय**मां करेलो मळी आवे छे. ए काव्यमां राज्यलक्ष्मी पाछी वाळवानूं ध्येय छे, तेथी तेनी मुद्रा लक्ष्मी राखी छे. **सेतुबन्ध**मां प्रेरक तत्त्व अनुराग छे. नायकनायिकाना परस्पर अचळ प्रेमने उद्देशीने प्रस्तुत काव्यनी मुद्रा कर्ताए नवा विधानने अनुसरी अणुराअ कल्पी छे. ए रीते उद्भव पामेली [४४]बन्धचिह्ननी प्रणालिका उत्तर काळमां चालु रहे छे; अने श्री विरह रत्न विमल आदि मुद्रानां काव्यो संस्कृतमां अने प्राकृतमां रचाय छे. आ मुद्रापद्धतिना प्रवर्तक भारविने पांचमा शतकना आरंभ पहेलां एटले के चोथा शतकमां हूं अटकळथी मूकूं छूं[४५].

---

४४ पोतानी कृति ओळखाववाने कविए काव्यना प्रत्येक सर्गना अंत्य श्लोकमा वापरेलो बोल, मुद्रा

४५ **दशकुमारचरित**ना कर्ता दंडीनो प्रपितामह दामोदर भारविना प्रसंगमा आव्यो हतो, एवो **अवन्तिसुन्दरी** कथामां कविवंशवर्णनना अंगे उल्लेख छे; ते कोइ बीजो भारवि होवो जोईए. दंडी कविनी सत्ता इसवी आठमा शत-कना मध्यमा अकाई छे. एना प्रपितामहना समयनो भारवि सातमा शतकना

१३. भारविनो समय, विचारतां साधक प्रमाणनो अछत नहेली, ते माघना संबंधमां नडती नथी. विद्यासदत्त अने भट्टिना मुखनी जुबानी साहित्यना दफतरे पडी छे, ते उपरथी समजाय छे के तेणे **शिशुपालवध** सातमा शतकना बीजा चरणमां रच्यूं हतुं. ए काव्यना सोळमा सर्गना चोराशीमा श्लोकने छेडे 'संपत्सु चापत्स्वपि' खंड छे, ते **मुद्राराक्षस**ना बीजा अंकना चौदमा श्लोकने छेडे आवनारा 'संपत्सुचापत्सु च' ए खंडनी कढंगी विकृति छे. समुच्चयवाचक रूढ 'च–च'ने मूकीने माघ उक्त श्लोकमां नवतर 'च–अपि' योजे छे; ए प्रयोग नथी पद्यबंधनी जरूरियातना कारणथी, नथी वर्णावृत्तिना निमित्तथी, के नथी वाणीनी विशदताना हेतुथी कर्लो. नवीनतानो मुद्दो ज एमां बुद्धिगोचर थाय छे. आ एक ज अवतरण उक्त नाटक अने काव्यनी पूर्वापरता स्थापित करवाने बस छे. **मुद्राराक्षस** छट्ठा शतकना चोथा चरणमां रचायूं हतुं. तेनी साल **शिशुपालवध**नी रचनानो पूर्व अवधि ठरे छे. भट्टिनूं **रावणवध** एनो उत्तर अवधि पूरो पाडे छे. ए शास्त्रकाव्यनी समाप्ति भट्टिए वलभिना धरसेनना राज्यकाळमां करी हती[४६]. ए नामना चार वलभीश्वर थया छे, तेमांनो चोथो धरसेन ज **भट्टिकाव्य**ना समाप्तिश्लोकमां निर्दिष्ट छे एवूं मारूं समजवूं छे[४७]. **प्रबोधचन्द्रोदय** नाटकनी **चन्द्रिका** टीकाना कर्ताए आदर्शभूत अमात्योनी कोटिमां भट्टिने मूक्यो छे[४८]. ए वचनना आधारे हूं धारूं छूं के ते चोथा धरसेननो अमात्य

अंतमां अथवा बहु तो मध्यमां संभवे छे. **किरातार्जुनीय**ना कर्ता भारविनो समय तो उपर जणाव्या प्रमाणे व्हेलो होवाथी ते दण्डीना उक्त पूर्वजथी तदन जुदो छे. प्रस्ताव १२ मां जणाव्या मुजब छट्ठा शतकना अंतभागमां रचायला **मुद्राराक्षस**मां **किरात**ना एक श्लोकार्धनो शुद्ध प्रतिध्वनि संभळाय छे. सबब **किरात**कार भारवि **अवन्तिसुन्दरीकथा**नो भारवि होई शके नहि.

४६ जुओ **भट्टिकाव्य**नो समाप्तिश्लोक, काव्यमिदं रचितं मया वलभ्यां श्रीधरसेननरेन्द्रपालितायाम् । कीर्तिरतो भवतान्नृपस्य तस्य क्षेमकरः क्षितिपो यतः प्रजानाम् ॥. पूर्वे आरंभायला कविकार्यना निर्वाहकनो भाव साभिप्राय 'क्षेमकरः' पदमांथी नीकळे छे.

४७ जुओ मारा **अमरुशतक**(आ. ५)नो उपोद्घात, पृ. १७–१८.

४८ जुओ **चन्द्रिका**नी नीचेनी पंक्तिओ, चाणक्यभट्टिशिवबर्मयुगन्धरादीन्

हतो. एनी मंत्रशक्तिनो प्रभाव विग्रहमां पराभव पामी नासी छूटेला स्वामीने विजयशाळी सार्वभौम हर्षवर्धन साथे संधि करावी राज्य अने राजकन्या अपावी मूर्त थयेलो जोवामां आवे छे[४९]. धरसेननो पिता द्वितीय ध्रुवसेन बालादित्य पाणिनिना अने कौटिल्यना दर्शनमां कुशळतानूं अभिमान धरावतो हतो. तेणे ए उभय दर्शनमां परम प्रवीण भट्टिने पोतानो अमात्य बनाव्यो हशे; अने तेनी ज प्रसन्नता सारूं मंत्रीश्वरे **रावणवध** शास्त्रकाव्य आरंभ्यूं हशे. परंतु ए काव्य समाप्तिए पहोंचेलूं जोवा ध्रुवसेन जीव्यो नहि. अधुरूं **भट्टिकाव्य** धरसेनना समयमां पूरूं थयूं. एनो राज्यकाळ इ. स. ६४१ थी इ. स. ६५१ ठरेलो छे[५०]. माघना **शिशुपालवध** साथे भट्टिना **रावणवधमां** नामना मळतापणा उपरांत सरसाइनां तत्त्व पण भळ्यां छे. पहेला कविनी कृति २० सर्गमां छे, त्यारे बीजानी कृतिमां तेनाथी बे सर्ग वधारे छे. माघे एक ज मात्राबंध वापर्यो छे, अने ते पण एकदेशी तरीके ज. आ मात्राबंध ते प्राकृतमांथी ऊतरी आवेलो **स्कन्धक** किंवा **आर्यगीति** छंद, जे **सेतुबंधना** पंदरे आश्वासनो व्यापक छे. भट्टिए ते उपरांत **गाथा** किंवा **आर्या** अने **मुखगलितक** ए बे मात्राबंध पण वापर्या छे; तेमां स्कन्धकनो तो व्यापक तरीके उपयोग कर्यो छे. **शिशुपालवधमां** मोटामां मोटूं वृत्त एकवीस रूपनूं **स्रग्धरा** छे. **रावणवधमां** कवि त्रेवीस रूपनूं **अश्वललित** पण योजे छे. ए बधी बाबतो ध्यानमां लेतां **माघकाव्य भट्टिकाव्यनी** पूर्वे गोठवाय छे.

यः पूर्वमन्त्रितिलकानपि धिक्करोति ॥. आमा शिववर्मन् शब्दथी **कातन्त्रकार शर्ववर्मा** अभिप्रेत छे. ए **गाहासत्तसईना** संग्राहक सातवाहननो मन्त्री हतो. युगंधरादि पद यौगंधरायण सज्ञानूं बोधक छे. ए वत्सराज उदयननो अमात्य हतो.

४९ जुओ **विन्ध्यवननी कन्यका** (आ. ३), उपोद्घात, पृ. ४४–४५.

५० भट्टिना संबंधमां विशेष हकिकत सारूं जुओ **अमरुशतकनो** उपोद्घात, पृ. १६–१८.

।१४ भारविए नवूं वृत्त जोडी काढ्यूं होय, तो ते एक ज मध्यक्षामा संभवे छे. एनो प्रयोग किरातमां एक वार करवामां आव्यो छे[५१]. आ एक पगलाथी बीजूं पगलूं पद्यबंधनी प्रगतिनूं किरातकारे भर्यूं नथी. मध्यक्षामा रूपबंध भरतनाट्यशास्त्रना पंदरमा अध्यायमां (तेम ज बृहत्संहिताना एकसो त्रणमां) आप्यो नथी. भारविना आ नवतर वृत्तना मध्य भागनी लघुप्रधान रचना उपरथी तेनूं पाछळथी मध्यक्षामा नाम पाडवामां आव्यूं होय एम लागे छे. गणपद्धति प्रमाणे ए वृत्तनूं 'मध्यक्षामा ममनयगगयुग् वेदाङ्कैः ।' एवूं लक्षणसूत्र ठरे छे. भारवि साथे सरखामणीमां माघे पद्यबंधमां प्रगति सारी करी छे. एणे कमीमां कमी चार नवा छंद रच्या छे. तेमां तेर रूपनो कुटज अने पंदरनो नूतन[५२] ए बे मध्ययतिरहित छे. उक्त चार छन्द पैकी एके बृहत्संहितामां छे नहि. शिशुपालवध सर्ग ६ना श्लोक ७३ ना पहेला चरणनो अने सर्ग १३ ना श्लोक ६९ ना बीजा चरणनी कुटज अने नूतनत्व बोल झडपी लेई पाछळथी ए बे रूपमंचना अनुक्रमे कुटज अने नूतन नाम राखवामां आव्यां होय एम जणाय छे. एमनां लक्षण 'कुटजं भवेदिह सजौ ससगाश्चेत् ।' अने 'रो नभौ यदि भरौ चरणे वद नूतनम् ।' ए प्रमाणे छे. एवी ज रीते सर्ग ८ ना श्लोक ७१ नूं अतिशायिनी अने सर्ग ३ ना श्लोक ८२ नूं धृतश्री[५३] नाम पण ते ते श्लोक उपरथी पडेलूं संभवे छे. पहेलामां सत्तर तथा बीजामां एकवीस रूप छे; अने मध्य यति दसमा तथा अगियारमा रूप पछी छे. एमनां लक्षण 'ससजा अतिशायिनी भवेद् भजगगा दिगश्वैः ।' अने 'नजभजजाश्च रद्वदशभिर्हि जरौ च वदेद् धृतश्रियम् ।' ए बे पंक्तिथी समजाशे.

---

५१ जुओ किरात० ५। ३१।

५२ याग्वल्लभमां आ वृत्तनूं सारसिका तेम ज हारधृती नाम आपेल छे ए ग्रंथ आधुनिक छे. सार्थक नूतन संज्ञा में वर्णपिंगळमांथी लीधी छे. अन्यत्र आ छंद नोंध्यो नथी.

५३ आ वृत्तनूं बीजूं नाम पद्मकावली छे

१५ भारवि अने माघनी वच्चे बसें अढीसें वर्षनो गाळो छे. तेनो पूर्व भाग भारतना इतिहासनां त्रण चार परम उज्जवळ पर्व रोके छे. इसवी सनना चोथा शतकना पहेला चरणमां महाराजाधिराज प्रथम चंद्रगुप्त यशस्वी गुप्तमहाराज्यनो पायो नांखे छे. पुराणो राढ (अनुगङ्ग) अयोध्या (साकेत) अने प्रयाग पर्यंत एनी आण प्रवर्तवानो निर्देश करे छे[५४]. तेनो पुत्र समुद्रगुप्त उत्तरापथना नव राजाओने रणमां रोळी, चारे सीमाडानां राज्यो खंडियां बनावी. दक्षिणापथना बार राजाना मुलक सर करी तेमने ते पाछा आपी, भरतखंड पारना देवपुत्र शाहि तथा शाहानशाहिना उपर ते ते भूमिना भोगवटाना परवानाथी तथा महाराज्यनी सेवा भरवाना फरारनामाथी आधिपत्य स्थापी, सिंहलद्वीप आदि दूर देशांतरना संधिनां ग्रहेण स्वीकारी गुप्तवंशनो प्रताप सर्वतोमुख विस्तारी पराक्रमादित्य बिरुद धरावे छे[५५].

---

५४ जुओ नीचेनो श्लोक, अनुगङ्ग प्रयाग च साकेत मगधास्तथा । एतान्-जनपदान् सर्वान् भोक्ष्यन्ते गुप्तवंशजा ॥ कदाच असल पाठ भोक्ष्यते गुप्तवंशहृत् एवो हशे.

५५ जुओ Corpus Inscriptionum Indicarum. No. 1, Allahabad Stone Pillar Inscription of Samudragupta. आ कीर्तिस्तंभमां कोतरेली हरिषेणकृत प्रशस्ति उपरथी समुद्रगुप्तनी विजययात्रानो सारो ख्याल बांधी शकाय छे ते प्रथम गुप्तराज्यनी पूर्वमां उत्तर बंगाळना नंदीने तथा आसामना एक भागना बलवर्मने अने पश्चिममां पूर्व माळवाना मतिल तथा तेना पाडोशी नागदत्तने, पुष्करणना चंद्रवर्मने, पद्मावतीना गणपति नागने तथा पश्चिम मालव (?)ना रुद्रदेवने, उपरांत उत्तर दोआबना नागसेनने तथा रोहिल-खंडना अच्युतने रणमां रोळी मुल्क खालसा करे छे. आ नव राज्य भेगु दक्षिण दोआबनू राज्य पण उत्तरापथमां खालसा करेलू 'आदि' शब्दथी अभिप्रेत लागे छे. त्यारपछी समतट दवाक तथा कामरूप पूर्व सीमाए, नेपाल अने कर्तृपुर उत्तर सीमाए, अने माल्य, आर्जुनायन, यौधेय, माद्रक आभीर, प्रार्जुन, सनकानीक, काक, खर-परिक आदि पश्चिम सीमाए ते जीती ताबामां आणे छे अहीं काश्मीर अने सौराष्ट्र पण जीतेला देश तरीके 'आदि' शब्दथी लक्षित जणाय छे. आ रीते उत्तरापथ सर करी समुद्रगुप्त दक्षिणापथनी स्वारीए नीकळे छे, अने महाकोशल, महाकांतार,

कहे छे के ए सार्वभौम राजा परम संगीतकुशल हतो अने उत्तम कवि पण हतो[५६]. तेनो पुत्र द्वितीय चंद्रगुप्त कुमारपदे सत्तां ज्येष्ठ बंधु रामगुप्तना राज्यकाळमां स्वतंत्र थई बेठेला सौराष्ट्रना महाक्षत्रपना वंशने ऊखेडी नाखे छे;[५७] अने गादीए आव्या पछी राज्याधिकारनी संक्रान्ति दरमियान माथूं ऊचकनारा वंगोने पूर्वमां तथा वाह्लिकोने पश्चिममां जळवट थळवटना वेवडा

पिष्टपुर, वेंगी, पलक्क (नालोर), कुस्थलपुर, कोट्टर, कान्ची, अवमुक्त, केरल, एरंडपल्ल (खानदेश) तथा देवराष्ट्र (महाराष्ट्र), ए बार राज्य जीती लेई ते ते राजाने पाछां आपे छे. आ यादीमां 'आदि' पदे विदर्भ–कुंतलना वाकाटकवंशी पृथिवीषेणना राज्यनो पण समावेश समजाय छे. दिग्विजयोत्तर ते अश्वमेध यज्ञ करे छे. भरतखंड पारना वायव्य दिशाए वक्षु नदी पर्यंतना देवपुत्र, शाहि, शाहानुशाहि, शक अने मुरुंड राजाओ दरबारगढ उपर गरुडध्वज फरकावी तेना परवाना थका राज्यनो भोगवटो करे छे. सिंहलद्वीपनो राजा महामूल्यवान् भेट मोकली तेनी मैत्री साधे छे. विशेषमां चीनाई लेखनपद्धतिने मळती ऊर्ध्वाधोलेखनपद्धतिना समुद्रगुप्तना सिक्का जडे छे, ते उपरथी मारा मनमां एवो तर्क ऊठे छे के चीन साथे मिनाचारीनो संबंध बंधाया पछी कदाच ए लेखनपद्धति पाटलिपुत्रनी टंकशाळमां समुद्रगुप्ते दाखल करी हशे. समुद्रगुप्तनी अने तेनी साथे रामगुप्त, द्वितीय चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य तथा प्रवरसेननी सरसवारी बाबत जुओ चाउ व्याख्यानने छेडे परिशिष्ट १.

५६ समुद्रगुप्तना वीणावाळा सिक्का जड्या छे. तेना आधारे अने मारा सो टिप्पणी ५२ मां करेली हरिषेणकृत प्रशस्तिना आठमा श्लोकना कविमतिविभवोत्सारणं चापि काव्यम् (अस्य), तेम ज ....गान्धर्वललितैर्व्रीडित ....तुम्बुरुनारदादेः विद्वज्जनोपजीव्यानेककाव्यक्रियाभिः प्रतिष्ठितकविराजशब्दस्य वगेरे वचनना आधारे प्रस्तुत उल्लेख कर्यो छे. जुओ वळी प्रस्ताव ४० मां परकमस्स अने वइराअस्स कुमानी गाहासत्तसईमांथी ऊतारेली गाथाओ.

५७ जुओ ई. स. १९२८ना नवेंबर–डिसेंबरना बुद्धिप्रकाशमां समुद्रगुप्तनो क्रमप्राप्त उत्तराधिकारी ए मथाळाथी छपायलो मारो लेख. सौराष्ट्रना महाक्षत्रपे समुद्रगुप्तना समयथी गुप्तोनूं आधिपत्य स्वीकार्यूं हतूं. तेनी रुए समुद्रगुप्त पछी तेनो मोटो कुंवर रामगुप्त गादीए आव्यो ते प्रसंगे महाक्षत्रप तृतीय रुद्रसिंहे नजराणो मोकल्यो नहि एम जणाय छे. तेनी ए नाफरमानी माटे दंड देवाने

जंगथी जेर करे छे[५८]. वळी दक्षिणमां विदर्भ–कुंतलना वाकाटकवंशी फितूरी द्वितीय रुद्रसेनने बळथी जीती राजकुमारी प्रभावतीगुप्ता

रामगुप्ते सौराष्ट्र उपर चढाई करी. तेमां एनो न्हानो भाइ कुमार चंद्रगुप्त विदिशाना पाटनगरथी जोडायो; अने पचट भाइ प्रतिनिधिपदे पाटलिपुत्रमां रह्यो. रुद्रसिंह गिरिनगरमां भराई पेसतां शहेरने घेरी लेवाने गुप्तसेना आगळ वधती हती, तेवामां दुश्मने गढमांथी एकाएक आडे मार्गे धसी आवी रामगुप्तने गिरनारनी घांटीमां आंतर्यो. तेना पंजामांथी छटक्वा गुप्त राजाए घणा घणा ऊधामा कर्या, पण ते निष्फळ गया. छेवटे सेनाना छूटकारा सारुं रुद्रसिंहने राणी ध्रुवदेवी आपवानुं लाचारीथी कबूली ते मेलाणे आव्यो. त्यां शक राजा उपर वेर वाळवा महाराणीना वेशमां सज्ज थयेला राजकुमार चन्द्रगुप्ते गिरिनगर जवा राजानी रजा मागी; पण बंधुवत्सल रामगुप्ते आपी नहि. त्यारे गुप्तकुमार पोताना मित्रने अने मातृस्थानीय महाराणी ध्रुवदेवीने ज मात्र जाण करी महाराणीना ठाठमां शक राजाना शहेरमां गयो अने अंतःपुरमां विनशंकाए प्रवेश पामी तेणे रुद्रसिंहनो घाट घडी नांख्यो. पछी गांडाना वेशमां छटकी जई सेना साथे चडी आवी राजा रामगुप्तना नामथी तेणे गिरिनगरनो कबजो लीधो. तेना अद्भुत साहस अने पराक्रमथी परम प्रसन्न थई मोटा भाइए राजमुकुट पाताना माथेथी ऊतारी न्हाना भाइना माथे मूक्यो. **देवीचन्द्रगुप्त** नाटयनां अवतरणमांथी आ हकीकत मोटे भागे तारवी काढी छे. **काव्यमीमांसा**मां कृतेतिवृत्त एटले ऐतिहासिक मुक्तकना उदाहरण रूपे आपेला श्लोकथी, **हर्षचरित**-मांना ऊतारानी, अने राष्ट्रकूटवंशी प्रथम अमोघवर्षना संजाणना ताम्रपटना अडतालीसमा श्लोकथी तेनुं समर्थन थाय छे; जोके बन्ने श्लोकना पाठ वस्पनामां न आवे एवा भ्रष्ट छे. वळी व्याघ्रवधनो पहेलो सिक्को समुद्रगुप्ते पडावेलो मळे छे ते जेम तेणे बंगाळ जीत्यानी साक्षी पूरे छे, तेम सिंहवधनो पहेलो सिक्को द्वितीय चन्द्रगुप्ते पडावेलो जडे छे ते तेणे सौराष्ट्र जीत्यानी खातरी आपे छे. 'प्राचीन भारतना इतिहास'मां विन्सेंट स्मिथ **देवीचन्द्रगुप्त** अने **हर्षचरित**ना ऊतारा तरफ शा माटे अनास्था बतावे छे अने रामगुप्तने अनैतिहासिक व्यक्ति माने छे. ते समजातुं नथी.

५८ जुओ Mehrauli Iron Pillar Inscription of Chandra. आ लेखमां कहेलो चंद्र ते गुप्तवंशी प्रथम चन्द्रगुप्त होवो जोईए, एम केटलाएक पुराविद् कहे छे. बीजाओनुं एवुं मानवुं छे के ए पुष्करणनो चंद्रवर्मा संभवे छे, जेने पाछळथी समुद्रगुप्त युद्धमां हणी जीती लीधेलुं राज्य पोते खालसा करे छे. परंतु प्रस्तुत लेखना प्रथम श्लोकना उत्तरार्धमां दरियाइ सवारीनी

परणावी स्नेहना मंत्रथी बेवडा जीती ले छे[५९], जे नीति त्रणसें वरस पछी चक्रवर्ती हर्षवर्धन वलभिपुरना द्वितीय ध्रुवभट किंवा ध्रुवसेन प्रत्ये अंगीकार करे छे[६०]. अत्रोक्त रामगुप्तनी राणी ध्रुवदेवीनी नीच मागणी करनार महाक्षत्रपना नगरमां भोजाई राणीना वेशमां जई तेनो जीव लीधाथी द्वितीय चंद्रगुप्त 'साहसांक' संज्ञाए ओळखाय छे[६१]. ते चारित्रमां देव

नोंध छे, ते तरीहदना राज्यथी थवी अशक्य छे. जेना राज्यमां जलपथ न होय, ते समुद्र खेडवानो विचार ज न करी शके. सुरकीहदना राजाथी ए बने ज नहि. उक्त बे राजामांथी एके तरीहदनो राजा हतो नहि. ए बेमांथी एके राजाए आर्यावर्तनूं ऐकाधिपत्य प्राप्त कर्यूं न हतूं, ज्यारे लेखना त्रीजा श्लोकमां कह्या प्रमाणे चंद्रे तो ऐकाधिपत्य स्थाप्यूं हतूं. उक्त चंद्र कोण तेनो उकेल, वामनकृत काव्यालंकारसूत्रवृत्तिमांथी नीचे श्लोक उतारेलो छे, तेनाथी साध्य बने छेः—अप्यद्याश्वयं त्वया दत्तं दुःखं शकयन्तरात्मनि। बाष्पो बाह्लीकनारीणां बाष्पबाहो कपोलयोः ॥. एमां जणाव्या प्रमाणे सौराष्ट्रना शक राजानी राणीओनी दुर्दशा कर-नार ते ज बाह्लीकराजानी राणीओने चोधार रोती करनार हतो. हवे देवीचन्द्रगुप्त-ने आधारे आपणे जाणिये छिये के शक राजा तृतीय रुद्रसिंहने हणीने शक स्त्री (रानी)ओने हमेशानी दुखियारी करनार बीजो चंद्रगुप्त ज हतो. एटले बाह्लीक-स्त्रीओने हमेशनी रडती करनार पण ते ज ठरे छे. बाह्लीक तथा बाह्लिक पर्याय शब्द छे. पंजाबना लोक अने पंजाबना राजा ते बाह्लीक किंवा बाह्लिक. अर्थात् काव्यालंकारसूत्रवृत्तिना श्लोकनो अने म्हेरौलीना लेखमांना श्लोकनो चन्द्र मारा समजवा प्रमाणे द्वितीय चंद्रगुप्त विक्रमादित्य छे. उक्त लोहस्तंभमां जेम टूंकूं नाम चन्द्र टांक्यूं छे, तेम एना केटलाएक सिक्कामां पण चन्द्र मुद्रा टांकेली जोवामां आवे छे.

५९ जुओ The Journal of the Mythic Society, Vol. XII, No. 9, January, 1925, ए अंकमांनो The Vakatakas in Gupta History ए मथाळानो लेख.

६० जुओ **विध्यशननी कन्यका** (आ. ३.), उपोद्घात, पृ. ५४–५५; अने **अमरुशतक** (आ. ३), उपोद्घात, पृ. ९८.

६१ ए संज्ञानो प्रयोग राजशेखरनी **काव्यमीमांसा**मांना नीचे आपेलां अव तरणोमां करेलो छेः—(१) वासुदेवसातवाहनशाद्रकसाहसाङ्कादीन् सकलान् सभापतीन्

जेवो होवाथी 'देवराज' अने 'देवगुप्त' एवां उपनामथी तेनो ताम्रपटमां उल्लेख छे[६२]. चीनी यात्राळु फा–हियान पण तेना पवित्र शासननां वखाण करे छे[६३]. तेना पराक्रम अने प्रतापथी मुग्ध थई पांच देशना राजाए तेने भारे नजराणो मोकलाव्यो हतो[६४]. विक्रमादित्य बिरुद तेना शकविजयनी साक्षी पूरे छे. म्हेरौलीना लेखमां जेना पराक्रमना परिमळथी दक्षिण

दानमानाभ्यामनुकुर्यात् ।, (२) श्रूयते हि उज्जयिन्यां साहसाङ्को नाम राजा । तेन हि संस्कृतभाषात्मकमन्तःपुर एव प्रवर्तितो नियमः ।. जुओ वळी **सरस्वतीकण्ठाभरण**।२।१६।नो नीचेनो श्लोक, केऽभूवन्नाढ्यराजस्य राज्ये प्राकृतभाषिणः । काले श्रीसाहसाङ्कस्य के न संस्कृतवादिनः ॥. साहित्यपोषक बीजा चन्द्रगुप्तनो उपरना उतारामां जेम साहसांक सञ्ज्ञाथी उल्लेख कर्यो छे, तेम **गा स.** ।५। ६७ । मां विक्रमाङ्क (स विक्रमादित्य) सञ्ज्ञाथी निर्देश करेलो छे. मतलब के ए उपनाम जगजाणीता होवाथी नामने बदले वपराया छे.

६२ जुओ **Annals of the Bhandarkar Institute, July, 1823,** मां **Dr S K. Aiyanger** नो **The Vakatakas and their place in the History of India** ए मथाळानो लेख देवराज अने देवगुप्त उत्तमचारित्रवाचक उपनाम छे. ए उपनाम साथे **Corpus Inscriptionum Indicarum, No. 6** ना लेखना त्रीजा श्लोकनू पूर्वार्ध तस्य राजाधिराजर्षेरचिन्त्योर्जितवर्मण. । सरखावतू घटे छे

६३ जुओ पं विश्वेश्वरनाथ रेउ कृत **भारतके प्राचीन राजवंश**, द्वितीय भाग, पृ २७०–७१

६४ जुओ **सुभाषितावलि (B S S), Introduction, p 118** मां उतारेलो नीचेनो श्लोक – अष्टौ हाटककोटयस्त्रिनवतिर्मुक्ताफलानां तुला पञ्चाशन्मदगन्धलुब्धमधुपा क्रोधोद्धुरा सिन्धुरा । लावण्योपचयप्रपञ्चचतुर पण्याङ्गनाना शत दण्ड पाण्ड्यनृपेण ढौकितमिम वैतालिकायार्पय ॥. प्रस्तुत श्लोकनी टिप्पणी अनुसार प्रसंग आ प्रमाणे छे. पाण्ड्य देशना राजाए मोकलेलो नजराणो दरबारमां रजू थाय छे, तेनी नोंध लेता भांडागारिके 'दण्ड पाण्ड्यनृपेण ढौकितमिम' पछी 'प्राप्य प्रभोन समय ॥' के एवू बीजु कंइक उचारवा जतो हतो एवामां कोइक वैतालिके प्रसंगने अनुकूळ राजप्रशस्तिनो श्लोक जोडी वाढी लल्कार्यो ते सांभळी विक्रमादित्ये भांडागारिकनू अधूरुं वाक्य वैतालिकायार्पय ॥' ए तुष्टिदानना वचननी पूर्ति करी दीधू.

समृद्ध, सुवासित थयेलो वर्णव्यो छे, ते आ गुप्तवंशनो बीजो, सार्वभौम राजा[६५]. सुभाषितावलिमां विक्रमादित्य नाममुद्राथी एनां केटलांक सुभाषितो आप्यां छे[६६]. एनी कोइक अज्ञात कृति उपरथी उज्जयिनीना काव्यपीठे अपूर्व साहित्यकार तरीके एनो सत्कार कर्यो होय एम समजाय छे[६७]. मेंठ अने विक्रमादित्य (अर्थात् द्वितीय चंद्रगुप्त विक्रमादित्य)ना काव्यविनोदनो एक रमणीय प्रसंग सुभाषितसंग्रहना ग्रंथमां जळवाई रहेलो जडे छे. एक कविए बीजा कविने समस्यापूर्तिनां अतसीपुष्पसंकाशं अने न तेषां विद्यते भयम् । ए बे आद्यंतचरण आप्यां, तेना जवाबमां तेणे ए समस्या नीचेना शब्दमां पूरेली कहेवाय छेः--अतसीपुष्पसंकाशं खं वीक्ष्य जलदागमे । ये वियोगेऽपि जीवन्ति न तेषां विद्यते भयम् ॥[६८]. आ परम यशस्वी राजा

---

६५ जुओ प्रस्तुत लेखना श्लोक. १ नूं चोथूं चरण, यस्याद्याप्यधिवास्यते जलनिधिर्वीर्यानिलैर्दक्षिणः ॥. प्रशस्तिना विषयभूत राजानूं सार्वभौमत्व उक्त लेखना श्लोक ३ ना ऐकाधिपत्य पदथी निर्दिष्ट छे. ए पद प्रथम चंद्रगुप्तने लागु पाडी शकातूं नथी.

६६ विक्रमादित्य नाममुद्राथी बीजा चंद्रगुप्तनी कृति तरीके चाल्या आवता श्लोक माटे जुओ **सुभाषितावली** ५०६, ५०७, ११६५, ३१९०, ३१९३, ३३१८, ३४९४ वगेरे. चंद्रगुप्त विक्रमादित्ये नाट्यशास्त्र संबंधी कोइक प्रमाणभूत ग्रंथ रच्यो हतो, एवूं सागरनंदीना **नाटकलक्षणरत्नकोश**ने अंते आपेला नीचेना श्लोक उपरथी मारूं अनुमान छेः--श्रीहर्षविक्रमनराधिपमातृगुप्तगर्गादिमद्द्रुहलरावु हकवादराणाम् । एषा मतेन भरतस्य मतं विगाह्य घृष्ट मया समनुगच्छत रत्नकोशम् ॥. अहीं टूंका विक्रम पदथी राजा चंद्रगुप्त विक्रमादित्य अभिप्रेत छे एम मारूं समजवूं छे. टिप्पणीमां आपेला उतारा बाबत जुओ पुरातत्त्व, पु ५, अं. २, 'भारतीय नाट्यशास्त्रना बे नवीन ग्रंथो' ए मथाळानो लेख.

६७ जुओ राजशेखर कृत **काव्यमीमांसा** ।अ १०।, श्रूयते हि उज्जयिन्यां काव्यपरीक्षा । इह कालिदासमेण्ठावत्रामररूपसूरभारवयः । हरिचंद्रचन्द्रगुप्तौ परीक्षिताविह विशालायाम् ॥.

६८ जुओ **सुभाषितावलि**, १७१८. ए श्लोकनी मुद्रामां विपमादित्य छे, ते खंडित वि-मादित्य परथी थयेल लागे छे असल पाठ विक्रमादित्यस्य हशे; कारणके विपमादित्य नामे कोइ कवि जाणीतो नथी.

पछी प्रथम कुमारगुप्त महेंद्रादित्य अने तेना पछी स्कंदगुप्त क्रमादित्य किंवा विक्रमादित्य[६९] गादीए आवे छे. अहींथी गुप्तोनो सोळे कळाए प्होंचेलो प्रभाव क्षीण थवा मांडे छे. तेनी सवासो वर्षनी शारदी पूर्णिमामां सरस्वतीना हंसोना मधुर संगीतथी आकाश केवूं शब्दायमान थई रहूं हशे, ते अत्यारे केवळ कल्पनागम्य ज छे. ए संगीतना विरल सुर अलंकारना ग्रंथोमां अंकित थयेला कहांक कहांक संभळाय छे. विक्रमादित्य अने मेंटनी समस्यापूर्तिना जेवूं कालिदास अने विक्रमादित्यनूं टूंकूं संभाषण **सरस्वतीकण्ठाभरण** अने **शृंगारप्रकाश**मां आपेलूं छे[७०]. आ बे नोंधनो विक्रमादित्य ते संभावित विद्वानोना अभिप्राय प्रमाणे अनोक्त द्वितीय चंद्रगुप्त विक्रमादित्य छे. एना समयने शोभावनारा कविओनां **हयग्रीववध** आदि महाकाव्यो तो बधां ए नाश पाम्यां छे. बच्यूं छे एक ज खंडकाव्य, कालिदासनूं **मेघदूत.** कालिदासनूं एटले रघुकारनूं [२] ना, तेनूं नहि, पण तेना पछी चारसें वरसे गुप्त सार्वभौम राजाना दरबारमां थयेला बीजा कालिदासनूं[७१]. **कुमारसंभव** अने

६९ जुओ प विश्वेश्वरनाथ रेउ कृत **भारतके प्राचीन राजवंश,** द्वितीय भाग, पृ. २९७, स्कन्दगुप्तकी उपाधि 'क्रमादित्य' थी। चांदीके किसी किसी सिक्के पर 'विक्रमादित्य' भी लिखी मिलती है.

७० जुओ नीचेनो उतारो.-कालिदास 'किं कुन्तलेश्वरः करोति' इति विक्रमादित्येन पृष्टः उक्तवान्। "असकलहसितत्वात् क्षालितानीव कान्त्या मुकुलितनयनत्वाद् व्यक्तकर्णोत्पलानि। पिबति मधुसुगन्धीन्याननानि प्रियाणां त्वयि विनिहितभारः कुन्तलानामधीशः ॥". इदमेवोहयित्वा विक्रमादित्यः प्रत्यूये। 'असकल... । पिबतु ..मयि कुन्तलानामधीशः ॥' इति ॥

७१ **मेघदूत**मा अद्रेः शृङ्गं प्रतीकना श्लोक १४ उपरनी टीकामा दक्षिणावर्त अरुणाचलनाथ अने मल्लिनाथ मेघकार कालिदासने इसवी चोथा शतकना बीजा त्रीजा चरणमा थयेला प्रसिद्ध बौद्ध नैयायिक दिङ्नागाचार्यना समयमा मूके छे प्रस्तुत श्लोकमाथी टीकाकारोए जे ध्वनि काढ्यो छे, ते मेघकारने माग्ये ज इष्ट होय. ए ध्वनि एटलो क्लिष्ट छे, के साधारण कवि पण ते योजे नहि, मेघकार कालिदासे तो योज्यानो संभव ज नथी. टीकाकारोए कल्पेला ध्वनिनी योजना पाछळ दिङ्नाग मेघकार अने निचुल पासपासेना साहित्यकार

रघुवंशना पद्यबंधनी समीक्षाना प्रसंगे मेघदूतने भेगूं लीधूं न हतूं ते आ ज कारणथी. प्रस्तुत खंडकाव्य मतभेद वगर रघुकारने नामे चाल्यूं आवे छे, ते अन्य कालिदासनी कृति केम होई शके ?–ए प्रश्ननो उपलकिया उत्तर शोधवो पडे एम नथी. जेवी रीते ऋतुसंहार, शृङ्गारतिलक, श्रुतबोध आदि एने नामे चडेलां छतां एनी कृति नथी[७२], तेवी ज रीते प्रस्तुत दूतकाव्य पण एने नामे चडेलूं छतां एनी कृति नथी. नलोदय नामे यमककाव्य एक काळे रघुकारे रचेलूं लेखातूं हतूं. हाल तेनो कर्ता नवमा शतकना उत्तरार्धनो रवितनय वासुदेव, स्वीकारायो छे[७३]. प्राकृत भाषानूं सुविख्यात सेतुबन्ध काव्य पण अकबर बादशाहना वखतमां कालिदासना नामे नोंधायूं हतूं[७४]. आज ते एना असल कर्ता वाकाटकवंशी प्रवरसेनने नामे पुन स्थापित थयूं छे. अभिषेक किंवा रामाभिषेक नाटक भास कविनी कृति तरीके प्रकाशित छे ते भासनी कृति नथी, एम,मारे आवा ज कारणथी अन्यत्र कहेवूं पडयूं छे[७५]. रघुवंशनो कर्त्ता कालिदास छे अने मेघदूतनो कर्ता कालिदास ज छे,

---

होवानी जूनी प्रसिद्धि परपराए चाली आवेली जोवाय छे. तेने अवलंबीने हूं दिङ्नागनी उत्तरावस्थामा मेघदूतना कर्तानी सत्ता स्वीकारुं छूं. ए लेखे कविनो पूर्व अवधि इसवी चोथा शतकना मध्यमा गोठवाय छे. उत्तर अवधि दशपुर (मदसोर)ना सूर्यमंदिरनी प्रशस्तिना वर्षथी अंकाय छे. प्रस्तुत शिलालेखना श्लोक ११–१२ मा मेघदूतना विद्युत्वन्त प्रतीकना श्लोक छायाटनी सुस्पष्ट छाया छे शिलालेखनी साल सं. ५२९ एटले इ. स. ४७३ छे. तेनाथी मोडो मेघकारने मूकी शकाय नहि. अर्थात् इसवी पांचमा शतकना त्रीजा चरणनो अत, ते एनो उत्तर अवधि ठरे छे.

७२ जुओ पराक्रमनी प्रसादी (आ. ६), उपोद्घात पृ. २६–२७.

७३ जुओ. The Journal of the Mythio Society, Vol. XIV, No. 4, Nalodaya and its author ए मथाळानो A. S. Ramnath Ayyar नो लेख.

७४ जुओ रामदासकृत सेतुप्रदीप टीकाना आरंभे आपेलो श्लोक १४. जुओ वळी से.प्र.।१।१७। उपरनी उक्त टीकानी उपानिका.

७५ जुओ मारा प्रतिमा नाटकनो उपोद्घात, पृ १७–२०.

ते उपरथी उक्त महाकाव्य अने खंडकाव्यनो कर्ता एक ठरे नहि. **पार्वतीपरिणय** नाटकना कर्तानूं अने **कादम्बरी** कथाना कर्तानूं नाम एक होवाथी नाटक कथाकारने माथे मारवामां आववूं जोईए नहि. उक्त नाटकमां छूटथी **गीति**नो उपयोग कर्यो छे, ते पोकारीने कहे छे के ते कथाकारनी कृति नथी. संस्कृत साहित्यमां ए मात्रामेळनो बहोळो प्रचार सातमा शतक जेटलो जूनो नथी. वाणीविलासग्रन्थमालामां छपायला **पार्वतीपरिणय** नाटकनी भूमिका उपरथी जणाय छे के नाटककारनूं नाम वामन हतूं अने भट्टबाण, बाण अने अभिनवबाण तो तेनां उपनाम हतां. जेम द्वितीय चंद्रगुप्तनूं उपनाम विक्रमादित्य तेना नामने स्थाने वपरायलूं मळी आवे छे, तेम प्रस्तुत उपनाम कवि पोताना नामना पर्यायरूपे वापरे छे. नाटककार दक्षिणनो अने कथाकार उत्तरनो वतनी हतो. उपनामधारी कवि पंदरमा शतकमां अने मूळनामधारी सातमा शतकमां थयो हतो. बे बाणनामना साहित्यकार एक बीजाथी भिन्न छे. मात्र नामनी एकताने आधारे कर्तृत्वनो निर्णय थतो होय, तो **पातालविजय** किंवा **जाम्बवतीजय**ना कर्ता व्याकरणाचार्य पाणिनि ठरवा जोईए. परंतु ए काव्यमां **शार्दूलविक्रीडित** अने **स्रग्धरा** छंद वापरेला छे[७६], ते कही आपे छे के एनो कर्ता **किरात**कार भारविनाथी पण अर्वाचीन कोइ अवैयाकरण पाणिनि छे[७७]. **मेघदूत**नी असाधारण चमत्कृतिथी अंजाई गयेला जगते मूळथी बीजा कालिदासनी कृति पहेला कालिदासने नामे चडावी दीधी होय, तो छेक न मानवा जेवूं जणातूं नथी. परंतु कल्पनानी भींय उपर शा माटे भींत चणवी? ऊंडा ऊतरी पायानी मजबूताइ साधी आगळ वधिये ते ज ठीक. माटे जडी आवे ते दार्शनिक पूरावाने मार्गे वळिये. पूर्वे भारविना **किरात**नी समीक्षाने प्रसंगे काव्यना जूना अने नवा प्रस्थाननो निर्देश कर्यो हतो, अने **रघु**ने जूना प्रस्थाननूं कथाकाव्य तथा

७६ जुओ **सुभाषितावलिना** इंग्रेजी उपोद्घातमां पाणिनिने नामे नोंधेला छंद. **पातालविजय** उपलब्ध नथी.

७७ जुओ **पराक्रमनी प्रसादी** (आ. ६), पृ. २६.

किरातने नवा प्रस्थाननुं प्रस्तावकाव्य लेख्युं हतुं. रघु अने किरात जेवो ज प्रस्थानभेद रघु अने मेघमां पण छे. पहेलामां आधिकारिक वस्तुनी अति विपुल समृद्धि अने कथानो अस्खलित वेग अविच्छिन्न आनंद ऊपजावे छे. बीजामां वस्तु आछुं छे, अने वेग मंद छे. मेघमां मार्गनुं निरूपण प्रासंगिक छे. आधिकारिक संदेशना प्रमाणमां ए प्रासंगिक विषयनो कर्ताए वधारे पडतो विस्तार कर्यो छे. वियोगमां झुरी मरती प्रिय पत्नीनुं जीवन टकाववाने अधीरा बनेला पतिना मुखमां ए विस्तार विक्षेपकारी होई औचित्यनो भंग करे छे. आवो अंगनी अतिविस्तृतिनो दोष रघुकारनी पांच कृति पैकी एकेमां नजरे पडतो नथी. विक्रमोर्वशीयना बीजा अंकमां उर्वशी अमरावतीथी प्रतिष्ठान आववा नीकळे छे, त्यारे चित्रलेखाए करेलुं मार्गनुं निरूपण अत्यंत प्रमाणसर छे. ए नाटकना चोथा अंकने छेडे राजधानीए सिधाववा उत्सुक बनेली उर्वशी साथे पुरूरवा गंधमादन वनथी प्रतिष्ठाने आवे छे तेनुं निदर्शन नाटककारे प्रवेशकमां एक ज वाक्यमां पतावी दीधुं छे. शाकुन्तलना सातमा अंकमां दुष्यंत स्वर्ग भुवनथी पृथ्वी पर आवतां मारीच महर्षिना आश्रममां ऊतरे छे, ते प्रसंगे पण जे वर्णन छे ते संक्षिप्त अने मुद्दासर ज छे. रघुवंशमां रावणने मारी रामचंद्र सीता साथे लंकाथी अयोध्या पधारे छे, त्यारे तेओ मार्गनुं मनोहर वर्णन करे छे ते तो सीताना विनोद अर्थे छे. पूर्वे वेठेलां दुःखनुं कथन सुखना समयमां निर्विष बनी हृदयरसनुं उद्दीपन करे छे. मेघमां मार्गना वर्णननो विस्तार कविए कर्यो छे, ते वक्ताना मुखमां अस्थाने छे, अने अंगीनुं तिरोधान करनारो छे. मेघकार मार्गनी रमणीयताथी दिव्य मेघने आकर्षवाने कल्पनानी पींछीए चित्रमां रंगरेखानी विविध मिलावट करे छे; पण ते वक्ताना मननी स्थिति घडीभर वीसरी जाय छे. तेने लीधे चित्रकारनी कलमने अस्वाभाविकतानो मळ चोंटे छे. इंद्रजाळनी चमकवाळूं ए चित्र भूचर श्रोताने आकर्षक नीवडे छे, तेवुं बेशक संबोधित खेचर श्रोताने पण आकर्षे एवुं छे. परंतु दिव्यादिव्य वक्ताने आपणे सिद्धिवळे बोलावी शकिये

अने पूछिये, तो ते कहेशे के 'विदिशा अने ब्रह्मावर्त वच्चेनो मार्गवर्णनविभाग मारा मुखनो नथी. अमारा विप्रलंभनुं काव्य गूंथतां कविए स्वभूमिनी प्रीतिए तणाई उक्त क्रमेरो कर्यो छे. रघुकारे जो अमारूं काव्य रच्यूं होत, तो तेणे ए पचीसी वचमां गोठवी दाधी न होत.' आ चर्चानो निष्कर्ष ए छे के रघुवंश अने मेघदूत ए बे जूदा जूदा प्रस्थाननां काव्य छे; एटले रघुकार कालिदासथी मेघकार कालिदास भिन्न संभवे छे. पूर्वे रघुकारने अश्वघोषनो पुरोयायी ठराव्यो छे; अने तेनो जीवनकाळ इसवी सनना आरंभनी आसपास मूक्यो छे. ते समये शक अने पल्हवोना आक्रमणने लीधे उज्जयिनीनी बहु बूरी दशा थई हती. ए नगरीने मेघदूतमां बहु समृद्धिमान वर्णवेली जोइये छिये. निर्दिष्ट अवस्थांतर सूचवे छे के उक्त प्रस्तावकाव्यनो रचनार कथाकाव्यना रचनारथी भिन्न समयनो छे. आ बे कविना पद्यबंधनी सरखामणी पण उपरना निर्णयनूं समर्थन करे छे. रघुकार व्यापक तरीके टूंका मध्ययतिरहित छंद वापरे छे. तेनां बे काव्यमांथी एकेनो कोइ पण सर्ग बारथी वधारे अक्षरना रूपबंधमां रचेलो छे नहि. त्रीजे अक्षरे मध्ययतिवाळो तेर अक्षरनो व्यापक मत्तमयूरी पहेलवहेलो भारविना किरातमां मळे छे. मेघदूत आखूं ए मन्दाक्रान्तामां रचेलूं छे. ए रूपबंध सत्तर अक्षरनो छे, अने तेमां चोथा तथा दशमा अक्षरे मध्य यति छे. पहेला कालिदासनी कविता सरळ छे. एनां त्रण नाटक अने बे काव्यमां सत्तरथी एकवीस अक्षरना अनेक छंद वापर्या छतां मोटा समास बहु विरल छे. त्यारे बीजा कालिदासना एकला मेघदूतमां मन्दाक्रान्तामां आखां चरण समासना रूपमां मळी आवे छे. वधारे ने वधारे लांबा समासनो प्रचार जोतजोतामां एटलो वधी जाय छे, के माघना शिशुपालवधमां बे बे चरण रोकी लेता पचीस अने त्रीस अक्षरना समास नजरे पडे छे. एकला टूंका समासना आधारे अमुक ग्रंथ प्राचीन छे एम तो ना कही शकाय परंतु लांबा समासना छूटथी करेला उपयोग उपरथी ते प्राचीन नथी एवो तो अभिप्राय भली रीते बांधी शकाय.

१६ आपणे जोयूं के मेघकार कालिदास विक्रमादित्यना एटले के द्वितीय चंद्रगुप्त विक्रमादित्यना समयमां थयो छे. ए कवि शुद्र उत्तरनो मार्ग मूकी, मेघने पश्चिममां उज्जयिनी भणी आडो फंटावे छे, ते कुदरती पक्षपात कविना वगर-कह्ये कही दे छे के ते ए नगरीनो वतनी हतो. विदिशा अने ब्रह्मावर्त वच्चेना भूभागनूं मेघमां सविस्तर अने चोकस वर्णन आपेलूं छे, ते उपरथी समजाय छे के कवि दशार्ण अवंति अने दशपुरनो मुलक खूंदी वळ्यो हतो. मेघदूत रचायूं ते काळे उज्जयिनीए इसवी सन पूर्वेनी जाहोजलाली कंइक पाछी मेळवी हती. गुप्तोना अमलमां वेपारना महामार्गो चालता थयाथी भृगुकच्छना वाराथी पश्चिमनूं नाणूं अणलेख्यूं उज्जयिनीमां ढळतूं थयूं हतूं, मालवदेशना वाणिज्यनूं मथक ए शहेर बन्यूं हतूं खरूं; पण पश्चिम गुप्तमहाराज्यनूं पाटनगर होवानूं मान तो ते काळे विदिशा नगरी भोगवती हती[७८]. महाक्षत्रपने हणी सौराष्ट्र खाल्सा करी इ. स. ३८८ मां द्वितीय चंद्रगुप्त राज्यारूढ थयो, ते पछी महाराज्यनूं पश्चिम पाटनगर बद-

७८ **मेघदूतना** तेषां दिक्षु प्रतीक्ना श्लोकमां विदिशानो राजधानी पदे निर्देश छे. ते पद राज्यना अमलमां मळेला महत्त्वनूं बोधक छे. राजा के राजाना प्रतिनिधिना निवासनूं शहेर ते राजधानी. प्रस्तुत राजकारणिक विशिष्टता बे वार भोगववानो अवसर विदिशाने प्राप्त थयो हतो, इसवी सन पूर्वे शुंगोना अने इसवी सनना आरंभ पछी गुप्तोना राज्यकाळमां. मेघकारनी सत्तानो पूर्व अवधि इसवी चोथूं शतक छे ते कारणथी तेने गुप्तोना समयमां मूकवो पडे छे, अने विदिशाने गुप्तोना समयनी राजधानी समजवी पडे छे. समुद्रगुप्त पराक्रमादित्ये पश्चिमना राजाओने रणमां रोळी तेमनां राज्य खाल्सा करी विदिशाने पश्चिम गुप्तराज्यनी राजधानी बनावी हशे. ए दरम्यो द्वितीय चंद्रगुप्त विक्रमादित्य गादीए आवतां राज्यनी हद सौराष्ट्र अने सप्तसिंधु पर्यंत वध्याथी उज्जयिनीने मळ्यो. मेघदूत रचायूं ते विदिशा पश्चिम गुप्तराज्यनी राजधानी हती त्यारे. उज्जयिनी ते अवसरे यवंति देशनूं एक समृद्ध शहेर हतूं-व्यापारवणजने लीधे विदिशाथी वधारे समृद्ध हतूं. वळी अखिल भारतनूं काव्यपीठ पण उज्जयिनीमां हतूं. परंतु गुप्तराज्यनूं एक पाटनगर होवानूं मान भोगववा ते भाग्यशाळी थयूं न हतूं. आ समजथी कुमार द्वितीय चंद्रगुप्तनी सूत्रगिरीनी राजधानी तरीके विदिशानो निर्देश कर्यो छे.

लायूं. नवा प्रान्तनो वहीवट वधारे सरळताथी करी शकाय एवा हेतुथी चंद्रगुप्ते उज्जयिनीने महाराज्यना आ तरफना भागनी राजधानी बनावी[७९]. आ परिवर्तन पूर्वे एटले इ. स. ३८८ पहेलां मेघदूतनो रचनाकाळ. जे कालिदासनो उज्जयिनीना काव्यपठे अपूर्व सत्कार कर्यानूं राजशेखर जणावे छे[८०], ते आ मेघकार कालिदास संभवे छे. परीक्षानी कसोटीए चडावेलं काव्य पण घणुं करीने उज्जयिनीनी प्रशस्तिवाळूं मेघदूत होय एम भासे छे. काव्यपीठनो आ नवो स्नातक पछीथी कुमारपदे विदिशाना शासक कुमार चंद्रगुप्तनी सभामां स्थान पाम्यो, अने कविए कविनो गाढ संबंध बंधायो. ए संबंधने लीधे गुप्त महाराज्यना सिंहासने अभिषिक्त थया पछी इ. स. ३८९ ना अरसामां चंद्रगुप्त तरफथी सांधिविग्रहिक तरीके कालिदासने विदर्भ–कुंतलना राजाना दरबारमां पडकारतो आपणे सांभळिये छिये. वाकाटकवंशी द्वितीय रुद्रसेने तेने महाराजाधिराज चंद्रगुप्तना दूत तरीके उचित आसन आप्यूं नहि, ते प्रसंगे पृथ्वी पर बेठक लेतां कालिदासे महाराज्यना दूतने छाजतूं जे वचन उचार्यूं हतूं ते औचित्यना उदाहरण तरीके अद्यापि आपणने आनंद ऊपजाववा ऊतरी आव्यूं छे[८१]. समजूतीनां कहेण निष्फळ जतां

---

७९ जुओ पं. बिश्वेश्वरनाथ रेउ कृत **भारतके प्राचीन राजवंश**, द्वितीय भाग, पृ २७२:–'इस द्वितीय चन्द्रगुप्तने उज्जैनको अपने राज्यकी पश्चिम प्रान्तकी राजधानी बनाया था.'

८० जुओ आ व्याख्याननी टिप्पणी ६७.

८१ जुओ क्षेमेन्द्रकृत **औचित्यविचारचर्चा**माथी लीधेलूं नीचेनूं अवतरण:–अधिकरणौचित्य यथा कुन्तलेश्वरदौत्ये कालिदासस्य। 'इह निवसति मेरुः शेखरः क्ष्माधराणामिह विनिहितभारा सागराः सप्त चैव। इदमहिपतिभोगस्तम्भविभ्राजमानं धरणितलमिहैव स्थानमस्मद्विधानाम्॥.' अत्र महाराजाधिराजदूतोऽपि सामन्तास्थाने स्वप्रभुसमुचितगौरवपूजार्हमासनमनासाद्य कार्यवशेन भूमावुपविष्टः प्रागल्भ्यगाम्भीर्येणैव ब्रूते। यथा अस्मद्विधानां वसुधातल एव भुजगपतिभोगस्तम्भप्राग्भारनिष्कम्पे स्थानं युक्तम्। यस्मादिहैव मेरुरचलचक्रवर्ती समुपविष्टः सप्त महाम्बुधयश्च। तत्तुल्यतैवास्माकमिति। इदौचित्यमधिकरणे सचमत्कारमेव॥

चंद्रगुप्ते चडाई करी रुद्रसेनने हरावी कुंवरी प्रभावतीगुप्ता परावी पूर्वे कहेवामां आव्यूं छे तेम स्नेहनी सांकळे बांधी लीधो. रुद्रसेन अने प्रभावती-गुप्तानो पुत्र प्रवरसेन. ते न्हाणपणे मोसाळमां कवि कालिदासना परिचयमां आव्यो. उमरलायक थतां ते विदर्भ–कुंतलनी गादीए आव्यो. ते पछी तेनी मुलाकात लेई पाटलिपुत्रे पाछा फरेला कालिदासने राजदाहित्रना सुख-समाचार सार्वभौम मातामहने निवेदन करतो छेल्लेछेल्लो आपणे जोइये छिये. ते पछी मेघकारनो मेळाप थतो नथी[८२].

१७ मेघदूत एकवे जाळांवाळूं पण बहु तेजस्वी रत्न छे. ते नवां प्रस्थाननो एक चडियातो आदर्श पूरो पाडे छे. गुप्तकाळना साहित्यना सर्वनाशमांथी ए ज एकलूं ते काळना पद्यबंधनो ख्याल आपवा बच्यूं छे. एने शब्दार्थचित्रनो चेप लाग्यो नथी. आदिथी अंत पर्यंत एक ज जाणीतूं वृत्त वापर्यूं होवाथी मेघदूत नवा छंद रचवानी कविनी कळा विचारवामा मदद करतूं नथी. मेघकार कालिदास पूर्वकालीन किरातना एक मध्ययति-वाळा तेर अक्षरना व्यापकथी आगळ डग लंबावे छे एटला ज नहि, पण उत्तरकालीन माघकाव्यना पंदर अक्षरना व्यापकने पण टपी जता बे मध्य-यतिवाळा सत्तर रूपना व्यापकना प्रयोगनूं सफळ साहस करे छे.

१८ चोथा पांचमा अने छट्ठा शतकना ग्रन्थबंधनी समीक्षा मुक्तक उपर क्षणभर दृष्टि फेरव्या वगर अधुरी लेखाय. शास्त्रमा सूत्र अने काव्यमां मुक्तक ते संस्कृत साहित्यनी विशिष्ट सृष्टि छे. पृथ्वी परनी बीजी प्रौढ भाषाओमां वाङ्मय अनेक शाखाए विस्तार पाम्यूं छे; पण ते पैकी एकेमा सूत्रनी अने मुक्तकनी कोटिनो संदर्भ पांगर्यो के पाल्व्यो नथी. औपचारिक भाषामां बोलिये, तो मुक्तक ते सूत्रकल्प प्रबंध छे. तेमां सूत्रनी दुर्बोधता वगर प्रबंधनो प्रसाद छे. जेटले दरज्जे मुक्तकमा प्रबंधनूं स्वरूप उतरे, तेटले दरज्जे प्रबंधे अपनावेला काव्य नामने ते लायक लेखाय छे. प्रबंधनूं अने

---

८२ मेघकारना जीवनने माटे, आ व्याख्यानने अंते परिशिष्ट २ आप्यूं छे ते जोवूं.

मुक्तकनूं लक्षण एक ज छे. जे पांच संधिए प्रबंधनूं कलेवर बंधाय छे, ते मुक्तकना बंधारणमां पण इष्ट छे[८३]. ए बेमां हाथी अने हाथीना दर्पणगत प्रतिबिंब जेवो परिमाणकृत भेद छे. मुक्तकसाहित्य संस्कृतमां बहोळुं छे. सुभाषितसंग्रहोमां नवे रसना अनेक मुक्तको संग्रहेला होय छे. मुक्तककवि तरीके ख्याति मेळवनारा साहित्यकार चार छे, हाल किंवा सातवाहन, अमरु, भर्तृहरि अने गोवर्धन. एओमां जेना मुक्तक रसथी ऊभराई जई प्रबंधनी बराबरी करनारा मनाय छे, ते तो अमरु ज छे[८४]. एणे रचेला मुक्तकोनी शतश्लोकी अमरुशतकना नामे प्रसिद्ध छे.

१९ अमरु कविना वतननूं सूचन अमरुशतकना पांचेक मुक्तकोमां मळी आवे छे. 'आलम्ब्याङ्गण' प्रतीकना श्लोक उपरनी टीकामां वेम भूपाल नायिकाना उत्तरीयना छेडाने सव्य विशेषण लगाडे छे[८५]. आ पहेरवेश दाक्षणापथनो छे. सातमा सैकामां उत्तरापथनी स्त्रीनो पहेरवेश तो आथी जूदो पडे छे. माघ कविना शिशुपालवधना सातमा सर्गना श्लोक १६–१८ जोयाथी आ कथन स्पष्ट समजाशे[८६]. अमरु कवि दक्षिणनो छे एवूं बतावी आपनारी बीजी विलक्षणता 'त्वं मुग्धाक्षि' प्रतीकना मुक्तकमां छे. ए श्लोक उपरनी टीकामां अर्जुनवर्मदेव जणावे छे[८७] के 'अहीं कन्चुलिका शब्दे

---

८३ जुओ **अमरुशतक** (आ. ५), श्लोक ४६ उपर **सरस्वतीकण्ठाभरणने** अनुसरी आपेलूं पंचसंधिविषयक विवेचन.

८४ जुओ नीचेनां वचनोः–' अमरुककवेरेकः श्लोकः प्रबन्धशतायते ' (भरतटीकाकाराः) ।, मुक्तकेषु हि प्रबन्धेष्विव रसबन्धाभिनिवेशिनः कवयो दृश्यन्ते । तथा ह्यमरुकस्य कवेर्मुक्तकाः शृङ्गाररसस्यन्दिनः प्रबन्धायमानाः प्रसिद्धा एव ' (ध्वन्यालोकः।३।७।)

८५ वेम भूपालनी **शृङ्गारदीपिका** टीका छपाई नथी. मारा संग्रहनी हाथप्रतने आधारे अहीं उल्लेख कर्यो छे.

८६ जुओ वळी **शि.व.**। ७ । ४२ । अने ते उपरनी मल्लिनाथनी टीका.

८७ जुओ **रसिकसंजीवनी** टीकामांथी नीचेनो ऊतारोः–कञ्चुलिका चेयं दाक्षिणात्या चोलिकारूपैव । तस्या एव मयनपदार्थे वीटिकाव्यपदेशः । अन्यत्र कपातनिकेत्येवमादयः ॥.

करीने दक्षिणापथनी 'चोळी ज समजवानी छे. आथी जे . ए चोळीने ज वीटिका एटले वीटो देई, गांठ पाडवानी होय छे. उत्तरापथनी कांचळीना संबंधमां तो कपा (गू. कस), तानका (हिं. तनी) वगेरे शब्दो प्रयोजाय छे. बीजी पण एक वात नोंधवी घटे छे. 'पस्याश्लेप' अने 'निःशेषच्युत' प्रतीकना मुक्तकोमां स्तनमंडन माटे चंदनना ज लेपनूं निरूपण छे. उत्तरनां केसर कस्तूरीनो मघमघाट अमरुशतकमां नथी. दक्षिण साथेनो कविनो संबंध आ रीते दृढ थाय छे. वळी 'मलयमरुताम्' प्रतीकना श्लोकमां वायु मलयाचलथी वाता वर्णव्या छे, तेथी अमरु छेक दक्षिणनो नहि होय एम पण समजाय छे.' आ हकीकत साथे भायकाव्यनो परिचय जे अमरुशतकना आदिमंगळथी प्रतीत थाय छे तेनो संबंध हवे पछी दर्शाव्या प्रमाणे जोडतां, अमरु कवि लाट—माळवनी समीपना पाश्चात्य चालुक्योना राज्यनो वतनी हशे, एवा अनुमान उपर हूं आवूं छूं. मूलगत मुक्तक ५५ मां वापीस्नाननो निर्देश छे अने पूरवणी १ ना ११२ मां जळाशयनो उपक्षेप छे. ते उपरथी समजाय छे के कविनूं वतन वाव कुंड सरोवर आदि जळाशये सुशोभित शहेर—कदाच चालुक्योनी राजधानी वातापी हशे.

२० नवमा शतकना उत्तरार्धमां आनंदवर्धनाचार्य अमरुना मुक्तकोनां मुक्तकंठे वखाण करे छे. वळी आठमा शतकना उत्तरार्धनो वामन पण काव्यालंकारसूत्रवृत्तिमां एना बे मुक्तक आपे छे. विंध्याचळनी पारना मुक्तककविनी कीर्ति आ रीते हिमाचळना शिखर पर्यंत प्होची गई, ए बनावने ओछामां ओछा पांच दायका लाग्या हशे; कारणके, सातमा सैकाना मध्य भागमां चक्रवर्तिकवि हर्ष राजानो काळ थयो, त्यारपछी उत्तरापथनूं वातावरण साहित्यना प्रसारने अनुकूळ न हतूं. शारदादेश बाद करतां विंध्याचळनी आ बाजूए कोइ पण साहित्यपोषक समर्थ राज्य रहूं न हतूं. दक्षिणापथमां वातापीना चालुक्यो अने काञ्चीना पळवो हारजीतनी ऊथलपाथल मचावी रह्या हता. आवा प्रतिकूळ संजोगमां अमरुशतकनी ख्यातिना प्रसा-

रनी अटकळने अनुसरी हू एनो निर्माणकाळ सातमा शतकना छेवटमां मूकुं छु. आतर प्रमाण मारी अटकळने पुष्टि आपे छे. शिशुपालवधना छट्टा सर्गना चौदमा श्लोकना लोभपरिभ्रमद्भ्रमर शब्दो नजेवा फेरफारथी अमरुए शतकना आदिमगळमा ऊतार्या छे. वळी एणे विभ्रमभृत् बोल एनी साथे जोडयो छे, ते शब्दार्थथी माघना संमृतशोभनी अने स्वरूपथी संभ्रमनी स्मृति आपे छे[८८]. माघनू वतन जे अपरमाल्व, ते देश चक्रवर्ती हर्ष राजाना आधिपत्य नीचे हतो. हर्षना अवसान पछी वातापीना प्रथम विक्रमादित्य रणरसिके अपरमालव अने लाट जीती लेई न्हाना भाइ जयसिंहवर्मने त्यानो सत्ताधीश बनाव्यो हतो[८९]. एना तथा श्याश्रय शीलादित्यना अमलमां लाट–मालवना साहित्यनो चालुक्योना राज्यमां प्रचार थतां अमरु शिशुपालवधना परिचयमा आव्यो समवे छे. आ बधी बाबतो ध्यानमां लेता अमरुशतकनो रचनाकाळ सातमा शतकनो अंतभाग ठरे छे.

२१ अमरुशतकनी अपूर्वता कविनी हयातीमां तेना निर्माणकाळे अंकाई अने सत्कारोई हती. उज्जयिनीना काव्यपीठे जे मान पूर्वे प्रबंधकविओने आप्यूं हतु, ते मानथी तेणे अमरुशतकना रचनारा मुक्तककविने पण वधावी लीधो हतो. भारवि, मेंठ अने द्वितीय कालिदास जेटलो ज सत्कार अमरुनो थयानी नोध राजशेखर कविनी काव्यमीमांसामा छे[९०]. एवू मान बीजा कोइ पण मुक्तककविने मळ्यानू जाणवामा नथी[९१].

---

८८ सरखाववा सरळ पडे एटला माटे बने श्लोक नीचे आपू छू – ज्याकृष्टिबद्धखटकामुखपाणिपृष्ठप्रेङ्खन्नखांशुचयसवलितोऽम्बिकाया । त्वा पातु मञ्जरितपल्लवकर्णपूरलोभभ्रमद्भ्रमरविभ्रमभृत्कटाक्ष ॥अ श ।१॥, कुसुमसौरभलोभपरिभ्रमद्भ्रमरसभ्रमसमृतशोभया । चलितया विदधे कलमेखलाकलकलोऽलकालोलदृशान्यया ॥ शि व ।६॥१४॥.

८९ जुओ प गौरीशंकर ओझा कृत भारतीय ऐतिहासिक ग्रन्थमाला, जिल्द् पहिली, सोलकीयाका प्राचीन इतिहास, भाग १, पृ. ४४–५१

९० जुओ आ व्याख्याननी टिप्पणी ६७

९१ जुओ विशेष माहिती माटे अ श (आ ५), उपोद्घात

२२ अमरुनी शतश्लोकी वास्तविक रीते श्लोक ३ थी शरू थई श्लोक १०२ थी समाप्त थाय छे. 'ज्याकृष्टि' प्रतीकनो अने 'क्षिप्तो' प्रतीकनो, ए बे श्लोक शतकना आरंभमां मूकवामां आवे छे ते जो के अमरुनी कृति छे, तथापि सूक्ष्म बुद्धिए विचारतां ते अस्थाने अने वधारे पडता छेः अस्थाने एटला माटे के शृङ्गारना सुरोनी जमावटमां ए बे श्लोकना सुर ललित अने द्रावक छतां विसंवादी छे, अने वधारे पडता एटला माटे के प्रस्तुत शृङ्गार-शतकनूं शृङ्गारी मंगल 'आलोलाम्', प्रतीकना श्लोक द्वारा निष्पन्न ज छे. पद्यबंधनी कसोटी पण ए बे श्लोकने शतश्लोकीमां अंतर्भावित करतां खेंचाय छे. पंच संधिना विकासने माटे मुक्तकना वाहन तरीके मोटा छंद अपेक्षित होवाथी प्रस्तुत शतक २९ सत्तर अक्षरना, ६७ ओगणीस अक्षरना अने ४ एकवीस अक्षरना रूपबंधनूं बनेलूं छे. एमां १४ अक्षरना एके रूपबंधनो प्रयोग छे नहि; अने एकवीसनानो ओछामां ओछो छे. आ कारणथी उक्त बे श्लोकने गणतरी बहार राखी मौलिक शतश्लोकीना पद्यबंध समीक्षाना विषय बने छे. एमां हरिणी, मन्दाक्रान्ता तथा स्रग्धरा अने शिखरिणी तथा शार्दूलविक्रीडित, ए पांच रूपात्मक छंदनो प्रयोग छे. ते पैकी हरिणी, मन्दाक्रान्ता तथा स्रग्धरामां बे बे, अने शिखरिणी तथा शार्दूलविक्रीडितमां एक एक मध्य यति आवे छे. अमरुशतकनो पोणो भाग एक-मध्ययति-वाळा छंदमां रचायलो छे; अने बाकीनो पा भाग बे मध्ययतिवाळा-छंदमां छे. कवि छंदोविधानो केवो ऊंडो मर्मज्ञ छे ते आ वृत्तोनी वरणी कही आपे छे. यति ए छंदनी रचनामां विभिन्न खंडोनो मेळ साधी ओर खूबी आणनारूं तत्व छे. कलारसिक कवि तेटला माटे १७ अक्षरनो मध्ययतिरहित पृथ्वी छंद न वापरतां उक्त मध्ययति युक्त छंदोनो ज उपयोग करे छे.

२३ अहीं कदाचित कोइ शंका करे के छंदोविधाना मर्मज्ञ अमरुए एके नवतर छंद केम नहि रच्यो होय? एनूं समाधान, प्रबंध अने मुक्तकनां स्वरूप तपासीशूं, तो मळी आवशे. प्रबंधना विस्तारी संविधाननी सांकळ नवा

छंदने टकावी राखे छे. रूढ छंदोना जूथमां जोके ए नवो छंद बहुधा अरूढ ज रहे छे, तथापि अरूढ अरूढे ते जीवे छे. अज्ञात छापना सिक्कानी पेठे अज्ञात छंदमां रचायलो मुक्तक प्रचार पामतो नथी. मणकानी ढगलीमांथी मणका गबडी जई खोवाय छे, तेम रूढ छंदना मुक्तक पण शतक आदि संग्रहमांथी गूम थाय छे; त्यां अरूढ छंदना मुक्तकनूं शुं कहेवूं ? नवा छंदनो मुक्तक अल्पायु नीवडवानो भय छे. ते कारणथी अमरुए रूढ पद्यबंधनी ज वरणी करी संभवे छे. कलानी दृष्टिए जेने नवो छंद कही शकिये, तेनी झांखी माघना देहपात पछी विरल थई पडे छे. अमरुशतकमां तो नवा छंदनो संभव ज नथी. अने अमरुनी बीजी कोइ कृति प्रकाशमां आवी नथी; एटले पद्यबंधने अंगे सर्गशक्तिनी चर्चानो अवकाश न मळ्याथी ए विषयमां मौन धरवूं प्राप्त थाय छे.

२४ जेवडो गाळो **सौन्दरनन्द** अने **किरात** वच्चे पडे छे, तेथी बमणो **शारीपुत्रप्रकरण** अने **मुद्राराक्षस** वच्चे छे. ए लांबा गाळामां रचायला अनेक दृश्यबंध अत्यारे अदृश्य थया छे[९२]. छेक छठ्ठा शतकना उत्तर भागमां आवतां विशाखदत्तनी कृतिओ रंगभूमि उपर झगारा मारे छे. आ नाटककारे अनेक नाटक रच्यां हतां. पण सांप्रत काळमां अणीशुद्ध उपलभ्य तो एकलूं **मुद्राराक्षस** ज छे. तेनी गणना प्रधान नाटकमां थाय छे. एनो रचनाकाळ ठेलातो ठेलातो छठ्ठा शतक सूधी पाछो हठ्यो छे. कोइ विद्वान तो ए

९२ पाचमा शतकना पूर्वार्धमा काश्मीरी कवि चंद्रके प्रेक्षणीय नाटको रच्या होवानो उल्लेख **राजतरंगिणि** । २ । १६ । मा छे. परतु तेमाथी एक पण अत्यारे उपलभ्य नथी. ए कविना नामथी **औचित्यविचारचर्चामां** नीचेनो श्लोक आप्यो छे.-कृष्णेनाम्ब गतेन रन्तुमधुना मृद भक्षिता स्वेच्छया, सत्यं कृष्ण क एवमाह मुसली मिथ्याऽम्ब पश्याननम्। व्यादेहीति विकासितेऽथ वदने माता समस्तं जगद् दृष्ट्वा यस्य जगाम विस्मयपदं पायात् स वः केशवः ॥. आ श्लोक एना एवाद नाटकनूं आदिमंगल होय एम एनी रचना उपरथी अटकळ थाय छे.

नाटकने पांचभा शतकमां पण मूके छे. वादयुद्ध एना छेल्ला श्लोकना छेक छेल्ला बोल उपर जाम्यूं छे. ए बोल ते 'चन्द्रगुप्तः' लेवो के 'अवन्तिवर्मा' ए बाबतमां मतभेद छे. आंतर प्रमाणने अनुसरी हूं 'अवन्तिवर्मा' पाठ ग्राह्य गणूं छूं. ए श्लोकना उत्तरार्धमां म्लेच्छोना त्रासदायक उपद्रवनो उल्लेख छे, ते मौर्यवंशी चंद्रगुप्त गादीए आवतां थयो न हतो, तेम ज गुप्तवंशी द्वितीय चंद्रगुप्त विक्रमादित्य गादीए आवतां पण थयो न हतो. नव नंदनो नाश करी चार वरसना विग्रहने अन्ते मौर्यवंशी चंद्रगुप्त ज्यारे राजा थयो, त्यारे अमात्य राक्षसनी आगेवानी नीचे म्लेच्छ मलयकेतुए पाटलिपुत्र उपर चढाइ करी हती खरी; पण तेनो अहीं निर्देश तो राक्षसना मुखथी पोताना अंगे वचकूं भरवा जेवो अणघटतो होई असंभाव्य ज छे. विरोधी राक्षस साथे मेळ थया पछी वीसेक वरसे सीरियानो शाहानशाह सेल्युकस निकेटर भरतखंड उपर चडी आव्यो हतो; पण तेनो उल्लेख प्रशस्तिमां[९३] कल्पिये छिये, तो कालविरोध नडे छे. अर्थात् समाप्तिश्लोकमां मौर्यवंशी चंद्रगुप्तनो संकेत बाधित छे. बीजी तरफ गुप्तवंशी द्वितीय चंद्रगुप्त विक्रमादित्यनो संकेत पण घटावी शकातो नथी. ए परम प्रतापी राजानी कारकिर्दी दरमियान भरतखंड उपर म्लेच्छोनी सवारीनूं नामनिशान सरखूं हाथ लागतूं नथी. एना मोटा भाइ रामगुप्तना टूंका अमलमां जागेला विग्रहनी नोंध त्रण चार जडे छे[९४]. ए विग्रहमां कुमार चंद्रगुप्त बहु आगळ पडतो पराक्रमपूर्ण भाग ले छे. राजा

---

९३ नाटकना उपसंहार किंवा निर्वहण संधिनूं छेल्लूं अंग ते प्रशस्ति. काव्यनी समाप्तिए कवि पोताना विशे प्रशंसागर्भित शब्दमां माहीती आपे छे ते साधारण रीते प्रशस्ति कहेवाय छे. वळी सरोवर, देवमंदिर आदि रचनारना गुणानुवादनो लेख ते पण प्रशस्ति शब्दथी ओळखाय छे. तेनाथी नाट्यशास्त्रनो आ पारिभाषिक प्रशस्ति बोल जुदो पडे छे. नाटकनी प्रशस्ति प्रशंसावाचक नहि, पण शुभेच्छावाचक होय छे. 'प्रशस्तिः शुभशंसनम् ।' ए एनूं लक्षण छे.

९४ जुओ इ. स. १९२८ ना नवेंबर-डिसेंबरना बुद्धिप्रकाशमां छपायलो 'समुद्रगुप्तनो क्रमप्राप्त उत्तराधिकारी' ए मथाळानो मारो लेख.

रामगुप्त शकाधिपतिनी राजधानी अरिपुर के अलिपुर उपर चडाइ करे छे. तेनो प्रतिपक्षी आडी वाटे धसी आवी तेने घेरी ले छे. ते अंतरामणमां राणी ध्रुवदेवी आपवानूं कबूल करी ते छावणीए पाछो फरे छे. काळाटीली टाळवा अने वेर वाळवा कुमार चंद्रगुप्त राणीना वेशनां शत्रुना नगरे जवा तैयार थाय छे; तेने बंधुवत्सल रामगुप्त जवा देवा ना पाडे छे. त्यारे चंद्रगुप्त राणी साथे राजाथी छानी मसलत करी ध्रुवदेवीना ठाठमां शकनी राजधानीए जई राजाना अंतःपुरमां दाखल थई दाव साधी तेनो घाट घडी नांखे छे. पछी ते नवा वेशे छावणीए पाछो फरे छे; अने गुप्तसेना साथे चढी आवी शकराजधानी सर करी शहेरमां रामगुप्तनी आण फेरवे छे. जीतायला नगरमां ठामठाम रास लेवाय छे अने कुमार चंद्रगुप्तनां पराक्रम गवाय छे. न्हाना भाइना आ उज्वळ साहसथी परम प्रसन्न थयेलो राजा रामगुप्त पोताना माथेथी मुगट ऊतारी चंद्रगुप्तना माथे मूके छे[९५]. देवीचंद्रगुप्त नाटकमांना ऊतारा उपरथी आ संविधान में ऊपजावी काढ्यूं छे. प्रतिपक्षीनी राजधानीनूं नाम हर्षचरित अने शृङ्गारप्रकाशमांना ऊतारा प्रमाणे उपर अरिपुर के अलिपुर आप्यूं छे[९६]. परंतु दुस्मनावाद जेम कोइ शहेरनूं विशेषनाम संभवतूं नथी, तेम अरिपुर के अलिपुर पण नथी संभवतूं. असल पाठ गिरिपुर होवो जोईए, एम मारूं धारवूं छे. एना उपरथी अरिपुर अने अलिपुर पाठ परंपराए ऊपजी आव्या जणाय छे. गिरिपुर के गिरिनगर ते सांप्रत जूनागढ-प्राचीन यवननगर; अने तेनो शक राजा ते महाक्षत्रप तृतीय रुद्रसिंह. तेनी साथेना विग्रह विशे देवीचन्द्रगुप्त, हर्षचरित, हर्षचरित-संकेत, अने शृङ्गारप्रकाशमांथी एकठी करेली हकीकत उपर प्रमाणे छे.

---

९५ जुओ मारू संस्कृत मुद्राराक्षस, (ed. 3), Introduction.

९६ जुओ शृङ्गारप्रकाशमांथी लीधेलूं नीचेनूं अवतरण -स्त्रीवेषनिह्नुत-चन्द्रगुप्तः शत्रोः स्कन्धावारम् अलिपुर शकपतिवधाय अगमत् ।. जुओ वळी हर्षचरित । ६ ।, अरिपुरे च परकलत्रकामुकं कामिनीवेषगुप्तः गुप्तः चन्द्रगुप्तः शकपतिमशातयत् ॥.

बीजो एक उतारो काव्यमीमांसामांथी मळ्यो छे. तेमां विग्रहनूं क्षेत्र हिमालय कह्युं छे. त्यां कार्तिकेयनगर[९७] नामे शहेर उपर राजा रामगुप्त चडाइ करे छे, परंतु प्रतिपक्षी खशाधिपति तेने आंतरी लेई राणी ध्रुवस्वामिनी आपी देवानी जोरे फरज पाडे छे. ते सरते छूटी रामगुप्त पाछो फरे छे. पछीथी हिमालय पर्वत उपरना कार्तिकेय नगरमां कोइकना पराक्रमनी कीर्ति गवाय छे. ए अनिर्दिष्ट वीर ते राजा रामगुप्तनो भाइ कुमार चंद्रगुप्त संभवे छे. आ वृत्तांत देवीचन्द्रगुप्तना वृत्तांतने एटलो मळतो आवे छे, के आधारभूत श्लोकना पाठ सूक्ष्म दृष्टिए तपासी जोवानूं कुतूहल रोक्यूं रोकातूं नथी. राजशेखरे काव्यमिमांसामां उतारेलो मुक्तक नीचे प्रमाणे छेः—

दत्त्वा रुद्धगतिः खशाधिपतये देवीं ध्रुवस्वामिनीं
यस्मिन् खण्डितसाहसो निवपृते श्रीशर्मगुप्तो नृपः।
तस्मिन्नेव हिमालये गिरिगुहाकोणक्वणत्किंनरे
गीयन्ते तव कार्तिकेयनगरस्त्रीणां गणैः कीर्तयः॥

आपेला उताराना पहेला चरणमां खश बोल छे ते शकने बदले भूलथी लखायो होय, एवूं बनवा जोग छे. मुद्राराक्षसना पांचमा अंकना प्रस्थातव्यं प्रतीकना श्लोकना पहेला चरणमां आने मळती भूल एक हाथप्रतमां थयेली नजरे पडे छे. तेमां खशने ठेकाणे शक पाठ आप्यो छे. बीजी भूल ए ज चरणने अन्ते एक अक्षरनूं पलांखूं घसाई गयाथी अने

---

९७ देवीपुराण, अध्याय ९ मां कार्तिकेयपुरनो उल्लेख छे, एनूं बीजूं नाम वैद्यनाथ छे. आ गाम कुमाउं जिल्लामां आवेलूं छे. ते अल्मोडाथी ऐंशी माइल दूर छे. जुओ Nandoo Lal Dey's Geographical Dictionary of Ancient and Mediaeval India (ed. 2). आ कार्तिकेयपुरनी ऐतिहासिक प्रसिद्धि छे नहि. खरुं काव्यमीमांसामां कहेलूं कार्तिकेयनगर ते देवीपुराणनूं कार्त्तिकेयपुर होय नहि. बीजूं ए नामनूं शहेर छे नहि.

बाकीना त्रण अक्षर खवाई गयाथी उत्पन्न थई छे. देवीचन्द्रगुप्त प्रमाणे रामगुप्तनी राणीनूं नाम ध्रुवदेवी हतू ते ध्यानमा लेता मूळपाठ देवी ध्रुवोपाधिका[९८] होवो घटे छे. ए राजाराणीना नाम पाछळथी भूलाई जवायां, अने तेमना पछी थनार द्वितीय चद्रगुप्त विक्रमादित्य तथा तेनी पटराणी ध्रुवस्वामिनी किंवा ध्रुवदेवीना सदोदित रह्या. एटले दुर्वाच्य खण्डित पाठना स्थाने देवीं ध्रवस्वामिनीं बनावटी पाठ स्थापित थयो[९९].

---

९८ दशपूर्वरथ (र व । ८ । २९ ।) बोल उपरथी प्रथम दशरथ सज्ञा वाच्य बने छे अने ते उपरथी पछी दशरथ सज्ञी लक्षित थाय छे, तेम ध्रुवोपाधिका देवी उपरथी ध्रुवदवी सज्ञा वाच्य बनी ते उपरथी सज्ञी ध्रुवदेवी लक्षित थाय छे

९९ शक राजानो घाट घडया पछी मोटा भाइ रामगुप्तनू खून करी चद्रगुप्त राजा थयो तथा रडायला ध्रुवदेवीने तेणे पोतानी राणी बनावी, एम प्रॉ. ए एस अल्तेकर तथा डॉ. कृष्णस्वामी आयगर आपणा मनमा ठसाववा मागे छे परतु देव जेवो हेवाई देवराज अने देवगुप्त उपनामथी ओळखानार चद्रगुप्त बधुवत्सल मोटा भाइनू खून करे अने भाजाईने रडापो आपी लोहीथी पीळेला हाथे पुनर्भू पत्नी बनावे ए विधान देवीचन्द्रगुप्त नाटकना सविधान साथे मेळ खाय एवू नथी अमात्य राक्षस साथेना विग्रहमा जेणे कौटिल्यना हाथ रक्तपातथी खरडाव्या नथी ते विशाखदत्त भ्रातृवधनू अने भोजाईना पाणिग्रहणनू निरूपण कया अर्थनी सिद्धि सारु, कया रसना परिपोषण सारु, कया प्रेक्षकना परितोष सारु, कया आश्रयदाताना महत्ता सारु कर्यू होय? उक्त बे ऐतिहासकोने एक ऐतिहासिक लेखे भूलावामा नाख्या होय एम जणाय छे राष्ट्रकूटवशी प्रथम अमाघवर्षना सजाणना ताम्रपत्रना अडताळीसमा श्लोकना पूर्वार्धमा नीच प्रमाणे उल्लेख छे 'कह छे क (आ) कलियुगमा (एक) गुप्तवशीए भाइने ज हणीने राज्य तथा राणी हर्या (हत्वा भ्रातरमेव राज्यमहरद् देवीं च......गुप्तान्वय ।)' आ अवतरणमा कहलो गुप्तवशी त द्वितीय चद्रगुप्त विक्रमादित्य, एम उक्त ऐतिहासका समज छ, अन हु पण एमज समजू छु परतु, प्रस्तुत ताम्रपत्रीय श्लोकमा चद्रगुप्त कोने हण्यानू अन कोने हयानू कह्यु छे, तेना निर्णयमा हु तेमनाथी जुदो पडू छु एओ एम मान छ क जने चद्रगुप्ते हण्यो ते रामगुप्त अने जेने तेण हरी ते रामगुप्तनी राणी मारु मानवू एम छे के चद्रगुप्तन हाथे जे मार्या

त्रीजा भूल त्रीजा चरणना ६, ७ अने ८ ए त्रण खवाई गयेला अक्षरनी खाली जगा पूरवामां थई छे. हि अव्ययने पर्वतना विशेषनामनो आद्यक्षर समजी कोइए मालये पदपूर्ति करी हिमालये पाठ साध्यो जणाय छे. परंतु विग्रहनूं क्षेत्र हिमालय नहि पण शृङ्गारप्रकाशमां कहेला गिरिपुरनो

गयो ते एनो वचट भाइ, 'मोटो' भाइ नहि. समुद्रगुप्तने रामगुप्त अने चंद्रगुप्त उपरांत बीजां संतान हतां. एना एरनना लेखमां महादेवी दत्तदेवीने बहुपुत्रपौत्र-संक्रामिणी कही छे. रामगुप्तथी न्हाना पण चंद्रगुप्तथी मोटा (अर्थात् वचट) कुमारे गिरनारनी घाटीमां 'मोटो' भाइ समस्त सेना साथे शकराजाना हाथमां पड्यानूं सांभळी पाटलिपुत्रमां 'राजचिह्न' धारण कर्यां हशे. तेनी अने चन्द्रगुप्तनी वच्चे ए रीते राजगादी माटे जागेला विग्रहमां वचट मार्यो गयो हशे, अने तेनी राणी विजयी चंद्रगुप्तना हाथमां पडी हशे. आ प्रकारे भाइ एटले वचट भाइ हणायो; तेणे हृत करेलूं राज्य हरायूं; अने तेनी राणी ए हराई एटलेके पकडाई,-नहि के चंद्रगुप्ते तेने पोतानी राणी बनावी. देव जेवा दियरे वचट भाइनी विधवानो मानमर्तबो जळवाय एवो पाको बंदोबस्त कर्यो होवो जोईए. चंद्रगुप्तना आ भाइ-भोजाईनां नाम मळी आवतां नथी; तेथी हूं आपी शकतो नथी. मोटा भाइए राजगादीनो त्याग करी न्हाना भाइने राजा कर्यो, त्यारे चन्द्रगुप्तने बे राणीओ हती, मोटी ध्रुवस्वामिनी अने छोटी कुबेरनागा. पहेली राणीनूं एटले के पटराणीनूं बीजूं नाम ध्रुवदेवी पण लेखोमां मळी आवे छे. बीजी राणी जे कुबेरनागा, तेना पेटनी कुंवरी प्रभावतीगुप्ता, चंद्रगुप्त राज्यारूढ थयो, त्यारे तेरेक वरसनी थई हती. गूंचवारो ऊभो थयो छे ते एक तरफथी वचटने ठेकाणे मोटो भाइ हणायो मानवाथी अने बीजी तरफथी रामगुप्तनी राणीना ध्रुवदेवी नामनो अने चंद्रगुप्तनी राणीना ध्रुवस्वामिनी उर्फे ध्रुवदेवी नामनो भेद न समजवाथी थयो छे. अरबी **मजमुल-उ-तवारिखमां** आपेली सिंधना रव्वाल [सं. राम(गु)पाल] अने बर्कमारिस (सं. विक्रमादित्य)नी कहाणीथी गूंच ऊकलवाने बदले वधारे गूंचाई छे. संस्कृतमांथी फारसीमां अने फारसीमांथी अरबीमां वधघट साथे रूपांतर पामेली ए कहाणी उपर वजन मूकवूं अने **कथासरित्सागरनी** कथा उपर वजन मूकवूं, ते बे सरखां गणाय. समुद्रगुप्त, रामगुप्त अने द्वितीय चंद्रगुप्तना समयना इतिहासनो कंइक क्रमबद्ध मान थाय, एटला माटे आ व्याख्यानना अंते परिशिष्ट १ मां धरसवारी पत्रक अडसट्ट सालो गोठवीने आप्यूं छे ते ध्यानपूर्वक जोई जवानी जरूर छे.

रैवत गिरि हतुं. आथी 'हिमालये' बदल 'हि रैवते' वांचवा हुं प्रेराउं छुं. चोथी भूल चोथा चरणमां दृष्टिगोचर थाय छे. ए चरणमां 'तव' सर्वनाम कुमार चंद्रगुप्तनो निर्देश करे छे, जेथी आखो श्लोक चंद्रगुप्तने संबोध्यो ठरे छे. प्रस्तुत मुक्तक गिरिनगर सर कर्या पछी नेपथ्यमां वैतालिके लल-कारेलं कुमारनूं यशोगान छे. 'तव' पद पछी संबोधननां 'भोः कुमार' पद उपर काव्यमीमांसानी हाथप्रतमां कोइके बुद्धिभ्रमथी कार्त्तिकेय पर्याय लख्यो हशे अने ए हाथप्रत उपरथी नवी नकल करतां अज्ञान लेखके 'भोः कुमार' अशुद्ध अने 'कार्तिकेय' शोधित पाठ समजी एकने स्थळे बीजो मूळमां दाखल कर्यो हशे; एवी मारी अटकळ छे. उपर चर्चेली चार मोटी भूलो उपरांत केटलीक न्हानी भूलो पण छे, ते सूधारी लेई हुं प्रस्तुत श्लोक आ प्रमाणे वांचवा मागूं छुं:

> **दातुं रुद्धगतिः शकाधिपतये देवीं ध्रुवोपाधिकां**
> **यस्मिन् खण्डितसाहसो निववृते श्रीरामगुप्तो नृपः।**
> **तस्मिन्नेव हि रैवते गिरिगुहाकोणक्कणत्कीचके**
> **गीयन्ते तव भोः कुमार नगरस्त्रीणां गणैः कीर्तयः॥**

विग्रहना क्षेत्रना अने प्रधान पात्रोना संबंधमां देवीचन्द्रगुप्तना उतारा साथे काव्यमीमांसामांना उपर विचारेला मुक्तकनी एकता साध्या पछी जुदी जुदी नोंधोमां कहेल विग्रह भिन्न नहि, पण एक ज अर्थापन्न थाय छे[100]. ए विग्रहमां शकाधिपति मगधराज्य उपर चडाइ नथी करतो, पण महाराजाधिराज रामगुप्त शकाधिपतिनी राजधानी गिरिनगर उपर चडी आवे छे. एटले करीने **मुद्राराक्षसनी** प्रशस्तिमां 'चंद्रगुप्तः' पाठ अग्राह्य ठरे छे अने

१०० कदापि एम दलील करवामां आवे के विग्रह एक नहि पण बे थया हता, एक गिरिनगरना शको साथे अने बीजो हिमालयना कार्तिकेयनगरना खशो साथे; तो ते स्वीकारी शकाय एम नथी. माणसनी याददास्तमांथी छेकाछेक भूंसाई जाय एटला टूंका राज्यकाळमां राजा रामगुप्त उत्तरमां खशो उपर अने पश्चिममां शको उपर सवारी लेई जाय, तेमां हिमालयनी खीणमां देवी ध्रुवस्वामिनी आप-

'अवन्तिवर्मा' पाठ ज स्वीकारवो रहे छे. ए पाठने आधारे मुद्राराक्षस रचना हुं मौखर अवंतिवर्माना राज्यकाळमां इ. स. ५८५ नी आसपा मूकुं छुं. साल विशे में अन्यत्र चर्चा करी छे[१०१]; तेथी अत्र तेनी पुनरुरि करतो नथी.

२५ विशाखदत्तना पिता तथा पितामह मौखरोनी छायामां मोट राज्याधिकार भोगवता हता; अने कविए मुद्राराक्षस पांचाल देशना राज अवंतिवर्माना अमलमां रच्यूं हतुं. दत्तकुळनी त्रण पेढी पांचाळमां ज सत्त धरावती जोवामां आवे छे. ते उपरथी अनुमान थाय छे के अंतर्वेदिनो प उत्तम प्रदेश कविनी स्वभूमि हती. नाटकना पांचमा अंकमां काश्मीर कूलूत अने मलयराज्य वडे पर्वतदेशनी सीमा आंकी छे, ते पण सूचवे छे के नाटक-कारे ए विषयमां जातमाहीती अने स्थानिक परिचयनो ज उपयोग कर्यो छे. वळी उत्तरना कविओने श्लेष अलंकार विशेष प्रिय छे एम बाण भट्ट जणावे छे[१०२]; अने मुद्राराक्षसनां घणांखरां पताकास्थानक श्लेषमूलक ज छे[१०३]. बीजी केटलीक उक्तिओमां पण श्लेषनो वधारे पडतो प्रयोग प्रस्तुत नाटकमां वाचक जनतानी आंखे चडे छे, आपणे कहीशूं के, वहारनूं अणु आवी आंखमां पडे अने खूंचे तेम, ते निमेषभर खूंचे पण छे[१०४].

वानी तथा गिरनारनी घाटीमां ध्रुवदेवी आपवानी सरते छूटे अने कुमार चंद्रगुप्त वेड प्रसंगमां गयां घण पाछां वाळे,–ए रीते एकनां एक म्होरां एक दिशामां रशो साथे अने बीजी दिशामां थाको साथे एकना एकज काळे शेतरंज खेले,– ए बनाव पाटलिपुत्र हिमालय अने रैवताचळ वच्चेनूं अंतर ध्यानमां राखतां संभवनी मर्यादाने ओळंगी जाय छे.

१०१ जुओ मारुं संस्कृत मुद्राराक्षस (ed. 3.), Introduction.

१०२ जुओ हर्षचरितना प्रस्तावक श्लोकमांनोः 'श्लेषप्रायमुदीच्येषु प्रतीच्येष्वर्थमात्रकम् । उत्प्रेक्षा दाक्षिणात्येषु गौडेष्वक्षरडम्बरः ॥' ए श्लोक.

१०३ जुओ मारुं मुद्राराक्षस (ed. 3) १।१९८६–८९।, ११९३३–३६।, ४।३१–६।, इ.

१०४ जुओ मुद्राराक्षस (ed. 3) ३।७–९।, ४।१६।, ५।१०। इ.

२६ मुद्राराक्षस नाटकमां सात्वती अने आरभटी वृत्तिनूं प्राधान्य छे[१०५]. ए बे वृत्तिने अनुकूळ शार्दूलविक्रीडित अने स्रग्धरा वृत्त छे. विशाखदत्ते संस्कृतमां ए बे रूपबंधना प्रधानपणे करेला प्रयोगथी छंदोविद्या विशे पोतानी मर्मज्ञता प्रकाशित करी छे[१०६]. वळी तेणे मृतप्राय सुवदना छंदने आरभटीना अवपात अंगना निरूपणमां जीवाड्यो छे. उपरांत आख्यानिक अनुष्टुभ्नो पण तेणे विवेकसर ठीक ठीक उपयोग कर्यो छे. प्राकृतमां अर्धसन अपरवक्त्रथी आगळ वधी, पंदर रूपनो सम छंद जे मालिनी, ते पण तेणे योज्यो छे; अने लोकवृत्तिने पोषी ए मालिनीमां अंत्य यमकनी रचना पण दाखल करी छे. प्राकृतमां गाथा किंवा आर्या छंद ज प्रधान पदे रह्यो छे. मुद्राराक्षसमां एके नवतर छंदनी योजना छे नहि[१०७].

२७ दृश्यबंधमां मुद्राराक्षस पछी आपणूं लक्ष लागट्ं ज प्रियदर्शना, नागानन्द अने रत्नावली तरफ खेंचाय छे. ए त्रण प्रयोज्य कृतिओनो कर्ता चक्रवर्तिकवि हर्ष छे. मध्यकालीन भारतनो ए छेल्लो सार्वभौम राजा छे. एणे इ. स. ६०६ थी इ. स. ६४७ सूधी भरतखंडनूं आधिपत्य भोगव्यूं हतूं. सोनपतनी राजमुद्रानो आ हर्षवर्धन, ते ज दामोदरगुप्तना कुट्टनीमतनो अनंगहर्ष[१०८] अने मैसुरना वीरगळनो शीलादित्य[१०९]. एना

१०५ जुओ मु. रा. (ed. 3), Appendix B, वृत्त्योरङ्गानि.

१०६ विशाखदत्त विशे वधारे माहीती सारू जुओ मु. रा. (ed. 3), Introduction.

१०७ जुओ मु. रा. (ed. 3), Appendix A, Metrical Table.

१०८ साधारण रीते आ नाटिका प्रियदर्शिका संज्ञाथी जाणीती छे. परंतु तपास करतां तेनूं असल नाम प्रियदर्शना नीकळे छे. ते कारणथी तेनो में प्रियदर्शना नामथी निर्देश कर्यो छे. माहीती माटे जुओ विप्ययननी कन्यका (आ. ३), उपोद्घात, पृ. ६४ अने ते उपरनी टीप्पणी.

१०९ जुओ विप्ययननी कन्यका (आ. ३), उपोद्घात, पृ. ६१-६२ अने ते उपरनी टिप्पणी २,३.

राजकीय, धार्मिक, अने सारस्वत जीवननी त्रिरंगी लांबी कथा मैं अन्यत्र[११०] आपी छे. अहीं तो एना त्रण प्रयोगबंध विशे कंइक कहेवा मागुं छुं. ए त्रणेनूं संविधान विवेचकनी दृष्टिए मध्यम पंक्तिनूं छे. **प्रियदर्शना**मां विषपाननो, **नागानन्द**मां जीमूतवाहनना आत्मोत्सर्गनो अने **रत्नावली**मां इंद्रजालनो प्रसंग, ए त्रणे चोके प्रेक्षकने रसमां लीन करनारा दृश्यो छे, तथापि कहेवूं पडे छे के पहेली अने त्रीजी कृतिना आरंभे संविधाननी कूंची रूपे जे विष्कंभक योज्यो छे, तेनो पछीना अंक साथे संबंध एकाएक वरतने माटे तूटी जाय छे अने ए अद्धर झूलतो, तार अद्धर ज रहे छे,–एटले सूधी के ते तारने चोथा अंकमां बीजा तार साथे जोडी देवामां आव्यो न होत, तो तेनूं भान पण कदाचित् आपणा मगजमांथी लुप्त थयूं होत. बेउ नाटिकानो आखो ए पहेलो अंक शेलडीनी टोलती चमरीना जेवो निरर्थक बाहुल्यवाळो छे. **नागानन्द** नाटकमां तो, एक उपर एक एम त्रण थर जुदा छे; पहेलो पितृभक्तिनो, जेमां नायक **रामायण**मांना श्रवणनी स्मृति आपे छे; बीजो नायिका प्रत्येनी आसक्तिनो, जेमां युगल विवाहनी ग्रंथिथी जोडाय छे; अने त्रीजो जीवरक्षानो, जेमां पितृसेवानो अने सप्तपदीनो भंग व्होरी नायक इतरनो देह बचाववा पोतानो देह समर्पे छे. नाटककार प्रेक्षकने एक थरथी बीजा थरे अने बीजा थरथी त्रीजा थरे कळाना आकर्षणे दोरी जाय छे. आ रीते छूटा मणका दोरे चडी गंठाया जेवूं थाय छे खरूं, पण तेमां शाळे चडेला पाटना जुदा जुदा तारना वणाटनी खूबी खोवाय छे. संविधाननी सुश्लिष्टता वस्तुनी सुश्लिष्टता मागी ले छे, ते एमां नथी. हर्षे तो प्रस्तावो परस्पर सांकळी लेई संविधाननी रचना योजवानो नवो प्रयोग आदर्यो छे. एणे पाडेलो मार्ग एना पछीना कोइ नाटककारे लीधेलो जणातो नथी. नवीन घटनाना आ संविधानने मुकाबले हर्षना प्रयोगबंधोनो पद्यभाग चडियातो छे. छंदनी

११० जुओ The Annual Report of the Mysore Archoeological Department for the year 1923, p. 83. वीरशव काव्यमापानो बोल छे. तेनो अर्थ मार्मिक थाय छे.

१११ जुओ विंध्यवननी कन्यका (आ. ३), उपोद्घात, पृ २–७५

वरणीमां नाटककार पुरोयायी कविने अनुसरे छे. तेम करतां ज्यां ज्यां ए मोटा छंद योजे छे, त्यां त्यां ए छंदोमां ते मुक्तकनी खूबी आणवा चूकतो नथी. संस्कृतमां तेणे एके नवो छंद सरज्यो नथी, पण प्राकृतमां एणे द्विपदीखण्डनो उपयोग कर्यो छे. ते नवतर छे, एटले घणाखराने भूलावामां पण नांखे छे. रत्नावली नाटिकाना पहेला अंकमां आ विशिष्ट प्राकृत पद्यबंधनी प्रथम झांखी थाय छे. ए छंद अवलम्बक अने गीतिथी बनेलो मिश्र मात्राबंध छे. द्विपदीखण्ड संज्ञा अजाणी होई तेना मिश्र बंधारणनो ख्याल न आव्याथी एकेएक छापेली प्रतमां ए मिश्र छंदनी त्रण शुद्ध छंद तरीके गणना करवामां आवी छे. हेमाचार्ये 'गीत्यन्तावलम्बको द्विपदीखण्डम्' एवूं लक्षण आपी एना मिश्र बंधारणनूं गर्भित रीते सूचन कर्यु छे[१११]. अवलम्बक चार सम चरणनो मात्राबंध छे. तेना चरणनूं माप वाबा वाबा वाह्वा छे. गीतिनूं लक्षण तो संस्कृतगूजराती पिंगळोमां आपेलूं छे. बे अवलम्बक पछी एक गीति, ए रीते त्रण छंदनूं जूथ ते द्विपदीखण्ड. जूथना घटकावयवोने सांकळी लेवाने कुंडळीनो प्रयोग प्रस्तुत मिश्र मात्राबंधमां कर्यो नथी, ते उपरथी द्विपदीखण्ड मिश्र छंदोमां घणो जूनो होवो संभवे छे. अवलम्बक अने गीति बंने उत्पत्तिए प्राकृत पद्यरचनाना छंद छे. भरतनाट्यशास्त्र तरफ दृष्टि करतां द्विपदीखण्डना सर्जननो पूर्व अवधि त्रीजा शतक पछी मूकवो पडे छे. रत्नावलीमां एना प्रयोगने आधारे सातमा शतकनूं पूर्वार्ध ते एनो उत्तर अवधि ठरे छे. हर्षे द्विपदीखण्ड योज्यो के प्रयोज्यो, तेनो निर्णय करवानूं कांइ साधन नथी. पण मोटे भागे तेणे पूर्वप्रयुक्त छंदो ज कामे लीधा छे, तेथी संभवे छे के द्विपदीखण्ड तेना पहेलां कोइए वापरेलो हशे. जूनी गूजरातीमां तलहारु, धवळ वगेरे अने चालु गूजरातीमां छप्पय, कुंडळियो वगेरे मिश्र मात्राबंध छे, तेवो द्विपदीखण्ड पण प्राकृतनो मिश्र मात्राबंध छे[११२].

---

१११ जुओ हेमाचार्यकृत छन्दोनुशासनना अ ४ने छेडे शीर्षकप्रकरण.

११२ तलहारु अने धवलु बाबत जुओ 'इसवो सनना पंदरमा

२८ हर्षनां नाटकनाटिकांनी त्रिपुटी पछी भवभूतिनां **मालतीमाधव महावीरचरित** अने **उत्तररामचरित** विवेचननो विषय बने छे. ए नाटककारना देशकाळ सद्गत डॉ. रामकृष्ण गोपाळ भांडारकरे निर्धार्या छे[११३]; अने एनी उक्त कृतिओ सारी रीते जाणीती छे. मात्र पद्यबंध विचारवानो, तेनी तपासमां ऊतरता पहेलां एक बाबत ध्यानमां राखवी घटे छे. **महावीरचरित** अने **उत्तररामचरित** ए बे नाटकोनूं वस्तु कविए **रामायण** उपरथी योज्यूं छे. तेनी साथे, **रामायणनो** प्रधान व्यापक जे आख्यानिक **अनुष्टुभ्**, तेने एणे रामचरितना आ बे नाटकनो प्रधान छंद बनाव्यो छे. सात सात अंकना **महावीरचरित** अने **उत्तररामचरितमां** अनुक्रमे अठ्यासी अने एकसो अठ्ठावीस आख्यानिक **अनुष्टुभ्** छे. ए मोटा आंकडाओनी सरखामणीमां दस अंकना **मालतीमाधवमां** मात्र बार ज **अनुष्टुभ्** मळी आवे छे. विशिष्ट संजोगमां वधारे वपरायला ए छंदने बाजू पर राखतां उक्त त्रण कृतिमां उत्तरोत्तर चडता अने ऊतरता प्रमाणमां वपरायला छंद त्रण छे, **वसंततिलका, मालिनी** अने **शिखरिणी**[११४]. पहेलानी संख्या क्रमशः घटे छे, अने बीजानीजानी वधे छे. आ क्रमिक वधघट उपरथी अटकळ बंधाय छे के प्रथम **मालतीमाधव**, पछी **महावीरचरित** अने छेवट **उत्तररामचरित** रचायूं हशे. क्षेमेन्द्र **शिखरिणी** वृत्त प्रत्ये भवभूतिना आदरनी नोंध ले छे[११५]. जरा

शतकनां प्राचीन गुर्जर काव्य'नो उपोद्घात, पृ. ३८, अने तेना उपरनी टिप्पणी.

११३ जुओ मालतीमाधव (B. S. S.), by Dr. R. G. Bhandarkar, Preface.

११४ जुओ पराक्रमनी प्रसादी (आ. ६), उपोद्घात, पृ ५०-५१, परिशिष्ट २.

११५ जुओ लघु काव्यमाला । गुच्छक २ । सुवृत्ततिलक । ३।३३। भवभूते शिखरिणी निरर्गलतरङ्गिणी । रुचिरा घनसदर्भे या मयूरीव नृत्यति ॥.

शीणवटथी गणतरी करतां जणाशे के ओगणीस अने एकवीस अक्षरना रूपबंध करतां सत्तर अक्षरना छंद जुमले भवभूतिने वधारे प्रिय छे. अत्यधि वर्ग माघना समयथी आदर पामी चूक्यो हतो. शिशुपालवधमां काव्यकारे ए वर्गना हरिणी, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, पृथ्वी, अतिशायिनी, अने वंशपत्रपतित छंद एकदेशी तरीके वापर्या छे. भवभूतिए तेमांना पहेला चारनो अने नवामां नर्दटकनो उपयोग कर्यो छे. वंशपत्रपतितना आरंभना गुरु बदल बे लघु अने अगियारमा तथा बारमा रूपना बे लघु बदल एक गुरुनी योजनाथी आ छंद ऊपजी आवे छे. उक्त रूपांतरथी एकंदर उच्चारणामां कांइ फेर पडतो नथी. अनावृत्त संधिना वंशपत्रपतित उपरथी नीपजता नर्दटकनो उत्तर भाग ललगा ललगा ललगा एम आवृत्त संधिनो बनेलो छे. वृत्तरत्नाकरमां आ छंदना चरणना सातमा अक्षरे मध्य यति कही छे. परंतु मालतीमाधवमांना बे नर्दटक पैकी एकेमां ए मध्य यति पळायली जणाती नथी. वळी सुवृत्ततिलक पण नर्दटकने यतिरहित लेखवे छे[११६]. विशेषमां भरतनाट्यशास्त्रना पंदरमा अध्यायमां ए रूपबंध नोंध्यो नथी; परंतु बृहत्संहिताना अध्याय १०३ मां आपेलो छे. तेथी ए पांचमा छट्ठा शतकमां घडायो लागे छे. रघुवंशना निशा वृत्तनी पेठे मालतीमाधवना आ छंदना चरणमां अनावृत्त अने आवृत्त संधिनो मनोहर योग छे. प्रस्तुत प्रकरणना पांचमा अंकमां संग्राम दण्डक वापरेलो छे. चण्डवृष्टिप्रपात दण्डकना बे नगण अने सात रगणना चरणमां रगणात्मक संधिनो यथेच्छ वधारो करवाथी जे अनेक दण्डक नीपजे छे, तेमांनो ते एक दण्डक छे. एमां नवीनतानो छांटो पण छे नहि. भवभूतिना प्रयोगबंधमां पद्यरचनाए खास नोंधवा जेवी कांइ प्रगति करी जणाती नथी.

२९ भवभूति पछीना शतकोमां नवा रचायला संस्कृत श्रव्यबंध अने

११६ जुओ काव्यमालागुच्छ २। सुवृत्ततिलक।१।३१।. आ अनुष्टुभ्मा तेम ज आगळ पण वृत्तनूं नाम नर्कुट आप्यूं छे. बीजूं नाम मर्कट पण मळे छे; जुओ रणपिंगळ, भाग २, पृ २६५: ए तो भ्रष्ट ज लागे छे.

દશ્યબંધની સંખ્યા વહોળી છે. પરંતુ જેમાં પદ્યરચનાની ઉત્ક્રાંતિનું દર્શન થાય છે એવી તો કૃતિ એક જ છે. નારાયણ, કુમારદાસ, રત્નાકર, રાજશેખર, મુરારિ, ક્ષેમેન્દ્ર, બિલ્હણ, શ્રીહર્ષ ઇત્યાદિ અનેક સાહિત્યકાર થયા છે. તથાપિ પદ્યરચનાના વિવેચકની દૃષ્ટિ, **વેણીસંહાર, જાનકીહરણ, હરવિજય, બાલરામાયણ, અનર્ઘરાઘવ વિક્રમાઙ્કદેવચરિત, બોધિસત્ત્વાવદાન-કલ્પલતા, નૈષધચરિત** ઇત્યાદિ કાવ્યનાટકને મૂકીને જયદેવના **ગીતગોવિન્દ** તરફ આકર્ષાય છે; કેમકે છંદ અને પ્રબંધની કલામય ગૂંથણીનો પહેલો અને છેલ્લો રમણીય આદર્શ સંસ્કૃતમાં એ એક જ છે. પરિમાણમાં ન્હાનું છતાં તે સર્વાંગસંપૂર્ણ કાવ્ય છે. યુરોપના સાહિત્યની પરિભાષામાં જેને ઊર્મિકાવ્ય (lyric) કહે છે, તે વર્ગમાં એ ગોઠવાય. મેઘદૂતનાં જેમ અનેક અનુકરણ થયાં છે, તેમ **ગીતગોવિન્દ**નાં પણ થયેલાં મળી આવે છે. પરંતુ એક પણ અનુકૃતિ ઉક્ત દૂતકાવ્યની કે ગીતકાવ્યની કૃતિને પ્હોંચી વળવા સમર્થ નીવડી નથી. જયદેવે એ કાવ્યની રચનામાં જે માર્ગ લીધો છે, તે સાહિત્યની સૃષ્ટિમાં નૂતન અને મનોમોહક છે. સંસ્કૃત આલંકારિકોના સંકેત પ્રમાણે **ગીતગોવિન્દ** શ્રવ્યબંધ છે. તેમ છતાં તેની ઘટના દશ્યબંધની રીતની છે. **ભરતનાટ્યશાસ્ત્ર**ના નિયમને અનુસરી સંક્ષેપ્ય વસ્તુનો સંક્ષેપ, સૂચ્ય વસ્તુનું સૂચન અને ત્યાજ્ય વસ્તુનો ત્યાગ કરી તે આધિકારિક વસ્તુનો રસમય સાક્ષાત્કાર કરાવે છે. એનું સંવિધાન પણ પંચ સંધિનો ક્રમ પાળે છે[११७], જે વિધાન **સરસ્વતી-કણ્ઠાભરણ**ના કર્તાને કાવ્યમાં પણ અભિમત છે. સર્ગની સમાપ્તિ અંકની સમાપ્તિની પેઠે સ્થળનું કે પ્રસ્તાવનું બદલાવું સૂચવે છે. એક સર્ગમાંથી બીજા સર્ગમાં પ્રવેશ વખતે વખતે અંકાવતારનું અને અંકાસ્યનું સ્મરણ કરાવે છે. વસ્તુનું ઉદ્ઘાટન દશ્યકાવ્યની પદ્ધતિએ બહુધા પાત્રમુખે કર્યું છે. આથી કરીને, પાત્રો જ જાણે આપણા આગળ **ગીતગોવિન્દ** ભજવી બતાવતા હોય,

११७ સ્થૂલ દૃષ્ટિએ સર્ગ १-२ મા મુખ, સર્ગ ३ મા પ્રતિમુખ, સર્ગ ४-६ મા ગર્ભ, સર્ગ ७-१० મા અવમર્શ કે વિમર્શ અને સર્ગ ११-१२ મા નિર્વહણ કે ઉપસંહાર સંધિ છે.

एवो भास थाय छे. ग्रीक नाटकनी संगीति (chorus)नी पेठे वच्चे वच्चे उक्तिना अंकोडा जोडवा कवि एकाद श्लोक ललकारे छे, ते आ नाटककल्प काव्यनी चूलिका बने छे. प्रस्तुत काव्यनी आवी दृश्यप्राय रचनाथी आकर्षाई कालीकतना एक राजाए कृष्णाट्टम एवा नामे एक प्रयोगबंध योज्यो छे[११८].

३० जयदेव गौड कवि छे, एटले गौडी रीतिमां ते लखे ए साहजिक छे. परंतु **गीतगोविन्द**नी गौडी ते गौडोना अक्षरडंबरवाळी कर्कश गौडी[११९] नथी. ओजस् अने कांति गुणमां माधुर्य अने सौकुमार्य मेळवी ए आरभटी वृत्तिनी सहचरीने कविए कैशिकीनी अनुचरी करवा सबळ अने बहु भागे सफळ प्रयत्न कर्यो छे. तेम छतां ए क्वचित् प्रबंधकाव्यनो हृदयहारी प्रसाद समासनी जाळथी डोळाई जाय छे अने तेना मनोरंजक माधुर्यमां कठोर वर्णनो योग क्वचित् खूंचे छे. मनने मूझवनारा दुर्घट शब्दार्थचित्रना त्रासना मुकाबले समास तथा अनुप्रासनो त्रास अने श्लेषनो क्लेश कंइक सह्य छे. जोके श्रव्यबंधमां एकाक्षर, लोमप्रतिलोम, अनेकार्थ, सर्वतोभद्र, गजपदपाठ, मुरजबंध आदि चित्रकाव्य विहित छे, तथापि **गीतगोविन्द** तेनाथी मुक्त छे. जयदेव ए वर्णरचनाना वमळमां न तणायो ते सद्भाग्य. **पांचालीप्रसन्नाख्यान**, **तपतीआख्यान**, आदि नाटकमां अने **द्रौपदीहरण** आदि काव्यमां एवां चित्रकाव्यो मूकी प्रेमानंदे जे गंभीर भूल करी छे, ते जयदेवे नथी करी; ए तेने बहु मानप्रद छे. **गीतगोविन्द** एकंदरे एक सुंदर काव्य छे. जयदेवने रघुकारनी पंक्तिमां मूकी शकाय नहि. तथापि बीजा वर्गना कविओमां ते अग्रस्थानने योग्य छे. महाराज लक्ष्मणसेननी सभाना रत्नना

११८ जुओ The Quarterly Journal of the Mythical Society Vol. XII, No. 3, p. 285. कन्नड अट्टम शब्द नाट्यना अर्थनो छे.

११९ जुओ आ व्याख्यानमांनी टिप्पणी १०२ मांना श्लोकनुं छेलुं चरण, गौडेष्वक्षरडम्बरः ।.

वेरखानो मेर तो जयदेव ज. गौडदेशनो 'कविराजराज' तो गीतगोविन्दकार ज.

२१ बीजां पूर्व काव्यथी **गीतगोविन्द** जे बाबतमां जुदुं पडे छे ते तेनी पद्यरचना छे. पूर्व काव्यो छंदोबद्ध छे, त्यारे **गीतगोविन्द** छंद अने प्रबंधनुं बनेलुं छे. ए काव्यमां प्राधान्य धरावतो भाग कविए प्रबंधमां रच्यो छे; छंद तो पूर्वे आवी प्रबंधनी उत्थानिकानुं काम करे छे, अथवा तो पूठे आवी वक्तव्य चाले छे. प्रबंध सामान्य रीते अष्टपदीने नामे ओळखाय छे; ते संगीतशास्त्र अनुसार विविध तालथी नाना प्रकारना रागमां गवाय छे[१२०]. आथी करीने, काव्यने जे **गीतगोविन्द** नाम आपेलुं छे, ते सार्थक बने छे. पाठ्य अने गेयनी आ प्रकारनी मिलावट संस्कृत साहित्यमां विरल छे. एना छंदोविभागमां जयदेवे कोइ नवा छंदनो उपयोग कर्यो नथी. परंतु जे प्रचलित छंद तेणे एमां वापर्या छे, ते यथास्थान औचित्यपुरःसर पसंद करेला छे. ज्यां आरंभे के मध्यमां वस्तुनो मात्र संक्षेपमां निर्देश करवानो होय छे, त्यां टूंका **अनुष्टुभ्** अने **आर्या** छंद ज ए योजे छे[१२१]; अने ज्यां परिस्थितिनो पूरतो भास उपजाववानो होय छे. त्यां ते **मालिनी**, **शिखरिणी**, **हरिणा**, अने **पुष्पिताग्रा**नो उपयोग करे छे. एक ज श्लोकमां मुक्तक जेवुं सुरेख संपूर्ण चित्र आपवानुं होय छे, त्यां तो मोटे भागे **शार्दूलविक्रीडित** अने कचित् **स्रग्धरा** वृत्त ज ते योजे छे. गुर्जरसाहित्यमां

---

१२० कुंभ भूपति **गीतगोविन्द** उपरनी **रसिकप्रिया** टीकामां ओगणीसमा प्रबंधने रागराजि नाम आपे छे; केमके ते विविध रागमां गवाय छे. वळी बावीसमो प्रबंध विविध तालथी सत्तर रागमां गाई शकाय छे, ते कारणथी ए तेनुं रागश्रेणि नाम राखे छे. त्यमवळी बीसमो अने चोवीसमो ए बे प्रबंध विविध तालथी गवाय छे, तेथी ए तेमने तालराजि अने तालश्रेणि नामथी ओळखावे छे.

१२१ जुओ **अनुष्टुभ्**ना सार्थक प्रयोग माटे सर्ग ३, ४ तथा ११; अने **आर्या**ना तेवा प्रयोग माटे सर्ग ६, ७, ९ तथा १२.

आवो विवेक श्रीधरना [१२२]रणमल्लछंदमां के कांतना वसंतविजय आदि खंडकाव्यमां आस्वादगोचर थाय छे.

३२ उपर कहेला छंदना सूक्ष्म विवेक माटे जयदेव जाणीतो नथी. एनी असाधारण ख्याति तो एना प्रबंधने लीधे छे. तेनी गेय पद्यरचनामां पूर्व संस्कृत साहित्यने अजाण्या एक नवा ज संवादनूं दर्शन थाय छे. तेनूं धोरण कालमान किंवा लय छे; ते कारणथी हूं तेने लयात्मक पद्यरचना कहूं छूं. आपणा साहित्यमां ए नवतर पद्यरचनानी बे मोटी शाखा फंटाई छे, छंदनी अने प्रबंधनी. पहेली शाखाना परिचय माटे सुत्तकालना पद्यबंध तरफ दृष्टि फेंकवानी जरूर छे. ए काळना प्राकृत साहित्यना जे जे वर्णबंध रूपबंध अने मात्राबंध विक्रियानी शुद्धि मागी ले छे, ते सर्वे लयात्मक छंदना दृष्टांत छे. छंदमां के प्रबंधमां वर्ण रूप के मात्रा न्यूनाधिक होय, तेने मेळमां आणनार पाठग्राह्य के गानग्राह्य मान ते लय. सुत्तकालना व्याख्यानमांनां पूर्वपरिचित उदाहरण मगजमां ऊतारवाथी लयात्मक छंदनूं स्वरूप समजाशे. जेमके

जे केइ तसा पाणा चिट्ठन्ति अदु थावरा।
परियाए अत्थि से अञ्जू जेण ते तस थावरा ॥

सू.।१।१।४।८।

आ श्लोकना पहेला चरणमां एक अक्षर घटे छे अने बीजामां एक वधे छे. ए घटवध अधोरेखांकित सानूं सया एम पृथक्करण कर्याथी अने परिनूं पर् एम एकीकरण कर्याथी दूर थई उक्त श्लोक मापमां आवे छे. वळी

निसम्म सो भिक्खु समीहियट्ठं
परिभाणवं होइ विसारए य।

१२२ जुओ इसवी सनना पदरमा शतकनां प्राचीन गुर्जर काव्य, पृ. ३–५ अने ८–९.

आयाणअट्ठी वोदाणमोणं
उवेच्च मुद्धेण उवेइ मोक्खं ॥ सू.।१।१४।१७।

आमां अधोरेखांकित बे लघुनूं परि जोडकं एकीकरणथी पर् स्वरूप धारण करी एक गुरुनूं काम बजावे छे, अने एक गुरुनूं वो रूप पृथक्करणथी वउ स्वरूपमां बे लघुनो अर्थ सारे छे. ए रीते रूपनो मेळ मळी रहे छे. त्यमवळी

यावदुक्खा निरया इध वुत्ता
तत्थऽपि ताव चिरं वसितब्बं ।
तस्मा पेसलसाधुगुणेसु
वाचं मनं सततं परिरक्खे ॥ सु. नि. । २ । १० ।२२ ।

अहीं पहेला चरणनो अधोरेखांकित अक्षर तेना पछी आवनारा संयुक्ताक्षरने लीधे बे मात्रानो लेखाय, ते एक मात्रानो बोलाय छे. तेवी ज रीते चोथा चरणनो अधोरेखांकित सानुस्वार अक्षर बे मात्रानो छे, ते मेळ साधवा एक मात्रानो बोलाय छे. उदाहृत वैक्रिय छंदनो प्रचार सुत्तकाल पछी बंध पडे छे. संस्कृतमां अवैक्रिय वर्णबंधनूं अने प्राकृतमां तेवा ज मात्राबंधनूं राज्य सैकांनां सैकां चाले छे. अंते लयात्मक पद्यरचनानी प्रबंधशाखा जादुइ आंबा जेवी एकाएक फूटे छे, अने फूटे छे तेवी ज फाले छे, फूले छे, फळे छे.

२३ संस्कृतमां प्रथम प्रबंधकवि जयदेव छे. एना प्रबंधमां पांचथी अगियार सूधी कडीओ जोवामां आवे छे. पहेला त्रीजा अने दसमा प्रबंधमां अनुक्रमे अगियार, नव अने पाच कडी छे. बीजा बधा प्रबंध आठ आठ कडीना छे. प्रत्येक कडी अंत्ययमक एटले प्रासथी संकळायली बे बे पंक्तिनी बनेली होय छे. प्रबंधनी कडीओनो समन्वय ध्रुवपद एटले टेकथी सधाय छे. गीतगोविन्दमां कुल चोवीस प्रबंध छे. ते पैकी त्रेवीस मात्रात्मक लयना छे

अने एक रूपात्मक लयनो छे. संस्कृतना रूढ रूपात्मक छंदनी पेठे प्रस्तुत रूपात्मक प्रबंध पण अनावृत्त संधिनो बनेलो छे. तेनूं लक्षण स्फुट करवा ए प्रबंधनी एक कडी ध्रुवपद सहित नीचे ऊतारुं छूं.

वसति विपिनविताने त्यजति ललितं धाम।
लुठति धरणिशयने बहु विलपति तव नाम।
तव विरहे वनमाली सखि सीदति ॥ गी. गो. ।५।१।४।

छंदोविधाना संकेत अनुसार एनो स्थिर रूपात्मक लय नीचे प्रमाणे अंकाय छे.

ललल ललल गागा. ललल ललल गाल.
ललल ललल ललगा. लललल ललललल गाल.
ललललल गा. ललगा गालल गालल.

सांकेतिक पहेली बे पंक्ति कडीनी छे अने त्रीजो ध्रुवपदनी छे. एमां यतिनां स्थान पूर्णविरामना चिह्नथी दर्शाव्यां छे. यतिए यतिए ते ते खंड समाप्त थाय छे. प्रत्येक खंडना संधि भाग मूकी छूटा पाड्या छे. कडीनो पहेलो खंड त्रीजा साथे अनुप्रासथी जोडायो छे. कडीनी पंक्तिओने प्रास सांकळी ले छे. कडीना चार अने ध्रुवपदना बे मळीने कुल छ खंडनो एक अंकोडो बने छे. प्रबंधना आ अंकोडामां एक बे त्रण अने चार रूपना संधिनी परम आह्लादक गूंथणी छे.

३५ निर्दिष्ट दसमा प्रबंध सिवायना बीजा बधा प्रबंध **गीतगोविन्दमां** मात्रात्मक लयना छे. आपणी भाषाना मात्राबंध जेम आवृत्त संधिना छे, तेम संस्कृतना आ मात्राप्रबंध पण आवृत्त संधिना छे. तेमां बैजिक संधि चार छे, बावा, बाहवा, बाहबावा अने बाबाहवा. पहेलो संधि अढारमा प्रबंधमां[१२३] बीजो बीजामां[१२४] अने त्रीजो पहेलामां[१२५], कडीमां तेम ज टेकमां,

१२३ जुओ प्रबंध १–६.८,९,११,१२,१४–१८,२०,२२ अने २३.
१२४ जुओ प्रबंध १३ अने १९.
१२५ जुओ प्रबंध ७.

वपरायलो छे. एकवीसमा अने चोवीसमा प्रबंधनी कडीओमां अनुक्रमे वाहवा तथा वावानो अने तेमना टेकमां वावा तथा वावाहवानो प्रयोग छे. वावा, वाहवा तथा वाहवावा अने वावाहवा संधिना प्रयोगना सुग्राह्य दृष्टांत अगियारमो तेरमो, तथा सातमो प्रबंध अने चोवीसमा प्रबंधनो टेक अनुक्रमे पूरा पाडे छे. पहेला त्रणना टेक समेत कडीना एक एक अंकोडानूं अने चोथाना टेकनूं उदाहरण, समीक्षकनी सुगमता सारूं नीचे आपूं छूं.

(१) रतिसुखसारे गतमभिसारे मदनमनोहरवेशम् ।
न कुरु नितम्बिनि गमनविलम्बनमनुसर तं हृदयेशम्।
धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली
गोपीपीनपयोधरमर्दनचञ्चलकरयुगशाली ॥ध्रुव०॥

(२) कथितसमयेऽपि हरिरहह न ययौ वनम् ।
मम विफलमिदममलरूपमपि यौवनम् ।
यामि हा[१२६] कमिह शरणं सखीजनवचनवञ्चिता॥ध्रुव०॥

(३) मामियं चलिता विलोक्य वृतं वधूनिचयेन ।
सापराधतया मयापि न वारितातिभयेन ।
हरिहरि हतादरतया सा गता कुपितेव ॥ ध्रुव० ॥

(४) निजगाद सा यदुनन्दने क्रीडति हृदयानन्दने ॥

त्रीजा अने चोथा उदाहरणमां अधोरेखांकित वर्णनो उच्चार प्लुत कर्याथी, वाहवावा अने वावाहवा संधिमां मात्रानी जे खोट पडे छे, ते पूराय छे. प्रबंधमां नाद अने वाणीना सहकारना परिणामे प्लुत उच्चार दाखल थयो छे. एनो प्रयोग बीजां ध्रुवपदमां पण थयेलो मळी आवे छे[१२७].

---

१२६ मुद्रित पाठ हे छे रसिकप्रियामां तेनी पछी सखि अध्याहार लेई तेनां संबोधनवाचक अव्यय तरीके अर्थ कर्यो छे. पण नादयुगमां आ वखते राधा पासे कोइ पण सखी हती नहि; एटले संबोधननो अवकाश नथी. ए कारणथी हे बदल उद्वेगवाचक हा पाठ में कल्पी लीधो छे.

१२७ जुओ प्रबंध ६, ९, १४, १७ वगेरेनां ध्रुवपद.

३५ प्रबंधनूं बंधारण लयात्मक होवाथी तेमां एककलनो द्विकल स्वरूपे अने द्विकलनो एककल स्वरूपे प्रयोग कहींक कोइक नजरे पडे छे. विलसति युवतिरधिकगुणा (प्र. १४)-ए पंक्तिना बीजा चतुष्कलमां एक मात्रा खूटे छे, ते ए विधाने पूरी कराय छे. वळी श्रीजयदेवकवेरिदं कुरुते मुदं ए मङ्गलमुज्ज्वलगीतं (प्र. २)–ए पंक्तिमां, वहु मनुते ननु ते तनुसंगतं पवनचलितमपि रेणुम्। (प्र. ११)–एमां, तेम ज नयनं नलिनमिव विगलितनालम्। (प्र. ९)-ए वगेरेमां अधोरेखांकित सानुस्वार स्वर, त्यमवळी रासेरसे[१२८] सहृच्छपरा हरिणा युवतिः प्रशशंसे (प्र. ४)–ए पंक्तिमां अधोरेखांकित स्वर, ए सर्वे बेवे मात्राना छतां एकएक मात्राना बोलाय छे.

३६ गीतगोविन्दना प्रबंधमां ध्रुवपद बहुधा प्रत्येक कडीने अंते आवे छे. मात्र सोळमा अने एकवीसमा प्रबंधमां तेम न करतां कविए ध्रुवपदने कडीनी बे पंक्तिनी वच्चे मूक्यूं जणाय छे. प्रस्तुत काव्यना प्रकाशकोए तो उक्त बंने प्रबंधमां ध्रुवपद प्रत्येक कडीना छेडे ज गोठवेलूं छे. बेउनी आरंभनी कडी ध्रुवपद समेत, जेवी छापी छे तेवी, नीचे आपूं छूं.

(१६) अनिलतरलकुवलयनयनेन
तपति न सा किशलयशयनेन
सखि या रमिता वनमालिना ॥ ध्रुवम् ॥

(२१) मञ्जुतरकुञ्जतलकेलिसदने।
विलस रतिरभसहसितवदने ।
प्रविश राधे माधवसमीपमिह ॥ ध्रुवम् ॥

आ गोठवणीने जूनी हाथप्रतोनो अने जूना टीकाकारोनो टेको मळे

---

१२८ टीकाकार शवरमिश्र अने कुंभ भूपाल रासरसे पाठ आपे छे, ते भूलभरेलो छे. जुओ वेणीसंहारनूं आदिमगल. हेमाचार्यना अनेकार्थसंग्रह। १७०५। मां रासेरस बोल रासना अर्थमां आप्यो छे.

ने हो; पण ते सदन भूलभरेली छे. पहेलीमां व्याकरणदोष नडे छे अने बीजीमां पदभंग खटके छे. सोळमा प्रबंधनी कडी अने ध्रुवपदनो अन्वय विचारिये, तो जणाय छे के कडीनी उत्तर पंक्ति ते मुख्यवाक्य छे, ध्रुवपद तेना उपर आधार राखतुं उपवाक्य छे, अने कडीनी पूर्व पंक्ति ए उपवाक्य-मांना वनमालिना पदनुं विशेषण छे. मुद्रित क्रम आंखो मींचीने स्वीकारवाथी थाय छे शुं, के पहेलुं आवे छे उपवाक्यमांना वनमालिना विशेष्य साथे संबंध धरावतुं विशेषण, पछी गोठवाय छे मुख्यवाक्य, अने छेल्लुं मूकाय छे प्रस्तुत विशेष्यवाळुं उपवाक्य. आ रचना आकांक्षा संनिधि आदि स्थापित नियमनो भंग करनारी होवाथी अप्रमाण छे, निषिद्ध छे. एकाद वाक्यना अवयवोनी वच्चे गर्भवाक्यनो प्रयोग खास संजोगमां संमत छे ते खरी वात. पण उपवाक्यमांना विशेष्यने तेना विशेषणथी, वच्चे मुख्य वाक्य गोठवीने, छूटुं पाडवुं, ते तो संस्कृत जेवी वहोळी तेम ज समर्थ रूपसंपत्ति धरावनारी भाषाना पण अधिकारना बहारनी बाबत छे. आ कारणथी ध्रुवपदने हुं अंतगत नहि, पण अंतर्गत लेउं छुं,–एटले के प्रत्येक कडीनी पूर्व अने उत्तर पंक्तिनी वच्चे गोठवुं छुं. ए निर्णय प्रमाणे उदाहृत भाग नीचेना क्रममां व्यवस्थित करवो पडे छे.

अनिलतरलकुवलयनयनेन
सखि या रमिता वनमालिना
तपति न सा किशलयशयनेन ।

प्रस्तुत प्रबंधनो अवशिष्ट भाग पण आ ज रीते सुधारी लेवानो जरूर छे. आ प्रबंधना छेल्ला अंकोडाने एकवीसमा प्रबंधना छेल्ला अंकोडा साथे मेळवी जोतां ध्रुवपदना मापनी मध्यवर्ती पंक्ति एमांथी लुप्त थई गई होय एम लागे छे. ए लुप्त पंक्तिनी खाली जगाए ए ज मापनी मळती पंक्ति मूकी ए अंकोडो हुं आ प्रमाणे मापमां अने घाटमां आणुं छुं.

श्रीजयदेवरचितवचनेन
शुचिना कलिकिल्विषहारिणा
प्रविशतु हरिरपि हृदयमनेन।

हवे एकवीसमा प्रबंधनी रचना विचारिये. एनो अंतिम अंकोडो नीचे प्रमाणे छे.

विहितपद्मावतीसुखसमाजे
कुरु मुरारे मङ्गलशतानि
भणति जयदेवकविराजराजे।

आमां पहेली अने त्रीजी पंक्ति सरखा मापनी छे अने ते प्रासथी संकळायली छे. ए बेनाथी ओछा मापनी पंक्तिने कविए उक्त बे पंक्तिनी वच्चे गोठवी छे. एना मापे मापथी अने एनी व्यवस्थाए व्यवस्थाथी कविए आखो ए प्रबंध रच्यो होवो जोईए. ए आत्मनिर्णयथी हूं एनी कोटिनो प्रथम उदाहृत अंकोडो नीचे मुजब मापमां अने मेळमां आणूं छूं.

मञ्जुतरकुञ्जतलकेलिसदने
प्रविश राधे माधवसमीपं
इह विलस रतिरभसहसितवदने

एना पछीना बीजा छ अंकोडा पण अंतर्गत ध्रुवपदथी आ प्रमाणे ज हूं गोठवी लेऊं छूं. प्रस्तुत मध्यगत ध्रुवपदनो अधोरेखांकित सानुस्वार अक्षर एक मात्रानो लेखवानो छे.

३७ पद्यरचनानी उत्क्रांतिना वृत्तान्तमां अत्रोक्त लयात्मक रचनाना प्रवर्तक तरीके जयदेवनूं स्थान गौरवभर्यूं अने महत्त्वयुक्त छे [१२९]. पद्यसरितानी ए चोथी धारा छे. एना लयबद्ध छंदोए अने एनी देशीओए

१२९ जुओ विशेष माहीती सारुं मारा गीतगोविन्दनो उपोद्घात; जुओ वळी जैनसंशोधक पु. १. अं. १ मां नो 'पवनदूतनो कर्ता धोयी' ए मथाळानो मारो लेख.

संस्कृत साथे पारंपरिक संबंध धरावनारनी उत्तर काळनी देशभाषाओना साहित्यने जे खीलव्यूं छे, तेनो विस्तार नांखी-नजर-न-प्होचे-एवो विपुल छे. जलदेहा सरस्वतीनुं मुख अंग्रजी पासेना कोटेश्वरना न्हानकडा कुंडमां छे अने लयदेहा सरस्वतीनुं मुख न्हानकडा **गीतगोविन्द** काव्यमां छे. एनां झरणोनो उद्गम उपशाणनी प्हाडीमांथी शोधी काढवानुं विकट कार्य भविष्यना नवजवान न-थाकनारा शिखरखेडु प्रवासीने माटे रहेवा देई मारां थाकेलां पगलां प्राकृत अने अपभ्रंशनी पद्यभूमि तरफ वाळूं छुं.

३८ द्वैभाषिक काळनी प्राकृत पद्यरचना संस्कृत नाटकोमां अने प्राकृत मुक्तकना संग्रहमां उपलब्ध छे तेमां, शर्य्यंभवसूरिना समयनो मात्राबंध जे **आर्या** किंवा **गाथा**, तेनो मुख्यत्वे करीने उपयोग थयेलो छे. उपरांत भासे आख्यानकालथी रूढ थयेला त्रैष्टुभी **उपजाति** तथा **वंशस्थ**, अने आख्यानकाल तथा सुत्तकालना गाळामां प्रगटी प्रचार पामेलो **वसन्ततिलका**, ए रूपबंध संस्कृतमांथी प्राकृतमां उतार्या छे; तेम ज सुत्तकालनो मात्रा तथा रूपनी मिश्र घटनानो पुराणो **वैतालीय** पण तेणे एक वार वापर्यो छे. वळी **रघुकारे**, संस्कृतनो अर्धसम रूपबंध जे **अपरवक्त्र**, ते प्राकृतमां प्रयोज्यो छे. ए नाटककारनो बाकीनो प्राकृत पद्यभाग **आर्या**मां छे. **शाकुन्तल**मां नटीना गायननुं अने शकुंतलानो प्रेमपत्रिकानुं पद्य **गीति**मां उपलब्ध छे. परंतु रघुकारना समयमां ए मात्रावंधना अस्तित्व विशे मने गंभीर शंका रहे छे. **गीति** शब्द मात्राछंदना विशेषनाम तरीके जाणीतो होय, तो पांचमा अंकना आरंभे 'अहो रागपरिवाहिनी गीतिः।' आदि वाक्योमां 'गायननी चीज' अथवा 'छंद'नी सामान्य संज्ञा तरीके कवि ते वापरे नहि. प्रकरण अने गीति शब्द इसवी सनना आरंभनी आसपासनां सैकांमां पारिभाषिक अर्थमां रूढ थया[१३०] न हता. प्राकृत साहित्यने उंचे-

१३० प्रकरण बोलवा पारिभाषिक प्रयोग बाबत जुओ चालु व्याख्याननो प्रस्ताव ८

जन आपनारा सातवाहनोना राज्यकाळमां आर्या किंवा गाथा छंद महाराष्ट्रमां बहु ज लोकप्रिय थई पड्यो हतो; अने ते मात्राबंधमां करोडो मुक्तको रचाया हता. तेनी बीजी अने त्रीजी पेढीए गीति अने आर्यागीति छंद थया. त्रीजा शतकना भरतनाट्यशास्त्रमां आर्या अने आर्यागीतिनां लक्षण आपेलां छे. आ बे मात्राबंधनी वचमां गोठवाती गीतिनो प्रयोग शाकुन्तलमां संभवित लागतो नथी. ते कारणथी प्रस्तुत शंकास्पद गीतिओने नीचे मुजब आर्यारूपे वांचवा मारूं मन प्रेराय छे.

ईसीसि चुम्बिआइं भमरेहि सुउमारकेसरसिहाइं।
दअमाणा पमदा ओदंसेन्ति सिरीसकुसुमाइं[१३१] **॥**
तुज्झ ण जाणे हिअअं मम उण कामो दिवा अ णत्तं अ।
अघिणो तवइ बलीअं तइ वुत्तमणोरहं अङ्गं[१३२] **॥**

---

१३१ मुद्रित प्रतोमां 'ओदंसअन्ति दअमाणा पमदाओ सिरीसकुसुमाइं' एवो पाठ छे. परंतु ओदसअन्ति तो कालिदासना समय पहेलानूं रूप छे. शाकुन्तल नाटक रचायूं अने भजवायूं हशे, त्यारे तो ओदंसेन्ति रूप वपरातूं हशे. सबब नाटककारे पण नटीना मुखमां ओदंसेन्ति रूप मूकयूं होवं संभवे छे. वळी 'पमदाओ' अने 'पमदा' बन्ने प्रथमाना बहुवचननां रूप छे, एटलेके एकने बदले बीजूं पण शक्य छे. ए बे बात ध्यानमां राखी गाथाने अनुकूळ आवतो कल्पित पाठ में उपर प्रमाणे गोठव्यो छे.

१३२ मुद्रित प्रतोमां 'तुइ वुत्तमणोरहाइं अङ्गाइं' एवो बहुवचनांत पाठ छे. परंतु मनोरथ बांधवा ए, अंतरिंद्रिय जे मन, तेनो धर्म छ, नहि के कान नाक आदि बहिरिंद्रियनो. अर्थात् अहीं मन ज अभिप्रेत होई एकवचननो प्रयोग इष्ट छे. ए निर्णय स्वीकारतां अने असलमां मूकतां पंक्तिओ आपोआप गीतिनी मटी आर्यानी बनी जाय छे. उपरात रत्ति बदल में णत्तं (सं. नक्तं) नो प्रयोग कर्यो छे, ते तो दिवा अव्ययने जवाब आपतो अव्यय मूकवाना हेतुथी कर्यो छे. वळी शकुन्तला राजानूं हृदय जाणती नथी, एटले ते एना उपर निर्घृणतानो आरोप मूके नहि; एवी समजथी में 'कामो'ना विशेषण तरीके नवो 'अघिणो' (सं. अघृणः) पाठ योज्यो छे.

उत्पत्तिकाळे आर्याना। बार, अढार, बार ने पंदर, एवा चार मात्राखंड पडता हता; अर्थात् बारमी मात्राए यति आवती हती. वळी ए काळे मात्रागणनुं धोरण। स्थपायुं न हतुं; एटले अमुक स्थळे अमुक ज मात्रागण। आववो जोईए एवुं बंधन पण न हतुं. भास। अने कालिदासना समयमां स्थिति जरा बदलाय छे. बारमी मात्रा पछी यतिनो नियम शिथिल पडे।छे; अने ह्रस्व बृहद् तथा ह्रस्वथी तेम ज चार ह्रस्वथी थता चतुष्कलना अने वळी केवळ ह्रस्वथी थता एककलना , प्रयोगना नवा नियम सरजाय छे. ते साथे पथ्या विपुला अने चपलानो विवेक प्रगटे छे. उपर आपेली नटीना मुखनी तथा शकुंतलाना हाथनी आर्याओ अनुक्रमे विपुला तथा पथ्या छे.

२९ रघुकारना मालविकाग्निमित्रना बीजा अंकमां एक समचतुष्पद मात्राबंध आप्यो छे. मालविका तेनो आंगिक अभिनय करी बतावे छे. ए मुक्तक शर्मिष्ठा नामे कवयित्रीनी कृति छे, रघुकार छलितकना प्रयोगने अंगे एनुं अवतरण आपे छे. ते उपरथी अनुमान थाय छे, के शर्मिष्ठा ए नवा नाटककारना समयमां सारी ख्याति धरावती हशे. ए कवयित्रीनी बीजी कोइ कृति जाणवामां नथी. एनो ऊहारो नीचे आपुं छुं.

दुल्लहो पिओ तस्सिं भव हिअअ णिरासं
अम्हो अपङ्गओ मे फुरदि किंपि वामो।
एसो सो चिरदिट्ठो कहं पणइदव्वो ?
णाह मं पराहीणं तइ गणअ सतिण्हं ॥ [१३३]

प्रस्तुत मात्राबंधनुं नाम न जड्याथी तेने हुं कल्पित शर्मिष्ठा संज्ञाथी ओळखावुं छुं. आगळ सेतुबन्धनी पद्यरचनाना विवेचनमां विलम्बितगलितक छंदनो निर्देश करवामां आवशे, तेनुं उक्त शर्मिष्ठा छंद

१३३ त्रीजा चरणमा मुद्रित पाठ उवणइदव्वो छे. ते बघबेसतो न होवाथी पणइदव्वो पाठ में कल्प्यो छे.

पूर्वरूप छे. तेवी ज रीते विक्रमोर्वशीयना बीजा अंकमांथी नीचे ऊतारेला मात्राबंध ललितगलितकनूं पूर्वरूप छे. एना प्रत्येक चरणमां चोवीस मात्रा छे.

सामिअ संभाविदा जहाहं अमुणिआ तए
होमि तहेव्व णाम जदि अणुरत्तस्स ते अहं, ।
विलुलिद्पारिजादकिसलअसअणिज्जअम्मि णं
नन्दणवादा वि कहं उण्हा मह सरीरए ? ॥[१३४]

१वलम्बितगलितकमां अने ललितगलितकमां अन्त्य यमक किंवा प्रास आवश्यक छे, ज्यारे उपर ऊतारेला बावीस अने चोवीस मात्राना चरणना मात्राबंध अन्त्य यमकथी रहित छे. शर्मिष्ठानी कृतिमां पदांते बे बृहद् वर्ण अपेक्षित छे. कालिदासना मात्राबंधनो पदांत हवा छे, एटले के ह्रस्व अने बृहद्नो बनेलो छे. प्रस्तुत मात्राबंधोनी उत्पत्ति सुत्तनिपातना कोकालिय पछी, पण इसवी सननी शरूआत पहेलां थई संभवे छे.

४० आर्यामां रचायला प्राकृत मुक्तकोनो मोटो संग्रह **गाहासत्तसई** छे. अमरु अने भर्तृहरिना स्वरचित मुक्तकोना संग्रहनी जे दशा कालांतरे थाय छे, ते ज आ हाल सातवाहनना स्वपररचित मुक्तकोना संग्रहनी पण थई छे. एमां छेक आठमा शतक पर्यंतना कविओना मुक्तको पेसी गया छे. एमांथी परक्कमरस अने कइराअस्स ए मुद्रानी बे **गाथा**ओ नीचे आपी छे, ते चोथा शतकना कविराज बिरुद धरावनारा समुद्रगुप्त पराक्रमादित्यनी हशे एम मारूं मन कहे छे.

गअकलहकुम्भसंणिहघणपीणणिरन्तरेहिं तुङ्गेहिं।
उस्ससिउं चि ण तीरइ किं उण गन्तुं हअथणेहिं ॥

१३४ उर्वशीनी आ प्रेमपत्रिकानी मुद्रित वाचना छंदोभंगथी दूषित छे. मूलने मोटे भागे वळगी रही में उपर मुजब छंद मापमां आण्यो छे. एनूं नाम न मळ्याना कारणथी हूं एने उर्वशी संज्ञाथी ओळखावुं छुं.

अणुदिअहवड्ढिआअरविण्णाणगुणेहिं जणिअमाहप्पे।
पुत्तअ अहिजाअजणो विरज्जमाणोऽइदुल्लक्खो॥[१३५]

ए राजाना यशस्वी पुत्र द्वितीय चंद्रगुप्त विक्रमादित्यनी युद्धचर्या अने दानचर्याना उल्लेखनी एक आर्या पण प्रस्तुत संग्रहमां छे. ते ऐतिहासिक होवाथी नीचे आपुं छुं.

संवाहणसुहरसतोसिएण देन्तेण तुह करे लक्खं ।
चलणेण विक्कमाइच्चचरिअमणुसिक्खिअं तिस्सा ॥

एवी ज ऐतिहासिक नीचेनी सातवाहन विशेनी गाथा पण ए गाथाकोशमां छेः—

आवण्णाइं कुलाइं दोच्चिअ जाणन्ति उण्णइं णेउं ।
गोरीअ हिअअदइओ अहवा सालाहणणरिन्दो ॥

अज्ञात सुभाषितकार कहे छे के अपर्णा जे गौरी, तेमनां सगांसबंधी (आपर्णानि कुलानि)नी उन्नति जेम गौरीने अंतःकरणथी व्हाला शंकर भगवाने करी, तेम अवदशा पामेली आन्ध्रजाति (आपन्नानि कुलानि)नी उन्नति पृथ्वी (गौरी)ने अंतःकरणथी व्हालो सातवाहन राजा करी जाणे छे[१३६]. आ गाथा, ऐतरेयब्राह्मणमां आन्ध्र आदि जातिनी उत्पत्ति विशे इतिहास आप्यो छे, तेने लक्षित करे छे. उक्त प्राचीन ब्राह्मणमां कह्यूं छे के विश्वामित्र ऋषिने मधुच्छंदा सिवाय बीजा सो पुत्र हता, पचास मधुच्छंदाथी मोटा (अने) पचास मधुच्छंदाथी न्हाना पिताए शुनःशेपने पुत्र करी लीधो हतो ते वात मोटा पचासने रुची नहि. तेमणे बतावेली अरुचिथी क्रोधे

१३५ मूळमां तेम ज टीकामां बीजी गाथाने अंते मुद्रित पाठ 'विरज्जमाणो वि दुल्लक्खो' छे एमां वि(सं.अपि) बदल में कल्पित पाठ अइ(सं.अति) लीधो छे

१३६ टीकाकार प्रस्तुत गाथानो सातवाहन परत्वे जुदो अर्थ करे छे. तेनो भावार्थ, सातवाहन दुखिया (आपन्न)नूं दुःख टाळनार हतो, एवो नीकळे छे, परंतु ए अर्थमां उपमा घटावी शकाती नथी शंकरनी उपमानो निर्वाह सारू अर्थ बदलवो पडयो छे.

भराई विश्वामित्रे तेमने शाप दीधो के तमारी प्रजा शूद्र थई जशे. शापथी दस्युपणाने पामेला ए वैश्वामित्रो ते आन्ध्र,पुड्र, पुलिंद,शबर अने मूतिव[१३७]. तेओ पैकी आन्ध्र शापित स्थितिमांथी उन्नति पाम्या अने इतिहासप्रसिद्ध थया, ते राजा सातवाहनना पुण्यप्रतापे. आवो भावार्थ उपर ऊतारेली गाथा-नो छे. सातवाहन वंशसंज्ञा होवाथी कयो सातवाहन अहीं अभिप्रेत छे ते अनिश्चित रहे छे.

४१ **गाहासत्तसई**मा पालित कविनी नव अने गुणड्ढनी एक **गाथा** (गा.स.।२।६०।) संगृहीत मळी आवे छे. ते पैकी पहेलो **रामचरित**-ना कर्ता अभिनन्दना कहेवा प्रमाणे हाल सातवाहनना दरबारनो संमानित कवि हतो[१३८]. एणे प्राकृतमां **तरङ्गवई** नामे कथा रची हती. असल ग्रंथ नाश पाम्यो छे, पण तेना संक्षेपरूप **तरङ्गलोला** उपलब्ध छे. ते वांचवाथी पालित किंवा श्रीपालितनी कवित्वशक्ति विशे ऊंचो अभिप्राय बंधाय छे. बीजा कविनी **गाथा** तो एक ज बची छे, पण ते **गाथा** साथे तेना कर्तानूं नाम पण बच्यूं छे ते बहु महत्त्वनू छे. गुणड्ढ नाम सं. गुण-र्द्धनूं प्राकृत रूप छे. ए जूना तद्भव उपरथी नवो तद्भव गुणड्ढ ऊपज्यो छे. एने नवो संस्कार आपी सं. गुणाढ्य बोल ऊपजावी काढ्यो लागे छे. **गाहा-सत्तसई**।२।६०। नो जूनो तद्भव गुणड्ढ, नवो तद्भव गुणड्ढ अने पुन सस्कार पामेलो नवतर गुणाढ्य, ए सौ मूलभूत गुणर्द्धनो विस्तार छे. **कथासरित्सागर** अने **बृहत्कथामञ्जरी** तेने सातवाहनना समयमा मूके

---

१३७ जुओ **ऐतरेय** ब्राह्मण। पञ्चिका ७। अध्याय ३। खण्ड ६। मन्त्र १८।नो नीचे आपेलो उतारो –तस्य ह विश्वामित्रस्यैकशतं पुत्रा आसु.। पञ्चाशदेव ज्यायासो मधुच्छन्दस पञ्चाशत्कनीयासः। तद् ये ज्यायासो, न ते कुशलं मेनिरे।ताननुव्याजहारान्तान् वै प्रजा भक्षीष्टेति। त एतेऽन्ध्राः पुण्ड्राः शबरा पुलिन्दा मूतिबा इत्युदन्त्या बहवो भवन्ति वैश्वामित्रा दस्यूना भूयिष्ठा।

१३८ जुओ चालु व्याख्याननी प्रस्ताव ३ अने तेन लगती टिप्पणी १६।

छे. एणे पैशाचीमां रचेली वड्डकहा, जेने आधारे **कथासरित्सागर** **बृहत्कथामञ्जरी** अने **बृहत्कथासंग्रह** रचायेल छे, ते नाश पामी छे. **तरङ्गवती** अने **बृहत्कथा**नी रचना घणुं करीने **गाथा**मां कराई हशे.

४२ पुराणोमां राजवंशोनी आपेली नोंध प्रमाणे सातवाहनवंशनो सत्तरमो राजा ते हाल. एनो राज्यकाळ पांच वर्षनो कह्यो छे. ऐतिहासिक विन्सेंट स्मिथ हालनो राज्यारंभ इ. स. ६८नी सालमां मूके छे[१३९]. शकसंवत्‌ना आरंभ साथे मेळ मेळववाने एना राज्यनी शरूआत दसको मोडी मानिये, तोपण पुराणोक्त टूंकडा पांच वरसना राज्यकाळमां राजाना आश्रयथी विविध प्रकारनूं संस्कृत महाराष्ट्री अने पैशाची साहित्य[१४०] सरजायूं असंभाव्य जणाय छे. एम बन्यूं होय के राजा थता पहेलां हाल सातवाहने राजकुमार तरीके केटलोक वखत प्रांतिक राज्याधिकार भोगव्यो होय, अने ए रीते लंबायला समयना गाळामां प्रस्तुत अति विपुल साहित्य अस्तित्वमां आव्यूं होय. असल **गाहासत्तसई**नो संग्रहकाळ पण ए संभवे छे. एमां हाळे पोते रचेली **गाथा** कई कई, ते जाणवानूं साधन मात्र टीकाकार पीतांबर पूरूं पाडे छे. एणे रचेली **रत्नावली** नामे टीकामां **गाथा** साथे **गाथाकर्ता**नां नाम बहुधा आप्यां छे. दिलगीरीनी वात एटली छे के सद्गत पंडित दुर्गाप्रसादने मळेली हाथप्रतमां चारसें बत्रीसमी **गाथा** पर्यंत ज नामनी नोंध आपी छे[१४१]. नामवाळा भागमां पिस्ताळीस **गाथा** हालरस मुद्रानी मळी आवे छे[१४२]. **गाहासत्तसई**नी **आर्या** किंवा **गाथा**नूं लक्षण भास अने कालिदासनी **आर्या**ना जेवूं छे.

---

१३९ जुओ **Early History of India, ch. VIII.**

१४० कातन्त्र व्याकरण, **गाहासत्तसई, तरङ्गवई, वड्डकहा** वगेरे.

१४१ जुओ **काव्यमाला**मां छपायली **गाहासत्तसई**नो संस्कृत उपोद्‌घात अने तेनूं परिशिष्ट.

१४२ हाळे रचेली गाथानी टीप नीचे प्रमाणे छे.–१ ॥ १, ३, १३, १६, २५, १०१ ॥; २ ॥ १७, १८, १९, २०, ३०, ४०, ४८, ५६,

४३ प्राकृत पद्यरचनानी आलोचनामां खास महत्त्व धरावतूं काव्य **रावणवहो** (सं. रावणवधः) छे. एना कर्ता प्रवरसेन विशे पूर्वे कहेवाई गयूं छे[१४३]. मुद्रित **गाहासत्तसई**मां पवरसेणस्स मुद्रावाळी चार आर्या मळी आवे छे[१४४]. ए चार आर्या अने **रावणवहो** सिवाय एनी कोइ कृति प्रकाशमां आवी नथी. एना मातामहनी संस्कृत तथा प्राकृत अने प्रमातामहनी प्राकृत कविता जूज उपलब्ध छे[१४५]. प्रवरसेने **रावणवहो**ना पेटाभागने आसासओ (सं. आश्वासः) नामथी ओळखाव्या छे. प्रस्तुत काव्यमां पंदर आश्वास छे. समुद्र उपर सेतु बांधी रामचंद्रजी लंकेश्वर रावणने युद्धमां मारीने सीता पाछां मेळवे छे, ए एनूं वस्तु छे. उक्त पंदरमांथी त्रण आश्वास सेतुबंधनना अद्भुत वर्णनमां रोकाया छे, ते कारणथी ए काव्य साधारण रीते **सेतुबन्ध**ना नामे जाणीतूं छे[१४६]. सातमा शतकना पूर्वार्धमां बाणभट्ट[१४७] संक्षिप्त सेतु संज्ञाथी तेनो निर्देश करे छे. **सेतु** काव्यनो व्यापक छंद **आर्यागीति** किंवा **स्कन्धक** छे. कुल बारसें नेवु छंदमांथी एमां बारसें छेताळीस **आर्यागीति** छे. बाकीना चुमाळीस छंदनी

६८, ७९, ८२, ८३, ९०, १०२॥; ३॥ १५, २३, २४. २७, ३५, ३८, ४०, ५१, ६४, ६५, ७८, १०१॥; ४॥ २१, २६, ५९, ७१,७४, ९०, ९१॥; ५॥ १, ८, ९, २०, ३१॥; ७॥ ९४॥.

१४३ जुओ चालु व्याख्याननो प्रस्ताव १६.

१४४ जुओ गा. स. । १ । ६४ ।, गा. स. । ३ । २, ८, १६ ।.

१४५ जुओ चालु व्याख्यानना प्रस्ताव १४ अने ३९.

१४६ जुओ **सेतुबन्ध**, आश्वास. ६–८. भासना एक नाटकमां यौगंधरायणे लीधेली प्रतिज्ञाने अने बीजामां वत्सराजनी स्वप्नावस्थाने अनुलक्षीने पहेलाने **प्रतिज्ञायौगन्धरायण** अने बीजाने **स्वप्नवासवदत्त** संज्ञा आपवामां आवी छे. सरखावो वळी **मृच्छकटिक, वेणीसंहार, विद्धशालभञ्जिका** वगेरे संज्ञा.

१४७ जुओ **हर्षचरित**ना आरंभे आपेलो नीचेनो श्लोकः—कीर्तिः प्रवरसेनस्य प्रयाता कुमुदोज्ज्वला। सागरस्य परं पारं कपिसेनेव सेतुना ॥.

वर्गसंज्ञा **गलितक** छे. गीतिना प्रत्येक दळने, अंते बे मात्रानो एक बृहद् वर्ण उमेरवाथी आर्यागीति बने छे. गलितक वर्गना अनेक प्रकार हेमाचार्ये गणाव्या छे. तेमांथी सात प्रकारना गलितक छंद सेतुकाव्यमां वपराया छे[१४८]. तेर मात्राना चरणनो सुन्दरगलितक, एकवीसनो गलितक, बावीसनो विलंबितगलितक, चोवीसनो ललितगलितक, त्रीसनो उग्रगलितक तथा छेतालीसनो मालागलितक ए छ सम चतुष्पद छे, अने पहेला त्रीजा चरणमां सात तथा बीजा चोथामां पचीस मात्रानो मुखगलितक अर्धसम छे. शर्मिष्ठाना बावीस मात्राना अने रघुकारना चोवीस मात्राना चतुष्पद मात्राबंधथी विलम्बितगलितक अने ललितगलितक अंत्य यमक किंवा प्रासने लिधे जुदा पडे छे. अंत्य यमक ए गलितकवर्गनूं सर्वसामान्य लक्षण छे. सेतु काव्यना आरंभे प्रवरसेन प्रथम विष्णुने अने पछी शंकरने स्मरे छे. एने वैष्णवी दीक्षा मोसाळपक्षथी मळी संभवे छे. एना पिता द्वितीय रुद्रसेनने विष्णुभक्ति राज्यप्राप्तिना रूपमां अने एने पोताने सेतु काव्यना निर्माणना रूपमां फळी हती. परम भागवत द्वितीय चन्द्रगुप्तथी हार खाई राज्य खोई बेसतां रुद्रसेने वैष्णवमार्ग स्वीकार्यो, जेथी प्रसन्न थई तेने विजेताए विदर्भ-कुंतलनूं राज्य पाछुं आप्यूं. एनो गर्भित निर्देश एक लेखमां 'भगवतश्चक्रपाणे प्रसादोपार्जितश्रीसमुदयस्य' पदसमुदायथी करेलो छे[१४९]. वैष्णवमार्गमां आवेला रुद्रसेनने चंद्रगुप्ते राजकुमारी प्रभावतीगुप्ता परणावी हती. तेना धावणनी

१४८ जुओ चालु व्याख्यानने छेडे आपेलूं **गलितकनूं** परिशिष्ट ३

१४९ जुओ Indian Antiquary XII, p 243. प्रस्तुत लेखमांनी नीचेनी पंक्तिओ उपयोगी जाणी वाचकनी सगवड सारू नीचे आपुं छूं—
भगवतश्चक्रपाणे प्रसादोपार्जितश्रीसमुदायस्य वाकाटकानां महाराजश्रीरुद्रसेनसूनोर् महाराजाधिराज श्रीदेवगुप्तसुतायां प्रभावतीगुप्तायामुत्पन्नस्य शम्भो प्रसादधृति[त]-कार्तयुगस्य वाकाटकानां परममाहेश्वरमहाराजश्रीप्रवरसेनस्य वचनात् .आ उतारामां हुं व्याकरणशुद्धि सारूं रुद्रसेनस्य सूनोर् 'अने अर्थशुद्धि सारू श्रीसमुदयस्य तथा धृतकृत्तियुगस्य मानूं छूं.

साथे प्रवरसेनने विष्णुभक्तिनूं पोषण न्हानपणथी मळ्यूं हतुं. परंतु पाछळथी ते पितामहोनी शैवी दीक्षा ले छे अने शूलधारी कृत्तिवासानी प्रसादीरूप शूल अने कृत्ति स्वीकारे छे. एनी उल्लेख उपर कहेला लेखमां एना नामने लगाडेला 'शंभोः प्रसादधृतकृत्तियुगस्य' तथा बीजा एक लेखमां 'शंभोः प्रसादधृतशूलायुधस्य' ए बे सूचक विशेषण द्वारा तेम ज उभय लेखमां 'परममाहेश्वरस्य' एवा स्पष्ट वचन द्वारा करेलो मळी आवे छे[१५०]. माहेश्वर मार्गमां भळता पहेलां सेतु काव्य रचायूं हतुं. तेनी प्रेरणा परम भागवत मातामह साहित्यकार तरफथी मळी होय, तो तेमां अश्रद्धा धरावया जेवूं कंइ ए नथी. चंद्रगुप्तनी हयातीमा गादीए आव्या पछी आरंभायदं ए काव्य तेना मरणोत्तर नवो राजा पूरूं करे छे. आवी समजथी हुं सेतुबन्धनो निर्माण काळ इ. स. ४१४ कल्पूं छुं.

४४ सेतुबन्धना अत्रोक्त चुमाळीस गलितक टीकानी मदद वगर साधारण वाचकथी समज्या जाय एवा नथी. सेतुप्रदीपनो कर्ता तेने कण्टक कहे छे[१५१], ते बराबर छे. ए गलितको प्रक्षिप्त छे एम ज्ञाता पुरुषोनूं कहेवूं छे, एवो उल्लेख हेमाचार्यना काव्यानुशासनमां छे[१५२]. अवन्ति-

---

१५० जुओ उपरनी टिप्पणीवाळो लेख. जुओ वळी The Journal of the Bihar and Orissa Research Society, Vol. XIV, part 4, September, 1929 मानो Patna Museum Third Plate of Pravarasena II, ए लेखनी नीचेनी पंक्तिओ.–(१) प्रभावतीगुप्तायाम् समुत्पन्नस्य शम्भो(:) प्रसादधृति(त)शूल(ला)युध(२)स्य वाकाटकानाम् महाराजश्रीप्रवरसेनस्य...(३) मातृभट्टारिकाना(णा)म् पुण्योपचये ऐहिकामुष्मि(कि) .गई टिप्पणीमाना उतारा साथे सरखावता चालु टिप्पणीना लेखमा वाकाटकानाम् पछी परममाहेश्वर बोल खोदवो रही गयो छे.

१५१ जुओ सेतुप्रदीपना आरंभे आपेलो १८ मो श्लोक.

१५२ जुओ काव्यमालामा छपायला काव्यानुशासनना पृष्ठ ३६७ मांथी लीधेलो नीचेनो उतारो'–रावणविजय–हरिविजय–सेतुबन्धेष्वादित समाप्तिपर्यन्तमेकमेव छन्दो भवति । गलितकानि तु तत्र कैरपि विदग्धमानिभिः क्षिप्तानि इति तद्विदामाम्नायः ।

सुन्दरीकथाना कर्तानो पण एवो ज मत छे, एम तेना नीचेना श्लोक उपरथी समजाय छे.

सेतुरूपेण तिष्ठन्तो लोके सद्वस्तुदर्शिनः।
षट्पञ्चाशत् प्रमाणत्वं गता नः कविपुङ्गवाः॥

प्रस्तुत श्लोकमां कवि कहे छे के उत्तम वस्तु साथे तदाकार बननारा अने सेतुरूपे जगतमां चिरस्थायी रहेनारा उत्तम छप्पन कवि अमारे प्रमाण छे. अहीं उत्तम वस्तु ते प्रवरसेने सेतु काव्यमां अपूर्व घटनाए गूंथेली रामकथा समजाय छे. नवो उमेरेलो एक एक गलितक छंद सेतु काव्यमां भळी जतो होवाथी तेने सेतुरूप कह्यो छे. ए उमेरेला गलितकना रचनार यमक कविओने अवन्तिसुन्दरीना कर्ताए उत्तम कवि लेखव्या छे. ए गलितको द्वारा चिरस्थायी सेतु काव्य साथे उक्त कविओ पण तेणे जगतमां चिरस्थायी बनेला वर्णव्या छे. आ प्रक्षेपक कविओ चार पांच नहि, पण छप्पन हता. तेमणे केटला गलितक उमेर्या ते जणाव्यूं छे नहि. परंतु ते छप्पनथी तो ओछा न ज होई शके. ए लेखे, अत्यारे मात्र चुमाळीस गलितक उपलब्ध छे, ते मूळ संख्याथी बहु कमी छे. कंइ नहि तो बार प्रक्षिप्त गलितक नाश पाम्या जणाय छे. प्रस्तुत श्लोकोनो उमेरो क्यारे थयो, ते खातरीथी कहेवुं अशक्य छे. तथापि, एक तरफ शर्मिष्ठा तथा कालिदासना बावीस तथा चोवीस मात्राना अंत्य-यमक-रहित मात्राबंध अने बीजी तरफ भट्टिनो मुखगलितक लक्ष्मां लेतां, एवी अटकळ बंधाय छे के सेतुरूप उक्त प्रक्षिप्त छंद प्रवरसेन अने भट्टिना गाळामां एटले पांचमा शतकनी आसपासना समयमां उमेराया हशे[१५३].

१५३ सम अने अर्धसम गलितकनो विकासक्रम विचारतां मुखगलितक छंद मोडो प्रगट्यो समजाय छे. ए सातमा शतकना पूर्वे थयेला गलितकने भट्टि व्यापक आर्यागीति साथे एकदेशी तरीके प्राकृतमांथी संस्कृतमां उतारे छे. ए विगत गणतरीमां लेईं सेतुकाव्यना गलितकनो प्रचार में पांचमा शतकनी आसपास मूक्यो छे.

४५ प्रवरसेनने एना मातामहना दरबारना कवि कालिदासनो परिचय थयानूं पूर्वे सूचन कर्यूं हतूं. ए परिचय गाढ थईने सेतु काव्य रचायूं त्यारे मैत्रीना रूपमां परिणाम पाम्यो. प्रस्तुत काव्यना पहेला आश्वासनी नवमी **आर्यागीति**मां तेनो गर्भित निर्देश छे[१५४]. सेतुकारनो मेघकार प्रत्येनो नवो स्नेह हृदयरसथी ऊभराई जाय छे. जवान प्रवरसेनना प्रमादथी तेमां तूट पडवा जेवूं थाय छे. परंतु कालिदास बगडेली बाजी सुधारी ले छे; अने बे कवि एक-बीजाना दिलोजान दोस्त बनी रहे छे. जेम मैत्रीना संबंधमां तेम सेतुनिर्माण-ना संबंधमां प्रवरसेननां स्खलनो थाय छे. कालिदास ते सुधारी ले छे; अने, ए बंधुकार्यथी सेतुकार श्रीमुखे कहे छे तेम, सेतु समाप्तिए प्होंचे छे. आ मित्र-भावथी आपेला सहकारने लीधे सेतु काव्य कालिदासे रच्यानो प्रवाद ऊभो थयो छे. आथी **सेतुप्रदीप**नो कर्त्ता **सेतुबन्ध**ने कालिदासनी कृति कहे छे. पण ए भूल खाय छे[१५५]. टीकाना निर्माणनूं वर्ष आपतां शककार विक्रमादित्यनो द्वितीय चंद्रगुप्त विक्रमादित्यना साहसांक बिरुदथी ते निर्देश करे छे, ते पण एवी ज भूल छे[१५६]. अहीं कहेवूं जोईए के छप्पन प्रक्षेपक कविओमां कालिदासने गणवानो नथी. मेघकारने यमकचित्रनो मोह हतो ज नहि. एटले तेणे **गलितक**नो उमेरो कर्यो लागतो नथी.

---

१५४ प्रस्तुत **आर्यागीति** विवेचननी सुगमता सारूं हू नीचे आपूं छूं:– अहिणवराआरद्धा चुक्कक्खलिएसु विहडिअपरिट्ठविआ। मेत्तिव्व पमुहरसिआ णिव्वोढुं होइ दुक्करा कव्वकहा ॥. अहीं दुक्करा पाठ प्रक्रमभंग टाळवा सारूं में कल्प्यो छे. मुद्रित पाठ दुक्कर छे.

१५५ जुओ **सेतु** काव्यना प्रथम आश्वासनी पहेली **आर्यागीति**नी उत्था-निका तथा नवमी **आर्यागीति**नी टीका, अने प्रत्येक आश्वासनी पुष्पिका.

१५६ जुओ **सेतुप्रदीप**ना समाप्तिश्लोकनी नीचे आपेली पंक्तिओः—चक्षु-र्भूतारिशीतांशु(१६५२)मिरभिगणिते साहसाङ्कस्य वर्षे...विश्वेनापूरितोऽयं तिथितु-लितशिखो रामसेतुप्रदीपः ॥

४६ पद्यरचनानी आलोचनाने अंगे सेतु काव्यनी उपयोगिता प्रक्षिप्त गलितकने लीधे छे. गलितकवर्ग प्राकृतमां एक नवी कलामय घटना छे. आर्यामांथी, जेम गीति, आर्यागीति आदिनी उत्पत्ति थई, तेम सादा बावीस अने चोवीस मात्राना पद्यबंधमांथी अंत्य यमकवाळा विविध गलितक उत्पन्न थया छे. अनावृत्त संधिनो प्रयोग ए तेनां चरणनी विशिष्टता छे. संस्कृत साथे संबंध धरावती वर्तमानकाळनी देशभाषामां आवा अनावृत्त संधिना मात्रावंध छे नहि. हेमाचार्ये विविध गलितकनां मात्रागणमां माप आप्यां छे. रूपगणो अने मात्रागणो रूपबंध अने मात्राबंधना चरणनूं स्थूळ स्वरूप टूंकामां बतावया माटे उपयोगी छे. पण चरणना वास्तविक संधिनो तेथी बोध थतो नथी. गलितकवर्गना मात्राबंधोना चरणना विविध अनावृत्त संधिना निरूपणने माटे एक स्वतंत्र लेखनी अपेक्षा रहे छे. अहीं तेने माटे जोईतो अवकाश नथी.

४७ पद्यबंधमां अंत्य यमक किंवा प्रासना कलामय प्रयोगनूं प्रथम दर्शन गलितकवर्गमां थाय छे. अंत्य यमकने बदले 'अंत्य' अनुप्रासनो प्रयोग खञ्जकवर्गमां देखा दे छे. पण छेवटे अंत्य यमक ज फावी जाय छे; अने अपभ्रंशमां तेम ज तेमांथी थयेली देशभाषमां तेनूं अविवादित ऐकाधिपत्य स्थपाय छे. प्रबंधमां अंत्य यमक अने अंत्य अनुप्रासना प्रयोगनो दृष्टान्त गीतगोविन्द पूरो पाडे छे. एनो दसमो प्रबंध रूपात्मक लयबंध छे, तेनी कडीनो पहेलो तथा त्रीजो खंड अंत्य यमकथी संकळायलो छे[१५७].

४८ लगभग सेतुबन्धना जेवडी पण तेनाथी बहु ज उतरती पद्यात्मक कृति ते गउडवहो छे. पांचमा शतकना प्रवरसेननूं काव्य आर्या-गीतिमां छे; अने आठमा शतकना वाक्पतिराजनी रचना आर्या किंवा गाथामां, छे प्रस्तुत गाथाबंधमा अपवादभूत एक समचतुष्पद मात्राबंध छे. ए ओगणसाठमी गाथा पछीनी चार पंक्तिनो बनेलो

१५७ जुओ धातु व्याख्यानना प्रस्ताव १२ मां आपेलूं उदाहरण.

छे. सद्गत विद्वान् शंकर पांडुरंग पंडिते शा धोरणथी आ एक छंदना बे छंद गण्या हशे ते कळ्यूं जतूं नथी. उक्त चार पंक्तिनो एकठो अन्वय थाय छे. एनी बे छंदमां व्हेंचणी जो इष्ट होय, तो ए चार पंक्ति उपरनी टीकाने अंते युगलकम् एवो सांकेतिक बोल जोईए; पण ते छे नहि. अर्थात् टीकाकार बे नहि पण एक ज छंद लेखवे छे. ज्यां ज्यां एक करतां वधारे छंदनो एकठो अन्वय थतो होय छे, त्यां त्यां युगलकम्, विशेषकम्, चक्कलकम्, कुलकम् अने महाकुलकम् बोल अनुक्रमे, बे, त्रण, चार, पांच अने ते उपरांतनी संख्याना वाचक तरीके मूकवा टीकाकार चूकतो नथी. छंदनूं नाम नथी आप्यूं. तथापि प्रस्तुत चारे पंक्तिनो एक ज छंद बने छे, ते तो टीका उपरथी स्पष्ट जणाई आवे छे. चरणनूं माप लगभग जळवायूं छे, पण अंत्य यमकनो नियम पळायो नथी; तेथी कदाचित् टीकाकारे छंदने गलितक तरीके ओळख्यो नहि होय. मारी समज प्रमाणे ते पचीस मात्रानो 'सम-गलितक' छंद छे[१५८]. हूं नीचे मुजब पाठ गोठवीने एना अंत्य यमकनो उद्धार साधूं छूं.

हरिचलणणहप्पहाएँ पढमयं अ विच्छोलियं
पायएहिं हरससिणो बीइयं अ संवेल्लियं।
तइयं हिमद्दिणो च्चिय तुहिणच्छायाकलिलयं
कारणपरिसुद्धं च णमह गङ्गाए सलिलयं ॥[१५९]

[हरिचरणनखप्रभया प्रथमं च प्रक्षालितं
पादैर्हरशशिनो द्वितीयं च संवेष्टितम् ।

---

१५८ जुओ छन्दोनुशासन अध्याय ४, गलितकप्रकरण। चः पौ चौ त्रिः समात्‌।

१५९ मुद्रित पाठ नीचे प्रमाणे:—

हरिचलणणहप्पहाएँ विच्छोलियं व पढमयं।
हरससिणो पायएँहि संवलियं व बीययं ॥६०॥
गहियहिमच्छायय व तुहिणहिसमावडणए
कारणपरिसुद्धयं व गङ्गाएँ णमह सलिलयं ॥६१॥

'तृतीयं हिमाद्रेश तुहिनच्छायाकलिलं
कारणपरिशुद्धमिव नमत गङ्गायाः सलिलम् ॥]'

ત્રીસ અને છેતાળીસ માત્રાના ગલિતકનો સેતુ કાવ્યમાં પરિચય થયા પછી સમગલિતકમાં નોંધવા જેવી નવીનતા કંઇ છે નહિ.

૪૧ પદ્યરચનાના વિકાસના નિરૂપણમાં નવમા શતકની કપ્પૂરમઞ્જરી (સં. કર્પૂરમઞ્જરી)નું ગઉડવહોના જેવું જ ગૌણત્વ છે. એ પ્રાકૃત પ્રયોગબંધને સાહિત્યશાસ્ત્રકારો સટ્ટઅ કહે છે. સંસ્કૃત સાટ્ ૧૦, ઉભયપદીનો અર્થ 'પ્રત્યક્ષ કરી બતાવવું' થાય છે. તે ઉપરથી પ્રાકૃત સટ્ટઅ બોલ થયો છે. સંસ્કૃત ન્હાનું નાટક તે નાટિકા અને પ્રાકૃત ન્હાનું નાટક તે સટ્ટઅ (સં. [160]સાટક). નાટિકાની સંસ્કૃત સાહિત્યમાં પરિગણના થાય છે; કેમકે તેની પ્રધાન ભાષા સંસ્કૃત હોય છે. સટ્ટઅ પ્રાકૃત સાહિત્યમાં સ્થાન લે છે; કેમકે તે પ્રાકૃતમાં જ રચાય છે. નાટિકામાં વિષ્કંભક અને પ્રવેશકનો ઉપયોગ થઈ શકે છે. સટ્ટઅમાં વિષ્કંભક નથી હોતો અને પ્રવેશક નથી હોતો. નાટિકાના ખંડને અંક કહે છે. સટ્ટઅના ખંડની જવણિઆ (સં. યવનિકા, જવનિકા) સંજ્ઞા છે. પ્રાકૃતમાં નવા ઘડાયલા સટ્ટઅ અને જવણિઆ બોલ સૂચવે છે કે સટ્ટઅ પ્રાકૃતની પેદાશ છે. જો તેની રચના સંસ્કૃતમાંથી ઉતરી આવી હોત, તો નાટિકા અને અઙ્ક એ પારિભાષિક શબ્દ પણ ઉતરી આવત, સંસ્કૃત ભાષા પણ ઉતરી આવત, અને વિષ્કંભક તથા પ્રવેશક પણ ઉતરી આવત. રાજશેખરની વિદ્ધશાલભઞ્જિકા નાટિકા ચાર અંકમાં છે, ત્યારે કપ્પૂરમઞ્જરી સટ્ટઅ ચાર જવનિકામાં છે. કપ્પૂરમઞ્જરીમાં ત્રણ જ પદ્યબંધ નવતર છે, મકરકશીર્ષા[161] ઉપગીતિ[162] અને મહાનુભાવા[163]. પહેલો સમચતુષ્પદ રૂપબંધ છે. એનું ચરણ દણ્ડાકાર

૧૬૦ સાહિત્યદર્પણમાં સટ્ટક શબ્દનો પ્રયોગ છે, તેનો વિશ્વાસપાત્ર આધાર કંઇ મળતો નથી.

૧૬૧ જુઓ કપ્પૂરમઞ્જરી । ૩ । ૨૧ ।

૧૬૨ જુઓ કપ્પૂરમઞ્જરી । ૪ । ૧૮ ।

૧૬૩ જુઓ કપ્પૂરમઞ્જરી । ૩ । ૩૦ ।

चार लघु पछी वक्राकार बे गुरुनुं बनेलुं होवाथी एने **मकरकशीर्षा** नाम आपवामां आव्युं छे; कारणके मगरनुं माथुं आगळथी दंडाकार अने पाछळथी घटाकार होय छे. ससलानुं म्हो पण आगला भागमां पातळुं अने पाछला भागमां गट्ठा जेवुं होवाथी प्रस्तुत रूपबंधने **शशवदना** पण कहेता हशे. नामनो संकेत भूलाई जतां सार्थक **शशवदना**ने बदले निरर्थक **शशिवदना** नाम पाछळथी अस्तित्वमां आव्युं जणाय छे. **छंदोनुशासन**मां आ विकृत संज्ञानो प्रयोग छे. कप्पूरमञ्जरीनो बीजो नवो छंद **उपगीति** छे. **आर्या** किंवा **गाथा**मांथी **गीति** अने **उपगीति** मात्राबंध आगळ पाछळ प्रकटे छे. **आर्या**नुं एटले के पथ्या **आर्या**नुं पूर्वार्ध १२+१८ मात्रानुं अने उत्तरार्ध १२+१५ मात्रानुं होय छे. पहेलवहेलो ए अणसरखां दलनो मात्राबंध उत्पन्न थयो. पद्य होवाथी ए केटलाक काळ सुधी सामान्य **गाथा** (=कविता) अने गेयतावाळो होवाथी **गीति** (=गेय कविता) ए उभय नामथी निर्दिष्ट थया कर्यो. ते पछी कोइने सरखां दल रुचिकर लाग्याथी १२+१८ मात्रानां बे समान दलनो छंद तेणे रच्यो. ते वखते अणसरखां दलना छंदनुं सामान्य नाम **गाथा** कायम रह्युं; अने सरखां दलना विशिष्ट गेयतावाळा छंदनुं **गीति** नाम ठर्युं. अणसरखां दलना प्रकृतिभूत छंद प्रत्ये आदर धरावता जाणकार वर्गे जूनी **गाथा** किंवा **गीति**नो नवी **गीति**थी विवेक करवा तेने **आर्या** नाम आप्युं[११४]. छतां सामान्य जनतामां तो प्रकृतिभूत छंदनां **गाथा** अने **गीति** नाम चालु रह्यां जणाय छे. शाथी जे, पाछळथी बीजा कोइए वळी १२+१५ मात्रानां बे समान दलनो जे छंद रच्यो, ते **उपगीति** कहेवायो. ए संज्ञा सार्थक क्यारे गणाय के ज्यारे, प्रकृति जे **आर्या**, तेनी असल **गीति** संज्ञा साथे एनो यौगिक संबंध जोडी शकाय त्यारे. उत्पत्तिकाळमां **गीति** नाम धरावती **आर्या** किंवा **गाथा**मांथी प्रकटी, ते **उपगीति**. आ ज **आर्या**नां औत्पत्तिक **गीति** नाम साथे **उद्गीति** छंदनी पारिभाषिक संज्ञानो आर्थिक संबंध छे;

---

११४ आर्य एटले शुद्ध, अविकृत, ए विशेषण साथे **आर्या** संज्ञानो संबंध छे.

अन्यथा उद्गीति संज्ञानूं औचित्य साधवूं अशक्य छे. प्रकृतिभूत गीति एटले गाथा किंवा आर्यानां संतान अनुक्रमसर त्रण, गीति, उपगीति अने उद्गीति. पूर्व दल वेवडाव्याथी गीति, उत्तर दल वेवडाव्याथी उपगीति, अने पूर्वोत्तर दल उलटाव्याथी उद्गीति नीपजी छे. विकृतिभूत गीतिनी प्रजा बे, आर्यागीति अने ललितागीति[१६५]. त्रीस मात्रानी गीतिना प्रत्येक दलने अंते एक गुरु वधारवाथी आर्यागीति नीपजे छे; अने पूर्व दल त्रीस मात्रानी गीतिनूं तथा उत्तर दल बत्रीस मात्रानी आर्यागीतिनूं लेवाथी ललितागीति बने छे. अहीं आर्याप्रकरणनी चर्चा पडती मूकी कप्पूरमञ्जरी तरफ पाछा वळिये. एमां त्रीजो नवो छंद महानुभावा छे. ए बार मात्राना चरणवाळो समचतुष्पद मात्राबंध छे. मकरकशीर्षा तथा महानुभावा अने एकाद बीजा छंदमां कविए अंत्य यमकनो प्रयोग कर्यो छे. कप्पूरमञ्जरीनी पद्यरचना खास प्रगति करती जणाती नथी. राजशेखरे रूपबंध संस्कृतमांथी उतार्या छे अने मात्राबंध प्राकृतमां प्रचार पामेला वापर्या छे.

५० रूपबंध तेम ज मात्राबंधनी विविधता पउमचरियमां सारी छे. एनो कर्ता विमलसूरि जैन हतो; श्रीयुत नाथूराम प्रेमीजीना अभिप्राय प्रमाणे ए दिगंबर जैन हतो[१६६]. पउमचरियमां ११८ पर्व किंवा उद्देश छे. प्रत्येक पर्वना समाप्ति श्लोकमां कर्ताए विमल मुद्रा मूकी छे. एमां मुख्यतः जैन आगम अनुसार रामचंद्रनूं चरित्र वर्णव्यूं छे. इ. स. ७७७ मां उद्योतनसूरिए कुवलयमाला कथा रची छे, तेमां कथाकार विमलसूरिनो अने तेणे रचेला पउमचरियनो उल्लेख कर्यो छे. वळी एमां हरिवंसचरियनो पण विमलाङ्क पदथी निर्देश छे. आथी संभव छे के हरिवंसचरिय पण विमलसूरिनी कृति हशे. पउम-

१६५ आर्य एटले प्रशस्त अने ललित एटले सुंदर. ए विशेषण उपरथी आर्यागीति अने ललितागीति संज्ञा पडी छे.

१६६ जुओ जैनयुग, पु. १, अं. ५, पृ. १८१-८२.

चरियना निर्माणनो उत्तर अवधि अत्रोक्त कुवलयमालाए आंक्यो छे. पूर्व अवधि शोधी काढवा एनी पद्यरचना तपासिये. पउमचरिय कर्त्ताना शब्दमां गाहाणिबद्ध छे. आर्या किंवा गाथा एना व्यापक छंद छे. एकदेशी तरीके एमां सोळ रूपबंधनो अने छ मात्राबंधनो उपयोग करवामां आव्यो छे. रूपबंध संस्कृत साहित्यमांथी अने मात्राबंध प्राकृत साहित्यमांथी लीधा छे. प्रथम कोटिमांना दोधक अने शार्दूलविक्रीडितनो प्रयोग सातमा शतकथी जूनो नथी. ते माघकाव्यमां एक एक वार वपराया छे, ज्यारे पउमचरियमां ते अनुक्रमे सात वार अने चार वार मळी आवे छे. मात्रात्मक एकदेशीनी कोटिमां गलितकवर्गना अने आर्यावर्गना छंद तेमां योजेला छे, ते पैकी ललितागीति अने चन्द्रकागीति नवीन छे. तेमनां उत्तर दल १२+२० मात्रानां होई सरखां छे; पण पूर्व दल भिन्न मापनां छे. पहेला छंदनूं पूर्व दल १२+१८ मात्रानूं अने बीजानूं १२+१५नूं नीपजे छे; अर्थात आर्यानां पूर्व अने उत्तर दल उक्त बे मात्राबंधना अनुक्रमे पूर्व अने उत्तर दल बने छे. एमनां लक्षण रणपिंगळमां आप्यां छे[१६७]. सद्गत रणछोडभाइ बीजा छंदनूं चन्द्रिकागीति नाम आपे छे. ते अर्थरहित होवाथी अर्थवाचक चन्द्रकागीति संज्ञा में योजी छे[१६८]. उक्त चार एकदेशी उपरांत चौद लघु पछी एक गुरुना मापनो शशिकला नामे समचतुष्पद रूपबंध पण पउमचरियमां एक वार वापर्यो छे[१६९]. ए छंद बृहत्संहितामां छे नहि. आ विशिष्ट प्रयोगना आधारे हूं विमलसूरिने वराहमिहिर अने माघना पछी सातमा शतकना अंतमां मूकूं छूं[१७०]. पांचमा शतक पछी प्राकृत पद्यात्मक

१६७ जुओ रणपिंगळ, भाग १, पृ १२३ अने १२५.

१६८ आह्लादवाचक स. चन्द् धातु उपरथी नीपजता चन्द्रक विशेषणनो, आह्लादकारक वस्तुरूप, एवो अर्थ थाय छे; सरखावो ललितागीति संज्ञा.

१६९ पंदर तिथिनी चन्द्रनी पंदर कळाने अनुलक्षीने पंदर रूपना प्रस्तुत छंदने शशिकला नाम अपायूं जणाय छे.

१७० भावनगरनी जैनधर्मप्रसारक सभाए पउमचरिय छपाव्यूं छे; वेनां

साहित्य आर्याप्रकरणमां तथा गलितकप्रकरणमां अने समचतुष्पद रूप-बंधमां जे उमेरो करे छे, ते संख्यामां स्वल्प अने कलामां वास्तविक प्रगति रहित छे.

५१ त्रैभाषिक काव्यनी त्रीजी भाषा, ते अपभ्रंश. भामह ए भाषामां कथासाहित्य वहोळुं होवानुं नोंधे छे[171]. ए आलंकारिकने बाणभट्ट पछी मूकवामां आवे छे[172]. परंतु मारी गणत्री प्रमाणे क्रम तेनाथी ऊलटो छे. ध्वन्याचार्य लखे छे के 'पूर्वे जोयेलां वृक्ष जेम वसंतमां रसना परिग्रहना कारणथी नवा जेवां जणाय छे, तेम पूर्वपरिचित सर्व अर्थ काव्यमां रसना परिग्रहना कारणथी नवा जेवा भासे छे'. ए कारिका उपरनी वृत्तिमा आनंदवर्धन हर्षचरितादिनुं 'धरणीधारणायाधुना त्वं शेष' । ' ए वचन दृष्टांत तरीके आपे छे, अने जणावे छे के

'शेषो हिमगिरिस्त्वं च महान्तो गुरवः स्थिराः ।
यदलङ्घितमर्यादाश्चलन्तीं बिभ्रते भुवम् ॥

ए श्लोकथी प्रतीत थतो अर्थ पूर्वपरिचित छे, तथापि शब्दशक्तिमूलक विवक्षितान्यपरवाच्य ध्वनिना उदयथी ते वचनमां उक्त पूर्वपरिचित अर्थथी नवीनता छे.' वृत्तिकारे जेनो अर्थ अत्रे पूर्वपरिचित कह्यो छे, ते श्लोक भा-

उपोद्घातमां ए प्राकृत काव्यनो रचनाकाळ वीरनिर्वाणसंवत् ५३०, अर्थात् वि.सं ६० (ई. स ४) आप्यो छे ए निर्देश 'पञ्चेव य वाससया दुसमाए तीसवरिससञ्जुत्ता । वीरे सिद्धिमुवगए तओ निवद्धं इमं चरियं ॥ प. च । ११८ । १४० ।' ए गाथा उपरथी थयो होय एम लागे छे. परंतु प्रस्तुत गाथामां जे पउमचरियनी रचनानुं वर्ष नोंध्युं छे, ते अन्य जैन कविए पूर्व कालमां रचेलुं प्राकृत पउमचरिय सम्भवे छे, नहि के उत्तर कालमां विमलसूरिए रचेलुं पउमचरिय पद्यरचनानी तेम ज भाषानी कसोटीए चढावता विमलनी कृति इसवी सनना आरंभे अस्तित्वमां आवी शकती नथी

१७१ जुओ भामह कृत काव्यालंकार । १ । २८ । न वक्त्रापरवक्त्राभ्यां युक्ता नोच्छ्वासवत्यपि ।× × × × × × × भाषापभ्रंशभाक् तथा ॥

१७२ जुओ S.K. De's Sanskrit Poetics, Vol. 1, p 49.

महना काव्यालंकारनो छे[१७३]. तेनी अपेक्षाए हर्षचरितनुं वचन उत्तरकालीन छे. अर्थात् सातमा शतकना बाणभट्टथी भामह जूनो छे. हुं एने छट्ठा शतकना अंतमां मूकुं छुं. एणे अपभ्रंशमां जे विपुल कथासाहित्यनो उल्लेख कर्यो छे तेना विकास माटे सोसवासो अने ते पहेलां लोकभाषा तरीके अपभ्रंश प्रचारमां आव्याने पचासपोणोसो वरस कल्पी हूं, ए भाषानो उदय चोथा शतकना आरंभमां थयो हशे, एवी अटकळ बांधुं छुं. वररुचिए प्राकृतप्रकाश रच्यो त्यारे सो वसा अपभ्रंश व्यवहारनी ज भाषा हशे. ते काळे एमां साहित्य उत्पन्न थयुं नहि होय, तेथी ए भाषाने प्रकाशकारे प्राकृत व्याकरणमा स्थान आप्युं नहि होय. सद्गत प्रॉ. पांडुरंग दामोदर गुणे अपभ्रंश साहित्यनो आविर्भाव एथी जूनो, एटले अपभ्रंश भाषानो एनाथी पण वधारे जूनो मानता होय एम जणाय छे[१७४]. भरतनाट्यशास्त्रना बत्रीसमा अध्यायनां पाचेक वृत्तना दृष्टांतमां एमने अपभ्रंशनो भास थाय छे. ते दृष्टांत विचारवा जेवा होवाथी नीचे आपुं छुं.

(१) मोरुल्लउ णचन्तउ ।
म[न]हागमे संभन्तउ ॥३२।६६॥

(२) मेह उद्वंतु णेइं जोण्हउं ।
णिच्चणिप्पहे एस(हु) चन्दउ ॥ ३२। ७४ ॥

---

१७३ जुओ ध्वन्यालोकना चोथा उद्द्योतनी चोथी कारिका अने ते उपरनी वृत्ति —दृष्टपूर्वा अपि ह्यर्थाः काव्ये रसपरिग्रहात् । सर्वे नवा इवाभान्ति मधुमास इव द्रुमाः ॥ तथा विवक्षितान्यपरवाच्यस्यैव शब्दशक्त्युद्भवानुरणनरूपव्यङ्ग्यप्रकारसमाश्रयेण नवत्वम् । यथा–'धरणीधारणायाधुना त्वं शेषः' इत्यादौ 'शेषो हिमगिरिस्त्वं च महान्तो गुरवः स्थिराः । यदलङ्घितमर्यादाश्चलन्तीं बिभ्रते भुवम् ॥' इत्यादिषु सत्स्वपि तस्यैवार्थस्य शब्दशक्त्युद्भवानुरणनरूपव्यङ्ग्यसमाश्रयेण नवत्वम् ॥'

१७४ जुओ भविसयत्तकहा, Introduction, p 51.

(३) एसा हंसवधू [हू] हित्था [इच्छा] काणणउ।
गन्तुं उ[उ]स्सुइया कन्तं संगइआ[या]।। ३२।९९।।

(४) पिय वाइ वायतुं[उ] सुवसन्तकाल×[उ]।
पियकामुको[कउ] पियमदणं जणन्तउ ।।३२।१०८।।

(५) वायदि वादो एह पवाहो रुसिद इव ।।३२।१६९।।

आ दृष्टान्तोमां अंत्य यमक किंवा प्रास छे नहि. जो ए अपभ्रंशना समचतुष्पद पद्यबंध होय, तो अंत्य यमक एमां जोईए; शाथी जे अपभ्रंश चतुष्पदमां अंत्य यमक बहुधा होय छे ज. ए अंत्य यमकना अभावने लीधे उपरना दृष्टात अपभ्रंशमां होवानो संभव ओछो छे. बीजूं, जूनी हाथप्रतोमां ओकार उकारने माथे टूंकी ऊभी लीटी करीने पण दर्शावाय छे. तेने लहियो क्वचित् उ अने क्वचित् तुं समजे छे. आवी गेरसमजथी प्रस्तुत दृष्टान्तोमां ओकार बदल उकारवाळा अने तुंकारवाळा भ्रष्ट पाठ उत्पन्न थया छे. त्रीजूं, अपभ्रंशकाळमा लहियाथी जाणतांअजाणतां प्राकृत रूप बदल तेना उपरथी ऊतरी आवेला अपभ्रंश रूप लखी जवाय छे. पांचमा दृष्टान्तमां अपभ्रंश एह पाठ मळी आवे छे, ते आ रीते प्राकृत एस (सं. एष.) बदल लखायो छे. वाक्यरचना पुंल्लिङ्गरूपनो प्रयोग मागे छे अने प्राकृत एस पुंल्लिङ्गप्रयोग छे, ज्यारे तेने बदले लखायलो अपभ्रंश एह शब्द स्त्रीलिंगनो होवाथी व्याकरणदोष नीपजावे छे. त्रीजा दृष्टातमां असल प्राकृत पुंल्लिङ्गरूप एस जळवाई रह्यूं छे. ते बदल प्रो. गुणे एहु रूपनी कल्पना करे छे, ते अस्थाने छे. चोथूं, उस्सुइया अने संगइआ ए अनुक्रमे संस्कृत उत्सुका अने संगताना स्वार्थप्रत्ययसिद्ध अपभ्रंश पद नथी. हुं तो संस्कृत उत्सुक विशेषण उपरथी थयेला नामधातुना कर्मणिभूतकृदतनूं स्त्रीलिंगे प्राकृत रूप ते उस्सुइआ मानूं छूं, अने संगमिआ बदल संगइआ मूलथी लखायद समजूं छूं. भरतनाट्यशास्त्रना बत्रीसमा अध्यायनां उदाहरण केवां भ्रष्ट अने खंडित छे, ते ए अध्याय उपर स्हेजे दृष्टि फेरवी जवाथी जणाई

आवे छे. माटे वधारे विगतमां न ऊतरतां मारी समज प्रमाणे उपरना पांचे अशुद्ध दृष्टांतनी शुद्ध प्राकृत वाचना, संस्कृत छाया अने गूजराती अनुवाद समेत, नीचे आपूं छूं.

(१) **मोरुल्लओ णच्चन्तओ ।**
मेहागमे संभन्तओ ॥३२।६६॥

छाया—मयूरो नृत्यन् मेघागमे संभ्रान्तः ।

अनुवाद-वादळ चढी आवतां नाचतो मोर खूब आनंदमां छे.

(२) **उग्गओ घणो[१७५] णेह जोण्हआ ।**
णिच्चणिप्पहो एस चन्दओ ॥३२।७४॥

छायाः—उद्गतो घनः । नेह ज्योत्स्ना । नित्यनिष्प्रभ एष चन्द्रः ।

अनुवादः-वादळ चढी आव्यूं छे. आ आकाशमां चांदनी नथी प्रकाशती. (हवे) आ चंद्र हमेश निस्तेज रहेवानो.

(३) **एसा हंसवहू हित्था काणणए ।**
रन्तुं[१७६] उस्सुइआ कन्तं संगमिआ ॥३२।९९॥

छाया—एषा हंसवधूर्लज्जालुः कानने रन्तुमुत्सुका कान्तं संगमिता ।

अनुवाद-वनमां आ क्रीडा करवाने उत्सुक पण लज्जाळवी हंसी व्हाला (हंस)नो समागम पामी.

(४) **मिउ[१७७] वाइ वाअओ सुवसन्तकालए ।**
पिअकामुगो पिओ मदणं जणन्तओ ॥३२।१०८॥

---

१७५ मुद्रित पाठ मेह उग्गओ छे प्राकृतमां पुल्लिंग प्रथमाना एकवचननूं रूप मेहो छे. तें मूकतां छंदोभङ्ग थाय छे. आथी पदनो क्रम बदली घणो पर्याय में मूक्यो छे.

१७६ मुद्रित पाठ गन्तु बदल रन्तुं पाठ कल्पित छे.

१७७ मुद्रित पाठ पिय बदल मिउ पाठ कल्पित छे; तेवी ज रीते खंडित कालx बदल कालए अने ते पछी पिय मदण बदल पिओ मदणं पण कल्पित छे.

छाया—मृदुर्वाति वातः सुवसन्तकाले। कामुकप्रियः पिको मदनं जनयन्।

अनुवाद-सुवसंतकना पर्वे वायु मंद मंद वाय छे; अने कामोदीपन करतो कोकिल कामीजनने व्हालो लागे छे.

(५) वायदि वादो एस पवासी[१७८] रुददि-विअ ।२२।६१॥

छाया—वाति वात । एष प्रवासी रुदतीव।

अनुवाद-(वसतनो वायु वाय छे, (अने) आ मुसाफर जाणे रडे छे ! (अर्थात्) प्रवासीनूं म्हों 'हवणा जाणे ए रडी पडशे' एवो भास ऊपजावे छे).

आ दृष्टान्तो भरतनाट्यशास्त्रना कर्ताए पोते रचेला होय अथवा तो समकालीन साहित्यमाथी टांचेला होय. ए अपभ्रंश भापाना छे एम मानी लेइये, तो अपभ्रंश साहित्य त्रीजा शतकमा उत्पन्न थई चूक्यूं हतूं अने ते पहेला पोणोसोएक वर्षथी अपभ्रंश भाषा प्रचारमा हती ए पण मानवूं अर्थापन्न छे. परतु ए मान्यू जाय एम छे नहि. अपभ्रश भापाने एटली जूनी मानवामा एनू बधारण थाडुं आवे छे. प्राकृतना अने अपभ्रंशना व्याकरणमा एटलुं भारे अंतर छे के अपभ्रंशनो उदय एटलो व्हेलो मानी शकातो नथी एथी करीने प्रस्तुत विवादास्पद दृष्टात अपभ्रश भापाना होवा संभवता नथी तेना लगती चर्चा आटलेथी संकेली अविवादित पद्यात्मक अपभ्रंश साहित्यनी समीक्षा हाथ धरिये.

५२ अपभ्रंश साहित्य जे मुद्रित थयूं छे, ते पद्यरचनानी समीक्षा माटे बहोळूं पण नथी; तेम प्राचीन पण नथी! विवेचननी सामग्री जे कंइ भविसयत्तकहामा मळी आवे छे, तेनाथी ज संतोष मानवो पडे छे. प्रस्तुत काव्य धनपाल नामे जैन कविनी कृति छे. ए कथा जर्मनीमां प्रॉ. जेकोबीए रोमीय लिपिमा अने भरतखडमा प्रॉ. गुणेए नागरी लिपिमां संशोधन करी छपावी छे. धनपाल ए नामना जैन कवि बे थया छे. एक श्वेतांबर जैन

---

१७८ मुद्रित प्रवाहीनो अर्थ बंध न बेसवाथी पवासी पाठ मैं कल्पेल छे.

हतो. तेणे धारा नगरीना भोज राजाना रंजनार्थे **तिलकमञ्जरी** नामे कथा संस्कृतमां रची हती. **रिसहपञ्चासिआ** (सं. ऋषभपञ्चाशिका) नामे स्तवन अने **पाइअलच्छी** (सं. प्राकृतलक्ष्मीः) नामे प्राकृत कोश पण तेणे रचेलां कहेवाय छे. बीजो धनपाळ दिगंबर जैन हतो. तेणे मात्र **भविसयत्तकहा** (सं. भविष्यदत्तकथा) रचेली जाणवामां छे. एना देशकाळ विषे पाको निर्णय बंधायो नथी. बारमा शतकना हेमाचार्यनाथी ते वेएक शतक व्हेलो थयो हशे, एम प्रॉ. गुणेनूं कहेवूं छे[१७५].

५३ दिगंबर धनपालना पद्यबंध मोटे भागे मात्रात्मक छे. **पज्झडिआ** अने **अलिल्ला**, ए **भविसयत्तकहा**ना प्रधान छंद छे. ए बंने समचतुष्पद मात्राबंध छे. गूजरातीमां अने हिंदीमां **पद्धरा** किंवा **पद्धडी** संज्ञाथी जे छंद जाणीतो छे. ते **पज्झडिआ**. एनी गतिमां ऊछळता पाणीना व्हेळाना वेगनो अनुभव थाय छे. तेथी एनूं **पज्झडिआ** नाम पाडयूं छे, ते योग्य ज छे. मोटेथी बोलता के मनमां वांचता होइये ते वेळाए छाती जाणे ऊछळी ऊछळी ताळ आपती होय एवो भास ए छंदना उठावथी थाय छे. बीजो प्रधान छंद जे अलिल्ला, तेने दलपतपिंगळमा **अलक** कह्यो छे. वेठा पाणीना व्हेण सरखी एनी गति शांत अने समरस छे. **अलिल्ला** अने अलक बोल 'सं. अट् शणगारवूं' ए धातु उपरथी ऊतरी आव्या छे. पज्झडिआमा अने अलिल्लामां दरेक चरण सोळ मात्रानूं रचाय छे. समान मात्राना चरणवाळो बीजो एक मात्राबंध पण धनपाळे वापर्यो छे तेनूं नाम **सिंहविलोकित** छे. अलिल्लामां १,५,९, अने १३ ए मात्रा उपर भार पडे छे. पण सिंहविलोकितमां बे मात्रा छोडी दईने चार चार मात्राना अंतर भार आवे छे. आरंभनी बे मात्रानो झोक भारना नवा क्रम तरफ वळतो होवाथी छंदनूं **सिंहविलोकित** नाम राखेलूं होय एम लागे छे. मात्राना क्रममां ते पछी

---

१७५ जुओ **भविसयत्तकहा**, Introduction, p. 4.

प्लवंगम छंद आवे छे. आरंभथी सोळमी मात्रा सूधीनी एकधारी गति छेल्ली पांच मात्रामां एकाएक बदलाय छे. तेथी करीने लांबा डाळ उपर पगलां भरतो वानर डाळना छेडा तरफ पहोचतां भडुप लेईने गति बदली अंग संकोरी बीजे डाळे कूदको मारे छे, तेना जेवो कंइक चालपलटो थाय छे; तेना कारणथी कदाचित् छंदने **प्लवंगम** नाम आप्यूं हशे. धनपालना **प्लवंगमने** छेडे त्रण ह्रस्व वर्ण आवे छे. ए दशमा शतकनो मात्राबंध मध्य यति रहित छे. बीजी रीते बंधारणमां ते **दलपतपिंगळना प्लवंगमने** मळतो छे. ए पछी आवनारा छंद चोवीस मात्राना चरणवाळा **कलहंस** अने **काव्य** ए बे छे. प्रॉ. गुणे पहेलामां दसमी मात्रा पछी यति लखे छे. बीजामां धनपाल मध्यान्त्य यमकनी योजना द्वारा सोळमी मात्रा पछी यतिनूं भान करावे छे. **दलपतपिंगळे काव्य** किंवा **रोळा** छंदमां अगियारमी मात्रा पछी यति आपी छे. वळी धनपालना **कलहंस** अने **काव्यना** चरणना छेल्ला बे वर्ण ह्रस्व छे. आ तफावत बाजु उपर राखतां **कलहंस, काव्य** अने **रोळा** छंदनी चाल सरखी छे. उपर गणावेला पांच समचतुष्पद मात्राबंध उपरांत बावीसथी मांडीने एकत्रीस मात्रा सूधीना दलवाळा अगियार द्विदल मात्राबंध प्रस्तुत कथामां मळी आवे छे[१८०]. ते पैकी **मन्मथतिलक, अभिसारिका** अने **मर्कटी** ए त्रण छंद बावीस मात्राना दलवाळा छे. तेमां अनुक्रमे, ८,९,११ मात्रा पछी मध्ययति छे. ते पछी **कुसुमनिरन्तर, विभ्रमविकसितवदन, नवपुष्पंधय** अने **किंनरमिथुनविलासमां** अनुक्रमे त्रेवीसथी पचीस मात्रा दलदीठ आवे छे. ए चार छंद पैकी पहेलामां नवमी मात्रा पछी अने बीजा त्रणमां अगियारमी पछी मध्य यति छे. आ छेल्ली त्रिपुटीमा मध्य यति पछीनी बे मात्रा भारमुक्त छे; ते लक्षमां राखवा जेवूं छे. एना पछीना अट्ठावीस मात्राना दलवाळा **उल्लालामां** पण आरंभनी बे मात्रा भारमुक्त छे.

---

१८० जुओ **भविसयत्तकहाना द्विदल मात्राबंधनूं परिशिष्ट** चालु व्याख्यानने अंते आप्यूं छे ते.

ए द्विकल संधि पछी [१८१]दुहाना विषम चरणनी घटनानो खंड आवे छे; तेना पछी मध्य यति छे; अने ते पछी पाछो दुहाना विषम चरणनी घटनानो खंड गोठवाय छे; ए रीने उल्लालानूं दल बंधाय छे. **द्विपदी** (प्रा. **दुवइ**) छंद पण अठ्ठावीस मात्रानो नीपजे छे. तेना दलना बे खंड पडे छे, एक सोळ मात्रानो अने बीजो बारनो पूर्व खंड पछी यति छे; अने उत्तर खंडमां छेडे हृवा आवे छे. तेना पछीनो छंद जे **मरहट्टा**, ते अद्यापि ए ज नामे प्रसिद्ध छे. परंतु पूर्वे ते द्विदल हतो अने हाल चतुष्पद बन्यो छे. एना दलना १०,८ अने ११ मात्राना त्रण खंड पडे छे. तेमाना पहेला खंडनी आरंभनी बे मात्रा भारयुक्त छे. खडे खडे यति छे; अने प्रत्येक दलनो पहेलो खंड बीजा खंड साथे अंत्य यमकथी जोडायो घटे छे. त्रीजा खंडमां अंते गाहृ अपेक्षित छे. प्रॉ. गुणे **प्राकृतपिंगलथी** दोराई धनपालना मरहट्टाने चतुष्पद लेखवे छे. परंतु **भविसयत्तकहाना** त्रीजा संधिना चोवीसमा कडवकमां कुल अढार पंक्ति छे; तेने चतुष्पदना घाटमां मूकवा जतां चार छंद पूरा आवे छे, अने एक अधुरो रहे छे, ज्यारे उक्त पंक्तिओने द्विदलना स्वरूपमां गोठवता अखंडित नव छंद नीपजे छे. ते उपरथी समजाय छे के धनपालनो **मरहट्टा** छंद बे दलनो छे, चार चरणनो नथी. द्विदल **मरहट्टानी** प्रकृति **घत्ता** छे, ते छंद **मरहट्टाना** दलने अंते बे ऊमेरवाथी बने छे. आ बे छंदना गाळामां प्रॉ. गुणे त्रीस मात्राना दलवाळो एक छंद कल्पे छे. ते **मरहट्टाना** दलने अंते हना वधारवाथी नीपजे छे, एम ए विद्वान लखे छे. तेना दृष्टांत तरीके एओ तेरमा संधिना आठमा कडवकनी पंक्ति ३–६ तरफ अंगुलिनिर्देश करे छे. परंतु जो ते पछीनी पंक्ति ७–१० तरफ एमनूं ध्यान दोरायूं होत, तो एमने उक्त कल्पना करवानूं कारण न रहेत. तेमणे जोयूं होत के पंक्ति

१८१ **दुहानी** उत्पत्ति विचारता ते द्विदल छंद छे तेना प्रत्येक दलना बे खंड पडे छे, पहेलो तेर मात्रानो अने बीजो अगियारनो. परंतु **चंद्रावली** किंवा **चंद्रायणा**, **कुंडळिया** आदि छंदना लक्षण बांधवा सरळ पडे, ए कारणथी प्रस्तुत खंडनो चरण तरीके व्यवहार रूढ थयेल छे.

७—१० **घत्ता** छंदमां छे अने तेना पहेलांनी पंक्ति ३—६ पण ए ज छंदमां छे. चरण अने दलने अंते लघु ते गुरु गणी शकाय छे, अने ह्रस्व ते बृहत् लेई शकाय छे. ते धोरणे पंक्ति ३—६ मां एकत्रीस मात्रानो आंक पूरो मळी रहे छे. अर्थात् उक्त आठ पंक्तिना चार **घत्ता** छंद बने छे. एमांनी पहेली चार पंक्तिने माटे त्रीस मात्राना दलवाळा नवा छंदनी कल्पना करवानी जरूर नथी.

५४ उपर नोंधेला सोळ मात्राबंध सिवाय पांच रूपबंध पण धनपाले वापर्या छे, छ रूपना **मन्दर** तथा **सोमराजी,** बार रूपना **भुजंगप्रयात** तथा **लक्ष्मीधर(स्रग्विणी)** अने पंदर रूपनो **चामर.** ए पांच जाणीता रूढ छंद छे; एटले एमनी रचनानी विगतमां ऊतरवानी जरूर नथी. परंतु वृत्तकाल विशेना व्याख्यानमां विक्रियाना प्रचार विशे जे कहेवाई गयूं छे, तेनूं स्मरण करावबूं अहीं उचित छे. इसवी सन पूर्वे पांचमा शतकथी जैन अने बौद्ध पद्यात्मक साहित्यमां एक गुरु बदल बे लघु अने एक बृहत् बदल बे ह्रस्व मूकवानो वहीवट शरू थयो हतो. धनपालना रूपबंध उक्त विक्रियावाळा छे, शुद्ध नथी. **भविसयत्तकहा**नी भाषा जेम तेना रचनाकाळनी जीवंत लोकभाषा छे, तेम तेना पद्यबंध पण ए काळना लोकरूढ पद्यबंध छे. दसमा अगियारमा शतकमां कलाना अंगे मात्राबंधमां जे प्रगति थई चूकी हती, तेनूं स्वरूप धनपालना समचतुष्पद अने समद्विदल मात्राबंधना आधारे उपर प्रमाणे अंकाय छे. सर्वग्राही दृष्टिए तेनूं यथार्थ चित्र आपवा माटे अपभ्रंश पद्यात्मक साहित्यना वहोळा प्रकाशननी अने ऊंडा अवगाहननी अपेक्षा रहे छे. जाण पुरुषो कहे छे के ए साहित्य बहु विशाळ छे. आ शरीरमां एने पहोंची वळवा जेटली विशाळ शक्ति रही होत, तो एकलो ए खंड नहि पण हिंदी, मराठी अने बंगाळी साथे गूजराती साहित्यना खंडनो पण प्रवास आदरी पृथ्वीप्रदक्षिणानूं कौतुक पूरूं करत. परंतु उत्तर वयमां नवसें नव्वाणु तीर्थनी यात्राए नीकळेलो प्रवासी गंगोतरी अने जमनोतरीनां बरफथी ढंकायलां शिखरोनां दर्शन करी रमणरेतीमां लोटी

त्रिवेणीमां एक ज वार अवगाहन करवा समर्थ थाय छे. जगन्नाथ अने रामेश्वर थई जगदंत प्होचवानूं पुण्य तेने लभ्य नथी. एटले एने 'अठे द्वारिका' करवानूं प्राप्त थाय छे.

५५ अनेक नदनदी देशदेशथी आवीने जेम महासमुद्रमां मळे छे, तेम काव्यकालमां आर्चिक आख्यानिक अने सौत्त कालनी ते ते पद्यरचनानूं मळवूं थाय छे. ऋग्साहित्यमां वर्णरचना प्रगटे छे. तेना पद्यबंध जोके उत्तर कालमां वपराता बंध पडी गयेला देखाय छे, तथापि वास्तविक रीते ते मरी जता नथी, मात्र शरीर बदले छे. वैदिक **त्रिष्टुभ्** अने **जगती** महाख्यानोमां वर्णशरीरना साटे सुंदरतर रूपशरीर धारण करे छे. ए नवा शरीरमां ते त्रैष्टुभी **उपजाति, उपेन्द्रवज्रा, वंशस्थ,** आदि नामथी ओळखाय छे. आर्चिक **अनुष्टुभ्** छंद शरीर बदलतो नथी, पण वर्णरचनाना अपर भागमां रूपरचनाने स्थान आपी आख्यानिक **अनुष्टुभ्** बने छे; अने नवूं जीवन समर्पी मृत्युवश वर्णरचनाने ऊगारी ले छे एटलुं ज नहि, पण अमर बनावे छे. महाख्यानोना पौराण संस्कृतमां आ छंदो उदय पाम्या पछी, अंतःपाती संस्कृत अने अग्रिम प्राकृत, एवो भाषाभेद ऊभो थाय छे. पहेली भाषामां अगियारथी ओगणीस रूपना नवानवा समचतुष्पद रूपबंध सरजाय छे; अने आख्यानिक **अनुष्टुभ्**ना वर्णरूपात्मक चरणने जवाब आपता रूपमात्रात्मक चरणनो **वैतालीय** जन्म पामे छे. बीजी भाषा जे अग्रिम प्राकृत, तेमां आख्यानकालना रूपबंधनो वपराट चालु रहे छे, ते साथे अंतःपाती संस्कृतनो वीणाना रणकारवाळो **वैतालीय** पण वपराय छे. आ रूपमात्रात्मक चरणना **अर्धसमचतुष्पद** छंद पछी केवल मात्राबद्ध समचतुष्पद **कोकालिय** प्रगटे छे अने मात्रात्मक पद्यरचनानो नवो प्रवाह चालतो करे छे. काव्यकालमां आ त्रणे प्रवाह वहेता रहे छे अने, लयात्मक पद्यरचनानो जे चोथो प्रवाह, ते पण वर्णलय अने रूपलयनी धाराना आकारे वहेवा मांडे छे. आ रीते एक एक काळमां एक एक पद्यरचना जनमे छे; अने नवा नवा

पद्यबंध रचाय छे. पद्यरचनाना चारे प्रवाह काव्यकालमां सहजीवी बने छे, अने निरनिराळा वहे छे. परंतु आ सर्वे निबद्ध पद्यना प्रवाहो छे. तेमांनो वर्णप्रवाह लगभग सूकाई गया जेवो ज छे; अने आवृत्त संधिना मनहर, पयार आदि वर्णबंध तो निगोदजीवनी पेठे हजु भावीनी गोदमां अंतर्हित रह्या छे. रूपप्रवाहनो आवृत्त संधिवाळो फांटो पण सांकडा व्हेणमां वह्या करे छे. लयप्रवाहना तो मात्र झीणा झरा ज फूट्या छे. वळी देशीना सहस्र-मुख धोधनो नाद तो कानने स्पर्शवा ए पाम्यो नथी. तो पछी जेने अबद्ध पद्य कहिये छिये तेना अवतारनी तो काव्यकालमां वात ज क्यां ? छतां मारा मर्यादित ज्ञान प्रमाणे हुं जणावूं छूं के आटला निरानराळा पद्यप्रवाहो भूतळ उपरना कोइ अन्य साहित्यमां वहेता ए नथी अने शाखाप्रशाखाए उपचय पामी अने धाराउपधारामां फंटाई साहित्यभूमिने सींचता ए जोवा-जाणवामां नथी. अत्रोक्त चार प्रवाह पैकी पहेलो ओळखाय नहि एटले दरज्जे क्षीण थई गयेलो अने छेल्लो लक्ष खेंचे नहि एवा सूक्ष्म झरणे नवो फूटतो होई ए बे विशे विगतमां ऊतरवानूं रहेतूं नथी. वचली बे पद्यरचनामांथी रूपरचनानी आवृत्त संधिनी शाखा फालवी बाकी होवाथी ते विषे पण हुं कंइ कहेवा मागतो नथी. एनी अनावृत्त संधिनी शाखा लगभग पूरेपूरी फालीफूली छे. तेनी त्रण प्रशाखा छे, समचतुष्पदनी, अर्धसमचतुष्पदनी, अने विषमचतुष्पदनी. ते पैकी समचतुष्पद प्रशाखाना विकासनां अंगो खास वर्णववा जेवां छे. आ प्रशाखाना पद्यबंधना चरणनूं माप सातथी मांडीने छव्वीस अक्षर सुधी सोमराजीथी आरंभीने भुजंगविजृम्भित पर्यंतनो श्रेणीमां लंबातूं ने लंबातूं ज जाय छे. ते पद्यबंध पैकी टूंका अगि-आर, बार अने तेर अक्षरना मध्य यति वगरना छंद ज काव्यकालना पूर्व भागमां व्यापक तरीके वपराय छे. पछी तेमनो अनेकानेक सर्गमां प्रयोग घटी जई लांबा रूपबंध तेमनूं स्थान ले छे. ते मोटे भागे मध्ययति-वाळा होय छे. चरणने अंते यति आवश्यक छे. ए अन्त्य यति उपरांत लांबा चरणनी अंदर एक अने क्वचित् बे मध्य यति आवे छे. मध्य यतिना लीधे

चरणना जे खंड पडे छे, तेमां आद्य अने अंत्य खंडमां त्रणथी मांडीने वधारेमां वधारे वार अक्षर होय छे. दाखला तरीके प्रहर्षिणीमां पहेलो खंड त्रण अक्षरनो अने शार्दूलविक्रीडितमां बार अक्षरनो छे. वचलो खंड न्हानामां न्हानो चारनो अने मोटामां मोटो अगियारनो मळी आवे छे. हरिणीमां ए खंड चार अक्षरनो छे अने भुजंगविजृम्भितमां अगियारनो छे. मध्य यति वगरना लांबा रूपबंध विरल छे. सर्जनकाळे जेमां मध्य यति न होवा छतां वखत जतां ते प्रवेश पामे छे, एनुं उदाहरण सत्तर अक्षरनो पृथ्वी छंद छे. ते मूळे मध्य यति विनानो छे, तेमां पाछळथी आठमा अक्षर पछी मध्य यति वपरावा मांडे छे. अर्धसमचतुष्पद अने विषमचतुष्पद रूपबंधमां मध्य यति छे नहि, एटले एमना चरणना खंड पडता नथी. घटकावयव तरीके वपराता संधि अने खंडनी संख्या परिमित छे. तेमनी सरखाइमां आवती घटनाथी अनेक अनावृत्त रूपबंध बने छे. समचतुष्पदमां चारे चरणोनी उच्चारणा किंवा चाल समान छे; अर्धसम चतुष्पदमां पहेला तथा त्रीजा चरणनी अने बीजा तथा चोथा चरणनी चाल सरखी छे; ज्यारे विषमचतुष्पदमां चरणोनी चाल अणसरखी छे. समचतुष्पदना चरणना अणसरखा खंड यतिनी व्यवस्थाथी सरखाइमां आवे छे, ते ज प्रकारनो सरखाइ विषमचतुष्पदनां अणसरखां चरणमां सधाय छे. अक्षरसंख्याने अनुसरी एकथी छव्वीस अक्षरना समचतुष्पद रूपबंधना छव्वीस वर्ग पाडवामां आवे छे, तेमांना उक्ता, अत्युक्ता, मध्या, प्रतिष्ठा तथा सुप्रतिष्ठा ए पहेला पांच, अने आकृति, विकृति, संस्कृति, अतिकृति तथा उत्कृति ए छेल्ला पांच वर्ग काव्यकालमां उत्पन्न थया जणाय छे. गायत्र वर्गना पूर्वेनो अने प्रकृति तथा दंडक वर्गना वच्चेनो गाळो पूरवाने ए वर्गो कल्पेला छे. ते गायत्र वर्गनी अने दंडक वर्गनी उत्पत्ति पछीना छे. अत्रोक्त अनावृत्त संधिना रूपबंध पैकी केटलाकनो परिचय संस्कृत नाटकोना समश्लोकी अनुवादमां थाय छे. जे अजाण्या रह्या छे, ते प्रयोगमां मूकवा जोग छे. मात्रात्मक पद्यरचनामां गाथाप्रकरण आजकाल ठीक ठीक जाणीतुं छे;

पण गलितकप्रकरण गूजरातीमां छेक ज अज्ञात छे, अने संस्कृतमां पण अपरिचित छे. एनी अनावर्ती घटना अपूर्व अने मनोरंजक छे. नवा अनावृत्त संधिना मात्रावंध रचाय तेनी दिशा बतावयाने जूनूं गलितकप्रकरण आपणा साहित्यमां उतारवूं घटे छे. घृतश्री, अतिशायिनी, नर्दटक, उद्गता, गलितक, द्विपदी, घत्ता आदि पद्यबंधनो निधि आपणो ज छे, जो आपणो करी लेइये तो.

५६ पद्यरचनानो विकास चार दिशामां थयो छे अने बहोळो पण थयो छे. एवो चतुर्मुख विपुल विकास अन्य भूमिमां थवा पाम्यो नथी. छता केटलाक पद्यबंधनूं अस्तित्व आपणने अज्ञात छे; केटलाक जाणीता छतां दाटी मूकेला धननी पेठे वपराया वगर रह्या छे; केटलाक सुखसाध्य छतां आळस के अनुद्योगने लीधे सिद्ध कराया नथी, तेथी आपणा पद्यभंडारनो एक कडुखलो खाली पड्यो रह्यो छे. अज्ञात धन पाताळ खोदी मेळवो; वपराया वगर पडी रहेली मूडी फरती करो; उद्योगथी नवी आवक ऊभी करो, अने ए रीते सर्व प्रकारनी समृद्धिना उपचयथी आपणी जगजूनी पद्यरचनानो अधिकाधिक सर्वतोमुख उदय थाओ !

---

[१८२]परिशिष्ट १

प्रस्ताव १४–१६.

गुप्तवंशी समुद्रगुप्त पराक्रमादित्य, रामगुप्त तथा द्वितीय चंद्रगुप्त विक्रमादित्य; अने वाकाटकवंशी द्वितीय प्रवरसेन.

इ. स.	३१५	समुद्रगुप्तनो जन्म.
	३३५	राज्यारोहण.
	३४०	दत्तदेवी साथे विवाह.
	३४१	रामगुप्तनो जन्म.
	३४३	बीजा कुंवरनो जन्म.

---

१८२ परिशिष्ट १–२ बनावोनो क्रम बताववाना उद्देशथी आप्यां छे. बनावोनी साल अचोक्स होई अडसट्टे गोठवी छे.

३४५–५४ पार्श्ववर्ती राजाओने रणमां रोळी राज्य खालसा कर्यां. प्रत्यंत राज्यो उपर सत्ता वेसारी.

३५५ चंद्रगुप्तनो जन्म.

३५६–७८ पश्चिम महाराज्यनूं पाटनगर विदिशा अने तेना अनिर्दिष्ट शासक.

३६१ रामगुप्तनो ध्रुवदेवी साथे विवाह.

३६२–७४ दक्षिणापथ उपर सवारी. पाटलिपुत्रमां युवराज रामगुप्त प्रतिनिधि.

३७५ चंद्रगुप्तनो ध्रुवस्वामिनी किंवा ध्रुवदेवी अने कुवेरनागा साथे विवाह. ज्येष्ठा ध्रुवस्वामिनी, कनिष्ठा कुवेरनागा.

३७६ कनिष्ठ पत्नीथी प्रभावतीगुप्तानो जन्म.

३७६–८० सीमापार वायव्य दिशाए वंक्षु (Oxus) नदी पर्यंत आधिपत्यनो विस्तार.

३७८–८८ विदिशा पाटनगरमां कुमार चंद्रगुप्तनो राज्याधिकार.

३८० समुद्रगुप्ते अश्वमेध कर्यो. पांड्यराजानी मूल्यवान भेट.

...... सिंहलद्वीप अने चीन साथे मैत्री.

३८८ समुद्रगुप्तनूं मृत्यु. रामगुप्त गादीए. सौराष्ट्रनो महाक्षत्रप तृतीय रुद्रसिंह स्वतंत्र थयो. तेना उपर रामगुप्तनी चढाई. चंद्रगुप्ते विदिशाथी चढाईमां जोडावूं. गिरनारनी घांटीमां रामगुप्त अंतरायो. महाराणी ध्रुवदेवीनी दुश्मने करेली मागणी. चंद्रगुप्ते महाराणीना वेषमां जई रुद्रसिंहनो जीव लेवो. रामगुप्ते मुगट पोताना माथेथी उतारी चंद्रगुप्तने माथे मूकवो. पाटलीपुत्रमां चचट भाइए राजचिह्न धारण

करवां. वंगो तेनी मददमां. विग्रहमां वचट मार्यो जवो. वंगदेश पर चढाई अने विजय.

३८९ वाह्लिकोए ऊठावेलुं बंड दाबी देवुं. वाकाटकवंशी फीतुरी द्वितीय रुद्रसेन प्रत्ये मेघकार कालिदासने दूत तरीके मोकलवो. समजूतीना संदेशा निष्फळ जवा. विदर्भ-कुंतल उपर चंद्रगुप्ते चडाई करवी. रुद्रसेननी हार. हारेला कुंतलेश्वर साथे संधि करी राजकुमारी प्रभावतीगुप्ता तेने परणाववी.

३९० प्रभावतीगुप्ताने पेटे दिवाकरसेननो जन्म.

३९२ तेने पेटे प्रवरसेन किंवा दामोदरसेननो जन्म.

३९४ बे कुंवरना पिता द्वितीय रुद्रसेननुं मृत्यु. विदर्भ-कुंतलमां विधवा राणी प्रभावतीगुप्तानो राज्यकारभार.

४१० दिवाकरसेन गादीए. तेनुं अकाळमृत्यु. प्रवरसेन गादीए.

४११ चंद्रगुप्त तरफथी कालिदास प्रवरसेनना समाचार लेवाने जवो.

४१३ प्रवरसेने सेतु काव्य आरंभवुं. चंद्रगुप्तनुं मृत्यु.

४१४ सेतु काव्यनी समाप्ति.

परिशिष्ट २

प्रस्ताव १४–१६

मेघकार कालिदास.

इ. स. ३५० उज्जयिनीमां जन्म.

३८० मेघदूतनी रचना.

३८१ उज्जयिनीना काव्यपाठे करेलो सत्कार.

३८२ विदिशानी राजसभामां प्रवेश. चंद्रगुप्तनी प्रीति थवी.

३८८　　द्वितीय चंद्रगुप्त विक्रमादित्यना साथे पाटलिपुत्र प्रति प्रयाण.

३८९　　विदर्भ-कुंतलना पितुरी वाकाटकावंशी द्वितीय रुद्रसेन प्रत्ये दूत तरीके कालिदासनी नीमणूक.

४०७—८　मोसाळे आवेला कुमार प्रवरसेननो अने कालिदास-नो परस्पर परिचय.

४११　　राज्यारूढ प्रवरसेननी मुलाकाते कालिदास.

४१३　　प्रवरसेने सेतु काव्य आरंभ्यूं. द्वितीयचंद्रगुप्त विक्र-मादित्यनूं मृत्यु.

४१४　　कालिदासना सहकारथी सेतु काव्यनी समाप्ति.

परिशिष्ट ३

प्रस्ताव ३९, टिप्पणी १३८

सेतु काव्यना गलितक.

नाम	प्रकार	मात्रा	पदात	प्रयोग	कुल
[सु]न्दरगलितक	सम	१३	गागा	९।४३,४४,४७,५०।	४
गलितक	„	२१	लगा	२।२४,२७,३१,३३।; ६।६२।;७।४१,४३; ९।१८,४०,४२,४६, ४९,७२।	१२
विलम्बित-गलितक	„	२२	„	६।४८,५३,५६,६८।; ७।४५,४७,४९,५१, ६०,६२।,८।६१,६३, ६५।;९।८२,८८।	१६
ललितगलितक	„	२४	„	३।४५,४६,४७,४८।	४

नाम	प्रकार	मात्रा	पदांत	प्रयोग	कुल
उग्रगलितक	,,	३०	गा	६।६५ I.	१
मालागलितक	,,	४६	लगा	७।५९,६२I.	२
मुखगलितक	अर्धसम	७(विषम) २५ (सम)	,,	२।२३,२६,२९,३०I.	४
				सरवाळो	४४

उपरना पत्रकमां चोजा तथा नवमा आश्वासना जे गलितक छंद छे, ते कुलकान्तर्गत छे.

परिशिष्ट ४

प्रस्ताव ५२, टिपणी १७०

भविसयत्तकहाना द्विदल मात्राबंध.

१ मन्मथतिलक. विमछ महामइ थिउ तुण्हि करेविणु पक्खइ ।
वासवणन्दणु पहु पुरउ समारिवि अक्खइ ॥
भ.क.।१७।८।

२ अभिसारिका. सिङ्गारहि सोह मइलहि माणु समच्छरहो ।
लइ पणिउं देहि परिहव दुक्ख परंपरहँ ॥
भ.क.।९।१५।

३ मर्कटी. तं जिणभवणु णिएवि धवलुत्तुङ्गु विसालु ।
वियसियवयणरविंदु मणि परिओसिउ बालु ॥
भ.क.।४।११

४ कुसुमनिरंतर. कालेण यदर्वि पइविरहमहादुहरोविय ।
धीय सुकेसहि उव्वाडुलु करइ तिनेइय ॥
भ.क.।१७।४।।

५ विभ्रमविकसितवदन. अहिसिश्चिवि जगनाहु रणु अच्छइ नरवइ जाम ।
मुणिवरचारण विण्णि संपाइय जिणहरि ताम ॥

भ.क.।१६।४।

६ नवपुष्पंधय. धम्मक्खाणु सुणेवि गहएविहिं मणु आमोइउ ।
धणवइअङ्गरहेण करसंपुड सिरि संजोइउ ॥

भ.क.।१६।१२॥

७ किंनरमिथुनविलास. मणु पसरन्तु धरेइ परिहरइ विरद्धउ जणवयहों ।
वज्जन्तहों घरवासु वउ एउ चउत्थउ सावयहों ॥

भ.क.।१५।९।

८ उल्लाला. सो णत्थि विसूरिउ जेण णवि तं पिक्खेविणु दुच्चरिउ ।
धणवइ वि णिरोहायामुगउ इत्थु विचि विब्भमभरिउ ॥

भ.क.।३।२६।

९ द्विपदी. ण मुवमि पईंमि जाहँ जइ तुहुवि मणि संकेउ एहओ ।
जाणमि हउँ मि दुसहु को सक्कइ सहिवि सनत्तिवेहओ ॥

भ.क.।१२।५।

१० सरहट्टा. तं णिसुणेवि तेण बहुमच्छरेण चावरिउ अइरउद्दु ।
अवलोइउ खरेण कडुअक्खरेण तज्जिवि णिययविंदु ॥

भ.क.३।२४।१०।

११ घत्ता. सा धीय नरिन्दहो सज्जणविंदहो मज्झि सुवेसालंकरिय ।
जयमङ्गलघोसें सुहिपरिओसें भविसयत्ति करयलि धरिय ॥

भ.क.।१५।१।

दीवान बहादुर केशवलाल हर्षदराय ध्रुवे रचेलां पुस्तक.



नाटक

मेळनी मुद्रिका	आ ६	मूल्य रु. १—८—०
पराक्रमनी प्रसादी	„ ६	१—०—०
विन्ध्य वननी कन्यका	„ ३	० १५—०
स्वप्ननी सुन्दरी	„ २	०-१५—०
प्रधाननी प्रतिज्ञा	„ २	०-१२—०
मध्यम	„ २	०—८—०
प्रतिमा	„ १	१—४—०

काव्य

अमरुशतक	„ ५	१—८—०
गीतगोविंद	„ ५	२—०—०
लघु गीतगोविंद	„ १	१-१२—०

प्रकीर्ण

भालणकृत कादंबरी भाग १,	१	४—०—०
पद्यपाठ	„ १	०—६—०
पदरमा सैकानां प्राचीन गुर्जर काव्य	„ १	१—०—०
रत्नदासकृत हरिश्चन्द्राख्यान	„ १	०—८—०
मुद्राराक्षस [संस्कृत इंग्रेजी]	„ ३	४—०—०
अप्राकृत अनुभवबिंदु	„ १	०—५—०

